वार्षिकी 2014

भारतीय साहित्य सर्वेक्षण



केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

वार्षिकी
2014

भारतीय साहित्य सर्वेक्षण



केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार

HRD/16—1A

41 HRD/16—1B



वार्षिकी 2014

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल

डॉ. रविप्रकाश टेकचंदाणी

परामर्श मंडल

श्री रवींद्र कालिया

डॉ. दामोदर खड़से

श्री अखिलेश

डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

डॉ. वी. आर. राल्ते

वार्षिकी 2014
(भारतीय साहित्य सर्वेक्षण)

संपादक
डॉ. अर्चना त्रिपाठी

सह–संपादक
डॉ. अनुपम माथुर

अर्चना श्रीवास्तव

प्रूफ रीडर
इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह

केंद्रीय हिंदी निदेशालय,

उच्चतर शिक्षा विभाग,

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,

पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम,

नई दिल्ली-110066

अनुक्रमणिका

मेरी आँखें तो उस दिन को देखने को तरस रही हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएँ।

— स्वामी दयानंद

संपादकीय

'अनेकता में एकता' कथन का साक्षात् स्वरूप हैं भारतीय भाषाएँ। देवभाषा संस्कृत से उत्पन्न ये सभी भाषाएँ भारत की पुरातन संस्कृति एवं सभ्यता को ही सदियों से वहन नहीं कर रही हैं अपितु साहित्य एवं इतिहास के माध्यम से अतीत के गौरवशाली पृष्ठों को भी बार–बार खोलकर समकालीन पीढ़ियों को परंपरागत मूल्यों एवं मानवोचित–संवेदनाओं का पाठ पढ़ाती आ रही हैं। किसी एक भाषा में लिखा गया कालजयी साहित्य सिर्फ उसी भाषा तक सीमित नहीं रहता अपितु अनुवाद और लिप्यंतरण के माध्यम से हर दूसरी भाषा की अपनी, बिल्कुल अपनी निधि बन जाता है और इसी भांति, सभी भारतीय भाषाएँ परस्पर आदान–प्रदान की परंपरा से स्वयं भी समृद्ध होती रही हैं और एक दूसरे के उत्तरोत्तर विकास में भी अपना सहयोग लगातार दे रही हैं।

संविधान–स्वीकृत भारतीय भाषाओं में प्रत्येक वर्ष में प्रकाशित मौलिक–अनूदित साहित्य का सर्वेक्षणात्मक परिचय पाठकों को वार्षिकी पत्रिका के माध्यम से मिलता रहता है। इतना ही नहीं, वर्ष भर में आयोजित साहित्यिक गतिविधियों, पुरस्कार–सम्मान आदि से संबंधित संक्षिप्त समाचार भी इन भाषा–आलेखों में दिए जाते हैं। इस वर्ष भी असमिया, ओडिया, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, डोगरी, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, मणिपुरी, मराठी, मैथिली तथा संस्कृत भाषा के आलेख वार्षिकी 2014 में संजोए गए हैं। साथ ही हिंदी की विविध विधाएँ तथा पत्रकारिता एवं विज्ञान–लेखन संबंधी आलेख भी सम्मिलित किए गए हैं।

तथापि, अन्य कई भारतीय भाषाओं तथा हिंदी साहित्य की अन्य विधाओं में विद्वान लेखकों से संपर्क करने के अनेक प्रयासों के बाद भी आलेख प्राप्त नही किए जा सके, यद्यपि इन सभी भाषाओं और हिंदी की विधाओं में साहित्य की रचना हुई है। हम अपने भाषा–प्रेमी विद्वान लेखकों से अनुरोध करना चाहेंगे कि वे स्वयं आगे बढ़कर सोत्साह इस अनुष्ठान में अपना योगदान प्रतिवर्ष सुनिश्चित करें।

इस अंक के विषय में भी पाठकों की राय की प्रतीक्षा रहेगी।

(अर्चना त्रिपाठी)

1

असमिया साहित्य

डॉ. भूपेंद्र रायचौधरी

आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की बढ़ती हुई सुविधा के कारण तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार के निमित्त एक बृहत् असमिया साहित्य के पाठक–वर्ग का सृजन हुआ है। लेखक–पाठक–बाजार के समीकरण के कारण असमिया साहित्य की श्रीवृद्धि होती हुई दिखती है। पुस्तक मेलों के निमित्त प्रकाशकों में उत्साह वृद्धि होने के कारण हर वर्ष हजारों की संख्या में साहित्य की विभिन्न विधाओं में पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। वर्ष भर में असम के विभिन्न जिलों से प्रकाशित पुस्तकों का आकलन करना असंभव है, क्योंकि किसी संस्था के पास इसका हिसाब नहीं है; फिर भी वर्ष 2014 में प्रकाशित कुछ पुस्तकों का विभिन्न विधाओं के अंतर्गत सर्वेक्षण किया जा सकता है। इससे वर्ष भर में प्रकाशित पुस्तकों की एक झाँकी देखी जा सकती है।

कविता

इस वर्ष में अधिकतर संकलन प्रवीण की अपेक्षा नवीन कवियों के प्रकाशित हुए हैं। इन नवीन कवियों में कुछ प्रतिष्ठित कवि हैं। कवियों में रबीन्द्र बरा का नाम लिया जा सकता है। उनके काव्य–संकलन का नाम है– 'सपोनर एकान्त अनुगत', जिसमें उनकी चालीस कविताएँ संकलित हुई हैं। ज्ञातव्य है कि ई० सन् 1980 से 2009 तक उनके नौ काव्य–संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। अन्य एक वरिष्ठ कवि नीलमणि फुकन द्वारा पिछली शती के साठ दशक से देश–विदेश की अनूदित कविताओं का संकलन हैं– '*अनुसृष्टि*

चारि शताधिक देशी–विदेशी असमीया भाडनि अर्थात् उनकी अनुसृष्टि में चार सौ से अधिक देशी–विदेशी कविताओं का असमिया अनुवाद है जिनका स्वाद पाठक वर्ग ले सकते हैं। यों उन्होंने जापानी हाइकु कविताओं का काफी अनुवाद किया था। अन्यतम प्रतिष्ठित कवि ज्ञान पुजारी का काव्य–संकलन है– *'मेघमालार भ्रमण* जिसमें समाज की विसंगतियों की अभिव्यक्ति हुई है। सामाजिक स्तर पर प्राचीन सामाजिक एकता के स्थान पर बाजारवाद हावी होने से प्रमूल्यों का जो ह्रास हुआ है उसका चित्रण ज्ञान पुजारी की कविताओं में उपलब्ध होता है। अन्य एक कवि सुरेश रंजन गदुका के काव्य–संकलन *'निजर अनुपस्थितित मइ* (अपनी अनुपस्थिति में मैं) में उनकी 36 कविताएँ संकलित हुई हैं। संकलन में समाविष्ट– *'स्वीकारोक्ति 'संपर्क 'अग्निसूत्र, 'अभिज्ञता, 'वर्षास्थान, 'जीवन, 'बताह, 'घर*, आदि कविताओं में वैचित्र्यमय जीवन के सार्थक प्रतिबिंब पाए जा सकते हैं। नवीन कवियों में नीलम कुमार अपनी पहचान बनाने वाले कवि हैं। उनका संपादित काव्य–संकलन है– *'कविता उत्सव* जिसमें पचास कवियों की कविताओं का संकलन किया गया है। स्वातंत्र्योत्तर असमिया कवियों के जीवन–समाज के प्रति दृष्टिकोण को बखूबी इन संकलित कविताओं में दर्शाया गया है। समीर ताँती, रफिकुल हुसैन, अर्चना पुजारी, कौस्तुभमणि शइकिया, समींद्र हुजुरि से लेकर राजीव बरूवा, लुटफा हानुम सेलिमा बेगम, प्रयास शइकिया, चेनिराम गगै, कमल कुमार ताँती, विजय शंकर बर्मन, मृदुल हालै, गंगामोहन मिलि, रघुनाथ कागयु तक पचास असमिया कवियों को एक साथ पढ़ना और इन प्रसिद्ध–अप्रसिद्ध कवियों के दृष्टिकोण को जानना अपने में ही एक बड़ी उपलब्धि है। वस्तुतः 'कविता उत्सव' में संकलित कविताएँ स्वतंत्रता–पूर्व के कवियों की ही दूसरी शृंखला है, जिससे आधुनिक कविता की धारा जानी पहचानी जा सकती है।

दुर्गाप्रसाद हाजरिका के काव्य संकलन *'टडि'* में 36 भिन्न स्वाद की हृदयस्पर्शी कविताओं का आकलन हुआ है। कवि हाजरिका मानवता के पक्षधर हैं, नैसर्गिक सौंदर्य के साथ असम के लोक–जीवन से भी उनका लगाव है, जिसकी अभिव्यक्ति उनकी कविताओं में है। हिंदू–मुस्लिम की

एकता पर बल देते हुए उन्होंने लिखा है– "*नहीं जानता हूँ / नर्क–स्वर्ग–ईश्वर–अल्ला की बातें/ उसका कोई हिसाब नहीं चाहिए/ छोटी खिड़की से आएगा प्रकाश/आएगी हवा/ सारे भेद मिटाने के लिए।* प्रतीक बरूवा के काव्य संकलन '*आरु नीरजता* में उनकी 48 भिन्न स्वाद की कविताएँ संकलित हैं, जिनमें वैयक्तिक अनुभूतियों के अतिरिक्त शाश्वत चेतना की भी अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम और प्रतिवाद के मूल स्वर को रातुल दंत ने उनके '*संधातर पृथिवीत प्रेमर निचान* काव्य–संकलन के 82 कविताओं में व्यंजित किया है। उनकी कविताओं में कोई बनावटीपन नहीं है, बल्कि प्रेम और मातृभूमि के प्रति स्वाभाविक उद्‌गार है। छह तरुण कवियों– जयजित् डेका, रूबुल दास, प्रशांत राभा, द्‌विजेन कुमार दास, युगजोति दास और दीपक बरगयारी की कविताओं का संकलन है– '*नतुन शतिका नतुन कविता* (नई शती नई कविता)। ग्रामीण जीवन, हरी–भरी प्रकृति को मुख्य आधार के रूप में स्वीकार कर देवजीत थइकीया रचित कविताओं का संकलन है– 'पइरा दिया पथार' (हल लगनेवाला खेत मैदान)। व्यस्ततापूर्ण और कोलाहलमय जगत् से क्षण के लिए दूर होकर कवि खेत–मैदान की श्यामलिमा में खो गए हैं।

हिरण्य पौडेल की 64 कविताओं का संकलन है– 'प्रेम आरु दीनतार दस्तावेज'। इन कविताओं में अभावग्रस्त जीवन के विविध चित्रण हुए हैं। प्रेमनारायण नाथ के काव्य–संकलन '*अदृश्–दृश्यमान* में धरती, पानी, नद–नदी, चाँद–सूरज तथा प्रकृति के विभिन्न सौंदर्य को रेखांकित किया गया है। प्रकृति से संबंधित कविताओं को नारी मन की कोमलता से भिगोकर परोसा है विभारानी तालुकदार ने अपने काव्य–संकलन '*आत्मभाष* में। रीता बरुवा ने '*प्रेम आरु विषदर कविता*, निर्मालि बड़ा ने '*सेउजीया घरर ठिकाना* में मध्यमवर्गीय मानसिकता को उजागर किया है। बारह अंग्रेज कवियों की चौबीस कविताएँ, रवींद्र नाथ ठाकुर की पाँच कविताओं के साथ अपनी दो कविताओं को मिलाकर गिरीश चंद्र फुकन ने 'शुकुला मेघर मौन तरा' में पाठकों को कविता का भिन्न स्वाद प्रदान किया है। अन्य कुछ उल्लेखनीय

काव्य–कृतियाँ हैं– '*शुक्रखेरत फुल किनोते*' (एम. कमालुद्दीन), '*ज्योति कविता*' (ज्योति प्रकाश चौधरी), '*शब्दर प्रकाशत कवितार जोनाक*' (जुनुमानि गगै), '*मुल एटा करि फुल छि'डि.ब नोखोजो तोमाक*' (प्रांजल लाहन), '*मेघफुल*' (विमल डेका), '*संबंध सेउजीया*' (प्रतिभा बरकाकती) इत्यादि। इस संदर्भ में विजय शंकर बर्मन अनूदित तमिल कवि कुरुनटोकेइ की कविताओं का संकलन '*कुरुनटोकेइर कविता*' उल्लेखनीय है। '*सुरधनीर ढौ लागि*' नमिता डेका का गीत–संकलन है। इन गीतों में प्रकृति और जीवन में प्रेम के महत्व को दर्शाया गया है।

कहानी

मौलिक और संकलित कहानियों के बीसों संग्रह इस वर्ष प्रकाशित हुए हैं। वर्ष भर में प्रवीण कहानीकारों के कहानी–संग्रहों का अभाव दिखता है। स्वातंत्र्योत्तर काल के ही कहानीकारों ने अपनी विविध अभिव्यक्तियों को कहानियों के माध्यम से उकेरा है और शैली के परिवर्तन की दिशा में कदम बढ़ाया है।

इस वर्ष की दो उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं – डॉ० शैलेन भराली संपादित '*श्रेष्ठ असमीया चुटिगल्प*' ओर डॉ० पराग कुमार भट्टाचार्य संपादित '*ब्रह्मपुत्र उपत्यकार निर्वाचित गल्प–गुच्छ*'।

डॉ० शैलेन भराली ने स्वतंत्रता पूर्व के कथाकार लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा (1864–1938 ई०) से लेकर समकालीन कहानीकार दिलीप बरा तक 44 कहानीकारों की कहानियों का संकलन किया है। संकलन की अभिधा '*श्रेष्ठ*' से ही पता चलता है कि असमिया साहित्य के विभिन्न युगों के प्रतिनिधि कहानीकारों की प्रतिनिधि कहानियों को ही इसमें स्थान मिला है। असमिया कहानी की विकास–यात्रा पर भी संकलन ने प्रकाश डाला है। डॉ० पराग कुमार भट्टाचार्य ने भी साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा से लेकर समकालीन कथाकार मणिकुंतला भट्टाचार्य तक की 52 कहानियों का इसमें संकलन किया है। इस संकलन का बंगला अनुवाद भी प्रकाशित हुआ है। कथा–साहित्य के शोधार्थी के लिए ये संग्रह निश्चय ही उपयोगी सिद्ध होंगे।

प्रतिष्ठित कहानीकारों में कुल शइकीया और शिवानंद काकति के नाम गिनाए जा सकते हैं। कुल शइकीया वरिष्ठ पुलिस अधिकारी हैं, उनके कहानी–संकलन '*ब्रेकिंग न्यूज* में उनकी अद्यतन 18 कहानियाँ संकलित हुई हैं। संकलित कहानियों के कुछ शीर्षकों से कहानियों के विषयों का अंदाजा हो जाता है, यथा– '*नदीर सैते वार्तालाप* (नदी के साथ वार्तालाप) में एक पुल पर होनेवाले ट्रैफिक जाम से उत्पन्न होनेवाली विकट स्थिति का वर्णन है; अन्य कुछ शीर्षक हैं– '*शापिं मल* '*साकसि ख*, '*ग्लेमार गर्ल*, *भ्रमण संगी*, '*रिकानेक्ट* इत्यादि। शइकीया का अन्य एक कहानी संकलन है– '*कुल शइकीयार निर्वाचित गल्प*, जिनमें समकालीन जीवन की विभिन्न विसंगतियों को उजागर किया गया है। शिवानंद काकति की दस कहानियों का संकलन है– '*बरणीया आलिबाट* (रंग–बिरंगे पथ), जिनमें क्रमशः लुप्तप्रायः होनेवाली ग्रामीण– संस्कृति को चित्रित करने का प्रयास देखा जा सकता है।

उभरते कहानीकारों में काव्यश्री महंत का नाम गिनाया जा सकता है। प्रशासनिक अधिकारी होने के कारण उन्होंने निकट से विभिन्न चरित्रों को देखा–परखा है। मानवीय चरित्रों को विभिन्न कोनों से उन्होंने संकलित कथा–संग्रह '*सुमथिरा फुल* (संतरे के फूल) में उकेरा है।

वास्तविक जीवन में दिन–प्रतिदिन घटित घटनाओं को कथ्य के रूप में स्वीकार कर अशोक कुमार नाथ ने 15 कहानियों को 'ऐ राधा' में संकलित किया है। जटिल मानव मन को लेकर लिखित 14 कहानियों का संकलन है 'गुवाहाटीर शालिकी' (गुवाहाटी की सारिका)। कहानीकार हैं रूपराज के. शर्मा। वर्ष भर में प्रकाशित अन्य कुछ संकलन हैं– '*पाणबजार डटकम* (अंगना चौधरी), '*नीलाचलर गद्य* (रूपलेखा देवी), '*समय–दुःसमय* (गधेश्वर शइकीया), '*वैध कि अबैध कि* (गीताली बरूवा), '*बकुलर फुल* (राणा मुकुट), '*दुःसमयर गल्प* (जीतेन शर्मा), '*अन्य एक खोज* (राजुल कुमार राजखोवा), '*अन्वेषण* (मुकुट दत्त), '*निजानत चाणक्य आरू संपर्क* (मनालिछा शइकीया), '*अस्तमित सूर्य* (महेश्वर बरा), '*बारिषार प्रथमजाक बरषुण* (दीपशिखा बरूवा) इत्यादि। इस क्रम में एक उल्लेखनीय अनूदित कृति है– 'भारतीय भाषार एकुरि

निर्बाचित चुटि गल्प' अर्थात् सत्रह भारतीय भाषाओं से चुनी हुई बीस कहानियों को अनुवाद करके यहाँ संकलित किया गया हैं। राजस्थानी, कन्नड, बंगला, डोगरी, सिंधी, मणिपुरी इत्यादि की कहानियों में वैचित्र्यमय जीवन के चित्रण उपलब्ध हैं।

उपन्यास

आधुनिक असमिया साहित्य के साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा पर संतोष कुमार कर्मकार ने एक उपन्यास लिखा है, जिसका शीर्षक है– *'ओ मोर आपोनार देश'* (हे मेरा अपना देश)। वस्तुतः असम का यह जातीय गीत है जिसमें बेजबरूवा ने अपनी मातृभूमि की गरिमा को अभिव्यक्त किया है। ज्ञातव्य है कि बेजबरूवा ने कविगुरु रविंद्रनाथ ठाकुर' की भतीजी प्रज्ञासुंदरी (पुत्री हेमेंद्र नाथ ठाकुर) से विवाह किया था और आजीवन कलकत्ता (कोलकाता) और संबलपुर में लकड़ी का व्यवसाय कर प्रवासी जीवन बिताया था। श्री कर्मकार ने बेजबरूवा और प्रज्ञासुंदरी के दांपत्य जीवन पर भी एक उपन्यास लिखा है– *'ठाकुरबाड़ीर कन्या'*। हिंदी साहित्य के 'भारतेंदु युग' की तरह सन् 1899 ई० से 1940 ई० तक के असमिया साहित्य के कालखंड को 'बेजबरूवा युग' कहा जाता है। प्रवासी जीवन व्यतीत करते हुए किस प्रकार विभिन्न बाधाओं के बीच बेजबरूवा ने असमिया साहित्य की सेवा की थी, उसका बड़ा ही रोचक प्रसंग *'ओ मोर आपोनार देश'* उपन्यास में विवृत हुआ है।

सरस्वती सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ उपन्यासकार डॉ० लक्ष्मीनंदन बरा का उपन्यास *'सेहि सव्यसाची'* असम के वैष्णव सत्र के मठाधीश स्वतंत्रता सेनानी श्री श्री पीतांबर देव गोस्वामी के जीवन पर आधारित है। एक धार्मिक संस्था के मुखिया होने के बावजूद कैसे उन्होंने जात–पांत का भेद मिटाया था, समाज में एक नवजागरण लाने का प्रयास किया था और मांजुली नदी दवीप के सामाजिक जीवन में बदलाव किस प्रकार लाए थे, उनका बड़े ही विस्तृत ढंग से विवरण इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। अन्य एक मंजे हुए उपन्यासकार दिलीप बरा ने *'सधयापुरर सोणर मेकुरी'* उपन्यास में

मध्यकालीन असम के चुतीया राज्य के उद्भव और इसकी कारुण गाथा को चित्रित किया है। जयंत माधव बरा का चर्चित उपन्यास है 'मरिया होला', जिसमें अहोमकालीन इतिहास को पृष्ठभूमि में रखकर सामाजिक विषमता, राजनैतिक नेताओं के चरित्र और उनकी अदूरदर्शिता, शोषण के विकराल रूप को असमिया ग्रामीण जीवन के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया गया है। महामति चाणक्य के जीवन और कर्म के आधार पर डॉ० जयश्री गोस्वामी महंत ने 'चाणक्य' उपन्यास लिखा है। 529 पृष्ठों के इस उपन्यास में तृतीय शती के अंतिम और चतुर्थ शती के मध्य तक के भारत के आर्थिक–सामाजिक और राजनैतिक जीवन का भी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। असम के जमींदार राजा प्रभात चंद्र बरूवा की सुपुत्री प्रतिमा बरूवा पांडे की जीवन–गाथा पर डॉ० जगद्वींद्र रायचौधरी ने '*हेडु.ल बरन आखि*' उपन्यास की रचना की है। कथा–लेखिका पूरबी बरूवा ने अपने '*अखिन मिला*' उपन्यास में कश्मीरी पंडितों को जन्मभूमि–गृहभूमि से खदेड़ने की करुण गाथा का वर्णन किया है। पदुमी गगै ने असम की पहाड़ी जिला कर्बि आलंग में प्रचलित जनश्रुति '*रंफार पी रबे*' की कथा को आधार बना कर 'वीरांगना' उपन्यास लिखा है।

असम के चाय बगीचों में मजदूरी करने के लिए जिन दलालों द्वारा अन्य राज्य से लोभ दिखाकर बहला–फुसलाकर गरीब मजदूरों को लाया गया था उन्हें '*आरिकाटि*' कहा जाता है। अश्विनी ठाकुर ने अपने उपन्यास '*आरिकाटि*' में इन दलालों के शोषण का नग्न चित्र उपस्थित किया है। बुढ़ापे में स्मृति–भ्रम की शिकार होने वाली सुवर्णमयी के जीवन की त्रासदी को अनुराधा शर्मा पुजारी ने उनके उपन्यास '*जलछबि*' में प्रस्तुत किया है। विशिष्ट कथाकार अरुण गोस्वामी ने 480 पृष्ठों के उनके उपन्यास '*मनारन्मर आर्तनाद*' में एक मानसिक रोगी की कथा–व्यथा को आधार के रूप में लिया है।

मध्ययुग के विवादित वीरपुरुष चंगेज खान के जीवन को आधार के रूप में लेकर देवीचरण ठाकुर ने –इख–खागान' नामक उपन्यास का सृजन किया है। इसी तरह गोबिन कुमार खाओंद ने असम के प्रख्यात कलाकार डॉ० भूपेन

हाजरिका के जीवन को लेकर 'उरणीया मौ' (उड़ती मधुमक्खी) उपन्यास लिखा है। महाभारतीय दो नारी–पात्रों ऋषि–कन्या देवयानी और राजकन्या अंबा पर केंद्रित है डॉ० मालिनी का उपन्यास '*ऋषि – राज–कन्या*'। इस वर्ष में प्रकाशित कुछ अन्य उपन्यास हैं– '*स्वर्गादपि*' (ध्रुवज्याति बरा), '*नष्ट पितृर नष्ट पुत्र*' (अभिजित शर्मा बरूवा), '*एजन असमीया लेखक*' (कौशिक बरूवा), '*मुक्त बिहंग*' (बबिता फुकन), '*एजुरि नीला चकु*' (रातुल चंद्र शइकिया), '*मन अरण्य*' (अनुज बरूवा), '*मधुर अति मधुर*' (अनिमा गगै), '*नांचेन*' (रवीन चेतीया), '*अनुरोध*' व '*बरफर बेलि आरु नीलाचल*' (मणिकुंतला भट्टाचार्य) इत्यादि।

नाटक

नाटक मंच पर जितना खेला जाता है, उतना छपता कम है। इस वर्ष साहित्य अकादमी ने दो खंडों में 'आधुनिक असमिया नाटकों का संकलन' छापा है, जिसका संपादन किया है विद्वान अध्यापक डॉ० पोना महंत ने। विस्तृत भूमिका सहित 1132 पृष्ठों के इस बृहत् संकलन में स्वतंत्रता–पूर्व से लेकर अब तक के 26 नाटककारों के नाटकों का संकलन किया गया है जो शोधार्थी और नाट्यप्रेमी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। दो खंडों में संकलित नाटक हैं–

1. रामनवमी (गुणाभिराम बरूवा)
2. कानीयार कीर्तन (हेमचंद्र बरूवा)
3. गाँवबुढ़ा (पद्मनाथ गोहाभिबरूवा)
4. जयमती कुँवरी (लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा)
5. नरकासुर (अतुल चंद्र हाजरिका),
6. कारेङर लिगिरी (ज्योति प्रसाद आगरवाला),
7. शकुनिर प्रतिशोध (गणेश गगै)
8. वैदेही वियोग (मित्रदेव महंत)
9. मणिराम देवान (प्रवीण फुकन)
10. पियली फुकन (नगाँव नाट्य समिति)
11. भोगजरा (फणी शर्मा)

12. श्रीनिवारण भट्टाचार्य (अरुण शर्मा)

13. एजाक जोनाकीर जिलमिल (भवेंद्र नाथ शइकीया)

14. जन्म (महेंद्र बरठाकुर)

15. बाघ (हिमेंद्र बरठाकुर)

16. नायिका नाट्यकार (सत्यप्रसाद बरूवा)

17. ठिकना (लक्ष्यधर चौधरी)

18. जरौरौवा प्रजा (मुनीन भूञा)

19. धुमुहा पखीर नीड़ (आलि हाइदर),

20. दैवकी (रफिकुल हुसैन)

21. नाङल माटि आरू मानुह (परमानंद राजवंशी)

22. हनुमान सागर बांधा चाउँ (प्रमोद दास)

23. आमि स्वप्नातुर (अखिल चक्रवर्ती)

24. उलंग रजा (दीपक महंत)

25. शुना शुना सभासद (करुणा डेका) और

26. तिनिटा रङीन पखिला (पंकज ज्योति भूञा)। कहना होगा कि इन नाटकों के माध्यम से आधुनिक असमिया नाटक की विकास–यात्रा को जाना जा सकता है।

बसंत शइकीया के दो नाटक प्रकाशित हुए हैं– *'अस्तित्व संकट'* और *'सपोन भङार काहिनी'*। उनके प्रथम नाटक 'अस्तित्व संकट' में असम में विदेशी घुसपैठियों के कारण उभरनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। उनके दूसरे नाटक में नायिका मरमी के दो प्रेमी विक्रम और राहुल के बीच झूलती त्रिकोणीय प्रेम–कहानी है। नाट्यकार प्रफुल्ल राजखोवा के दो पूर्णांग नाटक और तीन एकांकियों का एकत्र संकलन है *'प्रफुल्ल राजखोवार नाट चयनिका'* (तीसरा खंड)। उनके संकलित पूर्णांग दो नाटक हैं– *'रक्षपुत्र मेघनाद'* और *'कापोर पिन्धा नङठा मानुह'* (कपड़े पहननेवाला नंगा आदमी); एकांकियाँ हैं -- *'ओम अशांतिये एकसरे', 'भाच' रेइद नमः'* तथा *'शाहु–बोवारी'* (सास–बहू)। सामाजिक विसंगतियों को उजागर करना ही नाट्यकार का अभीष्ट है।

निबंध

अंग्रेजी साहित्य के अध्यापक हीरेंद्र नाथ दत्त मूलतः कवि होने के साथ निबंधकार भी हैं। असमिया कविता, अंग्रेजी साहित्य के विविध आयामों पर वे सतत् विभिन्न निबंध लिखते रहते हैं। ऐसे ही 45 निबंधों का संग्रह है *'मोर प्रबंध'* (मेरे निबंध)। इसमें संकलित *'साहित्यर भविष्यत'* (साहित्य का भविष्य) एक उल्लेखनीय निबंध है। असमिया साहित्य के विद्वान आलोचक डॉ० वाणीकांत काकति (1894–1952 ई०) भाषाविद् होने के साथ निबंधकार भी थे। असमिया वैष्णव–साहित्य से संबंधित उनके पाँच निबंधों के साथ डॉ० भूपेंद्र रायचौधरी ने उनके अंग्रेजी में लिखित शंकरदेव निबंध को असमिया में अनूदित कर *'शंकरदेव'* शीर्षक से पुस्तकाकार रूप दिया है। भाषाविद् डॉ० गोलोक चंद्र गोस्वामी के निबंध–संकलन *'भाषा–तरंगिनी'* में व्याकरण से संबंधित कुछ निबंधों का संकलन हुआ है।

डॉ० रमेश चंद्र कलिता के 'तत्व तथ्य इतिहास आरु वितर्क' निबंध संकलन में सोलह निबंध हैं, जिनमें इतिहास विषयक छह, कवि अंबिकागिरी रायचौधरी से संबंधित दो, बोड़ो राज्य से संबंधित दो और अन्यान्य विषयक छह निबंध हैं। तथ्यपरक इन निबंधों में कुछ विवादित विषयों को भी समेटा गया है। डॉ० फणीभूषण दास के निबंध–संकलन 'साहित्य आरु दर्शन' में जीवन, ईश्वर, जगत संबंधी विभिन्न विचारकों के मत को विस्तृत व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया गया है। डॉ० योगेंद्र नाथ के *'बौदधिक वैश्यामि'* में समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, ब्यूरोक्रेट शासन–प्रणाली के खोखलेपन को उजागर किया गया है। डॉ० खर्गेश्वर भूञा ने अपने 'जीवन कि जीवन किय' (जीवन क्या है, जीवन क्यों) के अंतर्गत जीवन को विज्ञान की दृष्टि से देखा–परखा है। असम के इतिहास से संबंधित 56 निबंधों का संकलन है राजीव आहमेद का *'पंयां टेकसाइ'*। अधिकतर संकलित निबंध अहोम राजशासन से संबंधित हैं। डॉ० मालिनी गोस्वामी के निबंध–संकलन 'आधुनिक असमीया साहित्य चिंता प्रपंच' में भारतीय वाङ्मय के महत्व को

प्रतिपादित किया गया है। हरिप्रसाद चलिहा के *'ग्रंथसार'* संकलन में बीस लेखक–लेखिकाओं के ग्रंथों के सार को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

डॉ० अंजनज्योति चौधरी के निबंध–संकलन 'बयस जुखिबा हॉहिरे' (उम्र गिनना हँसी से) में व्यावहारिक जीवन के विविध प्रसंगों को उठाया है और तनाव भरी जिंदगी में खुल कर हँसने पर महत्व दिया है। कैंसर से पीड़ित अरुंधती दत्त ने 'सुख–असुखर युगलबंदी' में संकट से जूझने का साहस प्रदान किया है। नारी के संघर्षरत जीवन पर आधारित डॉ० कुंज मेधि के छह निबंधों का संकलन है *'नक्षत्र संलाप'*। अन्य एक विशिष्ट लेखिका इलि अहमद ने अपने *'संप्रीतिर लेछेरित ज़दि घुणे धरे'* (संप्रीति के बंधन में अगर दीमक लगे) में 29 निबंधों के माध्यम से बाढ़–समस्या, नारी बलात्कार, हत्या, हिंसा, विभेद, प्रदूषण, असमिया के अस्तित्व का संकट आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। बांग्लादेश से प्रवर्जित लोग कैसे असम के विभिन्न स्थानों के नदी–तटों पर बस गए हैं, उनकी विविध समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए हबिबुर रहमान ने *'बृहत्तर असमीया जाति गठनत चर–चापरीबासीर अवदान'* निबंध संकलन प्रस्तुत किया है। अपने चौदह निबंधों में भारतीय मुसलमानों की विविध समस्याओं पर प्रकाश डाला है डॉ० देवब्रत शर्मा ने 'इसलाम, जातीयतावाद आरु समाजवाद' में।

प्रकृति–कर्मी सौम्यद्वीप दत्त ने असम–अरुणाचल में भ्रमणकारियों के लिए *'इकटुरिष्ट'* में संभावनाओं की तलाश की है। गुवाहाटी के जीवन के विविध अनुभवों का इलोरा गोस्वामी ने *'गुवाहाटी गुवाहाटी'* में सरस एवं तथ्यपरक वर्णन किया है। वर्ष भर में प्रकाशित अन्य कुछ निबंध संकलन हैं – *'अनुभव आकाश'* (मामनि पाठक बरूवा), 'देशी–विदेशी खादय–संभारर सोवाद (रीतुमणि गगै), 'तात्विकर जे. जाबर आरु बकरानिर ईश्वर (रिपुंजय गगै), 'ज़ोबा तिनिटा दशकर असमत अमिक श्रमिक आंदोलनर इटो–सिटो' (तोलन भराली), *'सरु सरु डाङर कथा'* (सौरभ कुमार भूञा), *'मइ अनुभव'* (अनुभव महंत), *'मोडीम अनुप्रेरणा आरु अन्यान्य प्रसंग'* (आमिनुर रहमान), *'गाधी चिंता'* (हेमेन कलिता), *'रॉ माछर पित'* (भरत संदिकै), *'फलेमछ'* (माधुरिमा

बरूवा), *'बिच्छुरण* (मोहिनी कुमार गगै), *'प्रसिद्ध दिवसर तात्पर्य'* (प्रताप चंद्र बरूवा), *'बोधिद्रुम आरु हेमहार* (सिद्धार्थ स्वरूप), एकैश शतिकार गवेषणागारत ईश्वर' (महानंद पाठक), *'टेकमछर पारत लुइतर सुर* (जितुमनि बरा) इत्यादि।

आलोचना

असम में महापुरुष शंकरदेव (1449–1568 ई०) और उनके प्रिय शिष्य श्रीश्रीमाधवदेव (1489–1596 ई०) का महत्व सर्वोपरि है। आलोच्य वर्ष में डॉ० नवीन चंद्र शर्मा की पुस्तक –*' महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव* एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें लेखक ने 21 अध्यायों में महापुरुष के जीवन और कृति का सांगोपांग विवेचन किया है। साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत डॉ० हीरेन गोहाई कर कृति 'असमीया जातीय जीवन महापुरुषीया परंपरा' का इसी वर्ष परिवर्धित संस्करण प्रकाशित हुआ है। महापुरुष का धर्म, इसका प्रभाव, उपकारिता आदि संबंधित विषयों पर विद्वान लेखक ने प्रकाश डाला है। इस क्रम में दीपक हाजरिका की कृति *'महापुरुष श्रीश्रीमाधवदेव* का उल्लेख किया जा सकता है जिसमें आलोचक ने 112 लेखों में उनके जीवन और कृतित्व पर विवेचन किया है। अन्य एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है' असमीया भक्ति साहित्य अध्ययन', जिसके लेखक हैं दीपक कुमार बरा। इसमें 36 छोटे–बड़े लेखों के माध्यम से सर्वभारतीय भक्तिवाद के इतिहास से लेकर असमिया भक्ति साहित्य का सांगोपांग विवेचन किया गया है। डॉ० सत्यकाम बरठाकुर ने' *'शंकरदेवर नाट : विश्लेषणात्मक अध्ययन* में आठ लेखों में शंकरदेव के अंकीया नाटकों का विवेचन किया है। असम के सूफी संत आजान फकीर के जिकिर और जारी गीत अत्यंत लोकप्रिय हैं। इसमाइल हुसैन ने *'आजान पीर आरु जिकिर–जारीर मूल्यायन* में इनके जीवन और गीतों का विवेचन किया है।

डॉ० प्राणजित बरा संपादित *'लक्ष्मीनाथ* में साहित्यरथी बेजबरुवा के साहित्य के विविध आयामों पर विवेचन हुआ है। इस क्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया है विद्वान अध्यापक डॉ० मदन शर्मा ने अपनी आलोचनात्मक कृति *'लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा: सृजन आरु मनन* में। असम के अन्य एक

साहित्यकार प्रसन्नलाल चौधरी (1898 ई० – 1986 ई०) के जीवन और साहित्य पर शोधपरक दृष्टि से विवेचन किया है डॉ० मणिमा काकति ने अपनी कृति *'प्रसन्नलाल चौधरीर जीवन आरु साहित्य कृति* में। स्वांतत्र्योत्तर काल के प्रसिद्ध नाटककार अरुण शर्मा पर एक शोध–कृति है 'अरुण शर्मार नाटक', आलोचक हैं डॉ० रंजन भट्टाचार्य।

प्राच्य ओर पाश्चात्य साहित्य, वर्तनी की समस्या, असमिया कथा साहित्य से लेकर असम के समाजवादी आंदोलन, डायन हत्या से जुड़े अंधविश्वास तक अनेक विषयों को समेटकर कुछ आलोचनात्मक कृतियों का प्रकाशन हुआ है, यथा– *'प्राच्य आरु पाश्चात्य साहित्यर सुबास* (डॉ० जुनु दत्त), *'इंराजी साहित्यकर जीवन आरु साहित्य* (डॉ० गोविंद प्रसाद शर्मा), *'आखरर आउल* (भुवनेश्वर चहरीया), *'कार्ल मार्क्स* (शशी शर्मा), *'साम्राज्यवादीर कबलत विपन्न कृषि* (डॉ० दीनेश वैश्य), *'गांधी आरु सेइ तिनिटा बुलेट* (जनार्दन गोस्वामी), *'नारी तुमि अनन्या* (योगेन दत्त), *'चारि वेदर इतिवृत्त* (विपिन), *'इस्लाम धर्म* (आलाउद्दिन), *'असमिया कथा साहित्य* (दीपक कुमार बरा), *'असमर आधुनिक गान* (लोकनाथ गोस्वामी), *'असमीया नाटर अध्ययन* (परेश बैश्य), *'डाइनी, अंधविश्वास, स्वयं घोषित* (रेखाश्री संदिकै) इत्यादि।

धर्म–संस्कृति के क्रम में डॉ० भूपेंद्र रायचौधरी कृत *'कीर्तन कथामृत* एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें शंकरदेव रचित कीर्तन–घोषा' के आख्यानों को सहज गद्य के रूप में प्रस्तुत किया है। भक्ति-विषयक रचनाओं से समृद्ध भबेन दुवरी की कृति *'भक्ति प्रवाह* के अतिरिक्त प्रियनाथ शर्मा द्वारा रचित 'रामायणर अमृत भांड' उल्लेखनीय है।

जीवनी–आत्मजीवनी

असम के वैष्णव–साहित्य के प्रकाशक एवं अध्येता, कृति अध्यापक हरिनारायण दत्त बरूवा (1885–1959 ई०) के जीवन और कृतित्व का सांगोपांग विवेचन डॉ० भूपेंद्र रायचौधरी के *'साहित्य महीरुह हरिनारायण दत्तबरूवा* में हुआ है। समाज सेविका एवं स्वतंत्रता–सेनानी चंद्रप्रभा शइकीयानी

पर आधारित अपर्णा महंत की जीवनी है – चंद्रप्रभा शइकीयानी–स्वाधीनता पूर्व असमर स्त्री शिक्षा आरु नारी जागरण'। वैसी ही असम की प्रथम महिला प्रशासनिक अधिकारी शुचिब्रता रायचौधरी पर निकुमणि हुसैन ने लिखा है– स्नेहनीड़–शुचिब्रता रायचौधुरी कथारे'। लोकगीत (वनगीत) के कृति गायक एवं गीतकार के जीवन पर आधारित हेमंत कुमार बरूवा की जीवनी है– 'बनकोंवर आनंदिराम दास'। रूपम बरूवा ने 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस' में नेताजी के जीवन को रेखांकित किया है। अन्य कुछ जीवनियाँ हैं– *'वरेण्य गणितज्ञ* (परेश बैरम), *'महत् लोकर अमृत जीवन* (कनकलता नेओग), *'शिक्षक* (रणजित डेका), *'पंचयन महत् लोकर जीवनी* (नितु गोस्वामी), *'मोर जीवनर पाठ* (स्वप्नाली काकति)' *'चंद्रमा शइकीयानी* (अपर्णा महंत), *'अनुपम चरित्र मनोरम व्यक्तित्व* (उपेंद्र बरकटकी), *'नरेंद्रभाई* (प्रमोद कलिता), *'बरेण्य असमीया* (परेश बैरम), *'बार्टार्ड रासेल* (मुकुट चौधुरी), *'दूर आकाशर तरा लेखिलेखि* (नवाब दिलोवार हुसैन) इत्यादि।

आत्मजीवनी और संस्मरणात्मक कथाओं का भी प्रकाशन आलोच्य वर्ष में हुआ है। इनके कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं– *'जीवनर माधै मालती* (दीनेश बैरम), 'सोंवरणित रामधेनु' (सं. हेमंत कलिता), *'बिजयिनी* (जूली बरूवा), *'मोर मौन संग्राम आरु जय* (अरुंधती दत्त), *'एगटाकी महिलार चांचल्यकर स्वीकारोक्ति* (पारबीन चुलताना), *'कलिजा काँइटे बिन्धिले जि चराये गान गाय* (गीतिमालिका नेओग) इत्यादि।

भ्रमण वृत्तांत

नए–नए स्थानों में भ्रमण करते समय पर्यटकों के मन में अनेक जिज्ञासाएँ होती हैं, जिन्हें वे विभिन्न सूत्रों से खोजते हैं। नए स्थान के संबंध में कुछ प्रतिक्रियाएँ होती हैं जिनका लाभ पाठकवर्ग को मिलता है। आलोच्य वर्ष में भ्रमण से संबंधित कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, यथा– दिपाली दास ने कश्मीर, सोमनाथ ज्योतिर्लिंग, रामेश्वरम, अंदामान, सिंगापुर आदि भ्रमण का वर्णन *'प्रांतर इपारे सिपारे* मैं किया है। डॉ० किशोरी मोहन पाठक का *'जापान भ्रमण*; राघव चंद्र डेका का *'पेंगुइनर देश कुमेरु*; हेमचंद्र शर्मा का

'*हिमालयर क्रेकत*, चफिकुर रहमान का '*देशे देशे मोर देश*, नमिता बरा का 'पूर्व पाकिस्तानर परा पूव भारतलै सांवादिक, इत्यादि कुछ उल्लेखनीय भ्रमण–वृतांत हैं।

लोक–संस्कृति

असम के लोक–साहित्य एवं विभिन्न जन–गोष्ठियों की संस्कृति पर भी कुछ कृतियों का प्रकाशन हुआ है। बंगाल एवं बांग्लादेश के समीपवर्ती असम के जोवालपारा (अनिभक्त) की लोकसंस्कृति की अपनी एक पहचान है। इससे संबंधित कुछ प्रकाशित पुस्तकें हैं– '*गोवालपरीक्षा लोक–संस्कृतित प्रकृति*' (दीपा तामुली), '*गोवालपरीक्षा लोक–संस्कृतित प्रकृति*' (दीपा तामुली), '*गोवालपरीका लोकगीत सुगंधि सौरभ*' (दविजेन नाथ), '*गोवालपरीमा लोककथार मौकोंह*' (द्विजेन नाथ)। लोक–संस्कृति से संबंधित अन्य कुछ कृतियाँ हैं– '*असमीया समाजर विवाह पद्धति* (अकन देवी), '*शब्द–शिल्प*' (दिलीप तालुकदार), '*रसेर नागर*' (सं. प्रसन्न कुमार नाथ), '*शरणीया कछारी संस्कृति*' (बाबु रामा हाकाचाम), '*एहेजार एटा बिहु नाम*' (मिन्टुमणि शइकीया), '*नामनि असमर चरचापरिर लोकसंस्कृति*' (हबिबुर रहमान) इत्यादि।

इतिहासपरक कृतियाँ

असम में महापुरुषीया धर्म यानि श्रीश्री शंकरदेव व श्रीश्री माधवदेव प्रवर्तित नव–वैष्णव धर्म का विशेष महत्व है। उन्होंने अपने धर्म प्रचार के लिए विभिन्न स्थानों में सत्रों की स्थापना की थी, जहाँ संकीर्तन एवं धार्मिक गतिविधियाँ चलती हैं। वैसे ही श्रीश्री माधवदेव स्थापित बरपेटा सत्र का विशेष महत्व है। डॉ० भूपेंद्र रायचौधरी कृत '*बरपेटा सत्रह इतिवृत्त* में सत्र स्थापना से लेकर वहाँ होनेवाले गुरुजनों की पुण्य–तिथियों, उत्सव–पर्वो के सचित्र वर्णन हैं। सन् 1979 ई० से लेकर छह वर्षो तक विदेशी घुसपैठियों के वितारण के निमित्त होनेवाले असम आंदोलन पर प्रकाशित दो कृतियाँ हैं– 'असम आंदोलनः युगमीया चिंतार एक प्रतिफलन (डॉ० जयश्री गोस्वामी महंत) और '*असम आंदोलनर बुरंजी* (जी. सी. शर्मा ठाकुर)। अन्य कुछ उल्लेखनीय इतिहासपरक कृतियाँ हैं– '*प्रथम महासमर* (दिगंत ओजा), '*असमर जातीय*

संगीत आरु इतिहास (सूर्य हाजरिका), *'मिजोरम आरु असम आंदोलन* (मधुसूदन तालुकदार), *'बुरंजी केइटामान अध्याय* (कृष्णा शइकीया), 'मायामरा संप्रदाय – ऐतिहय आरु इतिहास' (जुमि बरूवा गगै) इत्यादि।

अनुवाद

साहित्य में अनुवाद का एक विशेष महत्व है जिसके कारण अन्य भाषा के साहित्य का रसास्वादन किया जा सकता है। इस दृष्टि से आलोच्य वर्ष में काफी अनुवादों का प्रकाशन हुआ है। असम के प्रथम और भारत के पंचम ICS अधिकारी आनंद राम बरूवा (1850–1889 ई०) कृत प्राचीन भारत के भूगोल का डॉ० मुहम्मद ताहेर ने अंगेजी से असमिया में अनुवाद किया है– 'प्राचीन भारतर भूगोल' शीर्षक से, जिसमें प्राचीन भौगोलिक स्थानों के अतिरिक्त तत्कालीन जन–गोष्ठियों का परिचय, नद–नदी, पहाड़–पर्वत आदि के नाम भी समाविष्ट हैं। प्रसिदध कथाकार सआदत हसन मंटो की जन्मशती के उपलक्ष्य में उनकी *'गुरुमुखसिंह की वसीयत*, *'टोबा टेकसिंह*, *'ठंडा गोश्त*, *'तमाशा*, *'धुआँ*, *'बू* जैसी बीस चर्चित कहानियों का डॉ० भूपेंद्र रायचौधरी ने असमिया में अनुवाद किया है *'छादात हाछान मन्टोर बाछकबनीया गल्प* शीर्षक से जिसमें अनुवादक ने लंबी भूमिका भी जोड़ी है।

आमिनुर रहमान ने जीवन को प्रेरित करनेवाली कुछ अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद किया है, यथा– *'कार्मकरी प्रेरणार उत्स* (मूलः टॉमस फूलर), *'आत्म परिचालनार सफल नीति* (मूलः लुइजे एरिकसन), *'सुखी आरु सफल जीवनर संधानत* (मूलः खेरेंड जॉन वेलछ लि), *'आत्म परिचालना* (मूलः लुइजे एरिकसन), *'मानसिक शांति वृद्धि करार उपाय* (मूलः टॉमस फूलर), 'एटा उत्साही मन गढ़ि तोलार साधना' (मूलः नर्मेन विनसेंट पील), *'समर्थक चिंतार उक्ति* (मूलः नेपोलियन हिल) इत्यादि। डॉ० पोना महंत ने फर्डिनंड द चच्युर की भाषा विषयक पुस्तक का *'साधारण भाषाविज्ञानर पाठ* शीर्षक से सफल अनुवाद किया है। डॉ० भूपेंद्र रायचौधरी ने गांधीजी की आत्मजीवनी का 'मोर सत्यर अन्वेषण' शीर्षक से अनुवाद किया है। डॉ० थानेश्वर शर्मा ने कथा–सरित्सागर की कथाओं का सफल अनुवाद किया है। अन्य कुछ

अनूदित कृतियाँ हैं – '*संगीहीन संसार* (माइनी महंत, मूलः वासवीर हुसैन), '*सेइजन ममेइ* (सुप्रभा गोस्वामी, मूलः सुनील गंगोपाध्याय), 'जादुकरी बाँही (अतनु कलिता, मूलः क.म. मुंशी), '*घोंरार डिमा* (तुलतुल बरूवा, मूलः एम. एस. प्रभाकर) इत्यादि।

बाल–साहित्य

बाल–साहित्य में कुछ जीवनियाँ और बाल–कथाएँ प्रकाशित हुई हैं। जीवनियों में उल्लेखनीय हैं– '*रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा*, '*अंबिकागिरी रायचौधरी*, पद्मनाथ गोहाजिबरूवा', '*नलिनी बाला देवी* (निकुमणि हुसैन); प्रसन्नलाल चौधरी' (भूपेंद्र रायचौधरी); '*स्वामी विवेकानंद*, '*वीर चिलाराम*, '*डॉ० ए.पि. जे. अब्दुल कलाम* (अभिजित शर्मा) इत्यादि। कुछ बाल–कथाएँ हैं– '*आइतार चिठि*, '*साधुर संफुरा*, '*मिठा–मिठा पौराणिक उपाख्यान* (अनुराधा दास); '*धनमणिहंतर अरण्य* (रीतामणि फुकन गगै), '*एकांजलि जोनाक* (अदिति खाओंद), '*पाटकाइ पाददेशर एश एटा जनगोष्ठीय साधुकथा* (दिव्यलता दत्त), '*बहुत किताब बहुत लिखक* (इंदिरा शर्मा), '*दुइ मेड़ा रखीभार परिणति*, '*चिण्डारेला आरु अन्यान्य दहटा साधु* (चित्रभानु), चीन देहार साधु (सुप्रीति फुकन, शरत कुमार फुकन), '*हाबेल* (भरत राजखोबा), '*बाघे चिजरा पाहारलै* (नीहार चौधरी) इत्यादि।

विविध

इस विधा के अंतर्गत कई प्रकार की रचनाएँ आती हैं– हास्य–व्यंग्य (लघु रचना), रिपोर्ताज, स्वास्थ्य संबंधी, अभिनंदन ग्रंथ, स्मृतिग्रंथ, कोश और पत्रिकाएँ।

हास्य–व्यंग्य से संबंधित कुछ लघु रचनाएँ हैं– '*मइहेनो आगतकै टेङर हेछो* (तबिउल हुसैन), '*जीवनर सरू–बर आनंद* (निर्मल चाहेवाला), 'चित्रलेखा' (ज्योतिप्रसाद शइकीया), '*विषहरि मंत्र* (दासो कलिता) इत्यादि।

उल्फा और विच्छिन्नतावादी आतंकवादी नेता परेश बरूवा से म्यांमार के जंगल में मिलना और उनसे स्वतंत्र असम की माँग पर बेबाक साक्षात्कार लेना एक जोखिम भरा कार्य था जिसको पत्रकार राजी भट्टाचार्य ने पूरा

किया था। इस रिपोर्ट का शीर्षक है – 'परेश बरुवार संधानत' (परेश बरूवा की तलाश में)।

स्वास्थ्य संबंधी कुछ प्रकाशित कृतियाँ हैं– *'स्वास्थ्य रक्षार सरु–वर कथा* (डॉ० जीवन दत्त बरूवा), *'हृदपिंड केनेकै सुस्थ राखिब पारि* (डॉ० वासंती बरूवा), *'चिकित्सकर अभिज्ञता* (डॉ० गोकुल बरा) इत्यादि।

दो महत्वपूर्ण अभिनंदन ग्रंथ हैं– 'अपर्णा कुमार पद्मपति' (सं. बागेश्वर खाओंद) और *'डॉ० गोविंद प्रसाद शर्मा* (स. परी हिलैदारी)। पद्मपति जी असम इंजीनियरिंग कॉलेज के सफल अध्यापक रहे हैं और प्रोफेसर गोविंद प्रसाद शर्मा एक कृति साहित्यकार हैं। असम के प्राच्य तत्वविद् प्रोफेसर महेश्वर नेओग की जन्म शती पर प्रकाशित स्मृतिग्रंथ हैं– *'जन्म शतबर्षर पोहरत पाण्डित्य–वारिधि डाक्टर महेश्वर नेओग'* (सं. डॉ० नगेन शइकीया)।

कुछ उल्लेखनीय प्रकाशित कोश हैं – *'देहरी असमीया चित्र शब्दावली* (संगीता शइकीया), *'ब्रजावली असमीया अभिधान* (हीरेन भागवती), *'कोच–राजवंशी भावार संपूर्ण शब्दकोश* (अरुण रम), 'तुलनामूलक शब्दकोश (फ्रांसिस बुकानन हेमिल्टन)।

सामान्य रूप में, नियमित प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं के अतिरिक्त विभिन्न विशेष संगोष्ठी, समारोह के अवसर पर पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। इस क्रम में *'चर–चापरि* (सं. इसमाइल हुसैन) एक शोधपरक पत्रिका है। भाषा–साहित्य, समाज–संस्कृति पर अन्य एक शोधपरक पत्रिका है *'ऐतिहय आरु उजान* (सं. नंदिता भट्टाचार्य गोस्वामी व सविता देवनाथ)। अन्य कुछ' विशेष पत्रिकाएँ हैं– *'एनाजरी* (मराण आंचलिक छात्र–संस्था की रङाली बिहू पत्रिका), *'मेजांकरि* (चारि बिहू की पत्रिका), *'बिहुवाली* (आयल इंडिया की पत्रिका), *'समन्वय* (चाबुवा बिहू की पत्रिका) इत्यादि।

अतः देखा जाता है कि वर्ष भर में प्रकाशित असमिया साहित्य आशाप्रद है। धीरे–धीरे प्रकाशकों और पाठकों की जागरूकता वृद्धि होने पर साहित्य के प्रकाशन को गति मिल रही है।



2

ओडिया साहित्य

डॉ० विजय कुमार महांति

प्राचीन काल में ओडिशा प्रदेश उत्कल, कलिंग, उड्र नाम से प्रचलित था। इन तीन राज्यों के सम्मिश्रण से आधुनिक ओडिशा का स्वरूप बना था। आधुनिक ओडिशा प्रदेश का गठन 1 अप्रैल, 1936 को हुआ। ओडिया भाषा उत्काल या ओडिशा की भाषा है। ओडिया भारतीय संघ राज्य के आर्यभाषा समुदाय की एक मानक भाषा है। खुशी की बात है कि ओडिया भाषा को सन् 2014 में शास्त्रीय मान्यता मिली है। फलस्वरूप ओडिया अब तेलुगु, तमिल, कन्नड और मलयालम की तरह एक शास्त्रीय भाषा बन चुकी है। मागधी अपभ्रंश से ओडिया भाषा का उद्भव हुआ है। यह भाषा इतनी उदार है कि अन्य भारतीय भाषाओं को अपने में समाहित करने की अपूर्व क्षमता रखती है। विशेषरूप से हिंदी, बंगला, तेलुगु भाषा–भाषी ओडिशा में रहते हुए कोई खटकाव महसूस नहीं करते हैं। ओडिया भाषा की लिपि है ओडिया। इसका उदभव प्राचीन ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ओडिया भाषा का प्राचीन साहित्य जितना समृद्ध है, आधुनिक साहित्य भी उतना समृद्ध है। आदि कवि सारला दास से लेकर अधुनातन युग तक ओडिया साहित्य के विकास की एक लंबी परंपरा है। बलराम दास, दीनकृष्ण दास, जगन्नाथ दास, उपेंद्र भंज, अभिमन्यु सामंतसिंहार, कवि सूर्य बलदेवरथ, संत कवि भीम भोइ, फकीर मोहन सेनापति, मधुसूदन राओ, राधानाथ राय, गंगाधर मेहेर, गोपबंधु दास, कालिंदी चरण पाणिग्रही, कांतकवि लक्ष्मीकांत महापात्र, नित्यानंद

महापात्र, गोपीनाथ महंति, सच्चि राउतराय, रमाकांत महापात्र, गुरुप्रसाद महांति, राजेंद्र किशोर पंडा, मनोज दास, ब्रजनाथ रथ, प्रतिभा राय, वीणापाणि महांति, अपर्णा मंहाति जैसे कई प्रमुख साहित्यकारों ने ओडिया साहित्य को नई चिंता और चेतना से समृद्ध कर सर्वभारतीय स्तर पर पहुँचाया है। ओडिया साहित्य की प्राणवत्ता और रूपचेतना आज किसी भी प्रांतीय साहित्य की तुलना में बहुत आगे है। ओडिया साहित्य में आधुनिक युग का प्रारंभ लगभग 1880 ई. से माना जाता है। हिंदी साहित्य के प्रेमचंद की भाँति फकीर मोहन सेनापति को आधुनिक ओडिया साहित्य का स्रष्टा माना जाता है। फकीर मोहन उस समय जन्मे जिस समय ओडिया भाषा और साहित्य की चरम अधोगति हुई थी। फकीर मोहन ने ओडिया भाषा और साहित्य के रक्षा–समर में सेनापति (अधिनायक) बनकर इस भाषा की रक्षा की थी। उन्होंने सबसे पहले ओडिया में गद्य साहित्य की सृष्टि की और इसमें कहानी और उपन्यास आदि लिखे। उन्हीं के अविराम संघर्ष का परिणाम है आज का समृद्ध ओडिया कथा साहित्य। वस्तुतः ओडिया भाषा और साहित्य को उनकी देन अविस्मरणीय है। विवेच्य वर्ष 2014 में ओडिया साहित्य के विकास की दिशा में कलम चलाने वाले कवि, कथाकारों के नवीन सृष्टि संभार का मूल्यांकन यहाँ प्रस्तुत करने की कोशिश की जा रही है।

उपन्यास – साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास को सर्वाधिक लोकप्रिय विधा माना जाता है। इस दृष्टि से समाज के अधिकांश चित्र उभारनेवाले उपन्यास को समाज का एक छोटा–सा दर्पण कहना असमीचीन नहीं है। “Novel is a portable mirror of the society.” आधुनिक ओडिया कथा साहित्य में सबसे पहले फकीरमोहन सेनापति ने लछमा,मामुँ, छ माण आठ गुंठ (छह बीघे जमीन), प्रायश्चित जैसे चार उपन्यास लिखकर ओडिया उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। फकीरमोहन के बाद स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तरकालीन कई प्रमुख उपन्यासकारों ने ओडिया उपन्यास साहित्य को अपनी आंगिक और आत्मिक दृष्टि से समृद्ध किया। विकास की इस परंपरा में चलते हुए इक्कीसवीं सदी

के कुछ नए पुराने उपन्यासकारों से उपन्यास साहित्य का पुष्कल परिप्रकाश होता जा रहा है।

वर्ष 2014 में प्रकाशित कुछ उपन्यासों की संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है।

'महाभारत युद्‌ध परे' अर्जुन चरण पंडा द्‌वारा लिखित एक सफल पौराणिक उपन्यास है। यह उपन्यास मा सारदा पब्लिकेशन्स, कटक द्‌वारा प्रकाशित है। इसमें महाभारत युद्‌ध के बाद की कई घटनाओं का सुंदर चित्रण किया गया है। देवाशीष पाणिग्रही द्‌वारा लिखित तीन उपन्यासों का एक उत्कृष्ट उपन्यास संकलन है 'विविध'। इसमें नील जाह्‌वर रात्रि, राग चारु केशी और भिन्न षड़ज तीन उपन्यास स्थानित हैं। डॉ. भागवत बेहेरा ओडिया उपन्यास साहित्य में एक जाने-माने उपन्यासकार हैं। आप कई चर्चित पौराणिक उपन्यासों के स्रष्टा हैं। कुबुजा, पुतना, कृष्णस्तु भगवान स्वयम्, कंस, रुक्मिणी, देहि पद पल्लव मुदारम् आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। वर्ष 2014 में उनसे लिखित 'सालवेग' नामक उपन्यास सत् साहित्य, बालेश्वर द्‌वारा प्रकाशित है। ढाई सौ, तीन सौ पृष्ठवाली यह पुस्तक एक अनोखी रचना है। उत्कलियों के आराध्य देव महाप्रभु श्रीजगन्नाथ की असीम लीला और परम भक्त सालवेग की समर्पित भक्ति भावना पर उपन्यास की कथावस्तु आधारित है। मुसलमान पिता और ब्राह्मणी माता के अंश से जन्मे एवं मुसलमान संप्रदाय में पले यवन सालवेग कैसे महाप्रभु श्री जगन्नाथ के परम भक्त बने और हमेशा के लिए अजर–अमर हो गए, इस अमृतमयी कथा की उपस्थापना लेखक ने बड़ी आकर्षक शैली में की है। डॉ. कार्तिकेश्वर पात्र उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि लिखने वाले एक चर्चित व्यक्तित्व हैं। सन् 2014 में सुवर्णश्री प्रकाशिनी, बालेश्वर द्‌वारा प्रकाशित 'मंदोदरी' उनका एक सफल पौराणिक उपन्यास है। उपन्यास की कथावस्तु महाप्रतापी लंकेश्वर रावण की पत्नी मंदोदरी के आदर्श और उदात्त चरित्र के विविध पहलुओं पर आधारित है। वर्ष 2014 में शशिकांत परिड़ा के द्‌वारा लिखित *'प्रत्ययर पदध्वनि'* सामाजिक समस्याओं तथा समाज की वास्तविक घटनाओं को

विविध चरित्रों के जरिए प्रकाशित करनेवाला एक सार्थक उपन्यास है। इससे पहले आपके कई उपन्यासों को पाठकों की आदृति मिल चुकी है। ओडिया उपन्यास साहित्य में सृष्टिधर परिड़ा की एक अलग पहचान है। सन् 2014 में आपके द्वारा लिखे गए उपन्यास '*राजनीति*' का प्रकाशन हुआ है। यह एक सफल राजनैतिक उपन्यास है। श्रीयुत परिड़ा एक सफल पत्रकार, कहानीकार और उपन्यासकार हैं। आलोच्य उपन्यास में सांप्रतिक जमाने की लाभ ओर लोभ की राजनीति, मानवीय मूल्यबोध का अवक्षय, सामाजिक विसंगति का वास्तविक चित्रण हुआ है। पूरे उपन्यास में पाठकीय उत्कंठा भरी रहती है। एक शोषणमुक्त स्वस्थ समाज निर्माण ही लेखक का उद्देश्य है। उपन्यासकार दयानिधि दास के द्वारा लिखित '*अस्तसूर्यर आभा*' एक सार्थक सृष्टि है। इसमें सामाजिक स्तर की कई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। महापात्र पूर्ण चंद्र देवार्य के '*वसुधैव कुटुंबकम्*' (भाग–2) उपन्यास में वस्तुतः सामाजिक सौहार्द, स्नेह, सहानुभूति और भाईचारे की प्रतिष्ठा के लिए भरसक प्रयास किया गया है। धुरंधर विश्वाल के द्वारा लिखित '*उपासना*' उपन्यास में लेखक की अनुभूति को चित्रित किया गया है। डॉ. प्रफुल्ल कुमार दास का '*आग्नेय गिरि*' एक आध्यात्मिक उपन्यास है। आध्यात्मिक चिंतन और विश्वासों पर आधारित यह उपन्यास जनमानस में गहरा आलोड़न उत्पन्न करता है। डॉ. कार्तिकेश्वर पात्र के '*अर्जुन उवाच*' उपन्यास में अनुरूप भावना पाई जाती है। युगश्री युगनारी प्रकाशन, बालेश्वर के द्वारा प्रकाशित प्रदीप चटर्जी के उपन्यास '*आम वाच्य र उपसर्ग*' में नारी सशक्तिकरण, एक आदर्श दंपत्ति की कर्तव्य निष्ठा और त्याग से निर्मित समाज के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। लेखिका अर्चना नायक के द्वारा लिखित '*राणी श्यामावती*' उपन्यास मनोरमा पब्लिशर्स, बालू बजार, कटक द्वारा प्रकाशित एक सफल ऐतिहासिक उपन्यास है। बौद्ध युग की पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत रोचक है। पाठक इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। उनकी उत्कंठा बनी रहती है। उपन्यास की कीमत 200 रुपए रखी गई है। इस प्रकार 2014 में प्रकाशित ऐसे बहुत सारे उपन्यासों ने ओडिया उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया है।

कहानी – फकीर मोहन सेनापति की सन् 1898 में प्रकाशित 'रेवती' कहानी ओडिया साहित्य की पहली कहानी मानी जाती है। उनकी कहानियों की यादुकरी स्पर्श और हृदयस्पर्शी प्रभाव ने कई कहानिकारों को जन्म दिया। फलतः गोदावरीश महापात्र, कालिंदी चरण पाणिग्रही, भुवनेश्वर बेहेरा, अखिलमोहन पटनायक और आगे चलकर चिंतामणि महांति, गोपालचंद्र प्रहराण, लक्ष्मीकांत महापात्र, दयानिधि मिश्र जैसे कहानिकारों ने समाज सुधार, ग्रामीण समस्या पर बल देकर कहानियाँ लिखीं। स्वतंत्रता के पश्चात् ओडिया कहानी साहित्य में अभूतपूर्व विकास होने लगा। खासकर साठोतरी ओडिया कहानी की रचना शैली में काफी परिवर्तन हुआ। आज ओडिया कहानियों में युगानुकूल परिवर्तन दिखाई दे रहा है। गोपीनाथ महांति, वीणापाणि महांति, प्रतिभा राय, मनोज दास, विभूति पट्टनायक, गौरहरि दास जैसे कहानीकारों की कहानियाँ केवल ओडिया साहित्य में नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य में स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। वर्ष 2014 में प्रकाशित कुछ प्रवीण और नूतन कहानीकारों की कृतियों से ओडिया कहानी साहित्य समृद्ध हुआ है। नीचे इसकी संक्षिप्त जानकारी दी जाती है।

तीन सौ से अधिक कहानियाँ और बीस उपन्यास के स्रष्टा ओडिया साहित्य के जाने माने कथाकार, संप्रति ओडिया साहित्य अकादमी के सभापति श्रीयुत सातकड़ि होता के द्वारा लिखा गया 'नित्यवृंदावन' सुवर्ण श्री प्रकाशिनी, बालेश्वर द्वारा प्रकाशित एक बहुचर्चित कहानी संकलन है। इस संकलन में 17 कहानियाँ संकलित हैं, कहानियाँ अलग–अलग स्वाद की हैं। वस्तुतः इन कहानियों में चित्रित चरित्र समाज में रहनेवाले जीवन–यंत्रणाओं का सामना करने वाले मनुष्यों का है। लेखक ऐसे चरित्रों के दुख–दर्द से भली–भाँति परिचित हैं। उन्होंने अपनी कलम की नोक से इन सबका चित्रण करते हुए आत्म-संतोष प्राप्त किया है। निःसंदेह पाठकों से ये कहानियाँ आदृत होंगी।

पदमश्री मनोज दास एक सर्वतोमुखी प्रतिभाधर साहित्यकार हैं। आप न केवल ओडिशा में बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक जाने माने

कथाकार हैं। अनेकानेक पुरस्कार आदि सम्मानों से सम्मानित मनोज बाबू के इस साल *'अदधशतक एक विचित्र कहाणी'* और *'अदधशतक किशोर काहाणी'* नामक दो कहानी संकलनों का प्रकाशन क्रमशः जगन्नाथ रथ, विनोद बिहारी कटक तथा फ्रेंडस पब्लिशर्स कटक द्वारा हुआ है। मूलतः ये कहानियाँ मनोज बाबू के द्वारा समय-समय पर दिए गए व्याख्यान के विविध प्रसंगों पर पर्यवेशित हैं। कहानियों में लेखक के जीवनानुभव और सूक्ष्म चिंतन का रेखांकन हुआ है। कहानियों की कथावस्तु बड़ी आकर्षक शैली से उपस्थापित की गई है।

वीणापणि महांति आधुनिक ओडिया कथा साहित्य में एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। ओडिया साहित्य अकादमी, केंद्र साहित्य अकादमी तथा अन्य कई पुरस्कार और सम्मानों से सम्मानित श्रीमती महांति के आज तक 25 कहानी संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। उनमें चार सौ से अधिक कहानियाँ संकलित हैं। इस साल उनकी समस्त कहानियों से कुछ कहानियाँ चुनकर एक श्रेष्ठ कहानी संकलन तैयार किया गया है। 'वीणापाणि महांतिङ्क श्रेष्ठ गल्प' नामक इस पुस्तक का प्रकाशन एन.बी.टी, नई दिल्ली ने किया है। पुस्तक का संपादन विशिष्ट साहित्यकार डॉ. विजयानंद सिंह ने किया है। 346 पृष्ठ वाली इस पुस्तक की कीमत 275/- रुपए रखी गई है। पुस्तक में स्थानित सारी कहानियाँ बहुचर्चित हैं।

वर्ष 2014 में कटक स्टुडेंट्स स्टोर बालू बजार, कटक के द्वारा प्रकाशित ओडिया साहित्य के विशिष्ट कथाकार विभूति पट्टनायक के द्वारा लिखे गए *'झिअ जन्म'* कहानी संकलन ओडिया साहित्य की एक विशिष्ट उपलब्धि है। इस कहानी संकलन में कुल बीस कहानियाँ संकलित हैं। परिवार में बेटी के जन्म से लेकर शादी के बाद अपना परिवार छोड़ ससुराल जाने तक की विविध घटनाओं पर ये कहानियाँ लिखी गई हैं। पुस्तक की पहली कहानी *'झिअ जन्म'* पर पुस्तक का नाम रखा गया है। आलोच्य पुस्तक की प्रत्येक कहानी रोचक और प्रभावोत्पादक है।

विवेच्य वर्ष में विशिष्ट लेखिका डॉ. कविता बारिक के ज्ञानयोग पब्लिकेशन्स, भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित कहानी संकलन *'निःसर्त्त उच्चारण* के प्रकाशन ने ओडिया कहानी साहित्य की श्रीवृद्धि की है। इस कहानी संकलन में 14 कहानियाँ हैं। समाज, सामाजिक परिवेश, संस्कृति, परंपरा, जीवन और प्रेम आदि पर आधारित डॉ. बारिक की ये कहानियाँ पाठकों को आनंद प्रदान करने में समर्थ पाई जाती हैं। दो सौ सत्ताईस पृष्ठवाली इस पुस्तक का मूल 175/– रुपए रखा गया है।

ओडिया कथा साहित्य में निवारण जेना का एक स्वतंत्र परिचय है। आपने कई भिन्न स्वाद के उपन्यास और कहानियाँ लिखकर ओडिया कथा साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की है। वर्ष 2014 में उनका कहानी संकलन *'बापाङ्क शेषहस'* श्रद्धा पब्लिकेशंस, सहदेवखुंटा, बालेश्वर द्वारा प्रकाशित हुआ है। यह लेखक का सातवाँ कहानी संकलन है। इस संकलन में स्थानित कहानियाँ पाठकों की रुचि के अनुकूल पाई जाती हैं।

इस साल एथेना बुक्स, भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित सत्यप्रिय महालिक का 'तिनि आख्यान' कहानी संकलन और मा सारदा पब्लिकेशन, बाँका बजार, कटक के द्वारा प्रकाशित 'गुरु प्रसाद महांतिङ्क गल्प–समग्र' ओडिया कथा साहित्य की श्रीवृद्धि करने में काफी सफल हैं।

इन कहानी संकलनों के अलावा वर्ष 2014 में और भी कुछ महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रहों का प्रकाशन हुआ है। ये हैं – नीलपरी– गोपीनाथ मिश्र (मा सारदा पब्लिकेशंस, बाँका बजार, कटक), लंपट पुरुष ओ अन्यान्य गल्प – कार्तिक स्वाई, निआरा गल्प – सुबासिनी जी (दाशबाबू), प्रेतात्मा काहाणी – पीतांबर प्रधान, कृपा सागर साहुङ्क व्यंग्य गल्प – कृपासागर साहु, यो स्मृति रे अभुला काहाणी– धुरंधर विश्वाल, दृश्यांतर – गीतांजलि कर, झुमा – हृदानंद बेहेरा, मोहमाया ओ अन्यान्य गल्प – कार्तिक स्वाई आदि। इस प्रकार ओडिया कहानी साहित्य नए पुराने कहानीकारों की रचनाओं से समृद्ध होता जा रहा है। इसका भविष्य और भी उज्ज्वल है।

कविता – फकीर मोहन सेनापति, मधुसूदन राव, नंदकिशोर बल, गंगाधर मेहेर, राधानाथ राय आदि से शुरू हुई ओडिया कविता की धारा आगे चलकर सच्चिदानंद राउतराय, सीताकांत महापात्र, रमाकांत रथ, राजेंद्र किशोर पंडा, रवि सिं, हर प्रसाद दास, ब्रजनाथ रथ, ब्रह्मोत्री महांति, अपर्णा महांति, सरोजिनी षडंगी, सौभाग्यवंत महारणा, आशुतोष परिड़ा जैसे प्रमुख कवियों की कलम की नोक से बहुवर्णा बन गई। क्रमशः ओडिया कविता के आंगिक और आत्मिक दोनों रूपों में परिवर्तन देखने को मिला। ओडिया काव्य–कविताएँ अपना सीमित परिसर छोड़कर विश्वभर में फैलने लगीं। सांप्रतिक काल में नए पुराने कवि सर्वश्री फनी महांति, अपर्णा महांति, प्रतिभा शतपथी, सरोजिनी षड़ंगी, ब्रह्मोत्री महांति, ममता दास, सुचेता मिश्र, उपेंद्र नायक, हरिश्चंद्र बेहेरा, समरेंद्र महापात्र, इप्सिता षडंगी, तुहिनांशु रथ, श्री देव, पीतांबर नराइ, अयसकांत, कालीपद पंडा, अजय स्वाईं, विमल जेना, गोपाल–कृष्ण रथ, अरुण रंजन मिश्र, प्रमीला शतपथी, दीप्ति दास, समरेंद्र नायक, प्रशांत दास जैसे अनेकानेक कवियों की कवि प्रतिभा से ओडिया काव्य–साहित्य में नया दिगंत सृष्ट हो रहा है।

विवेच्य वर्ष 2014 में ओडिशा के यशस्वी कवि प्रोफेसर गोपालकृष्ण रथ जी को अपनी काव्य कृति 'विपुल दिगंत' के लिए केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है। साथ ही उदीयमान कवि नरेंद्र भोइ को अपनी काव्य कृति *'पीड़ा पर्व'* के लिए केंद्र साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से नवाजा गया है। ओडिया काव्य साहित्य में इन दोनों हस्तियों को पुरस्कृत किया जाना वस्तुतः हमारे लिए बड़े गर्व और गौरव की बात है। पर इस साल ओडिया साहित्य के विशिष्ट मानववादी कवि ब्रजनाथ रथ के निधन ने हमें गहरा दुख दिया है। कवि रथ न केवल ओडिशा में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर एक जाने माने कवि थे, हिंदी के प्रख्यात जनवादी कवि नागार्जुन की भाँति उनकी कविताएँ जनवादी चेतना से भरपूर रही हैं। अपने विराट व्यक्तित्व के बावजूद सबसे ऊपर एक मानुष थे। उनके निधन पर भारतीय साहित्य में बहुत बड़ी क्षति हुई है। सन् 2014 में उनकी मृत्यु के कुछ दिन पहले उनका

41 HRD/16—3B

व्यंग्य कविता संकलन 'व्यंग्य विनोद' का प्रकाशन सुवर्णश्री प्रकाशनी, बालेश्वर के द्वारा हुआ है। उससे पहले 'लघु शतक' नामक और एक व्यंग्य कविता संकलन का प्रकाशन हुआ था। इसे काफी प्रसिद्धि मिली है। 'व्यंग्य विनोद' में कुल अट्ठाईस कविताएँ हैं। हर कविता में समकालीन समाज में परिदृष्ट अन्याय, अविचार, कुसंस्कार, लाभ और लोभ की राजनीति आदि पर तीक्ष्ण व्यंग्य है। निराला और नागार्जुन की भाँति कवि की पैनी दृष्टि और व्यंग्य बाण ने कविताओं को सार्थक बनाया है।

ओडिया काव्य–साहित्य में कवि समरेंद्र नायक एक बहुचर्चित व्यक्तित्व हैं। इस साल उनका काव्य संग्रह *'शब्द सत्य शील* (भाग – 1 और 2) का सुवर्णश्री प्रकाशिनी, बालश्वर के द्वारा प्रकाशन हुआ है। प्रथम भाग में बारूद स्तूपर कविता, आउ चुप नुहें, शब्द नारी, लाल पत्र नूतन पृथिवी, दूर अतीत और द्वितीय भाग में – काइँच अगरे पाणि, कळाडिहर नाट्यगृह, त्रिकोण भूमि काव्य हैं। कुल आठ सौ से अधिक पृष्ठ वाले इन दो खंडों में विविध स्वादों की कविताएँ हैं। समाज, प्रकृति, सामाजिक व्यवस्था, नारी, राजनीति, सांप्रतिक स्थिति और समस्या आदि को लेकर लिखी गई कविताओं में कवि के विचार और जीवन दर्शन का परिचय मिलता है।

केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात कवि फनी महांति का कविता संकलन 'वंशीवादक' इस साल ज्ञान योग प्रकाशन, भुवनेश्वर के द्वारा प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 35 कविताएँ हैं। कीमत 100 रुपए रखी गई है। साथ उनके दूसरे काव्य संकलन *'अर्धनारीश्वर* का प्रकाशन पश्चिमा पब्लिकेशन, भुवनेश्वर द्वारा हुआ है। 80 रुपए कीमत वाली इस काव्यकृति में 33 कविताएँ हैं। उपर्युक्त दोनों काव्य संग्रहों में उपस्थापित कविताएँ समकालीन समस्याओं पर लिखी गई हैं। कवि की उपस्थापना शैली अत्यंत आकर्षक है।

सन् 2014 में जयंती प्रकाशन बालेश्वर दवारा प्रकाशित 'मन उपवन' युवा कवि कालीपद पंडा की एक अनन्य काव्य कृति है। इस संकलन में कुल मिलाकर 59 कविताएँ हैं। अलग–अलग भावनाओं तथा अनुभव पर आधारित

ये कविताएँ पाठकों की रुचि के अनुकूल पाई जाती हैं। इससे पहले प्रकाशित कवि पंडा के दो काव्य संकलन 'उत्तर दायाद' और 'वयसवसंत' को पाठकीय आदृति मिल चुकी है। इस साल प्रकाशित कवि विजय कुमार नंद की काव्य कृति *'आहत वसुधा* एक अनन्य कविता संकलन है। कवि आज की शासन व्यवस्था, स्वार्थ सर्वस्व राजनीति, शोषितों की पीड़ा आदि को देखकर व्यथित है। कवि ने इन सबके खिलाफ आवाज बुलंद की हैं। उनमें आशा की नई किरणें दिखती हैं। उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं के साथ अपने विचारों को इन कविताओं में बड़ी सुंदरता से उपस्थापित किया है। 151 पृष्ठ वाली इस किताब की कीमत 110 रुपए रखी गई है। विवेच्य वर्ष 2014 में प्रकाशित कवि लोचन बेहेरा की काव्य कृति *'गहन कथा* 41 व्यंग्य कविताओं का एक सफल काव्य संग्रह है। इस काव्य कृति में सामाजिक जन–जीवन की वास्तविक घटनाओं पर कवि ने निगाह डाल कर सारी विसंगतियों का पर्दाफाश करने का प्रयास किया है। 'मो व्यंग्य कविता, प्रणय तरंग, संसार संजीवनी और गुमर कथा आदि उनके पूर्व प्रकाशित लोकप्रिय कविता संकलन हैं। इस साल साहित्य श्वेत पद्मा पब्लिकेशंस, भुवनेश्वर के द्वारा प्रकाशित ओडिशा अकादमी, भुवनेश्वर के पूर्व सभापति तथा विशिष्ट प्रतिभाधर कवि हुसैन रवि गांधी के *'कर्ण* (खंड काव्य) में कवि ने महाभारत के प्रसिद्ध कर्ण के प्रोज्वल चरित्र की तरह अपने आप को रेखांकित किया है। कर्ण की भाँति कवि के स्वभाव और पौरुष का चित्रण अत्यंत मनमोहक बन पड़ा है। सरल सावलीला भाषा में लिखा गया यह खंडकाव्य पाठकों के लिए अत्यंत सुखपाठ्य बन गया है। कवि गांधी के द्वारा लिखित 'निअंट रात्रिर स्वप्न, शब्द ब्रह्म जैसी काव्य कृतियों को इससे पूर्व पाठकीय आकृति मिल चुकी है। विवेच्य वर्ष 2014 में केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार, कबीर सम्मान और सरस्वती सम्मान आदि से सम्मानित प्रख्यात ओडिया कवि श्रीयुत रमाकांत रथ की काव्य कृति *'पवनरे चित्रांकन* का प्रकाशन ग्रंथ मंदिर, बांका बाजार, कटक के द्वारा हुआ है। इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में मृत्युश्चेतना और प्रेम का सफल चित्रण देखने को मिलता है। कवि रमाकांत ने स्वानुभूति

और चिंतन का सूक्ष्म रेखांकन कर कविताओं को जीवंतता प्रदान की है। इस काव्य संग्रह के पूर्व प्रकाशित कवि की अन्य रचनाएँ श्री राधा, सप्तम ऋतु, संदिग्ध मृगया, श्री पलातक आदि काफी आदृत हो चुकी हैं। अपनी कृतियों की लोकप्रियता के कारण भारतीय काव्य साहित्य में कवि रथ की एक स्वतंत्र पहचान है। सन् 2014 में जाने माने कवि फकीर मोहन साहित्य परिषद के पूर्व सभापति श्रीयुत विमल जेना की काव्य कृति *'आकाश भलरे थाउ'* का प्रकाशन पक्षी घर प्रकाशनी, भुवनेश्वर के दवारा हुआ है। इस कविता संकलन की अधिकांश कविताएँ समाज, परिवेश, संस्कृति, नारी चेतना सामाजिक विसंगति आदि पर आधारित हैं। कवि जेना जी की भाषा और शैली अत्यंत आकर्षक है। पुस्तक की कीमत 100 रुपए रखी गई है। यह कविता संकलन निःसंदेह ओडिया पाठकों से आदर लाभ करेगा। विवेच्य वर्ष में कवयित्री बंदिता दास की काव्य कृति *'जीवनर नाना वाया'* एथेना बुक्स, भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित एक उच्चकोटि का कविता संकलन है। इस संकलन की कविताएँ कवयित्री दास की दैनंदिन जीवन की अनुभूति और चिंतन पर आधारित हैं। इस साल सोनाली रूपाली प्रकाशन, कुरूड़ा, बालेश्वर द्वारा प्रकाशित कवि डॉ. वंशी चौधरी का पहला कविता संकलन 'पक्षी गाउ काउ गीत' एक अभिनव सृष्टि है। इस संकलन में 37 कविताएँ स्थानित हैं। यद्यपि यह कवि चौधरी का पहला कविता संकलन है फिर भी इसमें कवि के अनुभव और विचारों का सफल रूपायन हुआ है। साथ ही इसमें कवि प्रतिभा की सारी संभावनाएँ स्पष्ट हो जाती हैं। 2014 में श्रीयुत सत्यानाश का 'माल गोदाम' काव्य संकलन मा सारदा पब्लिकेशंस, बांका बाजार, कटक के द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस संकलन में कवि के तीन व्यंग्य कविता –संकलनों को शामिल कर इसे एक बड़ी पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया. है। सांप्रतिक काल की सामाजिक अव्यवस्था, दुर्गति, सांस्कृतिक अवक्षय आदि पर आधारित इन कविताओं में कवि के व्यंग्य बाणों की बौछारें हैं। 544 पृष्ठवाली इस काव्य संग्रह की कीमत 325 रुपए रखी गई है। ओडिया काव्य साहित्य में कवि बांछानिधि दास का एक स्वतंत्र परिचय है।

बहु पुरस्कार और सम्मानों से सम्मानित कवि श्रीयुत दास की काव्यकृति 'हाट ओ अन्याय कविता' अलकानंदा प्रकाशिनी, अंगार गड़िआ, बालेश्वर द्वारा सन् 2014 में प्रकाशित हुई है। इस संकलन की कविताएँ समकालीन समाज, संस्कृति, परंपरा पर आधारित भिन्न–भिन्न स्वाद की हैं।

इस साल विद्याभारती बालेश्वर के द्वारा पंडित सुरेंद्र नाथ कर का कविता संकलन 'समय तरंग' भी एक सार्थक सृष्टि है। गाँ, गाई, बलद भिकारी, मातृभूमि, भारत, ग्रीष्म, हे नारी जैसी छोटी बड़ी 72 कविताओं को लेकर संकलित यह संकलन सहज, सुखपाठ्य प्रतीत होता है। कवि जलधर पंडा की काव्यकृति '*स्वप्न भंगार स्वर*' एक अनुपम कविता-संकलन है। बालेश्वर साहित्य संस्कृति कला परिषद के द्वारा 2014 में प्रकाशित यह पुस्तक पाठकों की आदृति प्राप्त करने में सफल हुई है। कवि श्री देव ओडिया कवियों में एक सुपरिचित नाम है। उनकी कविताओं में वर्णित भाव और उपस्थापना शैली का अलग वैशिष्ट्य है। 2014 में चंद्रभागा प्रकाशिनी बालेश्वर द्वारा प्रकाशित '*भूईं दहण*' उनकी एक विशिष्ट काव्य कृति है। इसमें 50 कविताएँ स्थानित हैं।

इसके अलावा और भी कविता संकलन प्रकाशित हुए हैं, जिनमें कुछ निम्न हैं–

नअ घंटार सहर (प्रशांत दास), कामनार नील दुनिआरे (मनस्विनी देवी), नारदङ्क पृथिवी भ्रमण (गंगाधर दास), भावसिंधु कल्लोक (नकुल चंद्र दास), शरत राति ओ अन्यान्य कविता (नलिनी कांत पाढ़ी), जीवनर स्वर (रवींद्र नाथ पाणि), झरा बण्ल (निहार रंजन राउतराय) नूआ पथ ओ अन्यान्य कविता (गीतांजलि कर), त्रिक्रोण भूमि (समरेंद्र नायक), बाघा (कमल कुमार महांति), इंदु नुहें कलंकिता (अरविंद पात्र), स्वयंभू (पूर्णचंद्र दे), शायुका (ब्रजेंद्र घोष), संगीत माधुरी (नित्यानंद बारिक), स्नात समयर से पाखे (प्रमीला शतपथी)।

निबंध और आलोचना

ओडिया साहित्य में निबंधकारों और आलोचकों की एक दीर्घ शृंखला है। पहले–पहल फकीर मोहन सेनापति, मधुसूदन राव, विश्वनाथ कर, गोपबंधु

दास, नीलकंठ दास जैसे कई निबंधकारों ने उत्कल की तत्कालीन स्थिति और समस्याओं पर महत्त्वपूर्ण लेख लिखकर इस विधा को समृद्ध किया था। आगे चलकर ओडिया साहित्य में निबंध, आलोचना, ललित निबंध, व्यंग्य लेख आदि प्रकाशित होने लगे। क्रमशः इस दिशा में नए–पुराने लेखकों के नवीन दृष्टिकोण और विचारों से ओडिया निबंध और आलोचना साहित्य में कुछ ऐसे बलिष्ठ लेखकों का योगदान देखने को मिलता है जिनका नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है। इनमें सर्वश्री चितरंजन दास, नटवर सामंत राय, चंद्र शेखर रथ, चिंतामणि बेहेरा, नित्यानंद शतपथी, वैष्णव चरण सामल, कृष्णचंद्र बेहेरा, पठाणि पट्टनायक, बाउरिबंधु कर, श्रीनिवास मिश्र, सुदर्शन आचार्य, दाशरथि दास, कृष्ण चंद्र प्रधान, कैलाश पट्टनायक, विजयानंद सिंह, मन्मथ कुमार प्रधान, दुर्गा प्रसन्न पंडा, रमाकांत बेहेरा, संघमित्रा मिश्र, इंदु मिश्र, देवेंद्र कुमार दास, अरविंद गिरि, बांछानिधि दास, विपिन विहारी विश्वाल, राधा रंजन पट्टनायक, शत्रुघ्न पांडव, विजय महारणा, राधागोविंद कोइला, श्रीकांत पात्र आदि प्रमुख माने जाते हैं। इनमें से इस साल प्रख्यात निबंधकार डॉ. दुर्गा प्रसन्न पंडा के आकस्मिक निधन ने ओडिया साहित्य को काफी नुकसान पहुँचाया है।

वर्ष 2014 में निबंध और आलोचना की अनेक पुस्तकें प्रकाश में आई हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं – आम संस्कृति : किछि वैचारिक विश्लेषण – डॉ. रमाकांत बेहेरा, मूल्यबोध, अनुशासन ओ अन्यान्य प्रबंध– गीतांजलि कर, दिव्यदृष्टि–शिशिर कुमार रथ, अमृतर अन्वेषण–उपेंद्र विश्वाल, स्मृति, समीक्षा ओ समस्या – उदय नारायण दास, विजय शतपथीङ्क नाट्य चिंता (आलोचना) – ज्ञान रंजन पंडा, बांगमय (आलोचना) – डॉ. धनेश्वर महापात्र, वैचित्र्यमय जलेश्वर (आलोचना) – विपिन बिहारी विश्वाल, भारनर साधुसंथ महापुरुषङ्क वाणी – रघुनाथ राउत, महाशक्ति श्री जगन्नाथ – डॉ. कल्याणी नंदी, वंदुर, विविध (डॉ. राधा रंजन पट्टनायक), पथचारी (गंगाधर दास), दीपिका (पद्मलोचन दे), प्रसंग बहुविध (बांछानिधि दास), गंजाय अंचकर कथित ओडिया भाषा (आलोचना) – डॉ. संतोषिनी पंडा, साहित्य रे विप्लव

ओ लिटिल मैगजिन (आलोचना) – प्रभाकर शतपथी, उपेंद्र भंजङ्क काव्य भाषा मूल्यायन (आलोचना) – डॉ. संतोषिनी पंडा, तुल्यकल्प (आलोचना) – संतोषी त्रिपाठी, ओडिया भाव परिक्रमा (आलोचना) – प्रेमानंद महापात्र, कालजयी प्रतिभा कवि सम्राट उपेंद्र भंज (आलोचना) – श्रीराम कथामृत (आलोचना), पथहुड़ार बाट (निबंध संकलन) – दुर्गा चरण षडंगी, कहिबाकु लाज (निबंध संकलन) – डॉ. चौधरी सत्यव्रत नंद, वैप्लविक श्रीराम कृष्ण (आलोचना) – तत्वकंदर मिश्र, ओडिशा रे बौद्ध धर्म ओ बौद्ध कीर्ति (आलोचना) – डॉ. विमलेंदु महांति, जीवन ओ मृत्युर रहस्य (आलोचना) – हटकिशोर बेहेरा, सनातन धर्मर सारकथा (आलोचना) – महापात्र नीलमणि साहु, पाश्चात्य साहित्य ओ समीक्षातत्व (संपादन) – डॉ. कृष्णचंद्र प्रधान, मो जीवन मो साहित्य (संपादन) – डॉ. कृष्णचंद्र प्रधान, दृश्य दृश्यांतर जीवन नाटक (संपादन) – डॉ. संघमित्रा मिश्र ; श्री मंदिरपर परंपरारे मंडप ऐतिह (आलोचना)-डॉ. भास्कर मिश्र, ओडिया शिशु साहित्य (संपादन) – उत्कल साहित्य समाज, कटक, बालेश्वर जिल्लार सारस्वत प्रतिभा – (संग्राहक) – डॉ. मन्मथ कुमार प्रधान, परिभ्रमणरे बालेश्वर (संग्राहक) – डॉ. मन्मथ कुमार प्रधान, ओडिशार प्रगतिशील साहित्यर आंदोलन ओ आंदोलनर साहित्य (संपादना और प्रकाशन) – जीवन संग्राम सारस्वत ट्रस्ट, बालेश्वर, भारतीय भाषार प्रथम आधुनिक गल्प (संपादन) – अरविंद राम, कन्हेइ कथा घर (संपादन) – असित महांति और प्रदीप्त श्री चंदन आदि। नीचे कुछ पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

'*विंदुरु विविध* डॉ. राधारंजन पट्टनायक के द्वारा लिखी गई एक चर्चित पुस्तक है। इस पुस्तक में दो भाग हैं– विंदु विचार और विविध विचार। पुस्तक में प्राचीन से आधुनिक साहित्य के विज्ञान भित्तिक विश्लेषण के साथ विविध सामाजिक, अर्थनीति संबंधी और राजनैतिक प्रसंगों के द्वारा इसका प्रकाशन हुआ है।

दृश्य दृश्यांतर जीवन नाटक :– प्रोफेसर डॉ. संघमित्रा मिश्र के द्वारा संपादित यह पुस्तक कई उत्कृष्ट लेखों का सुंदर संकलन है। सन् 2014 में इस प्रकाशन एथेना बुक्स, भुवनेश्वर के द्वारा किया गया है।

पाश्चात्य साहित्य और समीक्षातत्व :– प्रोफेसर डॉ. कृष्णचंद्र प्रधान के द्‌वारा संपादित इस पुस्तक का प्रकाशन प्राची प्रतिष्ठान, कटक ने किया है। ओडिशा के मूर्धन्य आलोचकों के द्‌वारा लिखित 27 लेख इस पुस्तक में सन्निवेशित हैं। उसी प्रकार डॉ. प्रधान से संपादित और एक पुस्तक 'मो जीवन मो साहित्य' में विभिन्न लेखकों की जीवनी और आदर्श पर प्रकाश डाला गया है। चिन्मय प्रकाशन, कटक ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया है।

प्रसंग बहुविध :– श्रीयुत बांछानिधि दास के द्‌वारा लिखी गई पुस्तक 'प्रसंग बहुविध' विद्‌या भारती, बालेश्वर द्‌वारा प्रकाशित हुई है। इसमें समकालीन समाज के विविध प्रसंगों पर उच्चकोटि के निबंध संकलित किए गए हैं।

विजय शतपलीङ्क नाट्‌यचिंताः– यह पुस्तक प्रख्यात नाट्‌यकार प्रोफेसर डॉ. विजय कुमार शतपथी के द्‌वारा लिखे गए विविध नाटकों पर एक चर्चित आलोचना पुस्तक है। श्रीयुत ज्ञानरंजन पंडा के द्‌वारा लिखित इस पुस्तक का प्रकाशन अग्रदूत प्रकाशन, कटक ने किया है।

आम संस्कृति :– किछि वैचारिक विश्लेषण – ओडिया साहित्य में निबंधकार और आलोचक के रूप में डॉ. रमाकांत बेहेरा एक परिचित नाम है। उन्होंने निबंध और आलोचना की कई पुस्तकें लिखी हैं। उनके द्‌वारा लिखित 'आम संस्कृति : किछि वैचारिक विश्लेषण' सुवर्णश्री प्रकाशिनी, बालेश्वर के द्‌वारा प्रकाशित है। आलोच्य पुस्तक में डॉ. बेहेरा ने निजी विचारों से हमारी संस्कृति की विविध दृष्टिकोणों से चर्चा की है। पुस्तक की कीमत 150 रुपए है।

भारतीय भाषार प्रथम आधुनिक गल्प :– इस साल श्रीयुत अरविंद दास के द्‌वारा संपादित और आम ओडिशा यूनिट –3, भुवनेश्वर द्‌वारा प्रकाशित 'भारतीय भाषार प्रथम आधुनिक गल्प' पुस्तक ओडिशा साहित्य में एक विशिष्ट उपलब्धि है। इस पुस्तक में ओडिया, बंगला, हिंदी, गुजराती, असमिया, सिंधी, तेलुगु, तमिल, कन्नड, मलयालम आदि 22 भाषाओं में प्रकाशित प्रथम आधुनिक कहानी को सन्निवेशित किया गया है। श्रीयुत राय का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

वैप्लविक श्रीराम कृष्ण :– विशिष्ट आलोचक तत्वकंदर मिश्र के द्वारा लिखित मा सारदा पब्लिकेशंस, बांका बाजार, कटक के द्वारा वर्ष 2014 में प्रकाशित *'वैप्लविक श्रीराम कृष्ण'* में रामकृष्ण परमहंस की जीवनी और कथाओं पर विशद आलोचना की गई है।

श्रीराम कथामृत :– प्रोफेसर डॉ. राधाकांत मिश्र द्वारा लिखित *'श्रीराम कथामृत'* ओडिया आलोचना साहित्य में एक अनन्य कृति है। गुरुजी प्रकाशन, कटक के द्वारा इसका प्रकाशन हुआ है। पुस्तक में दो भाग हैं– प्रथम भाग *'जीवन रथ और धर्मरथ'* और दूसरा भाग *'दुर्बल के बल राम'* में भगवान श्रीराम की चारित्रिक विशेषताओं को विविध प्रसंगों के जरिए उभारा गया है। यह पुस्तक उत्कलवासियों के द्वारा आदृत होगी, यह निश्चित है।

कालजयी प्रतिभा कवि सम्राट उपेंद्र भंज – ओडिया रीतियुगीन काव्य परंपरा में कवि उपेंद्र भंज को कवि सम्राट आख्या दी गई है। वास्तव में वे कवियों में सम्राट माने जाते थे। प्रेमानंद महापात्र के द्वारा उनके जीवन व्यक्तित्व, कृतियों और कृतित्व पर विशद आलोचना की गई *'कालजयी प्रतिभा कवि सम्राट उपेंद्र भंज'* पुस्तक में। सत्यनारायण बुकस्टोर, कटक ने इस पुस्तक का प्रकाशन किया है। विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपादेय मानी जाती है।

जीवनी

ओडिया साहित्य में लोग आज भी फकीर मोहन सेनापति से लेकर पंडित नीलकंठ दास, गोपबंधु दास, गोदावरीश मिश्र, वैष्णव पाणि, कुंज बिहारी दास, मनमोहन चौधरी, कवि जयदेव आदि की जीवनियाँ बड़ी उत्कंठा से पढ़ते हैं। इनकी जीवनियाँ ओडिया साहित्य में अक्षयनिधि मानी जाती हैं। वर्ष 2014 में प्रकाशित कुछ उल्लेखनीय जीवनियाँ इस प्रकार हैं– लक्ष्यरे अटलः अटल बिहारी महांति – डॉ. श्रीकांत चरण पात्र, निज कथा (आत्म जीवनी) – डॉ. कविता बारिक, पद्मपत्ररे जीवन (आत्म जीवनी) – डॉ. प्रतिभा राय, उत्कल गौरव मधुसूदन – बाइडंक दास।

बाल साहित्य

बच्चों के लिए लिखे जाने वाले साहित्य को बाल साहित्य कहा जाता है। वस्तुतः यह साहित्य बच्चों को प्रेरणा प्रदान करता है। बच्चों का सर्वांगीण विकास करना ही इस साहित्य का लक्ष्य है। ओडिया भाषा में बच्चों के विकास को दृष्टि में रखकर पहले–पहल फकीर मोहन सेनापति, नंदकिशोर बल, रामकृष्ण नंद, नदिया बिहारी महांति आदि ने बाल साहित्य लिखने की परंपरा सृष्टि की थी। आजकल ओडिया साहित्य की विविध विधाओं की तरह बाल साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास आदि भारी मात्रा में लिखे जाते हैं। साहित्य की अन्य विधाओं की तरह बाल साहित्यकारों को हर साल बाल साहित्य में अपनी उत्कृष्ट रचनाओं के लिए केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाता है। वर्ष 2014 में ओडिया के प्रसिद्ध बाल साहित्यकार दाश बेनहुर जी को यह पुरस्कार मिला है। इस साल ओडिया बाल साहित्य में प्रकाशित कुछ बाल और किशोर उपयोगी पुस्तकें इस प्रकार हैं–

इस साल नाट्यकार पुरुषोत्तम बेहेरा ने स्कूल में खेले जाने वाले बालोपयोगी बारह बाल नाटक लिखे हैं। ये नाटक हैं– 1. जीवन झड़ 2. सुनाभाउणी 3. आमे गोटिए पक्षीर पर 4. समय सुअरे मणिष 5. नूआ सकाळ 6. छाइ आलुअर खेळ 7. कळा मणिष 8. स्वप्न महल 9. मानसी 10. सात सपन 11. अलिभा दीप 12. भाग्य परीक्षा। तारिणी प्रकाशन, सहदेवखुंटा, बालेश्वर ने इन नाटकों का प्रकाशन किया। प्रत्येक नाटक की कीमत 30 रुपए रखी गई है। उपर्युक्त सभी नाटक बच्चों के लिए रोचक और प्रेरणादायी हैं। इन नाट्यकृतियों के अलावा ओडिशा साहित्य अकादमी से बाल साहित्य के लिए पुरस्कारप्राप्त लेखक मालाकार ने इस साल बच्चों के लिए 'बाहाघर' नामक एक सुंदर नाटक लिखा है। इस नाट्य पुस्तक में दो छोटे–छोटे नाटक हैं। बालकों को मनमोहित करने वाले इन दो नाटकों का बच्चों पर गहरा असर देखने को मिलता है। इसका प्रकाशन बहिघर, बालेश्वर ने किया है। मीना कुमारी सामल ने बच्चों के लिए चार अनुरूप नाटक लिखे हैं। पुस्तक का नाम है 'चारोटि नाटक'। इस पुस्तक में (गुमुरि कांदुछि भारत माता, मातृ

देवो भव पितृ देवो भव, कळा चिह्ने कळाकार, बंचिबार राहा) ये चार बाल नाटक सन्निवेशित हैं। इसका प्रकाशन चंद्रभागा प्रकाशिनी, बालेश्वर ने किया है। इन नाटकों के अलावा इस साल बच्चों के लिखे गए कुछ उपन्यास, कहानी, कविता और जीवनी आदि का प्रकाशन भी हुआ है। ये रचनाएँ इस प्रकार हैं– शिशुटिए बुझे भलपाइबार भाषा (बाल कविता संकलन) – कवि काळिकिंकर, काठ पानिआ (बाल कहानी संकलन) डॉ. रामचंद्र देउ, तिनोटि कंढेइ (बाल कहानी संकलन) – डॉ. रामचंद्र देउ, शिशु गल्प पराग (बाल कहानी संकलन) डॉ. सदानंद परिड़ा, शिशु कविता कल्पलता (बाल कविता संकलन) डॉ. सदानंद परिड़ा, युगांतकारी नारी प्रतिभा– डॉ. रामचंद्र षडंगी, कुनि बरगछ (बाल उपन्यास) – गोविंद चंद्र त्रिपाठी।

अनुवाद

भारत एक बहुभाषी विशाल राष्ट्र है। ऐसे राष्ट्र में भाईचारे की वृद्धि और राष्ट्रीय एकता की सुरक्षा के लिए जिस सांस्कृतिक आदान–प्रदान की आवश्यकता है इसे प्रमुख रूप से अनुवाद और तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के द्वारा संपन्न किया जा सकता है। आज के जगतीकरण की प्रक्रिया में अनुवाद का महत्व बढ़ गया है। हमारे देश में अनुवाद की परंपरा प्राचीन है। ओडिशा में यह परंपरा एक लंबी अवधि से जारी है। ओडिया साहित्य में मुख्यतः बंगला, हिंदी, मराठी, गुजराती जैसी प्रांतीय भाषाओं और अंग्रेजी, रूसी आदि पाश्चात्य भाषाओं से अनूदित कृतियाँ उपलब्ध हैं। इनमें से ज्यादातर पुस्तकें बंगला से अनूदित हैं।

ओडिया अनुवाद साहित्य में सर्वश्री नंदिनी शतपथी, चितरंजन दास, श्रीनिवास उद्गाना, संग्राम जेना, कुमार हसन, शैलज रवि, रघुनाथ महापात्र, शकुंतला बलियार सिंह, युगल किशोर दत्त, विजय कुमार महांति, रवींद्र कुमार प्रहराज, प्रभाकर स्वाई, विलासिनी महांति, शुभेंदुमोहन हरिचंदन सिं, क्षीरोद परिड़ा, रवींद्र प्रसाद पंडा, उमाशंकर पंडा, चिंतामणि महापात्र, आर्यकुमार हर्षवर्धन , अमीयवाला पट्टनायक, वैष्णव चरण परिड़ा, चंद्रशेखर दास वर्मा, असित महांति, दीप्ति प्रकाश, सुजाता शिवेन, ममता दास, बिनय कुमार दास,

रवींद्र कुमार प्रहराज, आर. शिवाजी राव आदि की प्रमुख भूमिका देखने को मिलती है।

सन् 2014 में अनुवादक रवींद्र कुमार प्रहराज को बंगला भाषा से ओडिया में अनूदित '*थिलाबालार गेहलापुअ* उपन्यास के लिए केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। श्रीयुत प्रहराज एक सफल अनुवादक हैं। उन्होंने कई विशिष्ट लेखकों की कृतियों का अनुवाद कर ओडिया अनुवाद साहित्य को समृद्ध किया है। सन् 2014 में प्रहराज जी द्वारा ओडिया में थॉमस्हार्डी की कहानियों का अनूदित कहानी संकलन का प्रकाशन विद्यापुरी, कटक के द्वारा किया गया है। पुस्तक का नाम है थौमास हार्डिङ्क गल्प संभार'। इसका मूल्य 300 रुपए है।

सन् 2014 में विलासिनी महांति की अनूदित कृति 'केहि अछि निश्चय' (कहानी संकलन) अनुसृष्टि, कटक के द्वारा प्रकाशित हुआ है। इस संकलन की प्रत्येक कहानी उच्चकोटि की है। विलासिनी महांति एक सफल अनुवादिका है। उनके द्वारा अनूदित अनावृत अंधकार, जीवन तृष्णा, विदाय बंधु जैसी कई कृतियों का काफी आदर हुआ है। सन् 2013 में :अनावृत अंधकार' अनूदित पुस्तक के लिए उन्हें केंद्र साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार मिला है। अनुवादिका कनक मंजरी साहु द्वारा अनूदित मलाला (जीवनी साहित्य) मूल रचना–आशा विनोद सरिता सिंह के ओडिया अनुवाद का प्रकाशन इस साल हिंद पॉकेट बुक्स, न्यू दिल्ली ने किया है। नोबल पुरस्कार प्राप्त मलाला की जीवनी के विविध प्रसंगों को इस पुस्तक में स्थानित किया गया है। अनुवाद की भाषा अत्यंत सरल और आकर्षणीय है। विवेच्य वर्ष में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा लिखे गए प्रख्यात ग्रंथ 'हिंदू जीवन दर्शन' का ओडिया में अनुवाद किया है श्री निवास मिश्र ने। मिश्र जी की यह अनूदित कृति विद्यापुरी, कटक के द्वारा प्रकाशित हुई है। इसका मूल्य 80 रुपए रखा गया है। इस साल मूल रचनाकार स्वर्गीय राम नंदन मिश्र की विशिष्ट कृति का राजकिशोर दास के द्वारा ओडिया में अनूदित '*नंगाबाबा तोतापुरी महाराज* शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक के द्वारा किया

गया है। पुस्तक में तोतापुरी महाराज के जीवन दर्शन का रेखांकन किया गया है। अनुवाद की भाषा सरल और सुखपाठ्य है। वर्ष 2014 में महेश्वर महांति के दवारा अनूदित कृति 'महाराजा' मूल रचनाकार देवान जर्मानी दास की विशिष्ट साहित्य कृति का ओडिया अनुवाद है। इस पुस्तक में प्राचीन राजा महाराजाओं के यौन जीवन की रोमांचभरी कहानियों की अवतारणा की गई है। पुस्तक का प्रकाशन फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक के दवारा किया गया है। 150 रुपए वाली इस पुस्तक को पाठक बड़ी रुचि के साथ पढ़ते हैं। इस साल विदयापुरी, कटक के दवारा प्रकाशित डॉ. भि. एस. जोगलेकर के दवारा ओडिया में अनूदित राजेश प्रभाकर पाटिल की जीवनी 'माँ मुँ कलेक्टर हेलि' एक उत्कृष्ट जीवनी ग्रंथ है। पुस्तक का ओडिया अनुवाद अत्यंत उत्कृष्ट है। 2014 में प्रकाशित 'श्रद्धा सहिष्णुता ओ सेवा' ओडिया अनुवाद साहित्य में एक उपादेय पुस्तक है। इसके मूल लेखक श्रीयुत दवारिका मोहन मिश्र ने मनुष्य के महान मानवीय गुणों में श्रद्धा, सहिष्णुता और सेवा पर प्रकाश डाला है। अनुवादक श्रीयुत अन्नदा राय ने इसका अनुवाद बड़ी सरल भाषा में किया है। प्रकाशक – जगन्नाथ रथ, विनोद विहारी, कटक ने इसका प्रकाशन किया है।

इनके अलावा ओडिया में अनूदित अन्य कुछ पुस्तकें इस प्रकार हैं– निम गछओ अन्यान्य गल्प – अनुवाद – विनय कुमार दास, सौंदर्य लहरी– (मूल – शंकराचार्य) अनु. – डॉ. दुर्गा प्रसन्न पंडा और अवनी मोहन पंडा, विश्व प्रसिद्ध गल्प माला (तृतीय भाग) अनु. – डॉ. रवींद्र कुमार प्रहराज, बाइबल प्रेम काहाणीर उत्तर पर्व मोहिनी महुमाछि – अनु. उमाशंकर पंडा, नैवेद्य – मूल रचना – रवींद्र नाथ ठाकुर – अनु. – अनादि चरण चटर्जी।

पत्र–पत्रिकाएँ

विवेच्य वर्ष में ओडिया पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की स्थिति संतोषजनक रही। ओडिशा में मासिक, त्रैमासिक, वार्षिकी ऐसी कई तरह की पत्र–पत्रिकाएँ सालभर निकलती रहती हैं। पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की दृष्टि से विचार किया जाए तो पूजा विशेषांक ओडिशा की एक खासियत रही है। पवित्र दुर्गा

पूजा के अवसर पर ओडिशा में काफी संख्या में पत्र–पत्रिकाएँ निकलती हैं। पूजा विशेषांक पाठकों का भरपूर मनोरंजन करते हैं। नवीन और पुरातन लेखकों की रचनाएँ ऐसी पत्रिकाओं में स्थानित होती है। खासकर नवीन प्रतिभाओं को साहित्य सृष्टि के क्षेत्र में इन पत्र–पत्रिकाओं से प्रोत्साहन मिलता है। नीचे कुछ पत्र–पत्रिकाएँ और उनके संपादकों के नाम उल्लेख किए जा रहे हैं।

झंकार– सरोज रंजन महांति (कटक), सुचरिता– डॉ. शकुंतला पंडा (भुवनेश्वर), अक्षांश– डॉ. हरिशचंद्र बेहेरा (बालेश्वर), जीवन रंग– विजयिनी दास (कटक), आधुनिक– डॉ. नीलमणि बेहेरा (केंद्रापड़ा), पश्चिमा– अशोक महांति (भुवनेश्वर), गोकर्णिका– रमाकांत जेना (जाजपुर), जनसुधा– दिलीप बेहुरा (कटक), कादंबिनी– इतिराणी सांमत (भुवनेश्वर), चंद्रभागा– श्रीदेव (बालेश्वर), शतभिषा– डॉ. शकुंतला बलियार सिंह (भुवनेश्वर), सागरिका– सैरिंध्री साहु (बालेश्वर), इश्तहार– प्रोफेसर नित्यानंद शतपथी (भुवनेश्वर), नवपत्र– कलचराल अकादमी (राउरकेला), प्रतीचि– दीपक रंजन मिश्र (सोनपुर), निर्वाण– चंद्रकांत विश्वाल (कोरापुट), युगश्री युगनारी– ममता महापात्र (बालेश्वर), नवलिपि– देवव्रत मदन राय (कटक), काव्यलोक– भिकारी धळ(भुवनेश्वर), नवरवि– संध्या महांति (भुवनेश्वर), गल्प– विभूति पट्टनायक (भुवनेश्वर), गपबहि– अभय दास (बालेश्वर), कोणार्क– साहित्य अकादमी (भुवनेश्वर), स्मृतिलिपि– भुवन मोहन महांति (जाजपुर), सुवर्ण श्री– कालीपद पंडा (बालेश्वर), साहित्य पृथिबी– सुनील पृष्टि (भुवनेश्वर), कस्तुरी– नंद किशोर सिंह (जाजपुर), स्पंदन– डॉ. श्रीकांत चरण पात्र (जलेश्वर), महानदी– ई. गोविंद चंद्र साहु (कटक), परशमणि– डॉ. रामचंद्र देउ (बारिपदा), आम सुनाचांद– डॉ. कुमार बाबुलि (बड़साहि, मयूरभंज), सकाळ– डॉ. श्रीकांत पात्र (जलेश्वर), समकालीन साहित्य– विपिन बिहारी विश्वास (दीनकृष्ण स्मृति परिषद, जलेश्वर), संभावना– सुकुमार घोष (जलेश्वर), आम बगिचार मधुमालती– डॉ. सदानंद परिड़ा (अनुगोल), वर्णाली– सुरेंद्र पाणिग्रही (भुवनेश्वर), उद्भास– प्रतिभा शतपथी (भुवनेश्वर), झर्का– समरेंद्र महापात्र (बालेश्वर),

शताब्दीर संध्या– सिंधु सेन (बालेश्वर), अनुरूपा– सूर्य मिश्र (संबल पुर), रजनीगंधा– सीमांचल दास (भुवनेश्वर), कहानी विजय नायक (भुवनेश्वर)।

इस साल दुर्गा पूजा के अवसर पर नई–पुरानी अनेकानेक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई थीं। ओडिशा में हर साल कई जगह पुस्तक मेले लगते हैं। पर पहली बार प्रकाशक, कवि तथा संगठक अभय दास के उद्‌यम से बालेश्वर के यहाँ एक ओडिया पत्र–पत्रिकाओं के मेले का आयोजन हुआ था। यह कार्यक्रम बारह दिन तक चलता रहा। ओडिशा के बड़े–बड़े कवि, लेखक, पत्रकारों के आगमन और पत्र–पत्रिकाओं की उपादेयता पर दिए गए वक्तव्यों से जनता को काफी लाभ मिला। खासकर नूतन प्रतिभाओं को सृजनात्मक दिशा में आगे बढ़ने में काफी प्रोत्साहन मिला। भाषा–साहित्य के विकास के लिए इस उत्सव की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अभय बाबू का यह उद्‌यम अभिनंदनीय है। इस प्रकार 2014 में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं का ओडिया भाषा–साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देखने को मिलता है।

स्पष्ट है कि ओडिया साहित्य की विविध विधाओं के अंतर्गत वर्ष 2014 में अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। इन सभी प्रकाशित ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करना कठिन है। इसलिए उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सर्वेक्षण किया गया है। इसलिए यह सर्वेक्षण पूर्ण होने का दावा नहीं करता। आशा है, इसकी अपूर्णता जिज्ञासु और अनुसंधित्सुओं को अधिक जानने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगी। आगामी वर्ष में विभिन्न लेखक और प्रकाशक ओडिया साहित्य को समृद्‌ध करने में और बेहतर योगदान देंगे, ऐसी आशा है। साथ ही ओडिया भाषा–साहित्य का भविष्य और भी उज्ज्वल रहेगा, ऐसा मेरा मानना है।



3

कन्नड साहित्य

डॉ० टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

कन्नड साहित्य रचना में पाठकों की अभिरुचि के अनुसार वैविध्य आ गया है। पाठकों की संख्या भी बढ़ रही है। वर्ष 2014 में दस हज़ार से भी अधिक कन्नड पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

2014 के कन्नड साहित्य का रचना–संसार कई विशिष्टताओं से युक्त है। इस वर्ष डॉ० यू. आर. अनंतमूर्तिजी की बहुचर्चित कृति 'हिंदुत्व अथवा हिंद स्वराज' का प्रकाशन हुआ। परंतु खेद की बात है कि कृति हस्तप्रति के रूप में ही थी, अनंतमूर्ति जी अनंत में लीन हो गए। वे अंतिम समय तक चर्चित ही रहे। यह ऐसी कृति है जिसको अभिनव प्रकाशन बेंगलुरु ने छापा, जिसमें प्रस्तुत राजनैतिक हलचल के प्रति उनकी प्रतिक्रिया एवं सामाजिक–तात्विक चिंतन की तीव्रता देखी जाती है। गांधीजी के हिंदुत्व की कल्पना की ओर अनंतमूर्ति जी का झुकाव स्पष्ट गोचर होता है। ऐसी प्रतिभा के अस्तगत होने से साहित्य जगत को बड़ी क्षति पहुँची है। यह आघात ऐसी स्थिति में पड़ा है जबकि 24 दिसंबर 2013 को कन्नड के राष्ट्रकवि डॉ० जी. एस. शिवरुद्रप्पाजी के शिवाधीन होने के दुख से कन्नड साहित्यलोक बाहर ही न आया था।

भारतीय भाषाओं का साहित्य हिंदी के माध्यम से भारत के अधिक से अधिक पाठकों को प्राप्त हो, इस आशय को लेकर कर्नाटक सरकार आगे आई है। वचन साहित्य का भारत की तीस भाषाओं में अनुवाद, अनुवाद जगत में ही एक विशिष्ट आयोजन कर्नाटक सरकार के आर्थिक सहयोग से हो रहा

है। उसका ही दूसरा कदम है– संत कवि कनकदास के समग्र साहित्य का 14 भाषाओं में अनुवाद। यह अनुवाद कार्य भी कर्नाटक सरकार के आर्थिक सहयोग से शुरू हो गया है। भारतीय साहित्यों के बीच सौहार्द की दृष्टि से यह सचमुच अनुपम और अनुकरणीय कार्य है।

2014 का *'कनक प्रशस्ति पुरस्कार'* अमेंबळ वासुदेव नावड जी को प्राप्त हुआ है। 2014 का सरस्वती सम्मान कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री, राजनीतिज्ञ तथा श्रेष्ठ कवि डॉ० वीरप्पा मोयली जी को उनके महाकाव्य 'रामायण महान्वेषण' के लिए प्राप्त हुआ है। वैसे ही *'पंप प्रशस्ति'* कय्यार किन्नरै जी को प्राप्त हुआ है। इस साल का केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार कन्नड के ख्यात समालोचक श्री जी. के. नायक जी को उनकी 'उत्तरार्ध' कृति के लिए मिला है।

कविता :

पूर्ववत् 2014 में भी कविता–संकलनों का प्रकाशन अधिक मात्रा में हुआ है। मगर पाठकों की संख्या कथा साहित्य के समान इसके लिए अधिक नहीं। शायद आधुनिक प्रयोगशील कविताएँ आम जनता की समझ से बाहर हैं।

'कोनेय सालुगळु' (अंतिम–चरण) *'को चे'* नाम से प्रसिद्ध साहित्यकार को. चेन्नबसप्पा की रचना है। वयोवृद्ध साहित्यकार, जो अपने गद्य साहित्य के कारण सुपरिचित है, आजकल कविता की ओर झुके हैं। यहाँ की कविताएँ, कुछ क्षण की लहरी हैं, कुछ अध्यात्मपरक हैं, कुछ अनुवाद भी हैं। कवि ने सरल लय में छंद में अपने अनुभव को व्यक्त किया है। एक उदाहरण

शंखचक्र गदाधारि
वज्र खचित मुकुटधारि
अभय हस्त पद्मपाणि
चतुर्भुज मगळांग
ऐसा न कोई भगवान है न देव।

'होळेगुंट नडेद हुडुगी (नदी तट तक चली लड़की) डॉ. सी. रवींद्रनाथ की रचना है। इस संकलन में कुछ हाइकु, कुछ लंबी कविताएँ और कुछ अनुवाद भी हैं। यहाँ की सरल कविताएँ पाठकों में उतरती हैं, उतरकर लहू में समा जाती हैं। यथा–

दीप जलाता हूँ। चींटी की पीठ पर विराम करती है एक किरण / चींटी की छाया भी / एक हस्ती है। (एक किरन)

'वस्तारे पद्यगलु श्री नागराज रामस्वामी वस्तारे की पद्य रचनाएँ हैं। आजकल कविता के लिए पाठक नहीं। 'कविता सब के लिए नहीं' बात याद आती है। कवि पर किसी का प्रभाव दीखता नहीं। उनमें कविता के राजमार्ग को लात मारकर लिखने का हठ है। कविता के लिए शीर्षक नहीं, केवल नंबर दिया गया है। काव्यवस्तु आर्किटेक्चरल और टेक्नीकल जगत की है।

'मुंजानिन मातुगळु (मुँह अंधेरे की बातें) श्री जी. के. जयरामन की रचना है तो *'विडंबारिय चौपादिगळु* कवि विडंबारिय की चौपदी में रची कविताएँ हैं। विडंबारी नाम से वि. जी भंडारी जी ने इसमें 2000 चौपदी रची हैं, जिसमें अंधविश्वास, धर्म, भ्रष्ट व्यवस्था, अन्याय, जातीयता आदि विषयों पर विडंबनात्मक चौपदी संकलित हैं। एक उदाहरण–

है कहकर जो नहीं है स्वर्ग
दिखाऊँगा राह स्वर्ग की कहते हैं
विश्वास कर लोग इनके पुराण पर
बन गए हैं कोल्हू के भैंस। (कोल्हू के भैंस)

'तुटियंचलि उलिद कवितेगळु (ओंठ के छोर में रचित कविताएँ) स्मिता अमृतराज की रची कविताएँ हैं। स्मिता जी अपने नाजुक भावना–जगत में रचती हैं और वही भाव रचना में भी प्रतिबिंबित है। लगभग 70 कविताएँ हैं जिनसे कवयित्री का स्वगत, विषाद और विस्मय से युक्त कोमल भाव अभिव्यक्त हुआ हैं। कविता ही जगत को रोशनी दे सकती है, इस विश्वास पर रची कविता में शिशु की मुग्धता है। यथा–

ओंठों से जो निकल गए
वे शब्द हैं
ओंठों के छोर में जो रह गई
वह कविता है।

'*एदे हासिन भाव हूगळु* (दिल में खिले भाव के फूल) डॉ० अनसूया देवी की रचनाएँ हैं जो सृष्टि प्रकाशन से प्रकाशित हैं जिसमें कवयित्री के अंतरंग के भाव को मूर्त रूप मिला है और इन रचनाओं में भाव तीव्रता है। जैसे

प्यार के हकदार से
मिली ही नहीं मैं
अपनी जिंदगी में।

'*काल कायुवुदिल्ल* (काल इंतज़ार नहीं करता) मेगरवळ्ळी रमेश जी का संकलन है, जो कवि का प्रथम संकलन होकर भी कविता में ताज़गी से भरपूर है। एक बानगी–

चमकती आँखोंवाली लड़की
मुझमें हँसती रहे
नटखट लड़का
आँख मारता रहे।

'*हुणसे हू* (इमली के फूल) श्रीमती हरवु स्फूर्ति गौड़ा की युवा मन की उत्साहपूर्ण भावोद्वेग भरी कविताओं का संकलन है। यथा–

खूब बारिश खुशी मुझे।
भीगकर
तुम्हारे सामने
भीगी मैं तो
तुम पसीने से तर हो गए।

इस साल के अन्य उल्लेखनीय कविता–संकलनों में श्री जी. के. जयरामन् की कविताओं का संकलन '*मुंजाविन मातुगळु* (सुबह की बातें), श्री के. पी. मृत्युंजय का कविता–संकलन '*नन्न शब्द निन्नलि बंदु* (मेरे शब्द तुममें

आकर) और श्री वीरण्णा मडिवाळर का खंडकाव्य 'एल्लिहाळागि होदनो वसंत' (जाने कहाँ नष्ट हो गया वसंत)।

बाल कविता :

'*थै.....थक.....थै....!!* यह बच्चों की कविताओं का संकलन, एक परिवार की देन है। पुस्तक जेनु से प्रकाशित डॉ० टी. गोविंदराजु द्वारा रचित इस कृति में लेखक की माँ होन्नम्मा और पुत्री हर्षिता के रचे चित्र भी हैं। बच्चों के मनोलोक के पहुँच की वस्तुएँ पौधे, पेड़, पंछी, नक्षत्र, चंद्रमा, चूहे, मेंढक आदि पर रचे शिशुगीत हैं।

'*एनेन् तंबि* (क्या–क्या भरकर) ख्यात कवि के. तिरुमलेश की बाल कविताओं का संकलन है, जिसमें विनोदपूर्ण, कांतियुक्त पंक्तियाँ झलकती हैं। उदाहरण के लिए –

चाँद कहे तो आइसक्रीम गोल
इसीलिए वह हमेशा गीला
तारों के लिए यहीं से सप्लाई
हमें तो अभी न आया रिप्लाई
आज भी गोल कल भी गोल
हम सोएँगे उसे ओढ़कर ही।

– चंदिर (चाँद)

'*चिण्णर लोकव तेरेयोण* (बच्चों का लोक खोलेंगे) कन्नड के ख्यातनाम राष्ट्रीय कवि चेन्नवीर कणवि की कृति है। दस वर्ष तक के बच्चों के भावलोक को ध्यान में रखकर लिखे गए बालगीत हैं। जन्म दिन, गुड़िया, मगर, मेंढक, बिल्ली, घर आदि पर रचे गीत संकलित हैं।

पतंग पर रचे गीत पर ध्यान दें–
लता में एक कली
खुशी–खुशी खिल गई।
एक पतंगा नन्हा–सा
चूमकर चला गया।।

नाटक :

इस वर्ष प्रकाशित नाटक कृतियों में उल्लेखनीय हैं – म. सु. कृष्णमूर्ति कृत *'जाडमालि मत्तु इतर नाटकगळु* (मेहतर तथा अन्य नाटक), ह. श्री श्रीपति का *'मरु नाटकगळु* (तीन नाटक – जिसमें आदर्श, रक्षकवच और ग्रामायण हैं), श्री अनंतरामय्या का *'लंचद बले'* (रिश्वत का जाल), श्री बेलूर राममूर्ति का *'नाल्कु नग नाटगळु* (चार हास्य नाटक), श्री एन. एल. चन्नेगौडा का *'मुत्तिन मूगुति* (मोती का नथ) ऐतिहासिक नाटक, नंजनगूडु श्रीकंठशास्त्री का पौराणिक नाटक *'धर्मराज राजसूय यज्ञ* और श्री गिरि भट्टर तम्मय्या का पौराणिक नाटक 'मन्मथ विजय'।

कहानी :

कहानी साहित्य तो लोकप्रिय हमेशा रहा है और वह पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से अधिक पाठकों तक पहुँचता भी है। आम लोगों के लिए मनोरंजन का साधन भी है।

'ऊरिगे होरटे होदरु (गाँव चले ही गए) प्रसिद्ध लेखिका कमला हंपना का कथा–संकलन है, जिसमें स्त्री के जीवन के विविध पहलुओं जैसे दर्द आदि का हृदयंगम वर्णन है। सामाजिक कहानियों में फँसनेवाली स्त्रियाँ, उनका उससे बाहर आने का प्रयत्न, जीवन में आनेवाली समस्याओं का सामना करने आदि का यथावत् चित्रण मिलता है। *'मंगले* और *'सलहिदवरु यारो* (पालने–पोसनेवाले जाने कौन?) संकलन की विशिष्ट कहानियाँ हैं।

प्रसिद्ध कहानीकार भानु मुश्ताक का कहानी संकलन *'हसीना मत्तु इतर कथेगळु* (हसीना और अन्य कहानियाँ) इस वर्ष की उल्लेखनीय कहानियों में है। *'संपिगे तायव्वा मत्तु इतर कथेगळु* (संपिगे तायव्वा और अन्य कहानियाँ) श्रीमती एच. कमला वड्डीहळ्ळी का कहानी संकलन है। *'नडेयलारद दूर, हिडियलारद वस्तु* (न चल सकनेवाली दूरी, न पकड़ सकनेवाली वस्तु) एम.एम. श्री राय की कहानियों का संकलन है। श्री के सत्यनारायण जी की चुनी हुई कहानियों का संकलन है *'नाळे बरेदु कतेगळु* (आगामी कल की कहानियाँ)। *'अस्तित्व मत्तु इतर कतेगळु* शोभा नागराज की कहानियों का संग्रह है।



2014 की उल्लेखनीय कहानी–संग्रहों में श्री एम.एस. श्रीराम की छोटी कहानियाँ भी हैं।

बाल–कहानियाँ :

बच्चों के लिए कहानियों के अंतर्गत आनंद वी. पाटील से रचित *'पुट्टन हावु हुत्त बिट्टु होरगे बंतु* (सांप बाँबी से बाहर आया) कुतूहलपूर्ण बाल कहानियों का संग्रह है। *'नविलुगरि* (मोर पंख) कनडिगा नारायण द्वारा रचित मोर और मनुष्य के बीच संबंध पर लिखी कहानियों का संकलन है।

'सिद्दु पटालम मत्तु अंडाळम्मन पेरल मर' (सिद्दु समूह तथा अंडालम्मा का अमरूद का पेड़) श्री मेटिकेरे हिरियण्णा की बाल कथाओं का संकलन है। यहाँ की कहानियाँ लोककथाओं के आशयों पर हैं। विनोद, आश्चर्य और रम्य गुणों से युक्त कहानियाँ हैं। ये सचित्र कथाएँ बच्चों के लिए आकर्षक हैं।

उपन्यास :

'अडुकळ' चर्चित उपन्यासकार श्रीधर बळेगार का उपन्यास है। अडुकल एक गाँव का नाम है। निद्रळ्ळि गाँव संपर्कहीन द्वीप–सा अगोचर होने पर भी और वहाँ का गाँव अडुकळ निर्जन प्रदेश होने पर भी वह निर्जीव नहीं है। वह मलेनाडु, कर्नाटक के पश्चिम घाटीय पर्वतीय प्रदेश का एक सुदूर गाँव है। वहाँ के रोचक पात्र हैं दशरथ और कामाश्री। इस उपन्यास में मलेनाडु के प्राकृतिक चित्रण के साथ वहाँ के बदलते समाज का, असहायक संघर्ष का जीता जागता चित्र उपन्यासकार प्रस्तुत करते हैं।

'तोट्टिक्कुत्तले इदे नेत्तरु' (टपकता ही रहा है लहू) श्री अग्नि श्रीधर का उपन्यास है जिसमें क्राइम, पातक जगत का तथा पुलिस के साथ संघर्ष का चित्रण है। इस उपन्यास में शिवण्णा और मालिंग दोनों पुलिस कांस्टेबल पात्र हैं। इसमें पुलिस और पातकलोक का संपर्क, आपस में अविश्वास, पूर्व नियोजित पातक, कार्य करने की रहस्य–योजना, अपराध छिपाने का तंत्र, पातकियों का शिकार करती पुलिस आदि का यथार्थ कथन रोमांचक है। जेल–दीवारों के पीछे का जगत, लॉकप मौत, उसे छिपाने का मास्टर प्लान,



पुलिस–लॉयर के बीच छल–कपट आदि का चित्र रोंगटे खड़ा कर देता है। प्रश्न उठता है क्या अहिंसा, करुणा आदि के लिए जगत में कोई स्थान नहीं? पुलिस जगत की भाषा, मुहावरे कन्नड़ साहित्य जगत के लिए नया और विशेष है।

'*मनुष्यनिगे बाल* (मनुष्य के लिए पूँछ) कन्नड के चर्चित लेखक आलोचक सुमतींद्र नाडिग बेंगलुरु के स्वप्न बुक हाउस से प्रकाशित उपन्यास है। यह एक विज्ञान विषयक उपन्यास है। यदि मनुष्य को पूँछ लग लाए जो क्या होगा! समाज उन्हें कैसे देखेगा। राजकीय लाभ पाने का प्रयत्न तो होगा ही। यदि अपनी प्रियतमा को बच्चे हों और उसे पूँछ लगी हो! इस प्रकार उपन्यास की गति बढ़ती है। इसमें प्रखर सृजनशीलता है।

'*यान* विख्यात उपन्यासकार श्री एस.एल. बैरप्पा का अद्‌यतन उपन्यास है जो साहित्य भंडार बेंगलुरु से प्रकाशित है।

'*शिला कुल वलसे* श्री के. एस. गणेशय्या जी का रचा उपन्यास है।

वचन–साहित्य :

इस साल के प्रकाशन में वचन साहित्य पर काफी चिंतनपरक कृतियाँ निकली हैं। 'वचन विचार' प्रो. ओ. एल. नागभूषण स्वामी का लिखा 26 वचनकारों के 100 वचनों की व्याख्या ग्रंथ है। यह सरल शैली में लिखा गया है और यह दीर्घ अध्ययन का फल है।

'कायक जीविगळ यथार्थ संस्कृति' डॉ० सी. वीरण्णा का लिखा वैचारिक ग्रंथ है। बारहवीं शती में कर्नाटक के राज शासन में वृत्ति जीवनी (कायक जीवी) समूह पर इतना कर लगाते थे कि शोषित और अपमानित कायक जीवी इस बोझ से थक चुके थे। इसके विरुद्‌ध कायक जीवियों ने जो संघर्ष किया उसी की अभिव्यक्ति वचन साहित्य है। फलस्वरूप नए समाज निर्माण की परिकल्पना पर्याय संस्कृति के रूप में बसवादि कायकजीवी शरणों से साकार हुई है, जिसका विस्तृत विवेचन इस कृति में हुआ है।

तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत बसवण्णा की अन्य संतों, सुधारकों के साथ तुलनात्मक पुस्तकें निकली हैं। उनमें श्री मुरुघामठ धारवाड़ से प्रकाशित

डॉ० टी. जी. प्रभाशंकर *'प्रेमी* की *'बसवण्णा मत्तु कबीरदास* और डॉ० तिप्पेस्वामी की पुस्तक *'बसवण्णा और गुरुनानक'* उल्लेखनीय हैं। प्रो. एस. मरुळसिद्दप्पा की पुस्तक *'आर्थिक चिंतने : बसवण्णा मत्तु गाँधीजी* में लेखक ने दोनों सुधारकों के आर्थिक चिंतन पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है जो आज के संदर्भ में प्रासंगिक है।

'वचन सार' डॉ० वीरण्णा राजूर से संपादित कृति है। इसमें वचनों का संकलन तत्व के आधार पर सार रूप में हुआ है। 'प्रसादि स्थल वचन' का संग्रह रूप है, जिसमें 32 वचनकारों के 1224 वचन है।

प्रजावाणी पत्रिका प्रकाशन से निकली पुस्तक 'वचन साहित्य संपदा' में सभी लेख ऐसी प्रक्रिया का भाग हैं जैसे पढना – कौन पढ़ता है? क्या नहीं पढ़ते....। वचन की कई प्रकार की पढ़ाई एक काल में होती है।

'विषय वचन संपुटगळु' (भाग–1 अंग, अनुभाव, अरिवु (ज्ञान); भाग –2 अवधान, अष्टावरण, आचार, अनुभाव, अरिवु (ज्ञान) के संपादक डॉ० संगमेश सवदत्तीमठ जी हैं।

'वचन वाङ्मय विहार' के लेखक हैं प्रो. जी. अब्दुल बशीर। 'व*चन चित्र संगम* कलाकार पुडलीक कल्लिगनूर से रचित वचन चित्रों का संगम है। इसमें 111 वचन चित्र है। यह वर्णमय होकर कन्नड़ दृश्यकला साहित्य परंपरा में विशिष्ट है।

यात्रा साहित्य :

'अंडमान डॉ० एच.एस. अनुपमा जी का यात्रा कथन है जिसमें अंडमान की यात्रा का रोचक वर्णन है। *'बोधिय बेळकिनल्लि* डॉ० मल्लिकार्जुन जे. आम्टे जी का यात्रा कथन है जिसमें बुद्ध तथा बौद्धधर्म संबंधी स्थलों के भ्रमण का वर्णन है। उन्होंने सांची, बुद्धगया, कुशीनगर, राजगृह, लुंबिनी, नेपाल आदि जगहों की यात्रा कर वहाँ की विशेषताओं को दर्ज किया है। अधिकतर बौद्धधर्म पर लेखक के विचार रेखांकित हैं

यल्बुर्गीयिंद हिमगिरिगे (यल्बुर्गी से हिमगिरि तक) यात्रा प्रबंध है। लेखक ईरप्पा एम. कंबळि ने इसमें हिमालय के सुंदर प्रदेशों का मनोहारी तथा विस्तार से वर्णन किया है।

संस्मरण :

'*अदम्य* टी. गिरिजा का संस्मरण ग्रंथ है। इसकी संपादिका एम.एम. मल्लम्मा नागराज हैं। यह लेखिका, शोधकर्ता श्रीमती गिरिजा के संस्मरणार्थ संपादित ग्रंथ है। श्रीमती गिरिजा ने उपन्यास, आत्मचरित आदि की रचना की है। '*भारत की नदियाँ* आपकी प्रसिद्ध कृति है।

'*अमृत नेनपुगळु* (अमृता–स्मरण) रेणुका निडगुंदि का पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम की याद में रचा संस्मरण है। इसमें अमृता प्रीतम की आत्म–कथन रूपी कविताएँ भी अनुवाद कर दी गई हैं।

'*देवुडु दर्शन* देवुडु नरसिंहशास्त्री जी की याद में उनके सुपुत्र गंगाधर देवुडु द्वारा रचित संस्मरण ग्रंथ है। देवुडु कन्नड के विशिष्ट उपन्यासकार थे जिन्होंने '*महाब्राह्मण*, '*महाक्षत्रिय* और '*महादर्शन* जैसे उपन्यास कन्नड को दिए।

जीवनी :

'*इंति नमस्कारगळु*' श्री नागराज हुळियार का लिखा कन्नड के प्रसिद्ध दिवंगत साहित्यकार के व्यक्तित्व को चित्रित करनेवाला ग्रंथ है। इसमें कन्नड के दो महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों का परिचय है। एक तो प्रसिद्ध पत्रकार–साहित्यकार पी. लंकेश हैं जो '*लंकेश पत्रिका* के कारण प्रसिद्ध हुए। और दूसरे हैं डी. आर. नागराज, बहुचर्चित प्रतिभावान समालोचक। इसमें दोनों के व्यक्तित्व और कृतित्व का भी विश्लेषण हुआ है।

'चलचित्र कलाकार एम. पी. शंकर' एम. नागराज का लिखा कन्नड के प्रसिद्ध अभिनेता एम. पी. शंकर का कलाकार के सिनेमा वृत्ति जीवन पर प्रकाश डालनेवाला ग्रंथ है। इसमें शंकर जी के सिनेमा के साहसी दृश्य, उनकी अविस्मरणीय वीरवेश की भंगिमा का रोचक वर्णन है।

आत्मकथा :

'*वैशाली कासरवळ्ळी संकथन* कृति में दिवंगत वैशाली कासरवळ्ळी जी के संकथन को आत्मकथात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। रंगमंच और सिनेमा की अभिनेत्री निर्देशिका वैशाली जी जब जीवित थीं तब उनका जो

साक्षात्कार लिया गया था उसमें प्राप्त विवरण यहाँ निरूपित है। जीवन के बारे में वैशाली जी के स्वगतकथन के रूप में इसे पढ़ सकते हैं।

अभिनंदन ग्रंथ

'कल्याण दीप्ति – डॉ० बसवलिंग पट्टदेवरु अभिनंदन ग्रंथ है। डॉ० एम.एम. कलबुर्गीजी इसके प्रधान संपादक हैं। यह भाल्कि हिरेमठ संस्थान, बीदर से प्रकाशित है।

'*नेलद दनि*' नरहळ्ळी बालसुब्रह्मण्य अभिनंदन ग्रंथ है। यह प्रो. एच. एस. वेंकटेशमूर्ति के प्रधान संपादकत्व में प्रकाशित है। प्राध्यापक, आलोचक, अनुवादक नरहळ्ळी बालसुब्रह्मण्य जी के जीवन और साहित्य, उनके मित्रों के लेख ही नहीं, समालोचक आमूर, डॉ. जी. एस. शिवरुद्रप्पा तथा यू. आर. अनंतमूर्ति आदि शीर्ष साहित्यकारों के अभिनंदन लेख भी सम्मिलित हैं।

गद्य–लेखन :

साहित्य अकादमी, दिल्ली से 'भारतीय साहित्य निर्माता' के अंतर्गत 'के. एस. नरसिंहस्वामी' श्री सुमतींद्र नाडिग का लिखा परिचयात्मक ग्रंथ है। इसमें कन्नड के प्रसिद्ध कवि के.एस. नरसिंहस्वामी (1915–2003) के व्यक्तित्व और रचना संसार पर प्रकाश डाला गया है।

'*बिंब–प्रतिबिंब*' में लेखक अ.रा. श्रीनिवासजी ने भू–आंदोलन की समीक्षा तथा इसके प्रभाव या प्रतिफलन के रूप में आधुनिक कन्नड साहित्य की सृजनशील कृतियों का अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें आधुनिक पूर्व तथा आधुनिक काल के भू–आंदोलन की समीक्षा है। लेखक ने भू–सुधार की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। डॉ० शिवराम कारंत, श्री डिसोजा, श्री निरंजन, डॉ. चंद्रशेखर कंबार आदि की कृतियों का भू–आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में लेखक ने विश्लेषण किया है।

'*हेण्णु हेज्जे*' (स्त्री के कदम) सावित्री मजुमदार की गद्य कृति है। लेखिका सामाजिक कार्यकर्ता तथा न्यायवादी हैं। इसमें कोप्पळ जिला (कर्नाटक) के गाँवों में गरीब, अशिक्षित स्त्रियों की जिंदगी का वास्तविक चित्र है। देवदासी प्रथा, जोगति बनाना, अत्याचार, शोषण आदि का जीता जागता

चित्र खींचकर, परिस्थिति–सुधार की ओर प्रयत्नशील होने की प्रेरणा भी लेखिका देती हैं।

'तेरनेळेव जन (रथ खींचनेवाले लोग) के संपादक हैं डॉ० गुरुपाद मरिगुद्पी और कन्नड जागृति पुस्तक माला, चिक्कोडी, बेलगाँव से प्रकाशित है। इसमें लेखक ने अब तक संपन्न अखिल भारत कन्नड साहित्य सम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषणों का सार संग्रह किया है। श्री बेनगल, श्री मास्तिवेंकटेश अयंगार, श्री मुदवीडु, श्री बसवराज कट्टीमनी तथा श्री पाटील पुट्टीप्पा के भाषणों के साथ–साथ सीमांचल के सम्मेलनों के भाषण भी संग्रहित हैं। यह यादों की बारात है, जो *'रथ सींचनेवाले लोग* शीर्षक से संग्रहीत है और यह कन्नड पाठकों के लिए स्फूर्तिदायक है।

'हळगन्नड लिपिकार मत्तु लिपि व्यवसाय कृति प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. ष. शेट्टर की कृति है, जिसमें शिलालेख के संदर्भ में प्राचीन कन्नड लिपि और उसके लिपिकार संबंधी अध्ययन और विश्लेषण है।

'बीदि बेळकिन कंदीलु (सड़क की रोशनी लालटीन) श्री बसवराज हूगार के चिंतनपरक आलेखों का संकलन है, जिससें समकालीन विद्यमान ही वस्तु है जिसके अंतर्गत शिक्षा, कृषि, जाति प्रथा, उत्तर कर्नाटक के लोगों का नौकरी ढूँढते जाना आदि विषय सम्मिलित हैं।

'रंगद मेले अपरंजि बेळेदो..... (रंगमंच पर शुद्ध सोने की कृषि) में लेखक सी. लक्ष्मण जो चार दशकों से बाल रंगमंच में क्रियाशील रहे, ने अपने अनुभवों को लिपिबद्ध किया है।

'नक्षे नक्षत्र यह डॉ० बसवराज कल्गुडी ली का साहित्य–समालोचना ग्रंथ है।

'ओदिन सुख (पढ़ने का सुख) श्रीमतीएल.सी. सुमित्रा के आलोचनात्मक निबंधों का संकलन है। इसमें केवल कन्नड साहित्य की कृतियों की ही नहीं, अन्य भाषा साहित्य जैसे अमृता प्रीतम, प्रिया तेंदुलकर, गोर्की आदि की कृतियों की भी चर्चा हुई है।

'सदा वारेनोट (हमेशा तिरछी दृष्टि) प्रसिद्ध पत्रकार, कहानीकार श्री

जी.एस. सदाशिव के अग्रलेखों का संकलन है। यह 9वें दशक के विद्यमानों पर व्यंग्य शैली में लिखा विडंबनात्मक आलेखों का विशिष्ट ग्रंथ है।

कोश : *'नुडिकोश' यह मलेनडु* (कर्नाटक के पश्चिमी घाटी प्रदेश) शब्द कोश है। इसे श्री वेणाक्षी एस.डी. ने संपादित किया है। यह कर्नाटक जानपद विश्वविद्यालय, हावेरी (कर्नाटक) से प्रकाशित है। मलेनाडु प्रदेश की लोक संस्कृति और उस भाषिक संस्कृति को समझने के लिए सहायक महत्वपूर्ण आधार 'नुडकोश' (शब्दकोश) है।

'दक्षिण भारतीय देशी कृषि विज्ञान कोश (दो भागों में) इसके प्रधान संपादक हैं जानपाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अंबळिगे हिरियण्णा। दक्षिण भारत के कृषि वैविध्य को ध्यान में रखकर आम जनता के प्रयोजन से यह देशी कृषिकोश दो भागों में प्रकाशित किया गया है। 'त्रिभाषा निघंटु' (कन्नड–अंग्रेजी–हिंदी) वचन पद संपदा प्रो.टी.आर. महादेवय्या के संपादन में एक अनुवादक मंडल की सहायता से प्रकाशित है।

'हालुमत सांस्कृतिक पदकोश' भाग–1 डॉ० लिंगदळ्ळि हालप्पा से संपादित कोश ग्रंथ है। 'विस्तृत जानपद ग्रंथ सूची' भी कर्नाटक जानपद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अंबळिगे हिरियण्णा और क्यातनळ्ळि रामण्णा से संपादित है।

'हस्तलिपि संकथन डॉ० वीरेश बडिगेरे से रचित 19 आलेखों का संग्रह तीन भागों में हुआ है। इसमें वीरेश जी ने हस्तलिपि शास्त्र के क्षेत्र में जो कार्य हुआ है और जो कार्य हो रहा है और जो कार्य होना चाहिए, उनकी ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। यहाँ के आलेख हस्तलिपि पठन के कई आयामों पर विचार विनिमय के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

ऐतिहासिक : *टिप्पुसुल्तान कालद प्रसंगगळु* (टीपू सुलतान काल के प्रसंग) के लेखक हैं तलकाडु चिक्क रंगे गौड़ा। टीपू सुलतान मैसूर राज्य के इतिहास में ब्रिटिशों के साथ लड़नेवाले महत्त्वपूर्ण शासक थे। वे कुशल प्रशासक भी थे। इस कृति में टीपू का कन्नड भाषा प्रेम, उनका दंडविधान, उनके पिता हैदरअली की हास्य प्रज्ञा आदि का मनोज्ञ वर्णन है।

साहित्य विमर्श : 'वरकवि बेंद्रे काव्यार्थ दर्शिनी' प्रो. बी. बी. राजपुरोहित का सांस्कृतिक तथा भाषा साहित्यिक दृष्टि से कन्नड के श्रेष्ठ कवि द. रा. बेंद्रे के काव्य पर चिंतन है।

'*कोम सामरस्य : शतमानगळ काव्य साक्षी* (सांप्रदायिक समरसता शताब्दियों का (कन्नड) काव्य साक्षी) में संपादक के. वी. श्रीनिवासमूर्ति जी ने सांप्रदायिक समरसता पर कन्नड काव्य को साक्षी रूप में रखकर चिंतन किया है।

साहित्येतर गद्य–लेखन :

'*बदलागुत्तिरुव कर्नाटक*' (कर्नाटक जो बदल रहा है) श्री एम. चंद्र पुजारी द्वारा रचित है। इसमें 9वें दशक के कर्नाटक के विकास को ध्यान में रखकर किए गए अध्ययन का सार है। भाषा, शिक्षा, महिला, रोजगार आदि विषय पर सामाजिक, शैक्षिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि में जो परिवर्तन हुआ है, उसका विवरण दिया गया है।

'*आधुनिक शिक्षा मत्तु सामाजिक बदलावणे*' (आधुनिक शिक्षा और सामाजिक बदलाव) डॉ० एम.आर. रवि द्वारा रचित है। इनमें शिक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन हुआ है उसका अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मैसूर के राजा कृष्णराज ओडेयर–चतुर्थ ने शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लाने का जो श्रम किया था, लेखक ने उसका ससम्मान उल्लेख किया है।

'*इदु जेन अल्ल*' (यह जेन नहीं) श्री कुच्चंगि प्रसन्न की गद्यकृति है इसमें 'जे़न' का परिचय देने का प्रयत्न है। 'जेन' बौद्धधर्म का ही भाग है जो अपने तात्विक गुणों से आकर्षण का केंद्र बना है। 'जेन' का अर्थ है ध्यान। प्रस्तुत कृति में जेन का इतिहास, गुरु, सूत्र आदि का परिचय दिया गया है।

तंतियोळगिन जगत्तु (तार के बाड़े के भीतर का जगत) श्री मल्लिकार्जुन बी. बी. मान्पडे के कर्नाटक की जनजाति पर अध्ययन का ग्रंथ रूप है। ब्रिटिशों ने इन जनजातियों को (Criminal tribe act) अपराधी–जनजाति अधिनियम के अंतर्गत '*अपराधी* कह दिया था। ये लोग 'तारबाड़े' में रहते थे। हुबली, गदग, बेलगाँव, बिजापुर आदि कर्नाटक के उत्तरी प्रदेशों में रहते हैं।

'कन्नड–चलचित्र : भाषा सी. वी. प्रेम पल्लवी से रचित कृति है। इसमें 1934–2007 तक के कन्नड सिनेमा प्रयुक्त – पौराणिक, भक्ति–प्रधान, सामाजिक, राजकीय हास्य आदि की भाषा अध्ययन 'टैटल कार्ड से संभाषण तक' किया गया है।

'हालक्किगळु : ओदु अध्ययन (हालक्कि जनजाति एक अध्ययन) लेखक श्री विष्णु नायक की हालक्कि जनजाति के जीवन पर रची कृति है। उत्तर कन्नड जिले सागर के जंगलों के मध्य में जी रही इस जनजाति के वैविध्यमय आचरण, भाषा, कुलवृत्ति, पहाडी जीवों के बीच से देखा उनका चित्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

सत्तमेले समाजसेवे' (मरने के बाद समाज सेवा) डॉ० ना. सोमशेखर की देहदान से संबंधित गद्यकृति है। यह मरने के बाद देहदान के लिए प्रेरित करनेवाली कृति है। लेखक चाहते हैं कि इस प्रकार की पुस्तक पढने के बाद लोगों में देहदान करने की इच्छा पैदा हो।

'स्मार्ट इंग्लिश प्रो. राजाराम द्वारा रचित युवाओं के लिए अंग्रेजी सीखने में सहायक कृति है जिसका प्रकाशन विकास प्रकाशन बेंगलुरु से हुआ है।

अनुवाद :

आज अनुवाद का युग है। सारे भारतीय भाषाओं के बीच में अनुवाद कार्य हो रहा है। केवल साहित्यिक अनुवाद ही नहीं, ज्ञान–विज्ञान से संबंधित कृतियों का भी अनुवाद हो रहा है। अतः भारतीय भाषाओं के समृद्ध होने में अनुवाद की अहं भूमिका है।

'मैकल के कालमान कृति के मूल लेखक श्री जे.एम. कुटसी है। इसके अनुवादक श्री सुनिल राव हैं। यह नोबेल पुरस्कार प्राप्त जे. एम. कुटसी के उपन्यास का अनुवाद है। इसका एक पात्र जब दक्षिण अफ्रीका में अंतःकलह चल रहा था, माँ को जन्मस्थान से ले जाने का प्रयत्न करता है। परंतु माँ रास्ते में ही मर जाती है। आगे वह पात्र स्वतंत्र जीवन बिताता है।

अन्य उपन्यासों में *'अस्तव्यस्त बदुकिन स्त्रीयरु'* (डिसआर्डर्ली वुमेन) अंग्रेजी से कन्नड में अनूदित है। मूल लेखिका मालती राव है और अनुवादिका

एम. वी. वसंतकुमारी जी हैं। '*अग्नेय*' मलयालम मूल का उपन्यास है। मूल लेखिका पी. वत्सला है और अनुवादक श्री मोहन कुंटार जी है। '*बेगुदि*' मूल अंग्रेजी उपन्यास '*ककोल्ड*' शीर्षक से है जिसके लेखक किरण नागप्पा जी हैं और अनुवादक हैं श्री आर. लक्ष्मीनारायण।

1944 में मेघदूत का अनुवाद 'साली रामचंद्ररायर कन्नड मेघदूत' (साली रामचंद्रराय का कन्नड मेघदूत) साली रामचंद्रराय ने किया था परंतु तब यह प्रकाशित न हुआ था। अब डॉ० सिद्धलिंग पट्टणशेट्टी जी ने इसका संपादन किया है और यह धारवाड़ (कर्नाटक) से प्रकाशित है।

'*पीठाधिपतिय पत्नी*' (पीठाधिपति की पत्नी) छठी पत्नी की कथा है जो मूलतः पाकिस्तान की तेहमिना दुर्रानी की (My feudal lord) आत्मकथा है और जिसका कन्नडानुवाद श्री राहू (आर. के. हुडगि) ने किया है। यह बहुचर्चित विवादित कृति है जो अब तक चालीस भाषाओं में अनुवादित हो चुकी है। लेखिका ने पाकिस्तान की राजनीति, वहाँ की जागीदारी व्यवस्था के भाग के रूप में पुरुषों द्वारा (पतियों) महिलाओं को दी गई यातना का मार्मिक चित्रण किया है। यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गवर्नर गुलाम मुस्तफा खार की छठी पत्नी दुर्रानी की आपबीती कथा है।

'आदि–अनादि भाग–1–2' हिंदी की प्रसिद्ध कहानीकार चित्रा मुद्गल की समग्र कहानियों का संग्रह है, जिसका अनुवाद आर. पी. हेगड़े ने किया है।

'*औंदिष्टु भारतीय कथेगळु*' (कुछ भारतीय कहानियाँ) डी. एन. श्रीनाथ जी द्वारा संपादित और अनुवादित कृति है। ये कहानियाँ अनुवादों के अनुवाद हैं क्योंकि संकलन में असमी, मणिपुरी, मैथिली, नेपाली, बोडो, कश्मीरी भाषाओं के अनुवाद हैं। इनकी हिंदी के माध्यम से सामग्री पाकर श्रीनाथ जी ने अनुवाद किया है। इन कथाओं में उन भाषा प्रदेशों की मिट्टी का गंध है।

'*निर्भय – भगतसिंहन जीवन मत्तु होराट*' (निडर भगतसिंह का जीवन और संघर्ष) यह मूलतः कुलदीप नय्यर द्वारा रचित है, जिसका अनुवाद एस.

दिवाकर जी ने प्रस्तुत किया है। पत्रकार कुलदीप नय्यर जी ने स्वतंत्रता सेनानी भगतसिंह की जीवनी काफी शोधकार्य करके लिखा है। क्रांतिकारी युवक भगतसिंह ने 23 वर्ष की सीमित अवधि में फाँसी पर चढ़कर जो साहस दिखाया, वह क्रांतिकारी वीरों के इतिहास में अविस्मरणीय है।

'*जेडर कणिवे मत्तु कथेगळु* (जेडर घाटी और अन्य कहानियाँ) के मूल लेखक केनेत अंडर्सन है और इसका नडहळ्ळी वसंत जी ने अनुवाद किया है। शिकारी साहित्यासक्तों के लिए अंग्रेज लेखक अपरिचित नहीं। भारत के जंगलों में इन शिकारियों ने जो नरभक्षक बाघ और चीतों का शिकार किया था उसका रोमांचक निरूपण इसमें हुआ है।

'राष्ट्रकवि अल्लामा इकबाल' के मूल लेखक एस.एम.एच. बर्नी जी हैं जो हरियाणा के पूर्व राज्यपाल रहे हैं। इसके कन्नडानुवाद को चेन्नबसप्पा (को.चे.) जी ने किया है।

'*नेनपिन हळ्ळी* (गाँव जो स्मरण में) मराठवाड़ा दलित की आत्मकथा है। मूल मराठी लेखक है सोना कांबळे और इसके अनुवादक श्री चंद्रकांत पाकळे हैं। यह आत्मकथन महारों की बोलचाल की भाषा में निरूपित है।

साहित्य अकादमी, दिल्ली से अनुवादित कृतियों में काव्यानुवाद 'मोहना, ओ मोहना' उल्लेखनीय है। यह तेलुगु कवि के. शिवारेड्डी की कविताओं का संकलन है, इसका अनुवाद चिदानंद साली जी ने किया है। उदाहरणस्वरूप *हाडु ताकित तक्षणव (गीत ताकते ही)* कविता की कुछ पंक्तियाँ –

मैं गीत बनकर लोक के गीतों में समा गया हूँ।
अब मैं गीत का गीत से ही उत्तर दे सकता हूँ।

'*नानु मलाला* 2014 में नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित बालिका की आत्मकथा है। मूल निरूपक है क्रिस्टिना लेंब, अनुवादक बी. एस. जयप्रकाश नारायण जी है।

साहित्य अकादमी से '*भारतीय साहित्य निर्माता* के अंतर्गत शांतिनाथ देसाई की रचना '*भवानी भट्टाचार्य* का अनुवाद सी. वस्तद ने; एच. एस.

एच. एस. ब्रह्मानंद की रचना *'गिडुगु वेंकटरमण मूर्ति'* का अनुवाद वि. गोपालकृष्ण ने; अब्दुल कवि दस्तवि के 'मौलाना अब्दुल कलाम आजाद' का अनुवाद एम.एस. के प्रभु ने; सुधाकर पांडेय की रचना 'श्यामसुंदरदास' का अनुवाद टी. वी. अन्नपूर्णम्मा ने किया है।

श्री के. जी. रंगय्या ने अंग्रेजी के गीतों का कन्नडानुवाद *'दर्पण'* शीर्षक संग्रह में किया है, जिसमे रवींद्रनाथ ठाकुर, खलील जिब्रान, शैली आदि के 50 से अधिक गीतों का संग्रह हैं। उन्हीं ने जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' काव्य का काव्यानुवाद *'कंबनी'* शीर्षक से और मैथिलीशरण गुप्त जी के *'पंचवटी'* का उसी शीर्षक से किया है। काव्यानुवाद, वह भी छंदों में, करना आसान नहीं है। यह कार्य अभिनंदनीय है।

2014 की कन्नड साहित्य रचनाओं का अवलोकन करने से लगता है कि युवा पाठकों की संख्या बढ़ रही है और वे साहित्येतर ज्ञान–विज्ञान की ज्ञानवर्धक कृतियों जैसे व्यक्ति विकास, अंग्रेजी सीखना आदि से संबंधित रचनाओं की ओर ज्यादा आकर्षित हैं। इस साल नाटक साहित्य की रचना नहीं के बराबर है। सामान्य पाठक भी कहानियों की ओर आकर्षित हैं। पाठकों को पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही हर महीने पचास–साठ कहानियाँ मिल जाती हैं। अतः केवल पुस्तक रूप में ही नहीं, पत्रिका – दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आदि द्वारा मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक साहित्य भी पढ़ने को मिल जाता है। पत्र–पत्रिकाओं में महंगाई का प्रश्न भी नहीं।



41 HRD/16—5B

4

कश्मीरी साहित्य

डॉ० महाराजकृष्ण भरत

कश्मीरी भाषा साहित्य को समृद्ध करने के साथ–साथ इन तथ्यों पर भी विचार मंथन हो रहा है कि आधुनिक युग के परिवर्तनशील जीवन में मातृभाषा के स्वाद को कैसे बनाए रखा जाए। जब हम अपनी मातृभाषा को व्यवहार में लाते हैं तो अनेक ऐसे शब्द भी सहज रूप से समा जाते हैं जो अन्य भाषा–बोलियों के होते हैं। इन शब्दों के मेल से भाषा का ठेठपन कहीं दूर ही रह जाता है। अन्य भाषाओं के ये शब्द जिनकी हमें आवश्यकता महसूस होती है वह निस्संदेह ही मातृभाषा को और समृद्ध करते हैं। सभी भाषाएँ अपने–अपने स्थान पर महत्व रखती हैं पर यदि एक व्यक्ति अपनी मातृभाषा के रंग–रूप से विमुख होता जाएगा तो वह उस भाषा में निहित परंपराओं, संस्कार–संस्कृति से भी दूर होता जाएगा। भारतीय भाषाओं में तो इस देश की स्थानीय गंध समाहित है जो हिंदी भाषा के माध्यम से सशक्त रूप से अपना दिग्दर्शन कराती है। हिंदी भारतीय भाषाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए संपर्क भाषा का कार्य भी कर रही है। यहाँ हम कश्मीरी साहित्य–2014 का भी आकलन हिंदी के माध्यम से ही कर रहे हैं।

जब हम 2014 में प्रकाशित कश्मीरी साहित्य पर विहंगम दृष्टि डालते हैं तो हमें गज़ल, नज्म एवं लीला–भजन संग्रह बहुतायत में मिलते हैं, अफसाना–संग्रह (कहानी संग्रह) भी अपनी दस्तक देते हैं पर उपन्यास, नाटक, संस्मरण तथा आलोचना के क्षेत्र में निराशा ही अधिक दिखती है।

कश्मीरी साहित्य में अभी तक लगभग 15 उपन्यास, 15–20 कथा संग्रह आए होंगे। कश्मीरी गद्य साहित्य पर चिंता व्यक्त करते हुए कश्मीरी भाषा साहित्य के मर्मज्ञ डॉ० ओमकार कौल त्रैमासिक पत्रिका 'वाख' के संपादकीय में लिखते हैं कि 'यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कश्मीर में केवल 15 उपन्यास लिखे गए.....अफसाने लिखने की परंपरा कश्मीर में 1950 में प्रारंभ हुई। मगर कुल 10–20 अफसाना–संग्रह होंगे या अभी तक लगभग 150 से 200 अफसाने होंगे।'

जब मैंने कश्मीर के नामवर साहित्यकार शहज़ादा रफीक से इस परिप्रेक्ष्य में बात की, तो उन्होंने कश्मीरी साहित्य 2014 पर निराशा ही व्यक्त की। उनका मानना है कि साहित्य लेखन में एक संतुलन बनाने की आवश्यकता है। एक ओर हम धड़ल्ले से गज़लों–नज़्मों व अन्य विषयों पर कविता प्रकाशित कर रहे हैं पर दूसरी ओर हम उपन्यासों, नाटकों एवं समालोचना की पुस्तकों से वंचित हो रहे हैं। मखन लाल पंडित, रहीम, महफूजा जान जैसे लेखक अफसाने लिख रहे हैं, मुहम्मद सुभान भगत, हॉजनी तथा मोती लाल क्यमू नाटक विधा में लेखनरत है, पर कश्मीरी भाषा में इस विधा में आशा के अनुरूप प्रचुर मात्रा में पुस्तकें नहीं छप रही हैं। उन्होंने 2014 में प्रकाशित गुलाम नबी नॉजिर, शमसुद्दीन शमीम, डॉ. गुलाम नबी हलीम तथा मोती लाल नाज की सद्य प्रकाशित पुस्तकों का भी उल्लेख किया। शहज़ादा रफीक एक कवि हैं तथा एक साहित्य संगठन के अंतर्गत 'सकाफत' नामक शोधपत्र का संपादन भी कर रहे हैं। सकाफत–2014 का वार्षिक अंक इन्होंने डॉ० मरगूब बानिहाली के रचना संसार पर प्रकाशित किया है जो 350 पृष्ठों का विशेषांक हैं। इसमें प्रेमी रोमानी मंशूर बानिहाली, मुहम्मद यूसुफ टेंग, शाद रमजान के सारगभित लेख भी हैं।

कश्मीरी भाषा साहित्य की प्राचीन लिपि शारदा रही है। मध्यकाल के आततायी दौर में इस का स्थान नस्तालीख लिपि ने लिया। वर्तमान में नस्तालीख और वैकल्पिक रूप से देवनागरी लिपि में कश्मीरी साहित्य छप रहा है। देवनागरी लिपि उन लेखकों और पाठकों के लिए समय की मांग है,

जो या तो नस्ताली़ख लिपि का ज्ञान नहीं रखते थे या फिर जो अपने पाठकों तक इस लिपि के माध्यम से ही पहुँच सकते थे। इस आलेख में 2014 में प्रकाशित 12 कविता संग्रहों, दो अफसानों, एक निबंध, एक आलोचना, एक शोध पत्रिका के अतिरिक्त कश्मीरी भाषियों द्वारा हिंदी में प्रकाशित नाटक संग्रह एवं अंग्रेजी की दो पुस्तकों की भी चर्चा की गई है। एक कश्मीरी व्याकरण की भी बात होगी।

(क) काव्यसंग्रह

1. '*त्येबरि वुजिन* (ग़ज़ल संग्रह)

2. '*मॉज कशीर* (नज़्म संग्रह)

3. '*गिंदुबाश अछर गौंदय* (बाल कविताएँ)

कश्मीरी भाषी गुलाम नबी नॉजिर एक संजीदा एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि हैं। कवि नाजिर निरंतर साधना रत हैं तथा अपने लेखन से कश्मीर की संस्कृति के शब्द चित्र भी उकेर देते हैं। कहीं पर इनकी कविताओं में बच्चों की किलकारियाँ गूँजती हैं तो कहीं लोक गीत बातें करने आते हैं। इनके 2014 में तीन संग्रह प्रकाशित हुए हैं। त्यंबरि वुज़िन (चिंगारी उद्‌भव) ग़ज़ल संग्रह है, जो 204 पृष्ठों पर आधारित है। गजलें व्यक्ति के अंतर्विरोध, भीतर के छिपे हुए प्रस्फुटन है, जबकि 'मॉज कशीर' (माँ कश्मीर) नज़्म संग्रह में कश्मीर की प्राकृतिक सुषमा, वहाँ के पेड़, खेत खलिहान, नदियों, जलप्रपातों का चित्रण हैं। गिंदुबाश अछर गौंद्य (बच्चों के खेल अक्षर समूह) संग्रह में बच्चों की कविताएँ हैं। कवि बाल मन की थाह लेते हुए उन भावों को शब्दों में उकेर देता है। 212 पृष्ठों पर बाल कविताओं के अतिरिक्त कश्मीर के लोक गीतों की भी झलक दिखाई देती है। 'मॉज कशीर' 264 पृष्ठों पर आधारित नज़्म संग्रह है।

4. '*क्या ल्यूखनम कलमन* (कविता संग्रह)

'*क्या लिखा कलम ने* (क्या ल्यूखनम कलमन) संग्रह की नज़्में पीर हसन अंजर ने रची हैं। 133 पृष्ठों पर आधारित इस संग्रह में दर्द की दुनिया है, टीस और चुभन है। प्रेम को परिभाषित करने वाले कवि के भाव हैं। पीर

हसन ऐसे कवि हैं जो प्रेम की दुनिया में मग्न हैं। प्रेम तो समयातीत होता है। कवि ने जो महसूस किया उसी का प्रकटीकरण अपनी लेखनी द्वारा किया है। चाहे वह मन की पीड़ा हो या फिर पर–पीड़ा।

5. *'गाह तु गटु'*

कश्मीरी भाषा साहित्य के कवि बालकृष्ण संन्यासी का दूसरा काव्य संग्रह 'गाह तु गटु' (प्रकाश व अंधेरा) प्रकाश में आया है। 176 पृष्ठों के इस संग्रह में 39 नज़्में तथा 50 गज़लें संकलित की गई हैं। ये नज़्में–गज़लें हमें भीतर तक झकझोरती हैं और साथ ही एक नई दुनिया की ओर ले जाती हैं। कश्मीरी भाषा के कवि श्री मोती लाल नाज़ कहते हैं कि मुझे पहले लगता था कि यह नज़्मों के कवि हैं लेकिन इस कवि की गज़लें पढ़कर, उनकी संरचना–तुकबंदी, शब्द प्रयोग तथा लेखन की ऊँचाई देखकर यह स्वीकार करना ही होगा कि इन की गज़लें भी नए रूप–रंग के साथ पाठकों को प्रभावित करती हैं। 'कॅतिजि वोननम नज़मि हंजु यिम सॅतुरः' शीर्षक से कवि सन्यासी कहते हैं कि अबाबील ने उन्हें नज़्म की ये पंक्तियाँ बोली : –

"ग्वलाबु गुल चै ब्रॉहति फौल्य
ग्वलाबु कॅन्डय तिमनति लॉरय
कन्डयव कॅशीर आवुरॉव
तु रावुरोव तिमन शॉजर
पज़र छु थी ज़ि नारबुज़्य
गोमुत छु सोंथ तय शिशुर
ग्वलाबु कॉशिरयुत कत्यू"

अर्थात्

ऐ गुलाब! कोंपले तेरी पहले भी फूटीं
ऐ गुलाब! काँटे उनके साथ भी लिपटे
काँटों ने कश्मीर को उलझा दिया
और खो दी उन्होंने पावनता
सच यह है कि जल उठा है शिशिर और वसंत

ऐ गुलाब! कश्मीरत्व कहाँ?

प्राकतिक चित्रण के साथ–साथ कवि ने अशाबील को अपनी व्यथा का माध्यम बनाकर कश्मीर की परिस्थितियों का आकलन किया है। जब कवि का मन रुदन कर रहा है तो उन्हें शिशिर ऋतु की कंपकपाती ठंड में भी आग के गोले बरसने का एहसास होता है। कश्मीर की पुष्पवाटिका में आतंकवाद रूपी काँटों ने वहाँ के सांप्रदायिक सौहार्द को क्षति पहुँचाने का कुप्रयास किया है। इसीलिए कवि कश्मीरियत रूपी भाइचारे के खो जाने, या फिर खो जाने के बाद उसको पुनः पाने की उत्कंठा लिए हुए हैं। कवि बालकृष्ण सन्यासी एक संजीदा कवि हैं जो अपनी भावनाओं को प्रतीकों एवं बिंबों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

6. हमेशि बहारूक सोंथ़ु अतुगथ

कश्मीरी साहित्य में पद्य और गद्य में लेखनरत कवि रविंद्र 'रवि' कश्मीरी भाषा के जाने माने कवि सर्वानंद कौल प्रेमी के सुपुत्र हैं। 167 पृष्ठों पर आधारित संग्रह 'हमेशि बहारूक सोंथ़ु अतु गथ' (सदैव बहार का वसंत आना–जाना) में 73 ग़ज़लें व 21 वाख संकलित किए गए हैं। घाटी से निष्कासित होने का दर्द अन्य सहरचनाकारों की तरह रविंद्र रवि में भी चीत्कार कर उठता हैः

गॅमुच़तति ख मकानन डाफ त्रॉविथ
करान शेहल्यन कुल्यन् बेयि याद सॉरी
छाराम कति येति़ गाम पनुन
येमि आदमु वन कुस ताम पनुन
(दरारों ने हर मकान पर अपने पाँव पसारे
कर रहे शीतल पेड़ों को फिर याद सभी
खोजेंगे कहाँ यहाँ गाँव अपना
इस अजनबी भीड़ में कोई तो अपना है।)

अपना गाँव, शहर जब छूट जाता है और किसी अन्य अपरिचित स्थान पर फिर से बसने का संघर्ष किया जाता है, तब यह एहसास होता है कि

अस्तित्व एवं अस्मिता की लड़ाई कितनी दुष्कर होती है। कवि का एक और वाक्यांश प्रस्तुत है:

वौन दयुतुख बैयि वुछोन इनसाना
बस छु अज्ञयात वास बॅस्यती मंज
ग्रशमु शहरस छे हूल्य हालय
शीनु छटि हुन्द खयाल रटख
यिमन तापु शहनर पि वुहवुन वहुबाब
वृछिर्थ छुय गछान ज़न कमन ताम ग्वतन"
(झांका फिर देख मानव को
है वह अज्ञातवास बस्ती में
ग्रीष्म शहर में यह हाहाकार/इन ताप शहरों का यह ग्रीष्म कहर देखकर हो जाता हूँ गुम न जाने किन विचारों में)

रविंद्र रवि की नज्मों में स्वानुभूति और खो गई विरासत का दर्द है। वह अपने पैतृक गाँव से विवशता से निकल आए हैं अब उन्हें कोई अपना नहीं दिखता। कवि कहता है कि यहाँ किस से पता पूछा जाए, शहर ही ऐसा है, किसे क्या कहें, यह शहर ही ऐसा है। घर के पदचाप गहरे उल्टे हृदय में, यहाँ किसी को अपना नहीं देखा, ये शहर ही ऐसा है–

प्रछव येति कस पताह शहरुय युथुय
दिमुकुस गाम छा शहरुय युथुय
गरिक्य वतु पॅघ सॅनिथ अज़ताम जिगर स
वुछुम कति येति अखा शहरुय युथुय।

7. *'श्रद्धापोश*

कश्मीरी भाषा साहित्य के प्रतिष्ठित कवि मोती लाल मसरूफ के अब तक चार कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके है जिनके नाम हैं – 'यथ वावु हालि मंज' (इस वायु तरंग में), 'शिहिल्य पैदय' (शीतल पग), 'मरग पोछव कथुय चॅट' (मगर फूलों ने बात ही छोड़ी) और 'श्रद्धा पोश'। पहले तीन संग्रहों में कवि की गज़लें, नज्में, वचन तथा रुबाइयाँ संकलित हैं जबकि 'श्रद्धापोश'

(श्रद्धा पुष्प) में भजन एवं लीलाएँ संकीलत हैं। 'श्रद्धा पोश' लीला संग्रह का पहला संस्करण 2006 में प्रकाशित हुआ है और अब 2014 में इस संग्रह का दूसरा संस्करण छप कर आया है जिसमें लगभग 35 लीलाएँ और जोड़ दी गई हैं। संग्रह में कुल 73 लीलाएँ एवं भजन संकलित हैं। यह कवि की लोकप्रियता का परिणाम है कि इस संग्रह का दूसरा संस्करण पाठकों के सामने नए रंग–रूप और अतिरिक्त सामग्री के साथ आया है।

कश्मीरी भाषा साहित्य के प्रसिद्ध समालोचक प्रो. भूषण लाल कौल कवि की रचनात्मक यात्रा का आकंलन करते हुए लिखते हैं कि मोती लाल मसरूफ एक सफल गज़लकार हैं। श्री अमीर कामिल साहब उनकी प्रतिभा से बहुत ही प्रभावित होकर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि इतने संजीदा व ठोस शायर अभी तक हमारी नज़रों से कैसे ओझल रहे, यह आश्चर्य की बात है। श्री कामिल कश्मीरी भाषा के सिद्धहस्त कवि हैं। इसके अतिरिक्त कवि मसरूफ के चिंतन, लेखन कौशल पर जम्मू क़श्मीर के जानेमाने कवि एवं लेखक रहमान राही एवं मुहम्मद युसूफ टेंग ने भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए भविष्य में इनमें और आशाएँ जोड़ी हैं।

'श्रद्धा पोश' लीला संग्रह में श्री गणेश, शिव, कृष्ण, राम की स्तुतियाँ गाई गई हैं। साथ ही, गुरु की महिमा का वर्णन किया गया है। कवि को प्रकृति के कण–कण तथा सरगम के हर स्वर में श्री कृष्ण का प्रतिबिंब दिखाई देता है–

दीपक चुय छुख चय मल्हार, चुय छुख ग्यान तय ग्यानुक सार।
चुय छुख साज़ तय संतूरो, ख्वनि ख्वनि ललवथ कनु दूरो।
वनि यित, अकि लटि थनि चूरो, ख्वनि–ख्वनि ललवथ कन दूरो।।
अर्थात्
दीपक तुम हो तुम्ही मल्हार, तुम्हीं ज्ञान और ज्ञान के सार।
तुम्हीं हो साज व संतूर, गोद मे झुलाते ऐ कर्ण फूल।
अब आ एक बार ऐ माखन चोर, गोद में झुलाते ऐ कर्ण फूल।।

हिंदी साहित्य के संत कबीरदास ने हम सब को गुरु भक्ति, गुरु महिमा

एवं प्रतिष्ठा का पाठ पढ़ाया है। उनकी वाणी और श्रद्धा से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। कवि मसरूफ ने गुरु की महिमा का गुणगान कई लीलाओं में किया है। 'दयगथ करतम छुस बनिर्बर' (कृपा करो मैं हूँ निर्भर) लीला के कुछ अंश द्रष्टव्य है–

दयगथ करतम छुस बु निर्बर, वतु हावुक छुक चुय सत ग्वर।
यलु त्रावुख यिम भावुक्य बर, वतु हावुक छुख चुय सत ग्वर।'
अर्थात्
कृपा करो मैं हूँ निर्भर, पथ दिखाने वाले हो तुम सत् गुरु।
स्वतंत्र छोड़ो इन भावों के द्वार, पथ दिखाने वाले हो तुम सत् गुरु।

कश्मीर के शुपयान ज़िले के अंतर्गत दीगाम (नागबल) गाँव के बिंदास कवि मसरूफ की शिव भक्ति एक सहज प्रक्रिया है। इसी गाँव दीगाम में शिव को समर्पित एक मंदिर है – 'कपाल मोचन'। इसमें शिव कपलेश्वर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इस तीर्थ की एक धार्मिक और ऐतिहासिक प्रतिष्ठा है। अपने इष्ट देव का स्मरण करते हुए कवि कहता है–

छुख कपाल मोचन कप्लेश्वरय ही चराचरय मे ऑरचर बोज़
रोज़ुम सहायक छुस निर्बरय, ही चराचरय मे ऑरचर बोज़

कवि कहते हैं कि ऐ कपालमोचन मंदिर में मेरे आराध्यदेव कपलेश्वर आप चर और अचर के स्वामी हैं, मेरी भी विनती सुनिए। मैं निर्भर, निसहाय हूँ। मेरी सहायता करो, ऐ चराचर मेरी विनती सुनो।

शिव के साथ–साथ कवि ने शक्ति की भी उपासना की है। 84 पृष्ठों की पुस्तक में शक्ति की उपासना करते हुए कवि कहता है :

"गौरी चु दुर्गा चुय अबा, औम श्री भवॉनी चुय उमा
छख राजिरेन्य रोजुम सहा, औम श्री भवॉनी चुय उमा"
अर्थात्

गौरी तुम दुर्गा तुम अंबा, ओम् श्री भवानी तुम उमा / हो राजेश्वरी रहो सहायक, ओम् श्री भवानी तुम उमा।

यह संग्रह देवनागरी लिपि में लिखा गया है।

8. *'स्वन् पोश*

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण में दक्षिण कश्मीर के ऐतिहासिक गाँव मार्तंड में जन्मे स्वन् जू खार ने इस शताब्दी के मध्य में लेखन की शुरूआत की और जीवनपर्यंत रचनाशील रहे। इनके द्वारा रचित भजन एवं लीलाएँ लोग अब भी चाव से गुनगुनाते हैं। कश्मीर के भक्त कवि पं. कृष्ण जू राजदान की लीलाओं का इन पर विशेष प्रभाव है। विडंबना यह है कि न इनकी रचनाएँ इनके जीवन काल में प्रकाशित हो पाईं और न ही इनके देहांत के 34 वर्षों बाद भी इनका कोई संकलन प्रकाशित हो पाया। 2014 में कवि की 110 वीं जयंती के अवसर पर 'स्वन् पोश' नामक भजन–लीला संग्रह प्रकाश में आया है जिसे संकलित एवं संपादित किया है महाराज कृष्ण भरत ने। इस विरले प्रयास में कवि की उपलब्ध केवल 18 भूली–बिसरी लीलाओं को देवनागरी एवं नस्तालीख दोनों लिपियों में लिपिबद्ध किया गया है। 118 पृष्ठों (दोनों लिपियों में) के इस संग्रह का पूर्व कथन हिंदी–कश्मीरी साहित्य के विद्वान एवं हिंदी कश्मीरी संगम के अध्यक्ष प्रो. चमन लाल सप्रू ने लिखा है तथा कश्मीर संदेश पत्रिका की संपादक एवं हिंदी–कश्मीरी लेखिका डा. बीना बुदकी ने दो शब्द लिखकर इस संग्रह को और महत्वपूर्ण बना दिया है।

इस संग्रह की एक विशेषता यह भी है कि स्वन् जू खार की पोती शशि खार ने 'दादा जी के प्रति भावांजलि' लिखकर दादा–पोती के रिश्ते को और जीवंत कर दिया है। पुस्तक को निर्वासन साहित्य प्रकाशन ने छापा है। शशि खार लिखती हैं कि 'मेरे पिता जी (श्री सोमनाथ खार) की रुचि जब संगीत के प्रति बढ़ने लगी तो वह लाल (स्वन् जू खार) द्वारा रचित लीलाओं को अपनी डायरी में लिपिबद्ध करते रहे। यह उसी पहल का परिणाम है कि आज हम पहली बार दादा जी की उन लीलाओं का प्रकाशन कर रहे हैं, जिन्हें आम आदमी गुनगुनाता है, पर वह लीलाओं के रचयिता से पूरी तरह परिचित नहीं है।

हाशिए पर धकेल दिए गए इस कवि को पुनः जन साधारण से परिचित

है। स्तुति के क्षणों की एक झलक प्रस्तुत हैं:

ध्यान दारननायि मंज मुथन प्रान उलनुय
चलनुय दवख तु दॉदय गलनय चेय शाफ।
मनुकिन्य शरन गछ़ सिरियि भगवानम्।
मार्तण्ड जियनिस धानस ज्यठ।

अर्थात्

ध्यान धारणा में कहीं प्राण न भटके
दुख–दर्द का निवारण होगा श्राप मिटेंगे
मन से शरण हो सूर्य भगवान को
मार्तंड जी के अस्थापन पर।

उर्दू गज़लों की पूंजी न मिलने के कारण इस कवि के दूसरे पक्ष से शायद साहित्यिक जगत वंचित ही रह जाएगा। कवि स्वनु जू ने 'अंदलीब' (बुलबुल, एक प्रसिद्ध चिड़िया) उपनाम से कई उर्दू गज़लों को भी रचा है पर हमें एक ही गज़ल के कुछ अंश मिले हैं।

उल्लेखनीय है कि 'स्वनु पोश' का अर्थ स्वर्ण पुष्प भी है और इस शीर्षक के पहले अक्षर से कवि का नाम भी है।

9. *'छारान गोम यॅच़काल'*

पं. स्वन जू खार के सुपुत्र श्री सोमनाथ खार ने विरासत में लेखन एवं संगीत की विद्या अपने पिता से ग्रहण की। पिता की तरह ही संगीत के वादय यंत्र बजाने तथा भजन–कीर्तन मंडलियों में भाग लेना इनके जीवन का लक्ष्य रहा है। 'छादान गोम यच काल' (खोजते हो गया चिर काल) देवनागरी एवं नस्तालीख में प्रकाशित एक लघु कृति है, जिसका संकलन एवं संपादन महाराज कृष्ण भरत ने किया है। 64 पृष्ठों के इस लीला संग्रह में ग्यारह भजन हैं।

10. *'गाशु सदर*

कश्मीरी भाषा के प्रमुख कवि मोती लाल नाज़ का काव्य संग्रह 'गाशु सदर' (प्रकाश सागर) 215 पृष्ठों पर आधारित है। इस में कवि ने उन रचनाओं

को संकलित किया है, जो कवि की बीती जिंदगी से संबंधित है। कश्मीर में छोड़े गए पैतृक घर की उन्हें बार–बार याद आती है, वह कश्मीर की प्राकृतिक सुषमा और उसमें जुड़ी अपनी स्मृतियों को भावाभिव्यक्ति दे रहे हैं।

11. *'नंदु बब लीला*

कश्मीर में प्राचीन काल से ही अनेक महान संत–महात्मा हुए हैं। ऐसे ही एक संत थे, स्वामी नंदलाल साहिब जिन्हें उनके शिष्य नंद बाबा के नाम से पुकारते हैं। कश्मीर में इनका आश्रम गांदरबल क्षेत्र के नुनर गाँव में था और कश्मीर से सामूहिक विस्थापन के बाद इन के अनुयायियों ने जम्मू में स्थित लाले–दा–बाग में इनका भव्य आश्रम स्थापित किया। इन्हीं अनुयायियों में से नंदबाबा के शिष्य श्री मोती लाल भट्ट शफक भारती ने गुरु पर अंग्रेजी में एक पुस्तक लिखी थी जो 1998 में प्रकाशित हुई। अब इसी शिष्य ने हिंदी तथा कश्मीरी भाषा के सम्मिश्रण से 'नंदु बब लीला' नामक पुस्तक को 2014 में प्रकाशित किया। इस पुस्तक में नंद बाबा के चमत्कार, जीवनी तथा उनपर लिखे गए संस्मरण व लीला भजन संकलित हैं। एक बानगी प्रस्तुत हैं–

"जोरॅ दार डंड़ इस्तादु अथस क्यथ
हलिस तलवार, तबराह फेकिस प्यठ
शक्ति हुंद प्रतीक। ज़गि रक्षाए"

(अर्थात् ठोस छड़ी हाथों में, कमर में बंधी तलवार और कुल्हाड़ी पीठ पर, शक्ति के प्रतीक, जगत रक्षक तुम।)

12. *'नागु ज्वय*

नवोदित कश्मीरी कवि राजेंद्र आगोश कश्मीर में बांडिपोरा ज़िला के निवासी हैं तथा इन दिनों जम्मू में रह रहे हैं। उधमपुर में बटरबालियाँ विस्थापित कैंप में दयनीय अवस्था में जीवन–यापन करने वाले राजेंद्र को विस्थापन का तीखा अनुभव है। वह कब राजेंद्र से राजेंद्र आगोश बन गए इनको पता ही नहीं चला। बस कविता के बोल आते गए और राजेंद्र उन्हें पन्नों पर उतारते गए। उन्हीं दिनों कैंप के विद्यालय में उनकी भेंट अध्यापक श्री बी. ए. कौल से हुई; जिन्होंने आगोश का लेखन के क्षेत्र में मनोबल

बढ़ाया। अभी कवि को आगे के मार्ग की खोज थी। एक दिन वह इसी कैंप में आए कवि श्री मोती लाल से मिले। इन के बारे में उन्हें पहले ही जानकारी थी कि वह कश्मीरी भाषा में लिखते हैं। श्री मोती लाल मसरूफ (गज़लों एवं नज्मों के रचयिता) के संपर्क एवं सान्निध्य में आए तो कवि की साहित्यिक यात्रा प्रारंभ हो गई। कश्मीरी भाषा के ख्यातनाम कवि मसरूफ ने आगोश का परिचय कश्मीरी रचनाओं के संगठन नागराद अदबी संगम से कराया तथा कुछ पत्र–पत्रिकाओं तक इनकी रचनाएँ भी पहुँचाई। इन तथ्यों का उल्लेख स्वयं कवि आगोश अपने संग्रह 'नागु ज्वय' (जलकुंड उद्गम) में भी करते हैं। कवि की गद्य में लिखी पुस्तक 'धर्मुक्थ सौथ्य तु कर्मुच वदल' का प्रकाशन 2014 में हुआ है। दोनों पुस्तकें नस्तालीख में प्रकाशित हुई हैं।

'नाग ज्वय' 136 पृष्ठों पर आधारित गज़ल नज्म संग्रह है, जिसे प्रेम–पुष्प, दर्द, विस्थापन के कई आयाम तथा प्रकृति के विविध रूप है–

करिथ सितम अनिथ जख्मन ज़बान माशाकों
कॅर्‌य यिम दॉद्‌य सीनुक्य कलमन बयां माशोकों
अर्थात्
'किए सितम, घावों को दिए बोल हे प्रियतम,
किए सीने के रोग कलम के व्यक्त हे प्रियतम।

(ख) कथा साहित्य

पद्‌य के क्षेत्र में कश्मीरी साहित्य में जितनी पुस्तकें मिलती हैं उतनी गद्‌य के क्षेत्र में नहीं। गद्‌य में कथा–कहानियाँ तो फिर भी लिखी जाती हैं, पर आलोचना, नाटक तथा निबंध के क्षेत्र में कभी–कभार ही कोई रचना प्रकाशित होती है। वर्ष 2014 में दो अफसाने– 'वछस तल मज़ार' (वक्षस्थल तले मज़ार) तथा 'यैलि पर्द वौथ' प्रकाशित हुए हैं।

1. *'वछस तल मज़ार'*

प्रसिद्‌ध कथाकार तथा दूरदर्शन में अपनी सेवाएँ दे चुके शमसुद्‌दीन शमीम का कथा संग्रह 'वछस तल मज़ार' प्रकाशित हो चुका है। 141 पृष्ठों पर आधारित इस संग्रह में 11 अफसाने हैं। अफसाने जीवन के कटु अनुभव

तथा आम जीवन पर आधारित हैं। लेखक बहुत ही बारीकियों के साथ कथा के सूत्र को पिरोकर पात्रों और घटनाओं को जीवंत कर देते हैं।

2. *'येलि पर्द वोथ'*

श्री अवतार कृष्ण रहबर कश्मीरी भाषा साहित्य के नामवर कथाकार एवं समालोचक हैं। येलि पर्द वोथ' (जब पर्दा उठा) इनका नवीनतम कथा संग्रह हैं, जिसमें 16 अफसाने संग्रहीत किए गए हैं। 400 रु. मूल्य की 180 पृष्ठों की इस पुस्तक में कथाकार रहबर के गत पाँच दशकों के अनुभव संकलित हैं। यह उनका दूसरा कथा संग्रह है। उनका पहला कथा संग्रह 1958 में प्रकाशित हुआ था। आकाशवाणी केंद्र कश्मीर में कार्यक्रम अधिकारी होने के नाते रहबर कई साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे। 'येलि पर्द वोथ' नाम से इस संग्रह का एक अफसाना है जिसमें नाटकीय ढंग से एक–एक पात्र के चेहरे बेनकाब हो जाते हैं और पात्रों का सच पाठकों के सामने आ जाता है।

(ग) आलोचनात्मक पुस्तकें

1. *'तनकीद'*

डॉ. गुलाब नबी हलीम द्वारा रचित आलोचनात्मक पुस्तक 'तनकीद' (आलोचना) प्रकाश में आई है। 265 पृष्ठों की पुस्तक में कश्मीरी साहित्य से जुड़े अनेक आलेख संकलित किए गए हैं।

2. जोम सूबॅक्य कॅशिर कलमकार' तखनीम त तनकीद'

जम्मू संभाग के कश्मीरी कवि एवं लेखक की पुस्तक 'जौम सूबैक्य कॅशिर कलमकार तखनीम त तनकीद' (जम्मू क्षेत्र के कश्मीरी लेखकः समीक्षात्मक मूल्यांकन) में जम्मू संभाग में रचनारत लेखकों की रचना प्रवृत्ति की समीक्षा की गई है। 528 पृष्ठों की पुस्तक में कुछ विस्थापित रचनाकारों ने भी स्थान पाया है।

3. धर्मक्य सौथ्य तु कर्मुच वदल'– रचयिता राजेंद्र आगोश

अर्थात् 'धर्म के बांध और कर्म का बिखराव' निबंध संग्रह में धर्म एवं कर्म से प्रेरित 19 निबंध निबंधकार ने लिखे हैं।

से प्रेरित 19 निबंध निबंधकार ने लिखे हैं।

124 पृष्ठों की नस्तालीख लिपि में लिखी गई पुस्तक में ज्ञान की सूक्ष्मता का वर्णन है, गुरु की महिमा का गुणगान है।

(घ) नाटक

कश्मीरी भाषा में रचे जा रहे साहित्य के साथ–साथ कश्मीरी भाषी लेखक हिंदी, अंग्रेजी तथा उर्दू में भी अपनी रचनाओं को प्रकाशित कर रहे हैं। श्रीनगर में जन्मे श्री ललित पारिमू देश के एक ऐसे विख्यात कलाकार हैं जिन्होंने आकाशवाणी, दूरदर्शन, थिएटर में नाट्यकार, निर्देशक एवं एक सफल रचनाकार के रूप में नाम कमाया। उनका एक नाटक संग्रह 'मैं मनुष्य हूँ' 2014 में प्रकाश में आया है जो अनुराधा प्रकाशन, 1193, पंखा रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसी संग्रह के एक प्रायोगिक नाटक 'मैं मनुष्य हूँ' से इस संग्रह का नामकरण किया गया है। इन नाटकों में आध्यात्मिक चिंतन मनन है, जीवन की एक वैचारिक यात्रा का प्रस्फुटन है। लेखक ने नाटकों में सूत्रधार की भूमिका निभाई है, जहाँ लेखक श्री उपेंद्र अंबारदार के शब्दों में, इस विद्या में सज्जा या अन्य रंगमंच उपकरणों की आवश्यकता नहीं पड़ती। लेखक अपने कुशल लेखन और अनुभव से इस प्रायोगिक नाटक संग्रह में सूत्रधार के रूप में अपनी बात कहते हैं।

(ङ) कश्मीरी व्याकरण

पंडित ईश्वर कौल का नाम कश्मीरी भाषा में स्वर्ण अक्षरों से जड़ित है। यह ऐसे पहले विद्वान हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में कश्मीरी को पहला व्याकरण दिया। 'कश्मीरी शब्दामृतम' नामक व्याकरण का अंग्रेजी अनुवाद जार्ज ग्रियर्सन ने किया था। अब इस संस्कृत व्याकरण का हिंदी अनुवाद संस्कृत की विदुषी सुशीला सर ने किया है। 245 रु० मूल्य के इस ग्रंथ में कश्मीरी मूल के स्वरों एवं मात्राओं का ज्ञान दिया गया है। यह ग्रंथ 500 पृष्ठों पर आधारित है।

(च) मूल कश्मीरी पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद

जम्मू कश्मीर के प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं दूरदर्शन के पूर्व अतिरिक्त

महानिदेशक अशोक जेलखानी द्वारा मूल कश्मीरी में लिखी पुस्तक 'थ्येटर अख तारूफ' (थियेटर एक परिचय) का अंग्रेजी अनूदित संकलन 'इन इंट्रोडक्शन टु थियेटर' प्रकाश में आया है जिसमें कश्मीरी रंगमंच के साथ–साथ भूमंडल के नाटकों पर एक विहंगम दृष्टि डाली गई है।

(छ) जम्मू कश्मीर की भाषा–बोलियों पर पुस्तक

'द लंग्वेजिज ऑफ जम्मू एंड कश्मीर – वोल्यूम 12 (जम्मू कश्मीर की भाषाएँ भाग – 12) एक भाषावैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसमें राज्य की लगभग 20 भाषा–बोलियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके संपादक हैं डॉ. ओंकार कौल। इस शोध पुस्तक में 21 अध्ययन हैं जिन्हें तीन भागों में बांटा गया है। पहले भाग में डोगरी तथा कश्मीरी भाषा का विस्तार से उल्लेख किया गया है। दूसरे भाग में विशेषकर बोलियों का उल्लेख है तथा तीसरे भाग में संस्कृत, फारसी, हिंदी तथा उर्दू भाषाओं पर चर्चा की गई है। यह पुस्तक ओरियंट ब्लैकस्वेन प्रकाशन ने छापी है। यह शोध कार्य वडोदरा के भाषा शोध केंद्र द्वारा तैयार किया गया है।

कश्मीरी साहित्य 2014 पर विहंगम दृष्टि डालते हुए यहाँ पर 21 पुस्तकों का विवरण एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हे। जो भी पुस्तकें उपलब्ध हो सकीं, उन्हें यहाँ सम्मिलित किया गया है। और भी पुस्तकें छपी होंगी, पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जानकारी के अभाव में हम यह ही सामग्री दे पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त कोशुर समाचार, नाद, कश्मीर संदेश तथा वाख जैसी पत्रिकाओं में निरंतर सामग्री प्रकाशित हो रही है। इनमें 'वाख' ही एकमात्र ऐसी त्रैमासिक पत्रिका है जो पूर्णरूपेण कश्मीरी साहित्य को समर्पित हैं, जिसमें निबंध, कविताएँ, कहा़नियाँ समीक्षादि देवनागरी लिपि में पाठकों के समक्ष परोसी जा रही हैं। 'कश्मीर संदेश' (त्रैमासिक) हिंदी के माध्यम से कश्मीर की संस्कृति–साहित्य को प्रकाश में लाया जा रहा है जबकि 'नाद' में अंग्रेजी में तथा कोशुर समाचार में अंग्रेजी, हिंदी तथा कश्मीरी तीनों भाषाओं को स्थान दिया गया है।



5

कोंकणी साहित्य

प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

गोवा ने विगत पाँच दशकों से कोंकणी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। विश्व का प्रमुख पर्यटक स्थल होने के कारण यहाँ विभिन्न भाषा एवं संस्कृति के लोग आते हैं, जिससे लेखन के लिए कुछ मायनों में नई पृष्ठभूमि मिलती है। गोवा की खास बात यह है कि भूमंडलीकरण, सूचना तकनीक, बाजारवाद, मीडिया विस्फोट आदि के प्रभाव के बावजूद यहाँ का हिंदू और क्रिस्ती समाज अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है। आज भी नाटक और तियात्र की परंपरा उसी रूप में विद्यमान है। सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक परिवर्तन के कारण साहित्य की विषयवस्तु, भाव एवं विचार में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। हमारे देश में गोवा की मौजमस्ती की संस्कृति को लेकर जिन लोगों के मन में एक अलग धारणा है, उन लोगों ने यहाँ के गाँवों को नहीं देखा है। साहित्य को मूल ऊर्जा तो मूलतः लोकजीवन से मिलती है। यह सही है कि क्रिस्ती समाज का एक बहुत बड़ा समुदाय होने के कारण संस्कृति का वैविध्य है लेकिन यहाँ का अधिकांश क्रिस्ती समाज धर्म परिवर्तित समाज है, इसलिए उनकी मानसिकता में कोई विशेष अंतर नहीं है। इस समाज के ज्यादातर लोग विदेशों में रहते हैं इसलिए वे पाश्चात्य संस्कृति से अधिक प्रभावित हैं। यह बात मूलतः युवा–युवतियों पर लागू होती है।

अभी हाल में ही चेतन भगत ने हिंदी के संवर्धन में रोमन लिपि की बात कही थी। यह उनका अपना निजी विचार हो सकता है क्योंकि यह सर्वमान्य नहीं है। गोवा में भी लिपि को लेकर दो मत हैं। यहाँ के कतिपय क्रिस्ती

समाज के लोग कोंकणी साहित्य को रोमन लिपि में लिखने की बात करते हैं और कुछ लोग लिख भी रहे हैं लेकिन अधिकांश साहित्य देवनागरी लिपि में ही लिखा जा रहा है। हम सभी जानते हैं कि सभी भारतीय भाषाओं में खूब साहित्य लिखा जा रहा है लेकिन पठन-पाठन कम हो रहा है। यह परिवर्तन का स्वरूप है। कोंकणी साहित्य अन्य भारतीय साहित्य की भाँति विभिन्न विधाओं में लिखा जा रहा है।

कोंकणी काव्य

समकालीन कविता मूलतः जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों से जुड़ी कविता है जिसमें जीवन के विविध रंग हैं। कोंकणी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर प्रकाश द. नायक का 'कुतल्ल' (गाज) काव्यसंग्रह 'चैतर' और 'कस्तूरगंध' के बाद आया। प्रस्तुत काव्यसंग्रह में कुल छियासठ कविताएँ संकलित हैं। प्रकाश ने अपनी रचनाओं में रोजमर्रा के जीवन संदर्भों के साथ-साथ शृंगारिक भावनाओं की भी अभिव्यक्ति की है।

तुज्या आंगावयली साडी
बीन रंगाची नितळ उदनशी..
हे दीस
पोंदचो तळ सोदपाचे
हे दीस/परतून
दिफळे फोडपाचे...

इसी प्रकार तूं म्हज्यांत पळय, हांव आनी तूं, हांव एक पावस आदि कविताएँ शृंगारिक हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कविताएँ विभिन्न भावबोधों और विचारों पर आधारित हैं।

युवा कवयित्री श्रीनीशा नायक ने 'खंय गेली आजी?' (कहाँ गई आजी) 82 पृष्ठों के काव्यसंग्रह में जीवन के निजी अनुभवों को स्वर प्रदान किया है। इसमें उनके सुख-दुख के अनुभव भी विद्‌यमान हैं।

आजी म्हज्या/अंतरांत आसा
हाची साक्ष म्हळयार

काळजाच्या कोनशांनी
तिचो सासपुपाचो म्हाका
तो अलौकीक जावपी स्पर्श

'आयज म्हाका चोयवंटानी / तुजीच दिसता सावळी / तशीचशी सांज आयली / आयज तुजी याद आयली' पंक्तियों के लेखक जॉन आगियार का "सांज', ए. पी. भानुप्रकाश का 'काव्यव्यहार', जयराम चव्हाण का 'स्मरण तुजे" (मूलतः प्रेम एवं श्रृंगार संबंधी कविताएँ), पी. एन. शिवानंद शेणै का "नीळ दोळयांची चेली" (नीली आँखों वाली लडकी), आनंदन एन. एन. का "विवेकानंदम", प्रकाश दा. पाडगांवकार का "पुनरार्थोपनिशद" एवं स्वर्गीय एल. नारायण मल्या का "*श्री नारायण काव्यामृत*" नामक काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए। 'पुरार्थेपनिशद' में पाडगांवकार ने रवींद्रबाबाक, संभवामि युगे–युगे, सयकाम जाबालाची, तपस्वी शंबुक आदि के प्रति अपने मनोभावों को व्यक्त किया है।

इनके अतिरिक्त अशोक रघुवीर चोडनकार का "पावल्यों", महेस गोविंद का "यादींचे उपाळे", पांडुरंग का "नाझीया", शांखवालकार अनिल कामत का "पासय", पुष्पावती केरकार का "झाम झेम झेमाडो", माया अनिल का "आनालयो गुनालयो", शेख यूसुफ का "ओड", निकिता टी. सिनै का "काव्यमंथन" आदि काव्यसंग्रह 2014 में प्रकाशित हुए। देवनागरी लिपि के अलावा अलमेदा मिनेनो का "हांव तो हांव", डा क्रूज का "चिंतनम आनी सोपनम", डॉअयस गुदलुपे का "नातें", डिनिज मारिनो का "तुजी xokti",
दोउरदो लिनो का "सुदोरेचो बैच पावसाचे राती", इस्तेवेस पीओ का "जीणेच्यो पाकल्लो", फडते जीतेंद्र का "जोगोर", गोमिश लुइस का "लोकलोक्ति किरन्नम" और "शांखवाळकार कामटत अनिल का "मोतयां" काव्यसंग्रह प्रकाशित हुए।

कोंकणी कथा साहित्यः

भारतीय साहित्य की विभिन्न विधाओं में आजकल उपन्यास और कहानियाँ खूब लिखी जा रही हैं। इन दोनों में कहानी लेखन की व्यापकता और बहुलता अधिक है क्योंकि लगभग सभी भाषाओं की पत्रिकाओं में कहानियाँ प्रकाशित हो रही हैं। कोंकणी साहित्य इससे अछूता नहीं है। इस

वर्ष नामवंत कोंकणी साहित्यकार एवं कोंकणी अकादमी के भूतपूर्व अध्यक्ष एन शिवदास का "ओह बाबूश" नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक के मन में गोवा के राजकाज, पर्यावरण, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के प्रति जो एक धारणा और विचार है, उस तरह यहाँ के राजनेता नहीं सोच पा रहे है। लेखक के मन में सुसंस्कृति एवं सुरम्य गोवा के प्रति जो छवि है, उस तरह कुछ नहीं हो पा रहा है। एन. शिवदास के मन में यह कसक है, जिसकी अभिव्यक्ति इस उपन्यास में हुई है। कोंकणी की दूसरी प्रसिद्ध लेखिका मीना काकोडकार का "वास्तू" उपन्यास प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व इनके तीन कोंकणी कथा संग्रह, ललित निबंध, बालसाहित्य, अनुदित उपन्यास आदि रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

एस. एच रत्नाकर राव का 'अंजनी' नामक पहला उपन्यास प्रकाशित हुआ। यह इनके बीस वर्ष के सतत् जीवनानुभवों का प्रतिफल है। उपन्यास के पात्रों एवं उनके सामाजिक मन और विचारों का लेखक ने गहन अध्ययन किया है। उपन्यास के संदर्भ में लेखक का कथन है कि "मैं मडगाँव के होटल में रुका। यह धोबी का एक लड़का मेरा कपड़ा लेने के लिए आया। जब वह आ रहा था तो किसी ने उससे पूछा 'इनास आया रे? उसने नीचे देखते हुए कहा "ना" वह बीमार है। उसे आए 15 दिन से अधिक हो गया। उस लड़के ने किसी ने पूछा 'तुम्हारी कौन-सी भाषा है?' उसने कहा 'कोंकणी' लेकिन तुम्हारा तो दो शब्द अंग्रेजी (फिफ्टीन, डेज़) और दो पुर्तुगीज (दुयेंत, मायज) था। इस कोंकणी उपन्यास में संस्कृत, मराठी, इंगलिश, पुर्तुगीज, उर्दू और फ्रेंच का प्रयोग हुआ है। उपन्यास का अर्थ समझना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उससे आनंद प्राप्त करना।"

प्रसिद्ध कोंकणी लेखक एवं संपादक दिलीप बोरकार का "सखी वसुंधरा', रामनाथ गावडे का "सादु आनी जादूगर महादु", नरेंद्र काशीनाथ कामत द्वारा प्रेमचंद लिखित "मंगलसूत्र" का कोंकणी में अनुवाद, नाटेकर गुरुदास भालचंद्र का "मोड्ड येता टेन्ना" देवनागरी में तथा इनाचियो नोरोन्हा का रोमन लिपि में "पोलिन्छेम गोएम पोरोत केडना मेल्तोलम" उपन्यास प्रकाशित हुए।

हर्षा सदगुरु शेट्ये की '*कथारंग*' नामक कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें कुल 17 कहानियाँ जीवन और समाज के विविध रंगों की हैं। इस संग्रह के पूर्व इनके 'म्हजी माती म्हजें मळब' (कविता संग्रह), 'जगमा और चला, भारत भोंवुया' बालसाहित्य, 'मोतयांची माळ' ललित निबंध और 'आनंद यात्रा' प्रवास वर्णन की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपको कई साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। विवेच्य संग्रह की नवें पर्व, कस्टडी, येजमानपण, रितो पोसो..., घुसमट, लग्न, लाइफ इज ब्युटीफुल आदि कहानियाँ जीवन के विविध संदर्भों को रेखांकित करती हैं।

गजानन जोग विगत चार दशकों से कोंकणी कथा साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। जोग मूलतः हास्य-व्यंग्य लेखक के रूप में जाने जाते हैं। इस वर्ष आपका "*खांद आनी हेर कथा*" नामक कथा संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें खांद, घरप्रवेश, दॉना सिल्विया, दोन दुकां, रीण, जाप, विघटन नामक कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं। 22 लघु कथाओं का "*पयण आनी हेर कथा*" नामक एडवीन जे. एफ. डिसोजा का तथा संदीप मणेरीकर का 22 कथाओं का "चव्हाटो" नामक कथा संग्रह प्रकाशित हुए।

पुंडलीक केळेकार की '*मन मोवळाय*' नामक एक साथ तीन विधाओं पर केंद्रित पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें कुवाडें, उमाशेची रात, हुंवारो, चोर, चूक सपन, योगायोग, गौरी आदि शीर्षक से 13 कहानी और मिलागेचो दोतोर, अडचावट मांय, पिरवळ म्हजो गाँव आदि नाम से 4 ललित निबंध तथा मरण, पेर, वॉटेड, झिंगू, कर्तव्य आदि नाम से 7 अनुसर्जित साहित्य संकलित हैं। नरेंद्र का. कामत का "सुवर्णलता आनी घाडसी राजकुंवर" नामक बालसाहित्य पर आधारित उपन्यास इस वर्ष प्रकाशित हुआ। इसमें द्वापर युग में कौरव और पांडवों के कुल में चंद्रप्रस्थ नगर के राजा धर्मवीर और उनके दुश्मन चित्तपुर के राजा शशांक के बीच की कहानी का जिक्र हुआ है। सामाजिक कार्यकर्त्री, इन्फोसिस फाउंडेशन की अध्यक्षा एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित सुधा मूर्ति के दो अंग्रेजी कहानी संग्रहों का अनुवाद सुनेत्रा जोग ने कोंकणी में "जाण्टेलो आनी ताचो देव" और "हांवे दूद पिवपांचें" नामक शीर्षक से किया।

सुशीला त्रिविक्रम भट का सोद, स्मारक, शुद्धि कलश, साळग्राम, अभयदान, त्तिळोदक आदि शीर्षक से 15 कहानियों का "साळग्राम" नाम से कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। स्मिता प्रभु की "मूर्तमणीं" और कोंकणी रोमन लिपि में थामस स्टेफेंस की "गोंयचों कथा" नामक पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

कोंकणी नाट्य एवं तियात्र साहित्यः

इक्कीसवी सदी में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के विस्फोट के बावजूद गोवा में नाटक और तियात्र की लोकप्रियता कम नहीं हुई है। इसका परिणाम यह है कि कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं में नाटक और तियात्र भी खूब लिखा जा रहा है। प्रकाश द. नायक का *"अस्तुरीः शिमेभायलें मळब"* (नारी का स्वरूप आकाशीय सीमा के बाहर है) नाटक नारी जीवन के उम्र के विविध पड़ावों और उनके स्वरूपों पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत शैक्षणिक एवं साहित्यिक जीवन के आधार पर नारी के अधिकार एवं उसके सशक्तिकरण को रेखांकित किया गया है।

कविंद्र फळदेसाय का 26 पथनाट्यों का संग्रह *"सर फुडें"* (आगे बढ़ो) नाम से प्रकाशित हुआ। ये पथनाट्य जीवन और समाज के विविध अनुभवों पर आधारित हैं। गोंय म्हजें (मेरा गोवा), शेणला रे शेणला (खो गया रे खो गया), वंदे मातरम, वोट फॉर, अक्षय ऊर्जा, प्लास्टिक सर्जरी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, राखणदार भुंयेचे (धरती के रखवाले), सत्यमेव जयते, सूर्यदेवा नमन, महात्मा गांधी आदि शीर्षकों के पथनाट्य संकलित हैं। "परत एकदां" (पुनः एक बार) विकर्ण खांडेपारकार का एकांकी संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें "*हुशार पिशों*" (होशियार पागल), "*परत एकदां*" (दुबारा), "*हॅम्लेट आनी ट्राफीक*" नामक तीन एकांकी संकलित हैं। महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'मेघदूत' का कोंकणी अनुवाद 'मेघदूत' नाम से शांताराम वर्दे वालावलीकार ने इस वर्ष प्रकाशित किया।

महेश चंद्रकांत का "*आवय तिरंगी मम्मी फिरंगी*" बाबा प्रसाद का "*ब्रेकिंग न्यूज*" "*दिसले अपनी फसलें*" और "*फाम्माद*" आदि भी उल्लेखनीय हैं।

इतर कोंकणी साहित्य:

कोंकणी साहित्य में अन्य भारतीय भाषाओं की भांति निबंध साहित्य का लेखन कविता और कथा की भांति बहुत पहले से हो रहा है। वर्तमान दौर में साहित्यिक निबंधों का लेखन कम मात्रा में हो रहा है। इस वर्ष शशिकांत पुनाजी का रोजमर्रा के जीवन के अनुभवों एवं विविध संदर्भों पर केंद्रित 47 निबंधों का "*सामारां सागोती*" नाम से संग्रह प्रकाशित हुआ। "*पुलीस–पुलीस मार पिल्लूक...*" (पुलिस–पुलिस बजाओ सीटी) निबंध में पुनाजी ने लिखा है– "आयज पेडण्यान रिपोर्टर पायलेक पंचवीस। हगललां मूतललां सगळां छापान येता। (आजकल पेडणे में बहुत सारे रिपोर्टर हो गए हैं जोकि हगनी-मूतनी का समाचार भी छापते हैं।) इसी प्रकार उनके अन्य निबंध '*पावस इलो मिर्गाचो*, '*कुत्रो जेचो तेचो*, '*मीड डे मिलांत...*','*धुकर तो धुकर*, '*काय ह्या झीला*, '*हेंचा काय करया* आदि निबंध हैं।

कृ. म. सुखठणकार का 'चिमटे घुमके' (विनोदी ललित) नाम से लेखों का संग्रह प्रकाशित हुआ। यह इनकी पहली पुस्तक है। इनका मानना है कि विनोदी साहित्य लिखना एक कठिन कार्य है। लेखक ने अपने निबंधों में वर्तमान विषयों और संदर्भा को लिया है। उदाहरणस्वरूप "मैं अण्णा हूँ' में अण्णा और केजरीवाल को लेकर व्यंग्य किया गया है। इसी प्रकार चीठ, दीस कोणा कोणाचे, समुंदर में नहा के, दिल मांगे मोर, चलता है, जेथे जातो तेथे, माय तापता हांवूय लेखक आदि लेख विभिन्न विषयों पर केंद्रित हैं।

गोवा की महिला कोंकणी रचनाकारों में माया अनिल खरंगटे का नाम जाना-पहचाना है। अभी तक उनका '*कयपंजी*, '*श्रावण शिंवर* नामक दो कविता संग्रह और '*घोंटेर*, '*मळब झेंप*, '*मृगजल*, '*काळीं कुपां रुपेरी देग* नामक चार कथासंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। माया ने इस वर्ष कोंकणी साहित्य की इतर विधा में पत्र लेखन की शुरुआत की है। 2014 में 'प्रीच सखी' नाम से आपका पत्र संग्रह प्रकाशित हुआ है, जिसमें उनके 30 पत्र प्रिय सखी के नाम लिखे गए हैं।

अशोक कामत ने कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लेखन कार्य किया है। अभी तक उनके तीन नाट्यसंग्रह, एक बालसाहित्य, दो कथासंग्रह, एक काव्यसंग्रह, दो नाटक, तीन कादंबरी और अभी इस वर्ष आत्मकथन "*ती जीण, ते खीण*" प्रकाशित हुआ। इसके अंतर्गत उनके एका फोनान जीण बदल्ली, जनगंगा पुरस्कार, वतं वतां आदि नाम से नौ आलेख संकलित हैं। इन लेखों में उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को जैसे कि एक फोन से कैसे जीवन बदल गया, पुरस्कार की परंपरा एवं उनके उपन्यास '*घणाघाय*' का लोकार्पण संबंधी विचारों आदि का उल्लेख हुआ है। संपदा कुकळकार ने अपनी 'मनाची शक्त' (मन की शक्ति) में 61 लेखों के माध्यम से अपने मनोगत विचारों और भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की है। जैसे कि लायफ इज अ मॅटर ऑफ चॉयसेस, सकारात्मक विचार, स्वातंत्र्य, अस्तित्व, कृतज्ञता, अहंकार टाळात आदि लेख संकलित हैं। 'अहंकारी मन हें सगळें वैक्तिक घेता' अर्थात अहंकारी मन सब कुछ व्यक्तिगत स्तर पर ग्रहण करता है।

कोंकणी–मराठी–अंग्रेजी भाषाविज्ञ लेखक, संपादक, अनुवादक, समीक्षक और विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित डॉ. हरिश्चंद्र नागवेंकार की कई कोंकणी पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपने इस वर्ष गोवा के जानेमाने स्वतंत्रता सेनानी, कोंकणी–संस्कृत भाषाविद्, अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष भूमिपुत्र "*पुरुषोत्तम काकोडकार जिवीत आनी कार्य*" नामक जीवनी की पुस्तक प्रकाशित की। इसके अंतर्गत उन्होंने काकोडकार के जन्म परिचय से लेकर शिक्षा एवं कार्यक्षेत्र का संपूर्ण विधिवत चित्रण किया है। नागवेकार ने काकोडकार के राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक आदि बहुमुखी व्यक्तित्व का बखूबी चित्रण किया है।

कोंकणी की सुप्रसिद्ध लेखिका नयना का "*आफो*" ललित निबंध संग्रह दो कविता संग्रह, 13 बालसाहित्य, एक निबंध और एक कथा संग्रह के बाद प्रकाशित हुआ। सुमेधा कामत देसाय अपने प्रवास वर्णन, ललित निबंध एवं विनोदी कोंकणी साहित्य आदि के लेखन में अग्रसर हैं। इस वर्ष

आपका "आबाडयाच्या घरांत" ललित निबंध संग्रह जो मूलतः सामाजिक, लोक एवं सांस्कृतिक जीवन पर आधारित है, प्रकाशित हुआ। "गोंयचें खतखतें" नामक दिलीप काबाडी का लघु निबंध संग्रह भी प्रकाशित हुआ।

गोवा में रघुनाथ मंगेश धुमे ने एक इंजीनियर के रूप में आजीवन कार्य किया। इस दौरान उन्हें अपने पेशे से जुड़े अनेक अनुभव प्राप्त हुए। "*वाट अजून चलती आसा...*" (रास्ते आज भी चलने की आशा से प्रेरित होते हैं) में इसी संदर्भ में उन्होंने अपने जीवन पथ के अनुभवों को वाणी प्रदान की है।

माणिकराव राम नायक गावणेकार ने स्वामी विवेकानंद के '*भक्तियोग*' और '*कर्मयोग*' की मूल अंग्रेजी भाषा की पुस्तक का कोंकणी में अनुवाद किया है। इसमें विवेकानंद दवारा शिकागो में विश्वधर्म सम्मेलन में दिए गए भाषण का विशेष रूप से उल्लेख है। इसके साथ ही धर्म, कर्म और भक्ति से संबंधित उनके अमूल्य विचार व्यक्त हुए हैं। कोंकणी भाषी जनता को इस पुस्तक के माध्यम से स्वामी विवेकानंद एवं उनके विचारों को अच्छी तरह जानने का सुअवसर प्राप्त होगा। विभिन्न रोगों के उपचार संबंधी जानकारी के लिए डॉ. अर्चना गांवकार की "*दुयेंसां आनी आयुर्वेदीक उपचार*" तथा गोवा के विभिन्न क्षेत्रों में ख्यातनाम 21 कलाकार एवं 09 जानेमाने कोंकणी साहित्यकारों के जन्म, कार्य एवं उनके योगदान से संबंधित "*गोंयचीं माणकां*" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा में कोंकणी और मराठी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है, लेकिन अधिकांश कार्यालयीन एवं शैक्षणिक कार्य अंग्रेजी भाषा में संपन्न होता है। मराठी यहाँ की पहले से महाराष्ट्र के प्रभाव के कारण शैक्षणिक और सांस्कृतिक भाषा होने के कारण कतिपय मायनों में मराठी का वर्चस्व दिखाई देता है। जैसे कि यहाँ अधिकांश समाचार–पत्र मराठी और अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं। कोंकणी में एकमेव दैनिक पत्र '*सूनापरांत*' प्रकाशित होता है। अब धीरे-धीरे कोंकणी भाषा का सवाल यहाँ की अस्मिता से जुड़ गया है इसलिए कोंकणी भाषा और साहित्य का अध्ययन और बोलबाला बढ़ रहा

है। शैक्षणिक स्तर पर मराठी की अपेक्षा कोंकणी का वर्चस्व है जबकि यहाँ अन्य भाषा-भाषियों की संख्या भी काफी मात्रा में है। यहाँ कोंकणी की लब्धप्रतिष्ठित मासिक पत्रिका "*जाग*" डॉ. माधवी सरदेसाय के संपादन में नियमित प्रकाशित होती थी, किंतु दो-तीन महीने पूर्व उनका क्षयरोग के कारण असामयिक निधन होने से पत्रिका का प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ है। माधवी के निधन से कोंकणी भाषा और साहित्य की अमूल्य क्षति हुई है।

कोंकणी की दूसरी नियमित पत्रिका '*बिंब* दिलीप बोरकार के संपादन में प्रकाशित हो रही है। इसमें जाग की भांति कोंकणी, कविता, कहानी, लेख, समीक्षाएँ, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं का प्रकाशन होता है। इसके अलावा श्री तुकाराम शेट 'कोंकण टायम्स' और गोकुलदास प्रभ '*ऋतु* नामक त्रैमासिक पत्रिका का संपादन नियमित रूप से कर रहे हैं। कुळागर, जैत, उर्बा, बारदेश, चवथ, युवांकुर आदि नियमित-अनियमित पत्रिकाएँ छप रही हैं।

पुरस्कारः

गोवा में कोंकणी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन हेतु गोवा कोंकणी अकादमी एवं अन्य संस्थाएँ यहाँ के कोंकणी साहित्यकारों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित करती हैं। इसके अतिरिक्त साहित्य अकादमी नई दिल्ली प्रत्येक वर्ष कोंकणी के रचनाकारों को सम्मानित करती है। इस वर्ष कोंकणी में साहित्य का अकादमी पुरस्कार डॉ. माधवी सरदेसाय को उनकी सर्जनात्मक निबंध पुस्तक "*मंथन*" के लिए मरणोपरांत प्रदान किया गया। पांडु गावडे को साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार लक्ष्मणराव गायकवाड़ के मराठी उपन्यास "उचल्या" के कोंकणी अनुवाद पर दिया गया।



6

डोगरी साहित्य

ओम गोस्वामी

ई–पुस्तक का ज़माना है।

लोग इलैक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़कर मुद्रित पुस्तकों के संसार से निरंतर दूर होते गए है। इसके बावजूद यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है कि पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। यह विषय चर्चा में है कि निकट भविष्य में एक दिन पुस्तक-प्रकाशन पर पूर्ण–विराम लगेगा। ऐसा कब होगा – कहना कठिन है क्योंकि भारत में कोई भी वस्तु या परंपरा पूर्णतया मिटती नहीं है। सन् पचास से पूर्व मुद्रण की पुरानी तकनीक अमरीका और यूरोप में तो बंद हो गई, किंतु इस के लिए प्रयुक्त "ट्रेडल प्रैस" भारत में आज भी न केवल चल रही है, बल्कि भारतीय 'फांऊड्रियाँ' उसका निर्माण भी कर रही हैं। यूरोप तथा अमरीका से मुद्रण एवं प्रकाशन तकनीक के विद्यार्थी इन मशीनों को देखने के लिए भारत आया करते हैं। किंतु भारत में मुद्रण की तमाम आधुनिक तकनीकें भी मौजूद हैं। कंप्यूटर के आगमन पर यह प्रश्न सामने आया था– क्या आगे लोग कागज़–कलम को तजकर कंप्यूटर पर साहित्य रचेंगे? परिवर्तित समयखंड में कई परंपराएँ और प्रसंग हैं जो अपने अस्तित्व के खतरे से दो-चार हैं। संक्रांतिक चुनौतियों के बावजूद डोगरी में पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। वर्ष 2014 ई० में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों का सांख्यिक स्वरूप कुछ यों था–

विधा	पुस्तक संख्या
कहानी	6
कविता	9
निबंध	1

नाटक	1
समग्र रचनावली	1
समालोचना	1
लेख	2
अनुवाद	2
कुल संख्या	23

वर्ष 2014 ई० में 23 पुस्तकों की संख्या के आंकड़े के अनुसार प्रतिमाह दो पुस्तकों से कम की औसत निकलती है। यह उत्साहवर्धक संख्या कदापि नहीं है। किंतु, डोगरी जैसी भाषा जिस में पाठकों की संख्या दिनों-दिन कम होती जा रही है, यह संख्या उतनी निराशाजनक भी नहीं है, क्योंकि जम्मू–कश्मीर की एक अन्य भाषा 'कश्मीरी' में भी स्थिति इससे बेहतर नहीं है।

डोगरी साहित्य–रचना का केंद्र बहुधा जम्मू नगर रहा है। कारण यह कि राज्य की शीतकालीन राजधानी के अतिरिक्त डोगरी की अधिकांश गतिविधियों का संचालन यहीं से होता है क्योंकि राज्य अकादमी, आकाशवाणी केंद्र, दूरदर्शन केंद्र, जम्मू यूनिवर्सिटी आदि यहीं स्थित हैं। डोगरी के उन्नयन हेतु कार्यक्रम और गतिविधियाँ प्रायः यहीं से संचालित होती हैं। डोगरा संस्कृति और साहित्य को समर्पित संस्थाएँ तथा मुख्य नाट्य–मंडलियाँ यहीं पर स्थित हैं।

किंतु, यह उत्साहवर्धक बात है कि विगत तीन दशकों में जम्मू प्रांत के उपनगरीय केंद्रों से भी साहित्यिक उभार के प्रबल स्वर उभरने लगे हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि के लेखकों द्वारा लिखित स्तरीय कविताएँ, कहानियाँ और उपन्यास निरंतर सामने आते रहे हैं। वर्ष 2014 ई० में प्रकाशित साहित्य में उपनगरीय अथवा ग्राम्य पृष्ठभूमि के लेखकों का सराहनीय योगदान रहा है। इस वास्तविक पृष्ठभूमि के रहते गत एक वर्ष में जो साहित्य सामने आया है, उसका संक्षिप्त पर्यालोचन यहाँ वांछनीय है।

आओ गीत गाएँ[1] गीत गाने का निमंत्रण देता यह शीर्षक सुप्रसिद्ध कवयित्री पद्मा सचदेव के डोगरी गीतों का संग्रह है। कवयित्री पद्मा पाँच

दशकों से निरंतर कविता लिख रही हैं। अब तक उनके 11 कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। सद्यः प्रकाशित "आओ गीत गाचै" 108 गीतों का संग्रह है। एक शुभ संख्या प्रतीक के रूप में ही इन अंगों का प्रयोग हुआ है, अन्यथा पद्मा सचदेव के गीति साहित्य में आध्यात्मिकता के संस्कारों की बहुलता नहीं है। इस में संकलित प्रत्येक गीत रुद्राक्ष–माला के मनकों का प्रतीक मात्र है। काव्य–जगत् में अपने योगदान से अनुपम स्थान निधारित कर चुकी कवयित्री अपने भाव–जगत् के विहंगम चित्र इन गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। गीत विधा में कवयित्री का योगदान इस दृष्टि से ऐतिहासिक है कि इन गीतों की लोकप्रियता ने इन्हें जनमानस में लोकगीतों के रूप में प्रचलित कर दिया है। डोगरा क्षेत्र के पर्वतीय अंचलों में लोक–गायकों के विभिन्न दल पद्मा विरचित गीतों को लोक–संपदा मानकर न केवल गाए जा रहे हैं, अपितु इनकी भाव-भूमि पर उन्होंने अपने गीतों की रचना भी की है। पद्मा सचदेव के गीतों के भाव-लालित्य ने आम कविता प्रेमियों में डोगरी साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न की है। एक छोटी-सी चिड़िया छोटे-छोटे पंखों से नील गगन को थामना चाहती है, ऊँची उड़ान का सपना लेकर। इस भाव को लेकर **'निक्कड़े फंगडू उच्ची उड़ान'** गीत में साधारण उपमेय-उपमानों के प्रयोग से कवयित्री ने काव्य-चमत्कार उत्पन्न करने की अद्भुत क्षमता का सफल प्रदर्शन किया है। इस संग्रह में वे तमाम गीत सम्मिलित हैं जिन्हें कंठ-कोकिला एवं स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर एवं महेंद्र कपूर आदि प्रख्यात गायकों के सुरीले स्वर मिले हैं।

डोगरा गाँवों की सोंधी महक वायु के ताजा झोंकों पर लदकर पद्मा सचदेव के गीतों में ढल जाती है। कवयित्री के रचनात्मक मानस पर डोगरी की समृद्ध लोकगीत परंपरा का बहुत अधिक प्रभाव है। गीत एक सुकुमार विधा होने के कारण आम लोगों में शीघ्रता से स्वीकार होती रही है। साहित्यिक दृष्टि से भी कुछेक गीतों का अलग स्थान है।

यादों की उड़ान[2] जनवरी 2014 ई० में प्रकाशित पुस्तक **"डुआर चेत्तें दे"** कवि सत्यपाल गढ़वालिया का प्रथम कविता संग्रह है। कविता के

आकाश में दशकों पूर्व यह कवि धूमकेत की भाँति उभरा था, किंतु क्षणिक चकाचौंध के उपरांत विस्मृति के नेपथ्य में कही खो गया। तब वर्षों के अंतराल के उपरांत वर्ष 2014 ई० में अपनी उड़ान के अहसासों से भरा कविता संग्रह लेकर पुनः सामने आया तो उसकी प्रतिभा ने अपना लोहा मनवा लिया।

यह पुस्तक तीन खंडों में विभाजित है, जिनमें गज़लें, कविताएँ और गीत संग्रहीत हैं। कुछेक गज़लें स्तर की दृष्टि से उर्दू की श्रेष्ठ गज़लों से किसी प्रकार कम नहीं हैं। कवि ने छोटी बहर से लेकर बड़ी बहर तक बड़ी दक्षता से गज़ल रचना की है। विषय-वस्तु की दृष्टि से कविताओं में भी अनूठापन भरा है। भाव-संसार की ताज़गी इनकी विशेषता है। समाज में विषमता के विभिन्न पहलुओं को कवि ने अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। गीति विधा में उसकी पकड़ सराहनीय है। लोकगीतों की परंपरा से प्रभावित होते हुए भी कवि ने भरसक प्रयास किया है कि उसकी रचनात्मकता पर लौकिकता हावी न हो पाए। गीतों में ग्रामीण जीवन के आकर्षक भाव-चित्र मौजूद हैं।

सोलह आने सच[3] युवा कवि राकेश शर्मा **"तृप्त"** की 72 कविताओं का संग्रह "सोलां आन्ने सच्च" उस संक्रांतिक युग के मिले-जुले स्वरों को मुखरित करता है जिस में पुरातन संस्कारों की पृष्ठभूमि में नूतन जीवन-मूल्य परिवर्तन की नई परिभाषा गढ़ रहे हैं। देश-प्रेम, प्रकृति-प्रेम और अपने जन्म प्रदेश जम्मू अर्थात डुग्गर की स्तुति जैसे परंपरागत विषयों पर कवि ने पूर्ववर्ती कवियों के समान जमकर कलम चलाई है। स्वयं ग्रामीण पृष्ठभूमि का कवि होते हुए भी तृप्त ने नगरों और गाँवों को एक निरपेक्ष कवि की दृष्टि से चित्रित किया है। **"नजारे ग्रां दे", म्हौल ग्राएं दा"** शीर्षक कविताओं के द्वारा उसने 65 वर्ष पुरानी उस बहस को पुनः छेड़ने का प्रयास किया है जिस में शहर और गाँव के वैषम्य को आधार बनाकर बहुत से कवियों ने एक के बाद एक कविताएँ लिखी थीं। ये तमाम कविताएँ दीनूभाई पंत की **"शैह्‌र पैह्‌लो पैह्‌ल गे"** शीर्षक कविता की प्रतिक्रियास्वरूप सामने आई थीं। तृप्त ने भी इसी पथ पर चलने का प्रयास किया है।

इसके अतिरिक्त कवि ने डोगरी भाषा-भाषी क्षेत्र की नारी के सद्-चारित्रिक एवं परिश्रमी स्वभाव का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। इस संग्रह में संकलित रचनाओं की विशेषता यह है कि उनमें सादा शैली और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। उनमें सामयिक विषयों का स्पर्श भी है। प्रदूषण जैसी वैश्विक समस्या बन चुकी समस्या पर भी उसकी दृष्टि है। जम्मू नगर की कभी जो शान हुआ करती थी, उस प्रदूषित तवी नदी की बरबादी का हृदयस्पर्शी चित्रण कवि ने किया है। यह स्तुत्य प्रयास है।

गज़ल और कव्वाली की सौगात

डोगरी काव्य का वर्तमान गज़लमय है। डोगरी गज़ल के विषय में यह तथ्य सर्वज्ञात है कि यह ऐसी शैली है जो लोकप्रिय नहीं है। किंतु, डोगरी कवि इसे साहित्य की अनुपम विधा मानते हैं। जबकि पाठक या सुपठित डोगरा लोग अपनी भाषा के इस गज़लिया जनून से संतुष्ट नहीं है। इसीलिए उनकी शायरी के बजाये वे उर्दू शेऽरो-शायरी के दीवाने हैं। इस तथ्य के बावजूद डोगरी शायरी में गज़ल प्रवाह में कोई ठहराव नहीं है। नगरवासी डोगरी कवियों की देखा-देखी ग्रामीण कवि भी इसे आवश्यक साहित्यिक फैशन मानकर गज़ल को अपना रहे हैं। गज़ल के असलूब में दक्षता को ताक पर रखकर अधकचरे प्रयास किए जा रहे हैं। कृष्ण कुमार केरणी का "*मनै दी सगात*"[4] भी ऐसा ही प्रयास है।

प्रस्तुत संग्रह में 79 गज़लों के अतिरिक्त 26 कव्वालियाँ और तीन स्व-रचित लोकगीत भी संग्रहीत है। यद्यपि इस से पूर्व कवि का एक कविता संग्रह प्रकाश में आ चुका है, परंतु प्रस्तुत पुस्तक स्तर की दृष्टि से आश्वस्त नहीं करती। हालांकि कहीं-कहीं गज़ल का कोई एक शेऽर सहसा हीरक-कण की भांति चमक उठता है, पर यह आनंदानुभूति चिर-स्थाई नहीं रह पाती। ज़ोरे-कलम का अभाव भाव-सौंदर्य की पूर्ति नहीं कर पाता। प्रकाशन से पूर्व यदि किसी उस्ताद गज़ल-गौ शायर का मार्ग-दर्शन लिया गया होता तो निश्चय ही गज़लों का स्तर ऊपर उठ पाया होता।

डोगरी का संभवतया यह पहला संग्रह है जिस में *"कव्वाली"* को गंभीरता से लिया गया है। इससे पूर्व डोगरी कवि एवं पाठक मात्र हिंदी फिल्मों की कव्वाली से परिचित थे। यहां संग्रहीत कव्वालियों में आमियानेपन के दोष के साथ-साथ शब्दाडंबर की बहुतायत खलती है। किंतु, कवि द्वारा तीन लोकगीतों में उसके हृदय की ग्राम्य अनुगूंज सुनाई पड़ती है, जोकि प्राकृतिक भी है।

चिंतन-माला के अमूल्य मोती[5] कवि प्रायः जीवन रूपी नैया को विचारों की अगम्य जलराशि में खेता है। वह अतल समुद्र की गहराइयों में उतर कर सद्‌विचारों को बीन कर बाहर निकालता है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह ऐसे ही सद्‌विचार रूपी मोतियों की माला है। इन मोतियों की पहचान *"चमुखा"* नामक शैली में की गई है। चमुखा शैली का प्रादुर्भाव महाराजा गुलाब सिंह के समकालीन दलित कवि बिधिचंद द्वारा हुआ था। डोगरी में आधुनिक साहित्य का प्रणयन होने पर डोगरी कवियों ने इस विधा को पुनर्जीवित किया। किंतु वर्तमान में यह शैली अपने यौवन पर है। डोगरी कवियों में यह सर्वप्रिय काव्य-रूप बनकर प्रचलित हुई है। चार पंक्तियों के इस काव्य-रूप को न तो उर्दू शायरी का *"कितअ"* कह सकते हैं, न ही हिंदी कविता की चौपाई से इसकी तुलना कर सकते हैं। वस्तुतः यह विधाई रूप समय की जरूरत ने गढ़ा और लोकप्रिय किया है। आज जबकि जीवन की जटिलताओं से जूझ रहे काव्य-प्रेमी के पास समय का अभाव है– लघु आकार की इस शैली-रूप ने अपने लिए स्थान तैयार किया है।

इस पुस्तक में संकलित प्रत्येक चमुखा एक स्वतंत्र बिंब-चित्र है जो भाव-गांभीर्य से ओत-प्रोत है। इन बिंब-चित्रों को पढ़कर हमारी यह धारणा दृढ़ होती है कि चमुखा रचने की कला वस्तुतः सुभाषित निर्मिति की ललित-कला है। सूक्ष्म विचारों तथा कोमल भावों के संग-संग उर्वर कल्पना और तीक्ष्ण-दृष्टि के प्रयोग से कवि सीताराम सपोलिया ने ऐसे शब्द-चित्र बुने हैं जो पाठक के हृदय पर स्थाई प्रभाव छोड़ जाते हैं। अतएव, इस विधा की सामयिक उपयोगिता स्वयं-सिद्ध है। कवि ने पारंपरिक विषयों के साथ-

41 HRD/16—7A

साथ आधुनिक समस्याओं को भी कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। विशेष बात यह है कि वह आधुनिक दृष्टि से विरोध नहीं करता। कवि ने पुनरुक्ति दोष से बचने का भरसक प्रयास किया है। यह पुस्तक स्तरीय काव्य संकलन है।

कोमल भावों का पुष्प-गुच्छ[6]

गज़ल एक चुनौतीपूर्ण विधा है, विशेषतया तब जब आप इसके शैलीगत नियमों अर्थात् *"असलूब"* से परिचित न हों। किंतु, यह प्रथम बार नहीं है जब किसी युवा कलम ने अपनी काव्य-यात्रा की शुरुआत ही इस कठिन, किंतु ललित विधा से की हो। गज़ल को मात्र शब्दों की जोड़-तोड़ बैठाने तक सीमित करके हमारे कवि अपने काव्याकाश को सीमित कर लेते हैं। यही कारण है कि ऐसे प्रयासों में साधारणत्व अथवा वर्णनात्मकता की बहुलता झलक उठती है। गज़लें लिखने के पश्चात् इन्हें संग्रह रूप में प्रकाशित करवाने की उतावली एक प्रवृत्ति-सी बन गई है। आरंभिक रचनाओं को पत्र-पत्रिकाओं में फुटकल रूप से छपवाकर प्रतीक्षा करने का धैर्य आज नहीं है। यदि उस्ताद शायर का मार्ग-दर्शन मिल पाए तो युवा रचनात्मकता को दिशा मिल सकती है, अन्यथा गज़ल मात्र तुकबंदियाँ बैठाने का द्रविड़ प्राणायाम बन जाती है।

नवोदित कवि ब्रह्मदत्त मंगोत्रा को अपने लिए दिशा चयन हेतु स्वयं सतर्क रहना होगा ताकि उसके कोमल-भाव सलीके से व्यंजित हो सकें। इस संग्रह में संग्रहीत गज़लों में भावात्मक सादगी और शैलीगत सारल्य आश्वस्त करता है कि आगे चलकर इस युवा हस्ताक्षर से संभवतया कुछ बेहतर रचनाएँ प्राप्त हों।

घर लौट आओ रे जोगी[7]

100 कविताओं का यह संग्रह डोगरा संस्कारों में पली-बढ़ी एक साधारण डोगरा नारी के सरल उद्गारों की काव्याभिव्यक्ति है। इसमें प्रकृति, परिवार तथा समाज के विविध पहलुओं का सुंदर चित्रण हुआ दिखाई पड़ता है। वेदना के स्वरों के साथ-साथ आध्यात्मिकता की अनुगूंज भी निरंतर

41 HRD/16—7B

सुनाई पड़ती है। नारीसुलभ धार्मिकता ने इन रचनाओं को आध्यात्मिक संगति प्रदान की है। वयोवृद्ध कवयित्री ने बहुत पहले लेखनी से भावों को चित्रित करना आरंभ किया था; किंतु अपने छोटी उम्र के पुत्र योगराज के सन्यासी बन जाने पर मातृ-वत्सल हृदय को ऐसा आघात लगा जिससे जीवन की सार्थकता को लेकर कई प्रश्नचिह्न उनकी कविताओं में उभरने लगे। पुत्र-वियोग की पीड़ा माँ के हृदय का उफ़ान बनकर कविता में ढलने लगी। यद्यपि कवयित्री में मीराबाई बनने की चाहत न थी, किंतु प्रभु-प्रेम से उत्कंठित हृदय में जो उद्‌गार प्रकट होते हैं, उन्हें सुनकर लगता है मानो मीरा ही साक्षात् सामने चली आई हो–

"किन्ना मजा औंदा इस हिरखे च गमै दा,
गमें गी तू गलै कन्ने लाई रक्खेआ।
x x x x x x x
प्रेम दिवानी तेरे हिरखे नै बद्धी दी,
मीरां दा प्रेम इन मन लाई दिक्खेआ।"

अर्थात्-प्रेम में विरह का आनंद आता है। तूने सदा गमों को गले से लगा कर रखा। तेरे प्रेम की दीवानी होकर इसने मीराबाई के प्रेम-पथ की डगर चुन ली।

यह संग्रह भक्ति-भावना से सराबोर है।

उथले जल में पत्थरों की पगडंडी[8]

"*बद्‌टोतार*" वेदराही का नया कविता संग्रह है जो कई मायनों में परंपरा से हटकर है। कवि ने जीवन के कटु यथार्थ से साक्षात्कार कराया है। उदाहरणार्थ कवि ने "जम्मू" शीर्षक भिन्नार्थक कविता में अपनी जन्म-भूमि जम्मू की अस्मिता के मिटते अवशेषों का दर्द पिरोया है। साधारण प्रतीत होने वाली बातों को जब कविता में विशेष स्थान मिलता है तो वे असाधारण हो जाती हैं। वेद राही यथार्थ के कंटीले पंथ के अनुगामी हैं। दस प्रकाशित पृष्ठों की इस लंबी स्वछंद कविता की विशेषता मात्र यथार्थ नहीं अपितु ऐतिहासिक दोगलेपन का अनावरण है जिस के प्रति अधिकांश कवि आँखे मूंदे रहे हैं।

कविता का केंद्रस्थ बिंदु इसकी विषयगत रोचकता है जो इसमें लय और छंद का काम दिखाई पड़ती है। यह अद्भुत प्रयोग है। आसानी से समझ आ पाने वाले बिंबों में कवि ने जम्मू की मार्मिक व्यथा का स्पर्श किया है–

"मारो गोली नमिएं स्कीमें गी
बनांदे र' वो स्कीमां
कराकुल टोपिएं आह्लें गी
सलामां करो, खुश र'वो।
जै डुग्गर।"

यह स्वार्थोन्मुखी राजनीति के गाल पर एक ज़ोरदार चपत है। जिन लोगों के समक्ष निजी स्वार्थ प्रमुख हैं वे व्यापक राष्ट्रीय हितों को तिलांजलि देकर कराकुली टोपियों को सलामी कर रहे हैं। इसी तरह के वैचारिक नएपन के अहसास प्रस्तुत कविता संग्रह में भरे पड़े हैं।

डोगरा संस्कृति की विशेष पहचान *"भाख"* नामक गीति-शैली वर्तमान समय में लुप्त होने के कगार पर खड़ी है। आधुनिक कवियों ने इस शैली में प्रयोग करके इसे पुनर्जीवित करने का प्रयास किए हैं। वेद राही ने इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए 19 नई भाख रचनाएँ प्रकाशित की है। यह सराहनीय प्रयोग हैं। इस पुस्तक में शैलीगत प्रयोगों के अतिरिक्त भावगत प्रयोगों का आधिक्य है। पुस्तक का आरंभ ही जापानी हाइकू शैली में रची गई डोगरी हाइकू से होता है–

"कविताएं दी बट्टोतार
रेही जंदी ऐ आपूं पिच्छें
मिगी पुजांदी पार।"

इस हृदय-स्पर्शी लघु-कविता में कवि काव्य-रस के अतिरेक को यों बयान करता है कि पत्थरों की यह पगडंडी तो पीछे छूट जाती है, किंतु मुझे पार लगा देती है। नदी के पार पहुँचने का यह अतिशय आनंद कवि वेद राही की रचना-प्रक्रिया के महत्वपूर्ण पड़ावों को भी इंगित करता है।

प्रेम की डोरी[9]

केवल कृष्ण शाकिर बहुभाषी लेखक हैं। मूलतः पंजाबी और उर्दू के लेखक होकर भी उन्होंने दो और भाषाओं हिंदी और अंग्रेज़ी में भी भिन्न-भिन्न विधाओं में लेखन कार्य किया और पुस्तकें प्रकाशित करवाई हैं। तीन दशक पूर्व उन्होंने मातृभाषा डोगरी में अपना प्रथम उपन्यास प्रकाशित करवाया था। अब इसी भाषा में कवितओं का संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में गीत, गज़ल, कविता के अतिरिक्त 20 भेटें भी हैं। देवी माँ की स्तुंति हेतु लिखे गए भजनों को भेंट कहा जाता है। ईश्वरीय सत्ता का स्वीकरण उनकी बहुत-सी रचनाओं में उपलब्ध होता है। उनकी एक गज़ल में उद्घाटित होने वाला श्रद्धा-भाव यों हैं–

"ईश्वर सब दा पालन-हारा,
लौह्के-बड्डे प्यारे उसदे।"

मील-पत्थर रचना न होकर भी सादा मानवीय भावों के कारण यह पुस्तक पाठक का मन मोहने में सक्षम है। विशेषतया गज़लों की सादगी इस में बुने गए शेऽरों को प्रभावपूर्ण बना देती है। इन रचनाओं में कवि की मानस-प्रकृति बड़ी स्पष्ट होकर उभरती है। छोटे कलेवर के इस संग्रह में कुछेक बढ़िया रचनाएँ भी उपलब्ध होती हैं।

वर्ष 2014 ई० की कहानी

आशाओं का चाँद[10] कहानीकार नरेंद्र भसीन का प्रथम कहानी संग्रह है जिसने अनूठे कथानकों पर कहानियाँ बुनकर उसके समालोचकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। लेखन शैली अति रोचक और भाषा सुष्ठु है। ज़िंदगी के विभिन्न पहलुओं पर बुनी गई इन कहानियों की रोचकता पाठक को दत्त-चित्त बनाए रखती है। पहले ही संग्रह से इस विधा पर मज़बूत पकड़ सिद्ध करने हेतु कथाकार बधाई का पात्र है। साधारण से प्रतीत होने वाले कथा-बीज को कहानीकार मंजी हुई लेखनी के स्पर्श से समुचित विस्तार देकर उस उत्कर्ष बिंदु तक ले आता है जहाँ ओ' हेनरी की कहानियाँ याद आने लगती हैं। कुछ कहानियाँ मात्र कहानियाँ न होकर दार्शनिक प्रश्न प्रतीत होती हैं।

"कुदरत ने सिगी केह बनाया", "झूटा", त्रुट्टे दा पत्तर", "बूफूं नेई रेहा" मानवीय प्रश्नों के उत्तर तलाशती कहानियाँ हैं। *"जियो दूएं लेई", "कराए दी कुक्ख", "कलापा", "हुस्मन", बेद्दन कृष्णा दी"* सोद्देश्य कहानियाँ है जिनमें जीवन की कटुता के यथार्थ एवं रोमांचक चित्र उपलब्ध होते हैं।

ये कहानियाँ जीवन के आस-पास की नहीं, जीवन के भीतर की कहानियाँ है। कई बार तो यों प्रतीत होता है जैसे संस्मरण और रेखाचित्र विधा के मिश्रण से कहानी का जादू बिखेरा गया है। निश्चय ही ये कथा-विधा को समृद्ध करने वाली कहानियाँ हैं।

कौन अपने[11]

प्रस्तुत संग्रह में संकलित कहानियाँ शिवदेव सुशील की विषयगत पक्वता और शैलीगत पकड़ का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। हमारे चारों ओर कहानियाँ बिखरी पड़ी हैं, किंतु अभाव है उस दृष्टि का जो कथानकों का महत्व पहचान कर उन्हें कहानियों का आकार दे सके। सुशील ने साधारण जन-जीवन से कथानक उठाकर इसी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है। ये जीवन के बीच की कहानियाँ हैं। कहानीकार ने इन्हें अंतरंगता के स्पर्शों द्वारा अधिक जीवंत बना दिया है।

शिवदेव प्रायः छोटे कलेवर की कहानियाँ लिखते हैं जिनका अंत कोई मार्मिक संदेश देकर पाठक के हृदय को छू लेता है। कई बार यों लगता है जैसे कथानक को पूरी तरह विकसित होने से पूर्व ही उत्कर्षात्मक अंत तक ले जाने की जल्दबाज़ी की गई है। उनके विगत कहानी संग्रहों में यह दोष कुछ अधिक नज़र आता है। किंतु इस कथा-संग्रह में इस दोष पर किसी सीमा तक काबू पा लिया गया है। बेशतर कहानियाँ किसी सामाजिक अथवा मानविक समस्या पर बुनी गई हैं। भ्रष्टाचार, आतंकवाद, धोखाधड़ी, राजनैतिक छल-छिद्र, रिश्तों की दरारों से जूझते पात्रों का दर्द उनके जीवट को स्पष्ट करता है।

मानक भाषा का अभाव इन कहानियों के पठन में बाधा उत्पन्न करता है। यदि कहानियों के पात्र गवई या पहाड़ी भाषा में वार्तालाप करते हैं तो निश्चय ही कहानी आँचलिक रोचकता से भर जाती है। किंतु, जब लेखक तमाम वर्णन धड़ल्ले से इसी अमानक भाषा में करता है तो रस-बाधा ही उत्पन्न होती है।

विचारों की फिर्की[12] तीन कहानियाँ लिखकर जिस युवा कथाकार के शौक पर विस्मृति की धूल छा गई थी – वर्षों की सरकारी सेवा से निवृत्त होने पर अचानक एक दिन उसके भीतर के कहानीकार ने अंगड़ाई ली और धड़ाधड़ कहानियाँ लिखने लगा। यों लगा कॉलेज की उम्र में जिस जगह अर्ध-विराम लगा था, दशकों बाद वहीं से कलम उठाकर उसने अपने कथानकों को आगे बढ़ाना आरंभ कर दिया है। फलस्वरूप प्रस्तुत कहानी संग्रह *"सोचें दी रीह्ल"* सामने आया।

अपने वक्तव्य में लेखक ने स्वीकार किया है कि इसमें संग्रहीत तमाम कहानियाँ उसकी जी हुई हैं। इनमें कल्पना का अंश न्यून है। संभवतया इसीलिए इन्हें पढ़ते समय लगता है कि मानो किसी के अंतरंग अनुभवों से गुज़र रहे हों। यह तथ्य को प्रमाणित करता है कि लेखक ने इन कथानकों को भोक्ता के स्तर पर जिया है। कहीं-कहीं ऐसा लगता है लेखक अपने अंतस् को कुरेद रहा है और अपने-आप से बतिया रहा है। प्रत्येक कहानी के केंद्र में लेखक का कथ्य स्वानुभूति का परिचय कराता है। *"निंबल", "घोर पाप", "दूआ केस"* और *"सनकी"* ऐसे ही प्रामाणिक अहसासों को सँजोए हुए हैं।

कहानीकार अशोक दत्ता ने अपने पहले ही कथा-संग्रह से डोगरी कथा-साहित्य में अपना स्थान निश्चित कर लिया है। भाषा सामर्थ्य को देखते हुए हमें आशा करनी चाहिए कि अशोक दत्ता उत्तरोत्तर कलात्मक कहानियाँ देंगे।

सफेद कॉलर[13]: एक मध्यवर्गीय प्रतीक

नाट्य-कर्मी के रूप में पहचाने जाने वाले प्रवीण केसर का मरणोपरांत

प्रकाशित यह कहानी संग्रह उन्हें जानने वाले लोगों को आश्चर्यचकित करने वाला है। प्रवीण कहानी का शौक तो रखते थे, किंतु चुपचाप रहकर गंभीरतापूर्वक कहानी पर हाथ भी आज़माते थे– यह बात ***"सफेद कॉलर"*** के प्रकाशन के उपरांत सामने आई है। इसमें संकलित 12 छोटी कहानियों का विषय-फलक विस्तृत है। मंगलो जैसी विधवा नारी के चरित्र-चित्रण के अतिरिक्त कहानीकार उस क्षेत्र के सांस्कृतिक वातावरण का प्रामाणिक चित्रण सफलता से कर पाया है। इन कहानियों के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों से संबंध रखते हैं। इनमें किसान भी हैं और दुकानदार भी, मज़दूर-मिस्त्री भी हैं तो संपदा-स्वामी भी। अधिकतर कथानक समाज के निम्नवर्गीय लोगों की जीवन.स्थितियों पर प्रकाश डालने वाले हैं। ***"माँ जी", "पंते दी हवेली", "टेरेरिस्ट"*** इस संग्रह की अच्छी कहानियाँ हैं।

हिज्जों की अशुद्धियों को नज़रंदाज भी कर दें तो अंग्रेजी शब्दों की अधिकता और उन्हें रोमन लिपि में ज्यों का त्यों प्रकाशित कर देना प्रमाणित करता है कि कहानियों को **"ड्राफ्ट"** की दशा में ही प्रकाशित करके कहानीकार द्वारा न्याय नहीं किया गया। यदि प्रकाशन से पूर्व कहानियों को संपादित करवा लिया गया होता तो इनका संदेश अधिक प्रभावी बन पाया होता। अधकचरापन हटने से कहानियाँ निश्चय ही पठनीय और प्रभावशील बन सकती थीं।

याद[14]

चालीस वर्ष पूर्व छत्रपाल नामक एक युवा हस्ताक्षर ने एक लघु कहानी संग्रह (टापू दा आदमी) के माध्यम से डोगरी साहित्य में दस्तक दी थी। उसका दूसरा कथा संग्रह ***"चेत्ता"*** चार दशकों के अंतराल को पाटते हुए सामने आया है। इसमें संदेह नहीं कि कथाकार कहानी की सूक्ष्मताओं की समझ रखता है। वह कथा-पात्र के अंतस् में उतरना जानता है। कथानक को विस्तार देकर वह उसे कारीगरी से समेटने में दक्ष है।

प्रस्तुत संग्रह में संग्रहीत कुछेक कहानियाँ इससे पूर्व पत्र-पत्रिकाओं तथा संग्रहों में भी प्रकाशित हो चुकी हैं। कहानीकार का प्रबल पक्ष उसकी

पात्र-मनोविज्ञान की सहज समझ है। जिसके बल पर वह पात्रों को सजीव एवं प्राणवंत बना देता है। **"अग्ग"** और **"जिद्द"** शीर्षक कहानियाँ बाल-मनोविज्ञान पर आधारित उत्कृष्ट नमूने हैं। इधर कहानीकार की लेखनी में व्यंग्य का पुट उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। संभवतया इस प्रकार का प्रथम प्रयोग उसने **"शुमारीलाल दा दुखांत"** के माध्यम से वर्षों पूर्व किया था। इसके उपरांत उसने तोता-मैना कथा-शैली को आधार बनाकर कुछ और व्यंग्य कथाएँ लिखीं और गोष्ठियों में उनका वाचन करके श्रोताओं की वाह-वाही लूटी। **"डाक्टर मेह्रबान"** तथा **"निक्का पप्पू बड्डा पप्पू"** उसी श्रृंखला की कहानियाँ हैं। **"लूना दा पुतला"**, **"घोड़े"**, **"ओह् दिन"** तथा **"हिंदसा"** इस संग्रह की श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। निश्चय ही यह कथा-संग्रह एक सराहनीय प्रयास है।

बिलखती धरती गूंगा गगन[15]

नीरू शर्मा नवोदित किंतु परिपक्व कथाकार हैं। प्रस्तुत कथा-संग्रह **"बिलकदी धरत गुंगा गास"** उनका प्रथम कथा-संकलन है। इसमें 12 कहानियाँ प्रकाशित की गई हैं। प्रत्येक कहानी एक भिन्न कथानक और अलग जीवन प्रकरण को लेकर खुलती है। लेखिका ने अपने चौगिर्द वातावरण में जी रहे उपेक्षित लोगों को अपने पात्र बना कर कहानियों में सजीव किया है। वे ऐसे पात्रों को सामने लाती हैं जो हमारे आस-पास जीते-जागते दिखाई पड़ते हैं और जो हमारी चिंतन-प्रक्रिया में उत्तेजना भर कर हमारे अंतस्तल को कुरेदते हैं। इस संग्रह की भूमिका में वेद राही कहते हैं -- **"इन कहानियों का विशेष गुण इनकी सरलता है। इस सरलता में सत्य की चमक है। साफ-सुथरे मन से निःसृत ये कहानियाँ पूर्णयता सत्य कथाएँ प्रतीत होती हैं।"**

जीवन से कटे और अपने दुःखों-सुःखों के घेरे में जी रहे पात्रों पर बुनी गई ये कहानियाँ नीरू शर्मा के कथा–वाचन की सामर्थ्य के प्रति आश्वस्त करती हैं। इस भाषा की कहानी-यात्रा में अच्छी कहानियों की आमद सदा स्वागत योग्य रही हैं। **"पगडंडी"**, **"बिलकदी धरत"**, **"ब्हार कदूं**

औग" जैसी कहानियाँ मात्र कथानक या कथ्य न होकर अपना उत्तर तलाशते प्रश्नचिह्न भी हैं। "निहालप", कहानी में आतंकवाद की छाया तले घुट रहे जीवन के छायाचित्र यथार्थ की अनुभूति से संगुंफित हैं। आतंक वस्तुतः मानवता के समक्ष खड़ी एक पाशविक चुनौती है। संवाद शैली के प्रयोग से कथानक को फैलाने और संभालने में कथाकारा की मज़बूत पकड़ है। "सैबर कैफै", "घर-घर", "सच्चा सुच्चा मन" इस तथ्य के प्रमाण हैं। अंत में वेद राही के सुर से सुर मिलाते हुए हमें मात्र इतना कहना है कि नीरू शर्मा से अपेक्षा है कि वे कथा-लेखन में और योगदान देकर इसकी वृद्धि में सहायक होंगी।

वर्ष 2014 ई० का मिश्रित साहित्य

रामनाथ शास्त्री: समग्र रचनावली[16] डोगरी भाषा के उत्थान और पुनरुद्धार हेतु समग्र जीवन समर्पित करने वाले रामनाथ शास्त्री ऐसी साहित्यिक विभूति थे जो जीते-जी एक "*लीजेंड*" बन गए। उनके महत् योगदान के कारण कोई उन्हें डोगरी का "*भारतेंदु*" और कोई "*बाबा-ए-डोगरी*" कह कर स्मरण करता है। 780 पृष्ठों की इस बृहद् पुस्तक में उनकी श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त उनके शोध आलेख भी उपलब्ध होते हैं। उनके जीवन तथा उपलब्धियों का विस्तृत ब्यौरा भी यथा-स्थान दिया गया है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी इस साहित्यकार ने जिन विधाओं में जमकर लिखा, वे थीं – कहानी, कविता, एकांकी, नाटक, समालोचना। उपन्यास को छोड़कर उन्होंने प्रत्येक विधा में लेखनी की चमक दिखाई है। डोगरी भाषा के आधुनिक निर्माताओं में उनका प्रमुख स्थान है।

आजीविका हेतु उन्होंने सरकारी कॉलेज में अध्यापन किया। वे हिंदी-संस्कृत के प्राध्यापक थे। 1994 ई० से 1989 ई० तक उन्होंने डोगरी भाषा के साहित्यिक आंदोलन का नेतृत्व करने के अतिरिक्त अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए यथा–

कोशकारिता – उन्होंने 2000 पृष्ठों पर आधारित छह खंडीय "*डोगरी–डोगरी डिक्शनरी*" नामक शब्दकोश का संपादन किया।

पत्रकार – डोगरी संस्था की पत्रिका नमीं-चेतना का 1953 ई० से 1989 ई० तक सफल संपादन किया। इस योगदान के लिए उन्हें "*सराफ़ पत्रकारिता पुरस्कार*" से सम्मानित किया गया।

अभिनेता – वे 'श्री सनातन धर्म नाटक समाज' दीवान मंदिर के मूल कलाकारों में से एक थे। वर्ष 1955 ई० में उन्होंने "*बावा जित्तो*" नाटक में मुख्य भूमिका निभाई। फिर "*सरपंच*" नाटक में भी अपने अभिनय की अमिट छाप छोड़ी।

उनकी साहित्यिक सेवाओं के एवज़ में राज्य की अकादमी के अतिरिक्त देश की साहित्य अकादमी द्वारा भी पुरस्कृत किया गया। साहित्य अकादमी की "*महत्तर सदस्यता*" के अतिरिक्त 1990 ई० में उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया।

प्रस्तुत ग्रंथ में इस सुप्रसिद्ध साहित्यिक विभूति के योगदान और मुखर व्यक्तित्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। ओम गोस्वामी द्वारा संपादित इस ग्रंथ से रामनाथ शास्त्री के कद्दावर व्यक्तित्व के अनेक प्रेरक पहलू सामने आते हैं।

आँचलिक समृद्धि के चित्र[17]

वरिष्ठ लेखक ओम शर्मा "*जिंद्रयाड़ी*" के 14 लेखों का संग्रह "*बंदरालता दर्पण*" डोगरी भाषा का नंदन बाग कहे जाने वाले पर्वतीय अंचल रामनगर के साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं लोकवार्तिक बिंबों से भरपूर है। लेखक अपने ज्ञान एवं सूचनावर्धक लेखों के कारण विख्यात हैं। लेखक ने अपने गद्य-सौष्ठव को जंगलों की प्राकृतिक सुगंधों, पर्वतों की शुद्ध वायु तथा प्रकृति के अंचल में बसे गाँवों की सांस्कृतिक रंगतों के साहचर्य से द्विगुणित किया है। मनोहारी गद्यानुच्छेदों से लेख रोचक और पठनीय बन पड़े हैं।

इस संग्रह में दो नामवर लेखकों नरेंद्र खजूरिया और श्रीवत्स विकल के साहित्य पर केंद्रित लेखों में परिचयात्मक समालोचना भी उपलब्ध होती है। "मेरी स्टैरमैंट", "देहरे दा तार", "लाट-घूना" शीर्षक तीन लेख इस

पुस्तक की विशेष उपलब्धि प्रतीत होते हैं। स्तरीय लेख संग्रहों का अभाव झेल रही डोगरी भाषा में ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन निश्चय ही एक स्वागतयोग्य पग है।

वैचारिकता की लहरें[18]

कुछ लेखनियाँ अभिव्यक्ति के विभिन्न-पथ तलाशने के निरंतर प्रयास करती रहती हैं। ऐसा ही प्रयास है इंद्रजीत केसर का लघु - निबंधों का संग्रह ***"सोच तरंगां"***। इस पुस्तक में सम्मिलित 28 निबंधों का विषय-फलक मानवीय मनोभावों से लेकर उनके सामाजिक व्यवहार तक फैला हुआ है। साधारण प्रतीत होने वाले जटिल विषयों पर लेखक ने सरल शैली में गंभीरतापूर्वक विचार किया है। वह कभी वर्ण्य-विषय की मनोवैज्ञानिक चीर-फाड़ करता है तो कभी पत्रकार की भाँति सपाट तथ्यों को बयान करने लगता है। विश्लेषण जहाँ बोझिल होने लगता है वहाँ तार्किकता के स्थान पर व्यंग्य-भावना के सुष्ठु प्रयोग से विषय को नया मोड़ दे देता है। इससे निबंध-वाचन हलका-फुलका हो जाता है। प्रस्तुत संग्रह का महत्व इस दृष्टि से अधिक है कि डोगरी में निबंध-विधा अभी घुटनों के बल रेंग रही है। कुछ वर्षों से निबंध संकलनों की निरंतर आमद इस विधा के भविष्य के प्रति आश्वस्त करती है। यहाँ संग्रहीत *"पज्ज"*, *"डर"*, *"घमंड"*, *"चुगली"*, *"अहम"* आदि अच्छे निबंध हैं। अन्य निबंधों में भी लेखक ने सामाजिक सरोकारों को गंभीरतापूर्वक स्पर्श किया है। वह मानव के चारित्रिक एवं व्यावहारिक दोहरेपन को परत-दर-परत खोल कर सामने लाता है। यह संग्रह डोगरी गद्य साहित्य में एक स्वागत-योग्य वृद्धि है।

दस लेख[19] इस लेख संग्रह में लोक–वार्ता, संस्कृति और साहित्य से संबद्ध दस फुटकल लेख संकलित किए गए हैं। ये तमाम विषय ऐसे हैं जिन पर इससे पूर्व दर्जनों लेख अधिक विस्तार और अधिक संश्लिष्ट दृष्टि से लिखे जा चुके हैं। लेखक ने साहित्य समालोचना तथा निबंध विधा पर परिचयात्मक लेख प्रस्तुत किए हैं, जबकि लोक–साहित्य से संबद्ध विषयों पर छहलेख पत्रकारिता की शैली में लिखे गए हैं। लोक–वार्ता के समीचीन अध्ययन हेतु

विशेषज्ञता दरकार है जो इनमें नदारद है। ऐतिहासिक क्षेत्र अखनूर के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के स्थानों पर लिखित लेख प्रशंसनीय हैं। ये ज्ञानवर्धक लेख विस्तृत जानकारी से भरपूर हैं। पद्मा सचदेव की कविताओं में चित्रित आतंक विषयक लेख लेखक की मौलिक दृष्टि का प्रमाण है। सामंती राज़्य होने के कारण जम्मू-कश्मीर ने पाक प्रायोजित आतंक का दंश सहा है। डोगरी भाषा के अधिकांश कवियों ने इस दंश का दर्द कविताओं में उभारा है। लेख़क ने यदि प्रमुख कवियों की कविताओं को भी सम्मिलित करके इस लेख के फलक को व्यापक बनाया होता तो आतंक का स्वरूप अधिक स्पष्ट हुआ होता।

बीसवीं सदी का डोगरी गद्यः एक झलक[20] आधुनिक डोगरी गद्य के छह रूपों यथा-निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा-लेख को आधार बनाकर लिखी गई यह पुस्तक इन विधाओं का विहंगम सर्वेक्षण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक मूल रूप से पी-एच० डी० के शोध-प्रबंध का हिस्सा प्रतीत होती है। लेखक ने इन छह विधाओं की सविस्तार चर्चा की है। यदि लेखक प्रत्येक काव्यरूप के अनुशीलन के पश्चात् उस विधा के विषय में कुछ निष्कर्ष दे पाता तो पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई होती।

अनुवादः सीमारेखा वाह्‌गा[21] 1947 ई० का भारत-पाक विभाजन एक ऐसी मानवीय त्रासदी है जिसे लेकर प्रायः तमाम भारतीय भाषाओं में ढेरों साहित्य सृजित हुआ है। इधर डोगरी भाषा में भी इस विषय पर बढ़िया कहानियाँ और उपन्यास सामने आए हैं।

"*वाह्‌गे आह्‌ली लकीर*" पंजाबी में लिखित 13 कहानियों का डोगरी अनुवाद है। इन कहानियों में संकट में फँसे लोगों के प्रति एक ओर धर्मांध लोगों की संकुचित दृष्टि से पर्दा उठता है तो दूसरी ओर तंग-नज़री से दूर ऐसे आदर्श पात्रों से परिचय होता है जो दूसरों की सहायता के लिए अपने प्राणों का दाँव लगा जाते हैं। ये कहानियाँ हृदयस्पर्शी लम्हों का बखूबी चित्रण करते हुए, चिरस्थायी प्रभाव छोड़ जाती हैं। डॉ० एस० एस० छीना की

इन कहानियों का डोगरी अनुवाद पोपिंदर सिंह "पारस" और यशपाल "निर्मल" ने किया है।

जूलियस सीज़रः डोगरी अनुवाद[21] दुखांत नाटकों के सृजन में शेक्सपियर का स्थान सर्वोपरि है। "*जूलियस सीज़र*" उनकी लेखकीय दक्षता का बेहतरीन प्रदर्शन है। अदृष्ट नियति को नाटककार षड्यंत्रों के जाल बुनते दिखलाता है। ये षड्यंत्र पात्रों की महत्वाकांक्षा, निजी निष्ठा और आस्था के रूप में प्रकट होते हैं। इस नाटक के प्राणवंत पात्र दूसरों के प्राण हरने तक सीमित न रह कर वे चारों ओर से नियति द्वारा जकड़े जाने पर अपने प्राण तजने के आत्म-गौरव से भी ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं। हितों का टकराव, रोमन राष्ट्र के प्रति अभिमान तथा घटनोत्कर्ष में मृत्युपाश में बंधने की लालसा जूलियस सीज़र के कथानक में उत्सुकता का तत्व भर देती है। इस श्रेष्ठ कृति का डोगरी अनुवाद एक स्तुत्य प्रयास है। विशेषतया तब जबकि उस महान् नाटककार का 450 वाँ जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। अब प्रश्न यह है कि रंगमंच की कसौटी पर अपना वर्चस्व सिद्ध कर चुकी इस श्रेष्ठ कृति के डोगरी अनुवाद का कभी मंचन हो पाएगा? इस अनुवाद का लाभ तो तभी है जब इसे मंचित किया जा सके।

टिच्चक – टूंः एक ध्वनि का आकार[22] डोगरी भाषीक्षेत्र अर्थात् डुग्गर की समृद्ध लोक-परंपराओं में लोक-नाट्य "*हरण*" का विशेष स्थान है। किंतु आधुनिकीकरण की तेज़ हवाओं में "*हरण*" सहित अन्य लोक-परंपराओं का शनैः शनैः ह्रास होता चला गया है। हमारे देखते ही 1970 ई० तक जीवित प्राचीन नाट्य-परंपरा "*भगत*" भी इतिहास के पन्नों में समा गई है। यद्यपि यह सत्य है कि परिवर्तन-चक्र को न तो रोका जा सकता है, न विपरीत दिशा में ही घुमाया जा सकता है तथापि इस परिवर्तन के प्रभाव में पिस और मिट रही शैलियों की या तो "*डाक्यूमेंटेशन*" हो सकती है या आधुनिक प्रवृत्तियों से उनका तालमेल स्थापित करके इन्हें पुनर्जीवित करने का प्रयास तो किया ही जा सकता है।

"टिच्चक-टूं" के माध्यम से कुमार अ० भारती ने ऐसा ही महत् प्रयास किया है। इस नाटक का लेखन करने से पूर्व उसने **"हरण"** शैली का गंभीर अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि इसकी कार्यशाला का आयोजन करके इस विस्मृत-प्रायः लोक-शैली को पुनर्जीवित करने का प्रयास भी किया।

तदुपरांत **"हरण"** की परिष्कृत प्रस्तुति **"टिच्चक-टूं"** दर्शकों के समक्ष पेश की गई। इस नाटक को अनेक बार मंचित किया जा चुका है।

जीवन का ग़लत व्याकरण[23]

नाटककार और रंगकर्मी का अद्भुत मिश्रण बने कुमार अ० भारती का वर्ष 2014 ई० में प्रकाशित होने वाला दूसरा नाटक था– ***"गलत व्याकरण!"*** ये नाटक सामाजिक विसंगतियों से जूझ रहे वर्तमान समयखंड की हृदयहारी प्रतीक कथा है जिसे ***"गलत व्याकरण"*** के प्रतीक पद द्वारा व्यंजित किया गया है। इसमें विखंडित जीवन आस्थाओं से जूझ रही युवा-पीढ़ी के दर्द, विरोध और ***"फ्रस्ट्रेशन"*** का सुचारू अंकन उपलब्ध होता है। नाटककार ने लक्षित किया है कि स्वयं अपनी नैतिकता को गढ़ने के प्रयास में नई पीढ़ी निरंतर सनातन-सत्य से पराङ्मुख होती गई है। फलस्वरूप पीढ़ियों का टकराव उभर कर सामने आता है।

मात्र चार मुख्य और तीन गौण पात्रों के माध्यम से इस समस्यामूलक नाटक को गठित किया गया है। प्रकाशन से पूर्व इस नाटक को तीनेक बार दर्शकों के समक्ष खेला जा चुका है। इस में उभारे गए प्रश्नों की प्रासंगिकता आज भी स्वयंसिद्ध है। नाटककार मात्र समस्या का चेहरा दिखा कर संतुष्ट नहीं होता। वह पाठक और दर्शक को सोचने पर मजबूर करता है कि कैसे संघर्षों की चक्की में पिस रहा आज का युवा आकांक्षाओं की मृगमरीचिका के पीछे घिसटता चल रहा है। ग़लत लक्ष्यों ने उसके जीवन का व्याकरण ही ग़लत कर डाला है।

नाटक का कथा-जीव्य आधुनिक भी है और रोचक भी। इधर गत वर्षों के दौरान डोगरी में अच्छे नाटक आए हैं। ***'गलत व्याकरण'*** उन्हीं नाटकों में एक कड़ी है।

साहित्य और पत्रिकाएँ

डोगरी दैनिक '*जम्मू प्रभात*' में प्रतिदिन साहित्यिक सामग्री का एक बड़ा अंश दिया जा रहा है। कारण यह है कि पत्र-पत्रिकाएँ कम और छपासेच्छु अधिक हैं। लेखकों की तो कतारें हैं, किंतु पत्रकारिता का क्षेत्र सूना और सीमित है। डोगरी संस्था, जम्मू की त्रैमासिक पत्रिका "*नमीं - चेतना*" के 187-88 तथा 189-90 ये दो संयुक्तांक प्रकाशित हुए हैं। प्रथम संयुक्तांक में "*डोगरी भाषा और साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ और अवसर*" विषय पर विभिन्न सामग्री है। यथा-शिवनाथ की कविताएँ, संतोष सांगड़ा का नाटक तथा डॉ० वीणा गुप्ता का गज़ल विधा-विषयक लेख।

साहित्यिक पत्रकारिता में "*शीराज़ा डोगरी*" का विशेष स्थान है। राज्य अकादमी द्वारा यह पत्र प्रकाशन की अर्धशती पूर्ण कर चुका है। इस द्वैमासिक साहित्यिक पत्रिका की डोगरी साहित्य के उत्थान में केंद्रीय भूमिका रही है। श्रेष्ठ साहित्य को प्रकाश में लाने और नई प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का इसे श्रेय प्राप्त है। डोगरी में यह एकमात्र ऐसी पत्रिका है जो प्रत्येक प्रकाशित रचना पर रचनाकार को उचित पारिश्रमिक प्रदान करती है।

वर्ष 2014 ई० में प्रकाशित छह अंकों में विद्वान् लेखकों की कलमों से निकले लेखों के अतिरित मंजे हुए कहानीकारों की कहानियाँ भी प्रकाशित हुई हैं। नए गद्य-लेखकों और कवियों को भी समुचित स्थान दिया गया है जोकि समय की माँग है। इधर बातें तो उत्तर-आधुनिकता की हो रही हैं, किंतु व्यवहारतः परंपरावादी रोमान लेखनियों पर हावी है। इक्कीसवीं सदी के प्रथम चौदह वर्षों में कविता इसी दोष से ग्रस्त दीखती है। बौद्धिक-शून्यता, संदेश-हीनता और तुकबंदी विधान पर निर्भर कविता उत्तरोत्तर कृत्रिम व्यामोह में जकड़ती जाती प्रतीत होती है।

प्रकृति ने सदा कवि-मानस को प्रभावित एवं प्रेरित किया है। आज भी एक बड़ा कवि वर्ग प्रकृति से संबद्ध उन्हीं भावानुभावों से रंगे चित्रों का सृजन कर रहा है जो तीन-चार पीढ़ी पूर्व के कवि अधिक सफलता से कर

चुके हैं। प्रकृति पर कलम चलाने का अभ्यास बुरा नहीं है, किंतु, कविता बुनने के लिए हर बार वर्णमाला के अक्षरों को दोहराने की आवश्यकता नहीं होती। यदि कविता विधा को आगे बढ़ना है तो भाव और विचार के स्तर पर इसमें पक्वता लानी होगी। मुंबई वासी डोगरी कवि वेद राही इस आवश्यकता को पूर्णतया समझते है। उन्होंने ***"दिला दे पिच्छें बी इक दिल ऐ"*** में इस विषयगत आवश्यकता को समझते हुए बेहद सुष्ठु भावाभिव्यक्ति की है। ध्यान सिंह ने ***'हाइकू*** शैली के माध्यम से पर्यावरण के सौंदर्य को चित्रित किया है।

डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स ने डोगरा संस्कृति पर एक विश्लेषणात्मक लेख में वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभावों को अंकित किया है। महाराजा रणवीर सिंह के शासनकाल में डोगरी के चहुँमुखी विकास को चिह्नित करते हुए एन० डी० जम्वाल ने ऐतिहासिक तथ्यों को उदघाटित किया है। अपने जीते जी ***'लीजेंड*** बने कवि केहरि सिंह मधुकर की कविता-भाषा पर मोहन सिंह के एक सूचनाप्रद लेख के अतिरिक्त इसी कवि पर एक दूसरा लेख (अंक दिसं० 14 जन० 15) ओम गोस्वामी का प्रकाशित हुआ है जो मधुकर के साहित्यिक योगदान के अज्ञात पहलुओं पर प्रकाश डालता है।

शीराज़ा डोगरी के वर्ष 2014 ई० में प्रकाशित छह अंकों से एक बात जो पूर्णतया स्पष्ट होकर उभरती है वह है- डोगरी में लेखन से जुड़ी अधिकांश युवा कलमें आधुनिक होने का दंभ तो भर रहीं हैं, किंतु अपने समय से जुड़ने का कोई गंभीर प्रयास उनमें नज़र नहीं आता। शीराज़ा को इस दिशा में गंभीरतापूर्वक पग उठाने होंगे।

परिशिष्टिका– डोगरी भाषा इस समय एक कठिन समस्या से जूझ रही है। यह समस्या पाठकों के अभाव की है। इस पर दर्जनों बार विचार-विनिमय हो चुका है। इस के विभिन्न निदानों में से एक है बच्चों में साहित्य पढ़ने के संस्कार उत्पन्न किए जाएँ। शुरुआत बाल-साहित्य से हो सकती है। बाल-पत्रिकाएँ प्रकाशित करने के प्रयास भी हुए हैं। देखा गया है कि टी० वी० एवं मीडिया के अन्य रूपों के समक्ष बाल-पत्रिका टिक नहीं पाती। इसके

बावजूद बाल-साहित्य प्रकाशित होता आ रहा है। इधर जो बाल-कथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं उनमें "***दोस्ती*** **(मनोज हीर)**" तथा "**कोशिश**" **(शीतल शर्मा)** ध्यान खींचते हैं। दो अन्य बाल पुस्तकें हैं "***रामू, शामू, मीनू ते ओह***" **(नरसिंहदेव जम्वाल)** तथा "***सतरंगी पींहग***" **(ताराचंद कलांदरिया)**। पंचतंत्र शैली में लिखित बाल-उपन्यास "***जंगल च मंगल***" **(ओम गोस्वामी)** इधर खूब चर्चा में रहा है। इसमें राजनीति तथा अन्य सामाजिक सरोकारों तथा पर्यावरण तथा पृथ्वीग्रह की सुरक्षा से संबद्ध विविध संदेश बाल-पाठकों को दिए गए हैं।

इधर मिश्रित साहित्य के वर्ग में "***बसोहली दर्शन***" **(शिव दोबलिया)** नामक पुस्तक भी प्रकाशित हुई हैं। इस में पर्वतीय अंचल बसोहली के भूगोल, इतिहास तथा लोक-साहित्य, संस्कृति विषयक ज्ञानवर्धक जानकारियाँ संग्रहीत हैं। यहाँ के पुराने निवासियों का इतिहास भी इसमें उपलब्ध होता है। इस कठिन और श्रमसाध्य कार्य को लेखक ने सुरुचि से संपन्न किया है।

संदर्भ

1. आओ गीत गाचै; पद्मा सचदेव; अनुप्रकाशन, 41 बी, कर्णनगर (एक्सटेंशन) जम्मू तवी – 180005
2. डुआर चेत्तें दे; सत्यपाल गढ़वालिया; सत्य पब्लिकेशन्ज़, गढ़वाल, विजयपुर (सांबा), जम्मू कश्मीर।
3. सोलां आन्ने सच्च; राकेश शर्मा "तृप्त", प्रकाशक–मोनिका प्रकाशन; राजपुरा मंगोत्रेआं, जम्मू।
4. मनै दी सगात; कृष्ण कुमार केरणी, प्रकाशक–निधि पब्लिकेशन्ज़, जम्मू।
5. जीवन मोती; सीताराम सपोलिया; प्रकाशक–दीपक पब्लिकेशन हाऊस, विजयपुर (सांबा), जम्मू कश्मीर।
6. कूले भाव; ब्रहम्दत्त मंगोत्रा; हाईब्रो पब्लिकेशंज़ नेशनल हाईवे, बड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।
7. घर आई जा जोगिया; कृष्ण मंगोत्रा; हाईब्रो पब्लिकेशंज़ नेशनल हाईवे, बड़ी ब्राह्मणां, जम्मू।

8. बट्‌टोतार; वेद राही; दर्शना प्रकाशन; बी-30 जैस्मीन, सुदर्शन पार्क गार्डन, जी. बी. ठाणे – 4000615, मुंबई (महाराष्ट्र)

9. हिरखै दी डोर; केवल कृष्ण शाकिर, अक्षय प्रकाशन-4-सी, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002

10. आसें दा चन्न; नरेंद्र भसीन; हेमंत प्रकाशन, मकान नं – 3 तालाब तिल्लो, जम्मू – 180002

11. कु'न अपने; शिवदेव सुशील; विशाल डुग्गर प्रकाशन; 27/4 पांपोश–कालोनी, जानीपुर, जम्मू।

12. सोचें दी रीह्‌ल; अशोक दत्ता; दत्ता प्रकाशन, विजयपुर, सांबा, जम्मू।

13. चिट्‌टा कालर; प्रवीण केसर; निर्मल प्रकाशन, 9-पंजतीर्थी, जम्मू (जम्मू कश्मीर)

14. चेत्ता; छत्रपाल; सत्यशिला प्रकाशन; 18-ए/2, उधेवाला, जम्मू–180018।

15. बिलकदी धरती गुंगा गास; नीरू शर्मा; निधि पब्लिकेशंज, जम्मू।

16. रामनाथ शास्त्री : समग्गर रचनावली; ओम गोस्वामी; प्रकाशन – जम्मू व कश्मीर अकैडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, जम्मू।

17. बंदरालता दर्पण; ओम शर्मा जंद्रयाड़ी, प्रकाशक-प्रोग्रेसिव यूथ सोसाइटी (रजि०), रामनगर, ज़िला उधमपुर (ज० क०)

18. सोच तरंगां; इंद्रजीत केसर; जै माता प्रकाशन, 2-पी, सेक्टर-3, एक्सटेंशन, छन्नी हिम्मत, जम्मू।

19. दस लेखः यशपाल निर्मल; निधि पब्लिकेशंज़, जम्मू।

20. बीहमीं सदी दा डोगरी गद्‌य-साहित्यः इक जायज़ा, डॉ० विजय सेठ; प्रकाशक अज्ञात।

21. वाह्‌गे आली लकीर; डॉ० एस० एस० छीना; निधि पब्लिकेशंज़, जम्मू।

22. विलियम शेक्सपियर का जूलियस सीज़र (ड्रामा); अनुवादक-मदन गोपाल पाधा; प्रकाशक-सरस्वती प्रकाशन, जम्मू-180002।

23. टिच्चक-टूं, कुमार अ. भारती, स्वरलिपि प्रकाशक, जम्मू।

24. ग़लत व्याकरण; – वही –



7

तमिल साहित्य

र. शौरिराजन

वर्ष 2014 तमिल साहित्य के बहुमुखी विधा–विकासों के लोकप्रिय ज्ञान–विज्ञान का कालखंड रहा, जो पिछले सालों का प्रवहमान विस्तार भी रहा। यह तो जिज्ञासु पाठकवर्ग का, विशेषकर खरीददार, साहित्य–प्रेमी, प्रबुद्ध पाठकवर्ग का प्रभावी समर्थन–सहयोग माना जा सकता है। साथ ही, राज्य सरकार का ठोस प्रोत्साहन जो ग्राम पंचायत, मंडलसंगठन, जिला बोर्ड, नगरपालिका, महानगरीय निगम आदि के जरिए चलाए जाने वाले 2070 पुस्तकालयों–वाचनालयों के लिए की जाती थोक किताब–खरीदारी के रूप में है, पुस्तक प्रकाशन को बढ़ावा देता है। लेखक समुदाय संतृप्त है, प्रकाशक वर्ग परितुष्ट है, जो श्रेयं और प्रेय (धन) के भागीदार हैं। लेखकों–रचनाकारों की अपेक्षा प्रकाशकों की माली हालत बढ़ी–चढ़ी पाई जाती है। लगभग ढाई सौ प्रकाशक पूरे तमिलनाडु में सक्रिय हैं। इनमें से कुछ स्वयं लेखक प्रकाशक भी पाए जाते हैं, पर ये चतुर, चालाक व्यावसायिक प्रकाशकों से होड़ में पिछड़ जाते हैं।

तमिलनाडु सरकार हर साल तमिल–साहित्य पुरस्कार स्वरूप, सब विधाओं की स्तरीय पुस्तकों को जो पिछले साल प्रकाशित हुई हैं, सम्मानपूर्वक पुरस्कार–राशि देती आ रही है। इसमें लेखक को दस हजार और प्रकाशक को पाँच हजार रुपए दिए जाते हैं, इसके अलावा, तमिलनाडु सरकार तिरूवल्लुवर, ई. वे. रामसामी पेरियार, अंबेडकर, सी. एन. अण्णादुरै, कामराज,

सुब्रह्मण्य भारती, भारती दासन, विरु वि. कल्याणसुंदरम्, कि. आ. पे. विश्वनाथम्, जो विख्यात संत कवि, समाज–सुधारक, द्रविड़ नेता, राष्ट्रकवि, समाजसेवी, प्रगतिशील साहित्यकार (सब दिवंगत) हैं, इनके नाम से जीवित तमिल साहित्यकारों, विद्वानों को एक–एक लाख रुपए का सम्मानित पुरस्कार प्रति वर्ष प्रदान करती है। एक विशिष्ट पुरस्कार प्रतिवर्ष राजराज चोलन (साहित्य, कला, संस्कृति प्रेमी, अभिभावक चोलवंशी चक्रवती (ई० दसवीं शती) के नाम पर सृजनशील वरिष्ठ तमिल साहित्यकार को समग्र उपलब्धि के निमित्त पाँच लाख रुपए स्वर्णपदक, शाल, प्रशस्तिपत्र समेत प्रदान किया जाता है। यह भी राज्य सरकार की ओर से आयोजित पुरस्कार योजना है।

गैरसरकारी संस्था–संघटनों के द्वारा भी कई पुरस्कार तमिल रचनाकारों, विद्वानों, अनुसंधानकर्ताओं को हर साल दिए जाते हैं। राजा सर अण्णामलै चेट्टियार स्मारक पुरस्कार (एक), एस. आर. एम. यूनिवर्सिटी तमिलसंकाय पुरस्कार (ग्यारह), इलक्किय चिंतनै (साहित्य सहचिंतन) पुरस्कार (तेरह), कलैइर करुणानिधि स्मारक पुरस्कार (चार), दिशै एट्टुम् (आठों दिशाएँ) पत्रिका द्वारा अनुवाद साहित्य पर (आठ पुरस्कार), कल्कि, दिनयलर, दिनमणि, कलैपकल् आदि लोकप्रिय पत्रिकाओं के द्वारा आयोजित अनुस्तरित साहित्य–पुरस्कार आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रमुख नगरों में बारी–बारी से पुस्तक–प्रदर्शिनी मेले आयोजित किए जाते हैं। तमिल, अंग्रेजी, हिंदी प्रकाशनों की प्रदर्शिनी लोकप्रिय है। प्रवेश शुल्क दस रुपए वसूला जाता है; पंद्रह दिन तक मेले लगते हैं, इनमें लाखों की तादाद में पुस्तक–प्रेमी आबालवृद्ध प्रजाजन भाग लेते हैं और खूब खरीदारी होती है।

इस परिस्थिति–परिशीलन के बाद वर्ष 2014 में प्रकाशित प्रशस्त साहित्य–ग्रंथों का सर्वेक्षण बतौर बानगी प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तावित वर्ष के दौरान, सभी विधाओं की लगभग ढाई हजार उल्लेखनीय तमिल पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। इनमें से ललितेतर साहित्य प्रकाशन अधिक पाए जाते हैं।

कुछ प्रमुख, प्रशस्त ललितेतर साहित्य–प्रकाशन :–

1. सम्राट अशोकन् (चार भाग) – हर भाग का मूल्य रु. 250, लेखक: सिद्धार्थन्; यह इतिवृत्तों से भरी जीवनी, ऐतिहासिक ग्रंथ है।

2. हमारा पारंपरिक वैद्य, चिकित्सा; (औषध–रोग निवारण का विश्लेषण ग्रंथ) (तीन भाग), हर भाग रु. 325, ले. डॉ. शक्ति सुब्रह्मण्यम्।

3. तमिलनाडु की चित्रकला (सचित्र विवरण)– ले. जोसफ थामस–एलंचिना पाआ पाल; मूल्य रु. 475।

4. ईसाई इतिहास में छिपाए और बदले गए वृत्तांत और विचार विश्वभर में – (इतिहास–खोज); ले. उमरिकाशिबेलु; मूल्य रु. 500।

5. भारतीय संसद की इतिकथा (सर्वेक्षण)– ले. अरुणगिरि; मूल्य रु. 240।

6. कालत्तिन् कुरल् (ज़माने की चीख–पुकार)– मौजूदा समस्याओं पर बेबाक, पुर असर रपट संग्रह; ले. पत्रकार मालन्, मूल्य रु. 210।

7. सामिनाथम् (प्राचीन तमिल साहित्य–ग्रंथों के संपादन–प्रकाशन में लिखित खोजपूर्ण प्रस्तावना–निबंधों का संकलन), रचनाकार : महामहोपाध्याय महापंडित उ. वे. सामिनाथ ऐयर; मूल्य रु. 1000।

8. विशिष्ट महिलाओं की जीवनियाँ (दया बाई, सिस्टर जेस्मी, दलित वीरांगना इंदिरा, बेबी हालदार, नलिनी जमीला, सी. के. जानू– इन चर्चित महिलाओं की जीवनियाँ) ले. कालच्चुवडु संपादक– मंडल; मूल्य रु. 660।

9. 'ओ!पन्ने' – (मौजूदा सवालों–समस्याओं पर तीखी–तल्ख चुटीली टिप्पणियाँ); स्तंभ लेखक : ज्ञानी; (पाँच भाग); मूल्य रु. 1000।

10. दलितवर्गीय समर–संघर्ष–समता, अधिकार, अभिमान के संरक्षण के लिए; (तमिल दलितों की संघर्ष गाथा); ले. को. रघुपति; मूल्य रु. 160।

11. मुस्लिम वतनी साहित्य (श्रीलंका और तमिलनाडु के संदर्भ में); ले. नवास चौबी; मूल्य रु. 200।

12. कुलियों की तमिल भाषा (कूलि तमिल)– श्रीलंका में अंग्रेजों की हुकूमत के जमाने में पहाड़ी जंगलों में बनाए गए चाय, काफी, रबर के बागानों

में दिन–भर काम करने के लिए तमिलनाडु से जोर–जबरदस्ती लाए गए बँधुआ मज़दूर तमिल कुली कहलाते थे। उनकी जीवन–चर्या, संघर्ष, सामाजिक जीवन, पारिवारिक, भाषिक दुर्दशा आदि पर तथ्यपूर्ण सात आलेखों का संकलन, ले. मु. नित्यानंदन; मूल्य रु. 400।

13. हम किसके चूहे बने हुए हैं? (राजनीति की चालबाज़ी, कारस्तानी, धोखाधड़ी पर तीखी–तल्ख टिप्पणियाँ, बेबाक बयान); ले. चमस, मूल्य रु. 300।

14. तमिलवाले, तमिलनाडु और गांधीजी (दस्तावेज़ी विवरण–विवेचन)– गांधी जी बीस बार तमिलनाडु में आए हैं, कई जगहों में जाकर सभा समारोहों में भाग ले चुके हैं। उन सबका विस्तृत, विवरणपूर्ण सफ़रनामा। मदुरै के गांधी विधा केंद्र से 2007 में पहली बार प्रकाशित। उसका बीसवाँ संस्करण 2014 में निकला है। ले. अ. शिवलिंगम, अ. अण्णाम``लै, सी. मोहन।

15. पगडंडी पर लंबा सफ़र (सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक जनजीवनपरक समीक्षारपटों का संकलन) ले. नामी बुजुर्गवार रचनाकार अशोक मित्रन; मूल्य रु. 130.

कुछ सुचर्चित, स्तरीय ललित साहित्य–प्रकाशन–

1. परमपदम् (उपन्यास)– पुरानी पुश्तैनी खेतीहरी, ज़मीनी सरोकार, देहाती बिरादरी आदि को उजागर करता सजीव, सशक्त सामाजिक उपन्यास; ले. कण्णन् रामसामी; मूल्य रु. 350।

2. अपाय वनम् (भयानक कानन)– सिद्धों की साधना, तपोबल, चमत्कारों से प्रभावित दो युवकों की खोजी यात्रा पर आधारित रोचक उपन्यास; ले. इंदिरा सौंदर्यराजन : मूल्य रु. 320।

3. आधुनिक तमिल कहानी–संकलन (चार भाग)– विख्यात कथाकारों की 225 कहानियाँ जो बीसवीं शती के प्रारंभ से इक्कीसवीं शती के प्रथम दशक तक विरचित हैं और चर्चित भी हैं, चार भागों में समाहित हैं। संकलन– अल्लयंस प्रकाशन; कुल मूल्य रु. 1165।

4. जलापहरण के जालिम हमलावर (दलित संघर्ष की मार्मिक सत्यकथा); ले. अभिमानी, मूल्य रु. 250।

5. स्वरजति (संगीत, भक्ति, मानवमूल्य, धर्म–संस्कार प्रधान रोचक कहानियों का संग्रह); ले. –कल्कि' सीता रवि; मूल्य रु. 100।

6. बोधिवनम् (बहुचर्चित, नवोन्मेषी मंचीय नाटकों का संकलन– नाटक : कुर्सीवाले, दीवारी पोस्टर, नट्टुषैयथ्वन, अर्जुन की तपस्या); ले. न. मुत्तुसामी; मूल्य रु. 500।

7. रोशनी में न आए जीवंत कलाकार (पहचान न पाए ग्रामीण कलावंतों पर ललित निबंध); ले. वेलि. रंगराजन; मूल्य रु. 150।

8. तमिल साहित्यों में (प्राचीन) वर्णित अपराधी जनजातियाँ (अपसंस्कृति का साहित्यिक परिशीलन); ले. मुकिल नीलवन; मूल्य रु. 400।

9. आधुनिक तमिल कवयित्रियों की प्रतिनिधि कविताएँ– (से. बृंदा, प्रेमा रेवती, ऊर्वशी, औवै, गीता सुकुमारन्, सर्मिला सैयद (नामी कवयित्रियाँ) की चुनिंदा कविताओं का संकलन); कालच्चुवडु प्रकाशन; मूल्य रु. 465।

10. नवोन्मेषी नारियों की इतिकथा– (दया बाई, सिस्टर जेस्मी आमेन, दलित वीरांगना इंदिरा, बेबी हालदार, नलिनी जमीला, सी. के. जानू इन संघर्षरत दयनीय महिलाओं की जीवनी; संकलन : कालच्चुवडु प्रकाशन; मूल्य रु. 660।

11. बेटी को कही गई कहानी (कविताएँ); ले. से. बृंदा; मूल्य रु. 150।

12. घोड़े का अंडा (नाटक)– समीक्षा, अनुशील समेत– ले. साल फ्रानसीस; रु. 100

13. विख्यात उपन्यासकार पूमणि के प्रशस्त उपन्यासों का संकलन (बाद में, तपिश, नैवेद्य, नाला, मेंडें– सामाजिक उपन्यास); मूल्य रु. 590।

14. मैंने निशानी मिटा ली (हिजड़िन कवयित्री कलकी की मार्मिक, जुझारू, संवेदनशील कविताएँ); मूल्य रु. 80।

कुछ विशिष्ट, विख्यात अनूदित साहित्य–प्रकाशन

1. विष्णु पुराणम् (महर्षि पराशर विरचित) -- संस्कृत से तमिल में अनूदित (गद्यानुवाद); अनुवादक : जनकन; मूल्य रु. 500।

2. अष्टावक्रमहागीता–भाग–1 (ओशो रजनीश के हिंदी प्रवचन का ग्रंथरूप); अनुवादक : र. शौरिराजन; मूल्य रु. 350।

3. नवीन (आधुनिक) अरबी साहित्य – (अरबी अदीबों– नजीब महफूज़, महमूद दरवीस, खानाबदोश शायरों की कविताएँ, एलियास गौर आदि के उपन्यास, कहानियाँ, मजमून का तमिल रूपांतर; अनुवादक : हेच. पीर मुहम्मद; मूल्य रु. 400।

4. मुहम्मद नबी की अमर वाणी – 'कलामे नूबूव्वत' के तहत पैगंबर रसूल नबी के उपदेशों का संकलन व अनुवाद; अनुवादक : मौलाना फ़ारूख खान; मूल्य रु. 240।

5. बृहद् जातकम् या मंगलेश्वरीयम् (रचयिता : वराह–मिहिर) पद्य ग्रंथ; मूल संस्कृत में तेलुगु में अनुवादक श्री तिरुवेंकटाचार्य; तेलुगु से तमिल में अनूदित एवं व्याख्यायित – 27 अध्यायों में 1302 पद्य; अनुवादक : वैद्यलिंग पत्तर; मूल्य रु. 300।

6. डॉन कुदूकसाट (अंग्रेजी का पहला रोचक–रोमांचक यात्रिक उपन्यास जो सत्रहवीं सदी में मैकेल दे चेर्वांटिस नामक लेखक द्वारा लिखा गया था) दो भाग; तमिल अनुवादक : शिव मुरुगेशन; मूल्य रु. 380।

7. वाल्मीकि रामायणम्, व्यास महाभारतम् (दो ग्रंथ) पुराने संपूर्ण तमिल रूपांतर–संस्करणों के आधार पर स्वतंत्र, संक्षिप्त कथानुवाद; ले. चो. राम. स्वामी; मूल्य– प्रत्येक का रु. 850।

8. मेरुमंतर पुराणम् (जैनाचार्य श्री वामनमुनि का प्राकृत भाषा ग्रंथ); तमिल अनुवादक एस. धन्य कुमार; मूल्य रु. 250।

9. भारतीय धर्मज्ञान भंडार की खोज में – (सन् 1930 में अंग्रेज दर्शनशास्त्री पाल ब्रंटन ने भारत–यात्रा कर साधु–संत ज्ञानी मनीषियों से मिलकर जो वैदिक धर्मतत्व ज्ञान अर्जित किया, उसे अंग्रेजी में ग्रंथ रूप दिया)। उसका तमिल अनुवाद भुवना बालु द्वारा; मूल्य रु. 300।

10. 'चप्पे कोकालु' (गूंगी लड़की की बाँसुरी)– तमिलनाडु के आदिवासी जनजाति इरूलर लोगो में वाचिक परंपरागत लोकगीतों का संकलन, आधुनिक

तमिल में रूपांतर– अनुवादक लक्ष्मणन्; मूल्य रु. 225।

11. जड़ें (विश्वविख्यात अंग्रेजी उपन्यास, दक्षिण अफ्रीकी काली जनजातियों की यातना, यंत्रणा, संघर्ष भरी गाथा– 1976 में अलेक्स हेली द्वारा विरचित 'रूट्स्' नामक इतिवृत्त); तमिल अनुवादक : वोन्. चिन्नतंबी मुरुगेशन्; मूल्य रु. 999।

12. वल्लिक्कण्णन के समग्र अनुवाद – (लेखक के अंग्रेजी माध्यम से विश्वसाहित्य रचनाओं के तमिल अनुवाद), संकलन : काव्या षण्मुख सुंदरम्; मूल्य रु. 1000।

इनके अलावा बालसाहित्य, विज्ञान, उद्योग,–व्यवसाय, व्यापार, विदेशी वृत्तांत, आंचलिक हलचल, यात्रा–भ्रमण आदि पर भी कई पुस्तकें निकली हैं।

तमिल पत्र--पत्रिकाओं में साहित्य–प्रकाशन –

तमिलवालों में पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ने का शौक मार्के का है। दैनिक पत्र (अखबार) खूब सर्कुलेशन चढ़ाए फैले रहते हैं। इनके रविवारीय संस्करणों में साहित्यिक पत्रिका के परिशिष्ट संलग्न होते हैं, जो बहुत लोकप्रिय हैं। साहित्य की नाना विधाओं की रचनाएँ दी जाती हैं। ऐसे दैनिक पत्रों में प्रमुख है– दिनमणि, दिनमरल, दिनकरन्, दि इंदु, दिनतंति, दिनसरि, मार्लेपुरसु, तमिल और्शे, तमिल चुटर, चेंकतिर, जनशक्ति, मुरसोली, नमदु एम. जी. आर. भारतमणि इत्यादि।

साप्ताहिक पत्रिकाओं में प्रमुख, लोकरंजक, बहुप्रसारित हैं – आनंद विकटन, कुमूदम्, कल्कि, राणी (रानी), जन्नलं, पुदिय तलैमुरै, कल्वि (शिक्षा) तलैमुरै, कुंकुमम्, विजयभारतम् (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की पत्रिका) आदि। इनमें कथा–कहानी, कविता, धर्म–संस्कृतिपरक रचनाएँ, स्वास्थ्य, ज्योतिषी सूचनाएँ, फिल्मी खबरें, कला (संगीत, चित्र, शिल्प) संबंधी रचनाएँ, पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक वाद–विवाद–संवाद, राजनैतिक टिप्पणियाँ प्रकाशित होती हैं।

मासिक–पाक्षिक–त्रैमासिक पत्रिकाओं की तो धूम मच रही हैं। इनमें लोकरंजक, अर्धव्यावसायिक, अव्यावसायिक, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, गुलदस्तानुमा, नवोन्मेषी, क्रांतिवादी पत्रिकाएँ शामिल हैं।

इन पत्रिकाओं में उल्लेखनीय हैं –

कलैमकल्, अमुदसुरभि, दिशैएट्टुम् (अनुवाद–प्रधान), कणैयालि, तीरा नदी, महाकविर्ते (कविता–प्रधान), ओम् शक्ति, कालच्चुबडु (विश्वव्यापी बिरादरी वाला), अमृता, उयिर्मै, कालम्, अंतिमषै, मणल्वीडु, तलम्, माट्रुवेलि, काक्कै चिरकिनिले, तोडरूम्, काव्या, उंगलनूलकम् (राजनीति, समाजरीति प्रधान), अरिया नोक्कु, अकनाषिर्के, ज्ञानभूमि (धर्म, भक्ति, दर्शन प्रधान), शक्ति विकटन (पूर्वोक्त), कुमुदय् भक्ति (पूर्वोक्त), अप्पन् दर्शनम् (पूर्वोक्त), पुदुकै तेन्रल्, कतै चोलिल (कथा–वाचक), अटवी, दलित मुरसु, उयिर एषुत्तु, नवीन वृक्षम्, तमिलिनि, मंजरी आदि।

इनके अलावा दलगत, जातिगत, अंचल– प्रतिबद्ध, वैचारिक लघु पत्रिकाएँ भी दर्जनों निकल रही हैं। इंटरनेट, ब्लॉग, आइपेड, फेसबुक वगैरहा भी तमिल साहित्य–प्रकाशन, प्रसारण में लगे हुए हैं। ये विदेशों में रहने वाले तमिलवालों के लिए बहुत जरूरी, मददगार साबित हो रहे हैं।



8

तेलुगु साहित्य

प्रो. एस. शेषारत्नम

एक प्रांत की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ जब परिवर्तित होती हैं तब उन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण संवेदनशील साहित्यकार समय-समय पर करते रहते हैं। वैसे वर्ष 2014 में तेलुगु साहित्य की सारी विधाओं में लेखकों ने अपनी लेखनी चलाई। इस वर्ष लगभग तीन सौ ग्रंथ प्रकाशित हुए। मुख्य रूप से इस वर्ष में वैश्वीकरण, वृद्धाश्रम, किसानों की दयनीय स्थिति, मूल्य विघटन, राज्य का विभा़जन, नारी समस्या, विफल सरकारी योजनाएँ, करियर का पागलपन आदि विषयों पर तेलुगु साहित्यकारों ने दृष्टि केंद्रित कर समाज को जागरूक रहने का संदेश दिया। इस वर्ष की रचनाओं में विषय की विविधता प्रमुख रूप से पाई जाती है।

काव्यसंग्रह

'राति जला' (पत्थर का जल): अद्दंकि श्रीनिवास

अद्दंकि श्रीनिवास कल्पना एवं यथार्थ लोक में विचरण करनेवाले कवि हैं। वे अनुभव से 'काव्य' वस्तु को चुनकर कविताओं का सृजन करते है। ('रातिजला') शीर्षक से ही कवि कलम की तेज धार का पता चल रहा है। '*निप्पु बुट्टनु नेत्तिकेत्तुकुन्न सूरीडु*' (आग की टोकरी को सिर पर चढ़ाए सूरज), '*कोलिमि कुर्राडु*' (भड़डी का लडका), '*मनिषि लोपलि मनिषि*' (मनुष्य के अंदर मनुष्य) में मानो दार्शनिक रूप से उत्तर देते हैं। यदि बचपन में गुरुजी डॉंट न देते जो जीवन में इतनी सीढ़ियाँ चढ़ना संभव नहीं होता। बडि (स्कूल) कविता में 'बचपन' कवि से प्रश्न करता है। 'आकलि' बारिश न होने से सूखी

खेती जैसा सूखा पेट (आकलि वलस पाटा) (भूख का प्रवास गीत) आदि कविताओं के द्वारा वर्तमान विद्रूपताओं को सजीव रूप में दर्शाया है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह की सारी कविताएँ हृदय को छू लेती हैं।

'अरण्य पुराणम' (जंगल का पुराण): देवी प्रिया

कविता माने अंगूर की लता को वितान पर चढ़ना है। पद्मव्यूह से बाहर निकलने का प्रयास करना है। सीधे चुभी हुई तलवार जैसा मौन रूप से चीरना, पियानो रूपी पेड़ पर सम्मोहन राग जलप्रपात को उमड़ाना... आदि. .. आदि लेखिका ने कविता को यों परिभाषित किया है तथा उसी विचार के अनुरूप कविताएँ रचीं।

जन्मांध होने पर व्याघ्र को हिरण का शिकार करना ही है-लेखिका ने यों अपनी भावुकता को प्रवाहित किया। चलना है तो हाथी जैसा चलना है, हँसना है तो मोनालिसा जैसा हँसना है। लिखना है तो कालिदास जैसा लिखना है। चित्र खींचना है तो पिकासो जैसा खींचना है—यों कहकर अंत में कवयित्री कहती है कि जन्मित होना है तो मेरे माँ के गर्भ से मेरे जैसे कवि होकर जन्म लेना है। इससे स्पष्ट है कि कविता को साधारण एवं असाधारण रूप से भी अभिव्यक्त करने की क्षमता कवयित्री में है। कुल मिलाकर प्रस्तुत काव्य संग्रह कविताओं का वितान है।

'मल्ली वित्तनंलोकि' (फिर बीज के अंदर):

प्रस्तुत काव्य - संग्रह कविताओं का पराग है। जीवन से जो प्रेम करता है उसे सब कुछ कविता जैसा ही लगता है। कवि का उद्देश्य है कि कविता चढ़कर बैठने का अहं का सिंहासन नहीं। प्रेम-पूरित विनम्र नमस्कार है। आज मनुष्य को स्वार्थ ने घेर लिया। इस स्थिति में मानवता का अर्थ समझना है तो फिर बीज के अंदर जाना ही पड़ेगा। कवि जिस गली में चल रहा है वहाँ कविता को खोजने लगता है। उनका कहना है कि अब भी वह गली कविता का छंद जैसी लगती है। साथ ही उसे कवि के रूप में जन्म देने वाली माँ के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। तदनंतर वर्तमान समाज की सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों पर दृष्टि केंद्रित करते हैं। पदयात्रा

करनेवाले राजनेताओं के षड्यंत्र को/खोलने की चेष्टा करते हैं। इस संदर्भ में कवि का कहना है - यह प्रयास मात्र 'मत को बीनने का षड्यंत्र है। इस संग्रह की हर एक कविता मन पर मीठा घाव करती है और समाज को सचेत रहने का संदेश देती है।

'चिवरंचु' (आखिरी छोर): यार्लगड्ड राघवेंद्रराव

आजकल कविता सृजन क्यों? इसका उत्तर है - स्वयं को पूर्ण बनाने के लिए। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कवि रमणीय प्रकृति का चित्रण करते हैं। चलनेवाले प्रश्न, जंगल, मिट्टी के पद चिह्न, बातों की चमेली आदि शब्द प्रकृति में लीन हुए कवि के अंतर्मन को स्पष्ट करते हैं। भूले हुए ममतानुराग में / फिर पत्र बनकर प्रचलित होना चाहता हूँ – जैसे कवि के वाक्य हृदय को छू लेते हैं। प्रस्तुत काव्य-संग्रह कवि के हृदय का दर्पण है।

'रजनी गंधा': पापिनेनि शिवशंकर

इस काव्य संग्रह की कविताएँ कविता की सुगंध को चारों ओर बिखेर देती हैं। प्रस्तुत काव्य संग्रह में मानवीयता के विविध रूपों का सुंदर चित्रण मिलता है। कवि ने व्यक्ति–व्यक्ति के बीच की असमानता, रंग, स्वाद, भू कल्पना का मिठास, उमड़े हुए आँसू आदि को अद्भुत रूप से चित्रित किया।

'अम्मा' (माँ) संपादक: बैना देवदासु

अम्मा के बारे जो भी लिखो, वह कविता बन जाती है। हर एक माँ एक सुंदर कविता ही है। एक कवि बचपन की याद करते हुए कहते हैं कि *'बेटा* - कहकर पुकारनेवाली माँ की आवाज सुनते-सुनते मेरे सत्तर वर्ष बीत गए हैं। एक और कवि बचपन की स्मृतियों में अपने को खो बैठता है तो दूसरी ओर, *'बिना माँ के घर में*, 'माँ की स्मृतियों का संकलन मैं हूँ कहकर अपनी संवेदनशीलता को व्यक्त करता है। माँ माने माँ ही है, उसका कोई पर्यायवाची शब्द या व्यक्ति नहीं है।

'अक्षर सत्यम्': खैती दुर्गय्या:

प्रस्तुत गद्य कविता संग्रह में 32 कविताएँ है। *'अक्षर-खेती* के द्वारा कवि समाज के हित की आकांक्षा करते हैं। *'मानवत्वम* (मानवता), *'वलसा*

(प्रवास), '*खैदी* आदि इस संग्रह की उल्लेखनीय कविताएँ हैं। बाल मजदूरों की यातनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण '*मंडे गुंडेलु* (जलते हृदय) कविता में मिलता है–

"पलकलु पट्टे प्रयामुलो
पाचिपनुलु चेस्तू
पालेरुलुगा अवतरिंचे
रेपटि पौरला भावि आशयालु ...."

अर्थात् पाटी पकड़ने की उम्र में झाड़ू पोंछा करते हुए सफाईवालों का रूप धारण करने वाले आज के बालक भविष्य के नागरिक एवं निर्माता है .... वैसे ही 'चेजारिना मस्तिष्कं (हाथ से छूटा हुआ मस्तिष्क) कविता कंप्यूटर पर आधारित है।

'चिंतला चेट्टु (चिंताओं का पेड़): श्रीमती सिंहाद्रि पदम।

यांत्रिक जीवन-विधान पर प्रहार किया गया है। मानव-संबंध आज आर्थिक संबंध बन रहे हैं। इस स्थिति पर खेद व्यक्त किया गया है। सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत इनकी कविताएँ हमें सोचने के लिए बाध्य करती हैं।

'जनमेवा जयते (जनता जय हो): गुलाबीला मल्लारेड्डी

इतिहास के निर्माताओं पर लिखी गई कविताएँ है। तालिबानों के प्रहार की शिकार हुई मलाला को इस्लाम में खिले हुए फूल के रूप में चित्रित करते हैं। नोबुल पुरस्कार प्राप्त सत्यार्थी की नित्य विद्यार्थी के रूप में प्रशंसा की गई है।

अस्त्र-शस्त्रों से बढ़कर आंदोलन की शक्ति को ही माने हुए धैर्ययुक्त व्यक्ति के रूप में उनको चित्रित किया गया है।

'आत्मार्पण (आत्मार्पण): पेम्मिराजु वेणुगोपालराव

अमरीका से प्रकाशित हो रही प्रथम तेलुगु पत्रिका है जिसकी शुरुआत वेणुगोपालराव जी ने की है। प्रस्तुत संग्रह की साक्षात्कारम (साक्षात्कार) आत्मकथात्मक कविता है। वैसे ही (विष्णुमूर्ति-स्वर्गम) विष्णुमूर्ति का स्वर्ग

कविता में भगवान से मानव को उन्नत कहा है। वे दैवत्व को नहीं चाहते ... मुझे मानव का रूप कब मिलेगा? कहकर इस कविता के माध्यम से कवि प्रश्न करते हैं।

'कोकिलम्म पदालु' (कोयल के पद): अदृष्ट दीपक

आरुद्र के कूनलम्मा पदों के अनुकरण पर प्रस्तुत कोकिलम्मा पदालु रचा गया है। अपरूप विचार एवं सरल चलन इन पदों का जीवन तत्व है। प्रमुख व्यक्तियों पर लिखे गए ये पद काफी प्रचलित एवं महत्वपूर्ण बन पड़े हैं।

'आकुपच्चानि संतकं' (हरे रंग का हस्ताक्षर): पशुमर्ति पद्मजावाणी

व्यंग्य भाषा एवं वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्ति से परिपूर्ण जीवन का उल्लास उसकी हरियाली है। वैसे ही किसानों की वेदना को अभिव्यक्त करनेवाली कविता 'वित्तनाला कोरता' (बीजों का अभाव) फसल को नाश करनेवाले कीड़े, नकली बीज, लघु ऋण के चक्र में फँसे हुए किसान निरंतर विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर रहे हैं। किसानों की यथार्थ स्थिति का सजीव रूप है प्रस्तुत कविता।

'मरो गोलानिकि' (ओर एक गोल की ओर) - दीर्घ कविता: उप्पला अप्पलराजु

कवि प्रस्तुत कविता के माध्यम से प्रश्न करता है कि मानव किस ओर जाना चाह रहा है? अंतरिक्ष में निहित अमृत गोल की ओर या अग्नि गोल की ओर - इन प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत कविता में है।

'नेनुमात्रं इद्दरिनी' (मैं तो दोनों हूँ) - लघु कविताओं का संकलन : कलिदिंडि शर्मा

मनुष्य के द्वंद्व व्यवहार पर प्रहार किया गया है। चोर-चोर कहकर पुकारनेवाला भी मैं ही हूँ। पकड़ में आने तक ठाट से जीनेवाला भी मैं ही हूँ। किसने नहीं लूटा? मात्र इसी सूत्र को रट रहा हूँ। मैं तो दोनों हूँ। इस प्रकार कवि आज की व्यवस्था पर खुलकर आघात करते हैं।

'तेल्लारिते'(सुबह होने से) : के. विल्सन राव और के. आंजनेयकुमार

तेलुगु प्रांत के दो टुकड़े हुए हैं। प्रस्तुत कविता संग्रह इस नेपथ्य में लिखी गई कविताओं का संग्रह है। दोनों के विचार भिन्न होने पर भी, समानताओं को दर्शाते हुए तेलुगु भाषा, संस्कृति एवं कलाओं का विभाजन कभी भी नहीं हो सकता, इस विचार को इस संकलन के माध्यम से दोनों कवियों ने व्यक्त किया।

'भूमध्य रेखा': काशीराजु

सुबह उठते ही माँ के मुख को पूरब दिशा मानकर दर्शन करना चाहनेवाले कवि की कविताओं के केंद्र में पिता है। यह विचारणीय बात है। शीर्षक की कविता पिता को परिभाषित करती है। इन कविताओं के माध्यम से कवि संबंधों की महत्ता को युवा पीढ़ी तक पहुँचाना चाहते हैं।

'विसुरू रेक्कलु (चलनेवाले पंखे): तंगिराला चक्रवर्ती

'हृदय घायल होने से 'कवि', मन घायल होने से 'लेखक', साहित्य क्षेत्र में नित्य हल है कलम' सभी इस सत्य को निगल नहीं सकते। उक्त कविताओं में कवि की विचारधारा का तेज स्पष्ट हो रहा है।

'चूस्तूंडगाने' (देखते हुए) - राजेंद्र जिंबो

अत्यंत साधारण वस्तु को ग्रहण कर जिंबो कविताओं का सृजन करते हैं। मीसालु-गड्डालू (मूँछें-दाढ़ी), शिक्षा (सजा), ऊरोन्नि (गाँव वाला) आदि कविताएँ उक्त सत्य की पुष्टि करती हैं। न्यायमूर्ति होने के नाते सज़ा से संबंधित विषय को चुनना स्वाभाविक ही है। संक्षिप्तता, गहनता इनकी कविता के विशिष्ट अंग हैं।

'नडता मारालि' (व्यवहार में बदलाव लाना है): के. बी. एन नरसिंहम

'*बस*' 'बांध्व्यम'(रिस्ता) आदि कुछ कविताएँ अच्छी है । स्त्री की महत्ता को स्पष्ट करनेवाली कविता 'धात्रि' है। कवि समाज की गति में बदलाव लाने की आकांक्षा करते हैं।

कहानी संग्रह

पेल्लाला पुलि (पत्नियों का बाघ)

41 HRD/16—9A

जे. यू. बी वी प्रसाद के कलम से निकले कहानी संग्रह '*पेल्लाला पुलि* (पत्नियों का बाघ) की शीर्षक कहानी में पत्नी को अपने व्यवहार से मानसिक रोगी बनाकर उसकी मृत्यु होने के बाद दिन-दिन वर अवतार धारण कर विवाह करने की तीव्र, लालसा का सजीव चित्रण प्रस्तुत कहानी है। इसी संग्रह की और एक कहानी '*तंड्रि तनम्*' (पितृत्व) है जिसमें अपने नास्तिक विचार या धार्मिक विश्वास अपने बच्चों में जागृत नहीं कर सकते हैं – इस इतिवृत्त से उक्त कहानी को सृजित किया गया है। इसी क्रम में इस संग्रह की और एक प्रमुख कहानी '*गोरिल्ला स्वाम्यम*' (भेड़ों का शासन) यह एक व्यंग्य कहानी है। अपने पालतू कुत्तों को अपने साथ ऑफिस ले जाने वाले अमरीका के व्यवसायी लोगों की करतूतों को हास्य एवं व्यंग्य के माध्यम से कहानीकार ने बखूबी चित्रित किया।

कन्नगंटि अनसूया कृत '*पोडिचे पोद्धु*' (उदित होने वाला सूरज) इस वर्ष का एक उल्लेखनीय कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह की सारी कहानियाँ आज की यथार्थ परिस्थितियों का उद्घाटन करती हैं। लोग सड़क पर, बस स्टॉप पर, अक्सर, भूखे-नंगे बेसहारे बच्चों को देखते हैं, तत्काल सहानुभूति व्यक्त करते हैं, बाद में ध्यान नहीं देते। लेखिका 'पोडिचे पोद्धु (उदित होने वाला सूरज) कहानी के द्वारा उनके जीवन में झाँकने के लिए पाठकों को बाध्य करती है। अवसरवादी लोगों के हाथों में बेसहारे कैसे कुचले जाते हैं, इसके सजीव रूप को लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की एक और उल्लेखनीय कहानी है – '*बंधमु*' जिसके द्वारा लेखिका ने आज की भयंकर समस्या रैगिंग पर प्रकाश डाला। बच्चों की शरारती करतूतों के प्रति यदि हम लापरवाही का व्यवहार करें तो यही स्थिति कॉलेज के स्तर पर रैगिंग का रूप लेती है। इसकी रोकथाम के लिए क्या करना है– इसका विश्लेषण बखूबी किया गया है।

इसी संग्रह में और एक संवेदनशील कहानी है – '*कर्तव्य*'। मानवता की दृष्टि से की जाने वाली अल्प सहायता को अपमान समझकर अवरोध करके पति के पुरुषवादी के अहं का उत्तर इस कहानी में है।

नक्का विजयराम राजू ने '*मावूरि कथल*' (हमारे गाँव की कहानियाँ) कथा संग्रह का प्रकाशन करवाया। उन्होंने गाँव के जीवन को प्रतिबिंबित करते हुए इस संग्रह की कहानियों को रूपायित किया। इस संग्रह की हर एक कहानी पाठकगण को अपने-अपने गाँव की एवं कौओं की झूठन की याद दिलाती हैं। खेलों की प्रतियोगिता में जो जीत जाता है उसका आनंद वर्णनातीत है। कैनल में गुंटूर के चैंपियन और गाँव की मुखिया अय्यंगार के नौकर एक दूसरे से भिड़ जाते हैं। स्कोर 10–10 दोनों का बराबर था लेकिन 10–15 स्कोर से गुंटूर के चैंपियन कैसे जीत गए ? समझने के लिए इस संग्रह की अय्यंगार के घर में – "*वैसे ही है*", कहानी पठनीय है। मोबाइल और ईमेल का प्रचलन नहीं था तब डाकिया की प्रतीक्षा करना साधारण बात थी। सुदूर स्थित बैर गाँव के बच्चे जूठन से बचने के उद्देश्य से खाद्य पदार्थों के ऊपर कपड़ा रखकर दांतों से काटकर मित्रों को देते हैं। बेटे के पत्र के लिए एक माँ उत्सुकता से प्रतीक्षा करती है, पत्र तो मिलते ही रहते हैं, लेकिन उन पत्रों को बेटे नहीं लिखते हैं। माँ की वेदना को समझकर एक हितैषी उन पत्रों को लिखते रहते हैं। '*मुरिगेसु*' कहानी उक्त सत्य का उद्घाटन करती है। वैसे ही इस संग्रह की और एक कहानी 'गनर' जीवन यथार्थ को प्रतिबिंबित करती है। मिलट्री में गनर का काम करनेवाले एक व्यक्ति ने छह बार शादी की लेकिन जब उसका निधन हुआ तब छह पत्नियों में से एक भी उपस्थित नहीं होती। इस कहानी को पढ़ने से इसका मूल तत्व स्पष्ट होता है।

'तुरगा जानकीराम की कहानियाँ' – तेलुगु की प्रमुख लेखिका तुरगा जानकीराम ने मनोविश्लेषणात्मक कहानियों का सृजन किया। प्रस्तुत कहानी संग्रह में तीस–पैंतीस कहानियाँ है। दैनंदिन जीवन में नवविवाहित पति–पत्नी के बीच में उत्पन्न अत्यल्प कलह और सरस ढ़ंग से उन्हें हल करने का तरीका लेखिका ने अभिव्यक्त किया है। परिवार में बड़ी और छोटी बहनें, दीदी के पति, जीजा जी एक–दूसरे के बारे में कैसे सोचते हैं एवं उनकी ऊहा का अत्यंत रमणीय ढंग से "*अवतलि कोणमु*" कहानी में वर्णन किया

गया है। वैसे ही इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए लेखिका ने छात्र एवं छात्राओं का व्यवहार कैसा होता है इसका विश्लेषण "*वयसु गति इते*', (उम्र का ढंग वैसा ही होता है) कहानी में किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों को लेखिका ने तीन भागों में विभाजित किया। बचपन में लिखी हुई कहानियों को "*तेलिवि योकिंत लेनि, येड़ा*' (बराबर की अक्ल जब नहीं थी), उसके बाद लिखी कहानियाँ "*इंचुका बोध शालिनी*' (थोड़ा–सी बुद्धि वाली होने के बाद) और तसरे भाग में "*वास्तव गाथतु*" (यथार्थ – कहानियाँ) लेखिका के जीवनानुभव एवं घटनाओं का यथार्थ चित्रण है। इस संग्रह की सारी कहानियाँ तुरगा ही की विशेष शैली को प्रतिबिंबित करती है। बहुत पहले लिखी हुई कहानियों को लेखिका ने संगृहीत कर प्रस्तुत कहानी संग्रह को प्रकाशित करवाया, उन्हें पढ़ते समय ऐसा लगता है कि वे हाल ही में लिखी हुई कहानियाँ हैं।

मल्लादि वेंकटा कृष्णमूर्ति: तेलुगु के जाने माने लेखक ने भक्ति–मुक्ति, कर्म–अकर्म आदि गंभीर विषयों को साधारण पाठकगण तक पहुँचाने के उद्देश्य से उन्होंने कई पुस्तकों का प्रणयन किया। वैसे गंभीर लेखक का लीक से हटकर '*मिनी क्रैम कयलुं* कहानियाँ लिखना एक विशेष बात है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की सारी कहानियाँ अपराध–बोध की कहानियाँ है। इस कहानी संग्रह की '*ऐलिनी*' कहानी में मृत्युदंड पाए हुए कैदी द्वारा अपने निर्दोषत्व का पूरा विवरण देते हुए एस. बी. अधिकारी को लिखे हुए पत्र हैं। वैसे ही '*इक्कडा चावु अम्मबडुन*' (यहाँ मृत्यु बेचीं जाएगी) कहानी में हत्या करने के लिए विष बेचने वाले एक चीनी वृद्ध का इतिवृत्त है। इस संग्रह की 68 कहानियाँ इसी प्रकार के अपराध बोध से संबंधित उत्कंठापूरित कहानियाँ हैं।

कोलकलूरि इनाक्: आचार्य कोलकलूरि इनाक् बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। वे एक प्रमुख कहानीकार, उपन्यासकार, निबंधकार, काव्यकार एवं अनुवादक हैं। उनका '*दलित कथलु*' (दलित कहानियाँ) कहानी-संग्रह, दलित विचार को स्पष्ट करता है। उनकी कहानियों के नायक छह फीट ऊँचे

कद के सुंदर व्यक्ति नहीं हैं, उनके पास बड़ी-बड़ी मोटर गाड़ियाँ भी नहीं होती, वे गोरे रंग के भी नहीं होते। उनका नायक लाल तरेरी हुई आँखों वाला होता है। पोतराजू वैसा ही नायक है। उलझे हुए बाल वाला, दिन में देखो तो रात में उसके भयंकर रूप का स्वप्न देखने से डर लगे। यदि बाल-बच्चे उसे देखते हैं तो उनको बुखार आ जाता है। करीब-करीब '*गोड़डादोंगा* (पशुओं का चारा) कहानी के नायक नागडि जैसे ही होते हैं। जूतों को सिलने वाले, डफली बजाने वाले, सफाई के कर्मचारी होते हैं। दलितों के जीवन की गहराई तक पहुँचकर उनकी हृदयविदारक पीड़ा का सजीव चित्रण प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियों में मिलता है। दलितों की पीड़ा हृदय को छू लेती है। दलितों को कठपुतली बनाकर खेलने की कुटिल राजनीति का चित्रण है। समय के साथ दलित नारी के जीवन में कोई बदलाव नहीं आया है। उनकी जीवनियाँ पाठकों के हृदय को छू लेती हैं।

वैसे ही उनकी कहानियों में व्यवस्था के प्रति विद्रोह भावना भी अभिव्यक्त हुई है। हमारी जाति के गौरव चिन्ह जूतों के लिए प्रवेश मना है तो वहाँ मैं पहुँच नही सकता। मुझे आने के लिए कहकर उन जूतों को मना करने वाली उस मानसिकता को सहन नहीं कर सकता। मेरी भक्ति भगवान के लिए मेरी दक्षिणा मंदिर के लिए आवश्यक है तो मेरे जातिगत पेशे का अपमान नहीं करना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने अपनी कहानियों के पात्रों के दवारा विद्रोह अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह निम्न स्तर की जीवनियों का आईना है।

कवि कोंड़ला वेंकटराव की कहानियाँ: प्रथम भागः तेलुगु कहानी को बहुआयामी रूप देने वालों में कवि कोड़ला वेंकटराव का नाम आदर के साथ लिया जाता है। गद्य कवि के रूप में वे बहुप्रचलित हैं। उनकी लेखनी से कई कहानियाँ निकलीं। उन कहानियों को पुनः प्रकाशित कराकर इस पीढ़ी को भी सोचने के लिए बाध्य कर रहे हैं। इस संकलन में अस्सी से अधिक कहानियों को संग्रहीत कर साहित्य जगत के सामने रखकर उन्होंने अत्यंत प्रशंसनीय कार्य किया। "*आंध्र शुद्धि*" कहानी में लूईदि चौदह सयानी

हुई– यों अस्पष्ट भाषा में कहने की चेष्टा पाठकों को काफी हँसाती है। वैसे ही '*अम्मगारि रविकी*' (अम्मा जी की चोली) कहानी की सरसता भी उल्लेखनीय है। '*साम्यवाद*', '*सुंदर मंदहास*' जैसी कहानियाँ लिखकर कहानीकार ने नवीन प्रयोग किया। उनकी '*उडुता उसुरू*' (गिलहरी की वेदना) आज भी शिक्षित करने वाली पर्यावरण की कहानी है। कहानीकार की कलात्मकता इसमें द्रष्टव्य है। वैसे ही '*एड़द वेलिति*', (हृदय का अभाव) जैसी छोटी-छोटी कहानियाँ हैं। इन्हें पढ़ने से उस समय की संस्कृति एवं भाषा शिल्प का परिचय होता है।

वी0 आर0 पात्र का "*लाइफ इज ब्यूटीफुल*" कहानी-संग्रह अत्यंत महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है। प्रस्तुत कहानी-संग्रह में कहानीकार ने बचपन, विद्यार्थी की दशा, स्नेह, प्रेम एवं परिवार के हर एक रिश्ते में कितना असीम आनंद छिपा हुआ है, इसका सुदंर चित्रण किया है। स्वयं के लिए हर दिन कुछ समय निकालने की सलाह देते हैं। अल्प खुशियों से किसी भी कीमत पर दूर न होने का संदेश देते है। जिन विषयों से आप खुद आनंदित होते हैं उन्हें जानने का उपदेश देते हैं। कृतघ्न न होने का संदेश नाजुक ढंग से देते हैं। तकनीकी विकास पर सभी टूट पड़ते हैं लेकिन पात्र उस तकनीकी का प्रयोग रिश्तों को सुरक्षित रखने के लिए करने का संदेश देते हैं। आध्यात्मिकता एवं मूल्यों की प्रमुखता को स्पष्ट करते हैं। इस कहानी-संग्रह को खुशियों का पता मानना चाहिए।

जूपाका सुभद्रा का '*रायक्का मान्यम्*' दलित कहानी-संग्रह है। इस संकलन की कहानियाँ पाठकगण को सोचने के लिए बाध्य करती है। श्रीलता एवं सुवर्णा एक ही पाठशाला में पढ़ रही हैं। सहपाठी होने के नाते दोनों के बीच में स्नेह है। त्योहार के समय दलित बालिका श्रीलता को सुवर्णा कपड़े देती है। दलित बालिका को कपड़े देने पर माँ उसकी पिटाई करती है। नन्हें, अबोध, मासूम बच्चों के कोमल मन को कैसे बड़े लोग प्रदूषित करते है इसका सजीव रूप प्रस्तुत कहानी में द्रष्टव्य है। वैसे ही कार्यालयों में काम करने वाली महिलाओं द्वारा भोजनावकाश के समय आपस में खाना बाँटकर खाना

साधारण विषय है। '*मी इटेलु वेज्जुलू*' कहानी में उक्त साधारण बात को भी जाति व्यवस्था के आधार पर विवादास्पद बनाकर दलितों के प्रति की जाने वाली हिंसा, भूख, दुख एवं अपमान आदि का मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत कहानी-संग्रह में किया गया है। लेखिका इस कहानी संग्रह के माध्यम से अपने धिक्कार को स्पष्ट सुनाती है।

ऐता चंद्रच्या :

अंतरनेत्रम् (अंतरनेत्र) कहानी संग्रह के माध्यम से आज की सामाजिक व्यवस्था का नग्न चित्र पाठकगण के सामने रखा है। इस संग्रह की कहानियाँ हमें सोचने के लिए बाध्य करती हैं। आंदोलन को प्रचार का साधन मानकर व्यवहार करने वाले राजनेताओं को खुले रूप से धिक्कारती हैं। '*सन्मानमु – शालुवा*' (सम्मान एवं शाल) कहानी में कहानीकार ने सरकार की योजनाओं को आम – आदमी के जीवन का उद्धार करने के बजाय बर्बाद करने वाला बताया है। इसका सजीव रूप '*पावला वद्धी*' (चौवन्नी का सूद) कहानी में मिलता है। '*डवाका ग्रुप*' जो गूलर का फल है उसका पेट खोलकर वास्तविक रूप को दर्शाया गया है। वैसे ही बेल्ट दूकानें एवं शराब का व्यापार करने वालों को झाड़ने के उद्देश्य से लिखी गई कहानी है '*मनुष्य का और एक पता*'। इसी क्रम में कहानीकार अंतरनेत्रम (अंतरनेत्र) कहानी के माध्यम से एक गृहिणी के मन का चित्रण करता है। इसी कहानी संग्रह की और एक कहानी '*चिकागो नुंचि चिंतमड़का दाका*' (चिकागो से चिंतमड़ तक) एक सुंदर प्रेम कहानी है। यह कहानी संग्रह तेलंगाना माटी की सुंदर महक है।

ए. जी. के. की कहानियाँ

ए. जी. के. की कहानियों के पात्र सभी की भलाई चाहने वाले पात्र हैं। तनिक स्वार्थ को भी सहन नहीं कर सकते। '*गति*' कहानी की नायिका सब कुछ खो जाने पर भी निराश न होकर कठिन परिश्रम कर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करती है। '*डिग्निटी होम*' के परंधामच्या की आकांक्षा है कि जैसे मेरा परिवार सुखी है वैसे ही समाज भी सुखी हो। अक्सर दरवाजे पर दस्तक

देने पर भी विषयवासनाओं के प्रति आकर्षित न होने वाले 'भ्रमरम्' (भ्रमर) कहानी के नायक–नायिका प्रेम एवं आत्मीयता से दांपत्य बंधन सुदृढ़ बनाते हैं। इसी सत्य का उद्घाटन 'चिलिकि चिलिकिस्ते गालिवाना' कहानी में भी होता है। वैसे ही 'आड़ा शक्ति' (स्त्री शक्ति) कहानी एक कड़वे अनुभव के कारण काली माता का रूप धारण कर काफी ऊँचाई तक पहुँचती है। प्रस्तुत कहानी संग्रह की हर एक कहानी एक रसमलाई ही है। *'सन्मानम'* (सम्मान) पोतूरि विजय लक्ष्मी कृत प्रस्तुत कहानी संग्रह में नाते – रिश्तों से संबंधित कहानियाँ हैं। नाते – रिश्तों के नींव पर ही हर एक कहानी का व्यक्तित्व निर्माण हुआ। 'सम्मान' की कहानियों को पढ़कर पाठक की आँखों में आँसू आ जाते हैं। बचपन में पढ़ाने वाले गुरुजन आँखों के सामने दिखाई देते हैं। उन्होंने मानवीय संबंधों के अत्यंत नाजुक आयाम को और भी नाजुक रूप में पाठकों के सामने रखा। रिश्तेदारों एवं मित्रों से भरे रहने वाले शादी के पंडाल आज ईवेंट मैनेजमेंट के लोगों से भर रहे हैं। उसी के अनुरूप कृत्रिम रूप से मिलना-जुलना भी हो रहा है। बनावटी के प्रदर्शन के सिवा और कुछ नहीं। '*मर्यादलु वच्चेस्तुन्नाय जाग्रत्त*' (मर्यादाएँ आ रही हैं सावधान) कहानी के दवारा समाज को सावधान रहने का संदेश देते हैं। इसी प्रकार '*भारत रसायन शास्त्र*', '*चीरला सुब्बाराव*' (साड़ियों का सुब्बाराव) '*चिरूदिव्वे*' (लघु मशाल) जैसी इस संग्रह की हर एक कहानी जीवन से संबंधित किसी न किसी समस्या का समाधान देती है। वैसे ही कपट प्रवृत्ति को उजागर करने वाली कहानियाँ भी है।

'इंतक इंते' (बराबर) पोथकमपल्लिचिल शांतादेवी। इनकी कहानियाँ यथार्थ जीवन को प्रतिबिंबित करती हैं। एक गृहिणी अपनी स्वार्थ प्रवृत्ति को छुपाने के लिए भक्ति का घूँघट ओढ़कर किस प्रकार का व्यवहार करती है, इसे '*बराबर*' कहानी स्पष्ट करती है। वैसे ही जातिगत व्यवस्था में निहित अहं को नाजुक ढंग से स्पष्ट करती है '*वेलिसिन शिखराल*' (दिखाई देने वाले शिखर) कहानी। इस संग्रह की तेरह कहानियाँ मध्य वर्ग के जीवन को

प्रतिबिंबित करती हैं। प्रस्तुत कहानी संग्रह की कहानियाँ पाठकगण को चार दशाब्दियाँ के पीछे ले जाकर रिक्शाओं के शोर, बेकारी के कारण उदासी भरे चेहरे, उस जमाने के प्रेम व्यवहार को दिखती है। '*कलह में प्रणय*' अनेकानेक मोड़ लिए हुए प्रेम कहानी आदि इसी कोटि के हैं।

'*बहिनः भा*' – रहमतुल्ला की प्रस्तुत कहानी संग्रह में मुसलमान स्त्रियों की दुख दर्द की कहानियाँ हैं। उनके अस्तित्व का सवाल एवं पीड़ा पर लेखिका ने प्रकाश डाला है। कुल मिलाकर इस संग्रह की बारह कहानियाँ आत्माभिमान, चेतना, विपरीत परिस्थितियों को स्पष्ट करने वाली कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ उनके जीवन के हर कोण को स्पर्श करती हैं। गोधरा घटना के परिणाम को '*बोर्डर्स*' कहानी स्पष्ट करती है, '*बा*' कहानी पिता के प्रति प्रेम का उद्घाटन करती है। सहज जीवन से दूर होकर, नकली जीवन जीने वाले एक व्यक्ति की मानसिक स्थिति को स्पष्ट करती है "*बुद्धिमानि भागोतम्*" (बुद्धिमान का व्यवहार) कहानी। *ईद* त्योहार के चित्र को "*चांद की ईद*" कहानी दिखाती है। कुल मिलाकर प्रस्तुत कहानी संग्रह मुसलमान महिलाओं के जीवन में छिपी हुई वेदना के विविध कोणों को दर्शाता हैं।

'*नालगु*' "*नालगुलु पदहारू*" (चार गुणा चार बराबर सोलह) चार लेखकों की चार-चार कहानियों का संग्रह है। कन्नेगंटि अनसूया, सम्मेटा उमादेवी, वडलि राधाकृष्ण एवं अरिपिराला सत्यप्रसाद कृत कहानी संग्रह हैं। नाते – रिश्तों की स्मृतियों का मूल्य न जानने वाले बेटे एप्पटिकी सजीवंगा (सदा के लिए सजीव) तथा ऐर्रमाट्टि डैरीलु (लाल मिट्टी की ढेरी) कहानियों में दर्शन देते हैं। माता-पिता के बुढ़ापे के बारे में पहले से ही दुखी होने वाली चिट्टितल्लि "कनिपिंचे देवुडु (दिखाई देनेवाले भगवान) कहानी में दिखाई देती है। वैसे ही "*गिरीकाना दीप*" (पर्वत-जंगल का दीप) कहानी में एक जनजातीय महिला अपने लोगों की और अपनी जाति की भलाई के लिए अपने पति को छोड़ देती है। इस संग्रह की सारी कहानियाँ दैनंदिन जीवन की घटनाओं से संबंधित हैं।

'*नव्वुला प्रपंचमुः*' (हास्य – संसार) डॉ० मंतेना सूर्यनारायण राजू की

'*नव्वुला प्रपंचमु*' (हास्य – संसार) डॉ0 मंतेना सूर्यनारायण राजू की कलम से निकला कहानी संग्रह मध्यमवर्गी लोगों के जीवन के उतार–चढ़ाव को हास्यात्मक ढंग से चित्रित करता है। "*ना कोका श्रीमती कावालि*" (मुझे एक श्रीमती चाहिए) कहानी के माध्यम से एक भारी – भरकम शरीर वाले व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले रिश्ते का प्रयास साथ ही साथ मैरिज ब्यूरो वालों का कमीशन पाने संबंधी लालच का नग्न रूप दर्शाया गया है।

वैसे ही **"मुगिंपु मीरे चेप्पंडि"** (अंततः आप ही कहिए) कहानी लड़की और लड़के द्वारा एक दूसरे को देखने के प्रहसन को केंद्र में केंद्रित होकर चलती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी संग्रह की चौबीस कहानियाँ पाठकों को हँसाती हैं। वैसे ही हमारे चारों ओर के व्यक्तियों की याद दिलाती है। **"माटे मंत्रम्"** (बात ही मंत्र है) सी. उमादेवी कृत प्रस्तुत कहानी-संग्रह में एक पिता के मन की वेदना को रेखांकित करता है। पिता का चाल-चलन, बोली सब बहू को अव्यावहारिक–सा लगता है। इस स्थिति में बेटा उसके लिए एक टी. वी. खरीद कर लाता है और कहता है कि आज से आपको किसी से बोलने की आवश्यकता ही नहीं है, यों कहकर वह आनंदित होता है। पिता प्रतिक्रिया के रूप में बेटे से प्रश्न करता है कि – वह तो ठीक है लेकिन मैं जो कुछ कहना चाहता हूँ उस बात को किससे कहूँ, उन स्मृतियों को किससे बाँट लूँ? यही सीधा–सा प्रश्न है। इस संग्रह की बाकी कहानियाँ भी नीति और रीति का बोध कराती हैं।

"*पोरू*" (युद्ध या झगड़ा) के. वी. नरेंद्र कृत यह कहानी संग्रह नक्सलवादी कहानी-संग्रह है। कुछ नक्सलवादी अपने आंदोलन को छोड़कर साधारण जीवन जीने के इच्छा से घर लौट आते हैं और कुछ लोग लौट आने की सोच में रहते हैं। ऐसे लोगों के जीवन का चित्रण प्रस्तुत कहानी संग्रह में मिलता है। वे जब आंदोलन से जुड़े रहे, तब संपत्ति का ध्वंस करने के परिणाम स्वरूप काफी मात्रा में जो नष्ट हुआ था, इसका अंदाजा '*मांजी*' कहानी के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया। "*दोरा मल्ला वच्चिडुं*" (बड़ा बाबू फिर आया), "*दोरा उंचुकुन्न देवक्क*" (दोरा की रखैल देवक्का)" आदि

कहानियों में आंदोलनकारियों से डरकर भागे हुए जमींदारों का रूप विन्यास दिखाई देता हैं। वैसे ही '*नक्सलैटलु देवुल्लुरा*' (नक्सलवादी भगवान है) कहानी के द्वारा "*यदि वे मुझे दस वर्ष पहले यहाँ से भगा देते तो अब तक हैदराबाद नगर का आधा भाग खरीद लिया होता*" कथन मर्मस्पर्शी रूप से अभिव्यक्त किया गया है अर्थात् आंदोलन के प्रभाव से डरकर जमींदार लोग गाँव को छोड़कर चले जाने के बाद बहुत उन्नत हुए थे। दूसरे कोण से आंदोलन पर भरोसा करने वाले लोगों का भविष्य किस प्रकार बरबाद हुआ, इसे 'पोरू' (युद्ध) कहानी संग्रह के माध्यम से लेखक ने अभिव्यक्त किया है।

सुरवरम् प्रताप रेड्डी की रचनाएँ भाग–दो: सुरवरम् प्रताप रेड्डी जी तेलुगु के जाने माने लेखक हैं। प्रस्तुत कहानी संकलन में बीस से अधिक कहानियाँ हैं। उनमें उस समय का समाज प्रतिबिंबित होता है। एक कहानी में उच्च वर्ग की एक विधवा शिष्या के रूप में एक गुरुजी के पास रहने लगी, कुछ ही दिनों में स्वामीजी का असली रूप खुल जाने पर वहाँ से वापस चली आती है और तदंनतर एक मुसलमान युवक के निकट आती है, दोनों का विवाह होता है। इसी प्रकार और एक कहानी में आधुनिकता के प्रति बढ़ते हुए मोह को स्पष्ट किया गया है। इसी क्रम में एक और कहानी में निजाम संस्थान के जन-जीवन को दर्शाया गया है। इस संकलन की सारी कहानियाँ ऐतिहासिक रूप को आविष्कृत करती हैं।

'*पल्लेरु मुल्लु*' (गोखरू के काँटे): डॉ0 शांति नारायण। आंध्र के रायलसीमा प्रांत में एकड़ों की जमीन होने पर भी उपजाऊ न होने के कारण वहाँ के किसान दयनीय जीवन जी रहे हैं। भूदान आंदोलन, रायलसीमा विमोचन समिति के आंदोलन, नक्सलवादियों द्वारा युद्ध आदि होने पर भी उनका उद्धार तो नहीं हुआ। वे लोग कुछ साध न सके थे। कब इनका उद्धार होगा? मट्टिमनुषुलु (मिट्टी के मनुष्य) कहानी के काशीपति उक्त प्रश्न को उठाकर दुखित होते हैं। जीवन पर सर्वाधिकार होते हुए भी उस जमीन को अपना नहीं समझने वाले पिता की मानसिकता एवं जमीन अपनी न होने पर भी कठिनाइयों का सामना करने वाले पट्टाधारी किसान का

लगाव का चित्रण बखूबी किया गया है। किसान रामप्पा का व्यवहार भी उसे सोचने के लिए बाध्य करता है। ठेका नहीं चुकाने की वजह से पट्टा रद्द करके जमीन वापस देने को कहने पर क्या करना है। इसी सोच की खलबली में रामप्पा डूब जाता है। आखिर में किसान उदार मन से उस जमीन को उस के नाम पर क्रयदान करता है। '*पल्लेरु मुल्लु*' (गोखरू के काँटे), '*तालु गिंजलु*' (भूख के दन), दलारि (दलाली) आदि कहानियों में खेतीबाड़ी का क्रम एवं दलालों की लूट का मूर्तरूप दिखाई देता है। दलित वर्ग से लेकर मंत्री पद तक पहुँचाने पर भी वैसे ही उच्च वंश में जन्मित होकर परंपरा का विरोध करने पर विलक्षता का सामना करना पड़ता है। इस नग्न सत्य को '*उक्कुपादं*', फौलाद का कदम '*निर्णयम्*' (निर्णय) कहानियाँ आविष्कृत करती हैं। सामाजिक यथार्थ का मूर्तरूप उनकी कहानियों में दिखाई देता है।

'*उत्तरांध्र कथलु*' – (उत्तरांध्र की कहानियाँ) संपादक मिरियाला लक्ष्मीपति, डॉ0 चांगटि तुलसी। प्रस्तुत कहानी संग्रह में उप्पला लक्ष्मणराव ने–कम्यूनिज्म एवं तेलुगुवासी के मन की कोई सीमाएँ नहीं होतीं – अपनी कहानी 'गोरिल्ला' के माध्यम से यह स्पष्ट किया है। धर्म से बढ़कर मानवता महत्वपूर्ण होती है, इस तथ्य को रोहि ईश्वरराव की कहानी '*हिंदू-मुस्लिम*' ने स्पष्ट किया। चांगंटि तुलसी अपनी कहानी '*आविड़ा*' (वह) के द्वारा राजनीति के क्षेत्र में पुरुष की नकल बन रही महिला को सचेत रहने का संदेश देती है। वैसे ही कारा मास्टरु के '*वीरुडु-महावीरुडु*' (वीर–महावीर) बोम्मिरे पल्लि सूर्याराव की पोगचूरिना गोडलू, (धूसरित दीवार), गंटेडा गोरिनायुडु की '*सेगा*' आदि कहानियाँ उत्तरांध्र की मिट्टी की महक को बिखेरती है।

'तप्त शिलाः डॉ. सी. भवानीदेवी की प्रस्तुत कहानी संग्रह में लेखिका ने जीवन को प्रकृति का प्रतिरूप माना है जैसे प्रकृति में आंधी, सूर्योदय, हल्की-हल्की बारिश की झड़ी, बवंडर आदि होते हैं, वैसे ही जीवन में भी कष्टों की आँधी, सुखी रूपी सूर्योदय, ममताओं की झाड़ियों एवं दुख के बवंडर होते हैं। सुख-दुख दोनों को झेलते हुए शिला-प्रतिमा जैसे निश्चल खड़े हो सके तो जीवन में निहित आनंद का अनुभव कर सके। एक माँ पेट

में पल रहे शिशु को मारना नहीं चाहती। इस कारण से वह खुद कैंसर का शिकार होती है। '*अम्मंट*' (माँ माने) कहानी के माध्यम से लेखिका ने मातृत्व की महिमा को स्पष्ट किया। वैसे ही टी.वी. धारावाहिकाओं से प्रभावित रेखा पति को बाहर धकेलने में प्रयासरत है तो '*नातो उंडोच्चु सुब्बु*' (मेरे साथ रह सकती हो सुब्बू), पति का इन्न आदि कहानियाँ पाठकों को हँसाती हैं। करियर के प्रति उत्सुक एक युवक विवाह की खुशियों को भी विस्मृत करता है, आखिर किसी एक घटना के द्वारा पारिवारिक जीवन की मधुरिमा को जान लेता है। 'जीवनानंदम् (जीवन का आनंद) कहानी के माध्यम से लेखिका ने वर्तमान युग में करियर को उन्नति के लिए के लिए दौड़-धूप करने वाली युवा पीढ़ी की ओर संकेत किया है। इस प्रकार लेखिका ने प्रस्तुत कहानी संग्रह के माध्यम से अद्यतन युग की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। ये कहानियाँ जीवन के अक्षर हैं।

"*डॉ0 नासा प्रभावती कथानिकलु*" कहानी संग्रह में सोलह कहानियाँ हैं। लेखिका ने इन कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन को प्रतिबिंबित किया। "*नाकू ओ मनसुंदि*" (मेरा भी एक मन है) – कहानी की वैशाली महिलाओं के मन का प्रतिनिधित्व करती है। नौकरी में वह अपने आप को स्थापित करना चाहती है। पिता के अधीन में वह उक्त लक्ष्य को साध नहीं सकी। शादी के बाद किसी न किसी तरह पति के अधीन रहकर अपने स्वप्न को साकार कर लक्ष्य को साध सके हैं। वह अपने को स्थापित कर समाज में गौरवान्वित होकर ससुराल का मान – सम्मान भी बढ़ाती है। "*ऊरगाय झाड़ी*" (अचार की झारी) कहानी वयोवृद्ध पति-पत्नी के आत्मीय जीवन को आविष्कृत करती है। पति के द्वारा गाली देना, उत्तर में पत्नी का पहेलियाँ सुनाना, उन दोनों के बीच के प्रेम एवं अनुराग को कुल मिलाकर आम के अचार का खाना जैसा काफी स्वादिष्ट बनाता है। इस प्रकार लेखिका ने मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्र पाठकों के सामने रखा – "*सिलुवगुडि कथलु*" (ईसा मंदिर की कहानियाँ) "*पूदोटा शौरी*" के माध्यम से माटी की महक एवं स्थानीय भाषा की रंगत ने इन कहानियों को विलक्षण बना दिया। ईसाइयों का जीवन वैसे

की रंगत ने इन कहानियों को विलक्षण बना दिया। ईसाइयों का जीवन वैसे ही धर्म परिवर्तन पर ईसाई धर्म को स्वीकार करने वाले दादा–परदादा के वार्तालाप आदि "*सांपुहिना पंडुगा*" (क्रिसमस), "*तवृसु पंडुगा*" (ईस्टर) आदि कहानियों में उनका जीवनानुभव स्मृतियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। कुल मिलाकर यह संग्रह स्मृतियों का संग्रह है।

"*जीवना वलयम*" (जीवन वलय) राचपूटि रमेश। इनकी कहानियों में वर्तमान जीवन छलकता है। "*तातको नूलूपोगु*" (दादा का एक धागा) कहानी बुनाई कर्मचारियों की वेदना को प्रतिबिंबित करती है। वैसे ही "*कोन्नि जीवितालिंत*" (कुछ का जीवन वैसे ही होता है) कहानी के माध्यम से जीवन में अकेलेपन का हृदय स्पंदन सुनाई देता है।

'*वारिकि कोंचं नम्मक मिव्वंडि*' (उन्हें थोड़ा–सा भरोसा दो) कहानी व्यथापूरित परिस्थितियों में आशा की किरण दिखाती है। मानवता की असली धर्म है, इस सूक्ति को '*नीड़लु– निजालु*' (परछाइयाँ एवं यथार्थ) कहानी उद्‌बोधित करती है। इस प्रकार इस संकलन की हर एक कहानी में एक नई झलक दिखाई देती है।

एस. राव. की कहानियाँ: मन लगाकर भगवान को मूर्तरूप देने वाला व्यक्ति यदि अंतिम घड़ी में है तो मंदिर मैला हो जाएगा, यों सोचकर निर्मम होकर परिजन पहले उसे बाहर रख देते है। '*नीड़ा लेनि देंमुड*' (छाया रहित भगवान) कहानी के माध्यम से लेखक उक्त विचार को व्यक्त करते हैं। वैसे ही '*गुर्रम् ओडि पोइंदि*' (घोड़ा हार गया) कहानी के माध्यम से कहानीकार, पैसे कमाने की लालसा में गलत रास्ता पकड़कर जीवन बरबाद करने वाले ये व्यक्ति का चित्रण है। इस संकलन की पंद्रह कहानियों में विषयवस्तु की विविधता है।

उपन्यास - 2014

'भारतीयम' (भारतीयता): चिवुकुला पुरुषोत्तम कृत प्रस्तुत उपन्यास में तीन प्रमुख पात्र हैं। इंग्लैंड में पली–बढ़ी सरस्वती पाश्चात्य के मोह में रहती है। रीटा पाश्चात्यी होने पर भी भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था रखती

है, नैतिक मूल्यों के महत्व को स्वीकार कर उनका अनुपालन करने के लिए तड़पने वाला राघवराम इस उपन्यास का एक उल्लेखनीय पात्र है। सेक्स के द्वारा सुपर कांससस्टेट तक हर कोई पहुँच सकता है – भगवान गिरीशबाबा के उक्त विचार से सरस्वती प्रभावित होती है। वह प्रेम शक्ति माता का रूप धारण करती है। आखिर में उस मायाजाल से बाहर निकल आती है। गिरीशबाबा के अन्याय एवं अत्याचारों का पर्दापाश करते हुए राघवराम एक ग्रंथ का प्रणयन करता है। उस पुस्तक को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त होती है। रीटा अपना नाम बदलकर रुक्मिणी नाम रखती है। राघवराम के उदात्त विचारों से आकर्षित होकर उससे प्रेम करने लगती है। राघवराम और रुक्मिणी के विवाह से उपन्यास का अंत होता है। यह उपन्यास आर्ष संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है।

'सुमित्रा' : चलसानि वसुमती

लेखकों के द्वारा रामायण द्वारा बार-बार पुनर्रचित है। उन सभी में सुमित्रा एक उपेक्षित पात्र ही है। वाल्मीकि द्वारा एक अद्भुत पात्र को अज्ञात रूप में छुपाने पर भी उस पात्र का जो वैशिष्ट्य है उसे पाठकों के सामने लाकर लेखिका ने एक स्तुत्य प्रयास किया।

'*मूलिंटाम*' (कोने के घर की) नायनी गाँव में एक कोने में रहने वाला परिवार है। इसलिए वह मूलिंटामे के नाम से प्रचलित हुई। असल में उस औरत का असली नाम कुंचमम्मा है। मूल रूप से खेतीबाड़ी करने वाले परिवार नगरीकरण के प्रति आकर्षित होने लगे। इस अद्यतन समस्या को लेकर प्रस्तुत उपन्यास का प्रणयन हुआ।

'कोल्लेटि जाडलु' (कोल्लेरु को निशानें) अक्किनेनि कुटुंबराबः

किसान-मिट्टी-पर्यावरण के बीच के आपसी संबंध को स्पष्ट करता है प्रस्तुत उपन्यास। यह किसान का उपन्यास है। गाँवों के अकलंक आत्मीयता-प्यार-आदि का दर्पण है यह उपन्यास।

'अन्वेषणा' (खोज): गंटि भानुमति।

माता-पिता के लिए बेचैनी का अनुभव करने वाली एक बेटी के प्रेम,

संस्कार, संवेदनशीलता एवं आत्मविश्वास का मूर्तिरूप है यह उपन्यास। नाना-नानी के पास पली-बढ़ी बेटी को कुछ समय बाद पता चलता है कि उस के माँ-बाप जिंदा है। फिर वह उत्सुक होती है उसके पास वे क्यों नहीं रहे? बस उनको खोजने लगती है। प्रयासरत उसे पिता मिलता है लेकिन माँ के स्थान पर और एक स्त्री दर्शन देती है। पिता ने जिस घर को बेच दिया, उस में पुरानी दैनंदिनी द्वारा माँ का थोड़ा आभास होता है। इतने में सौतेली माँ की मृत्यु, उनके बच्चों द्वारा पिता का ध्यान न रखना, अंत में विजया ही उसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी लेती है। इस प्रकार लेखिका नाते - रिश्तों को निभाने का संदेश देती है।

'*एगिरे पावुरमा*' (उड़ने वाला कबूतर): कोनूरि उमाभारती। दृढ़ चित्तवाले के सामने वैकल्य भी झुक जाता है। किसी के द्वारा छोड़ी गई एक विकलांग बच्ची को वृद्ध बड़े प्रेम से पालते हैं। सही सोच के अभाव में लोग शंकित मानसिकता से रिश्तों को कैसे प्रदूषित कर सकते हैं– इसका सजीव चित्र दादा-पोती के माध्यम से उपन्यासकार ने दर्शाया। लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास में जीवन-संघर्ष का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

'महामंत्रि मादन्ना' (महान मंत्री मादन्ना) एस. एम. प्राणराव

ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रणयन करना इतना आसान काम नहीं है। यह तलवार की धार पर चलने का काम है। इस उपन्यास का इतिवृत्त वैशिष्ट्यपूर्ण है। महान मंत्री मादन्ना की जीवनी एवं व्यक्तित्व को एक उपन्यास के रूप में प्रकाश में लाना साहित्य जगत के लिए एक विशेष उपलब्धि है। हन्मकोंडा के प्यारे बच्चे थे अक्कन्ना और मादन्ना, कंचर्ल गोपन्ना के वे दोनों मामा हैं। कुतुबशाही दरबार में वे गुरुतर कार्य प्रतिबद्ध के साथ निर्वाह करते थे। सत्ता के राजनैतिक षड्यंत्र का शिकार होने के कारण खुली सड़क पर इनकी हत्या की गई। मात्र उस घटना को ही अधिक लोग जानते थे, लेकिन शासन पर उन भाइयों का प्रभाव काफी महत्वपूर्ण रहा।

मादन्ना अपार मेधासंपन्न व्यक्ति थे। मादन्ना ने राज्य के लिए त्याग किया। उनके त्याग की ऊँचाई का अंदाजा हम नहीं कर सकते। वैसे ही भगवान रामचंद्र द्वारा भक्त रामदास को जेल से मुक्त कराने का जो प्रसंग है उस में यथार्थ एवं विश्वास के बीच में जो नाजुक अंतर है उस घटना को उतनी ही कौशलतापूर्वक चित्रित कर लेखक ने इस दुसाध्य कार्य को सुसाध्य बनाया।

आलोचनात्मक ग्रंथ

'गुड - बेटर - बेस्ट' - मल्लादि वेंकटकृष्णमूर्ति

भलेमानस, मानवतावादी विभूतियों का परिचय समाज से कराने के उद्देश्य से वेंकटकृष्णमूर्ति ने प्रस्तुत ग्रंथ का प्रणयन किया। सम्मान एवं पुरस्कारों के रूप में मिले हुए धन को गरीबों को बाँटने वाले विश्वनाथ सत्यनारायण, दीवान के पद पर रहकर किसी प्रकार के सिफारिश करने के लिए मना करने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या, चुनाव के समय पैसे बाँटने आए हुए नेताओं का वापस भेजने वाले सीतारामपुरम के लोग, अनाथ शवों का अंतिम संस्कार संपन्न करने वाला राजेश्वरराव, इस प्रकार तीन सौ भलेमानस व्यक्तियों का परिचय इस पुस्तक के माध्यम से होता है। आज की पीढ़ी के लिए यह पढ़ने योग्य पुस्तक है। लेखक का यह प्रयास स्तुत्य है।

'चिंता निप्पलु'(आग की चिनगारियाँ): कोंडेपूडि निर्मला

स्त्रीवादी निर्मला जी ने प्रस्तुत ग्रंथ में पीड़ित-ताड़ित पचास महिलाओं की नरक यातनाओं को पाठकों के सामने रखा। पति द्वारा शारीरिक एवं मानसिक हिंसा का तिरस्कार कर खड़ी हुई वेंकटेश्वरम्मा, ससुराल वालों के हत्या प्रयत्न से बच निकली आएषा.... इस प्रकार की अनेक यथार्थ जीवनियों को हमारे सामने रखा गया। गृहहिंसा की शिकार हुई महिलाओं के लिए समाधान ढूँढने का मंच है कोर्ट ऑफ वीमेन। कोंडेपूडि निर्मला का कहना है कि यदि महिलाएँ आत्मकथाएँ लिखना शुरू करें तो कई दीवारें ढह जाएँगी। अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए संघर्षरत महिलाएँ एक ओर हैं तो दूसरी ओर पुरुष समाज की पाशविकता को झेलने वाली नारियों का

41 HRD/16—10A

मर्मस्पर्शी यथार्थ चित्रण लेखिका ने समाज के सामने रखा है।

'नीर्ल जीवितम - साहित्यं' (नार्ल का जीवन एवं साहित्य) - डॉ. नार्ल लावण्य

नार्ल बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है। महा पत्रकार, संपादक, कवि, आलोचक, नाटककार, इतिहासकार, सुधारवादी, हेतुवादी, स्वतंत्र सेनानी एवं दार्शनिक थे। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जिसका स्पर्श उन्होंने नहीं किया। नार्ल की रचनाओं और उनके जीवन के विविध आयामों को इस पुस्तक में नार्ल लावण्या ने अच्छी तरह आविष्कृत किया। नार्ल जी ने रूढ़ियों का खंडन खुले रूप से किया। उनके द्वारा नई दृष्टि से लिखे गए पाँच पौराणिक नाटकों को इस ग्रंथ में स्थान देकर लावण्य जी ने अभिनंदनीय कार्य किया।

छिपकली बोली, काली बिल्ली सामने आई, कुत्ता रोया, सियार चिहुका– कहकर बिना मतलब के अंध विश्वासों के चक्कर में पड़कर काम छोड़ने वाली जाति बेकार की जाति है- कह कर नार्ल जी ने अपने कलम से रूढ़ियों पर प्रहार किया तथा समाज को एक स्वस्थ मार्गदर्शन देने का प्रयास किया।

'प्रमुखुला हास्यालु' - लास्यालु (प्रमुखों के हास्य एवं व्यंग्य): द्विभाष्यम राजेश्वर राव

आइंस्टीन नाम सुनते ही सापेक्ष सिद्धांत की याद आती है। एडिसन का नाम सुनने से इलैक्ट्रिक बल्ब आँखों के सामने दिखाई देती। डार्विन जीवपरिणाम सिद्धांत को बताते है। अत्यंत गंभीर दिखने वाले उन व्यक्तियों के व्यक्तित्व में हास्य एवं व्यंग्य भरा हुआ है। द्विभाष्यं राजेश्वरराव जी ने ऐसी घटनाओं को एकत्रित कर उक्त ग्रंथ के रूप में पाठकों के सामने रखा है। उदाहरण के लिए सुंदर अभिनेत्री मारलिन मुनरो एवं वैज्ञानिक आइंस्टीन एक कार्यक्रम में मिले थे। मारलिन मनरो ने आइंस्टीन के सामने प्रस्ताव रखा था - 'हम दोनों शादी करें तो कितना अच्छा होता मेरे सौंदर्य एवं आपकी अक्ल से एक अद्भुत बच्चा जन्म लेता।

आइंस्टीन का उत्तर है ऐसा होने से ठीक ही है लेकिन मेरा सौंदर्य और आपका अक्ल आने से क्या होता?

'लोयनुंचि शिखरनिकि' (घाटी में शिखर तक) : यंडमूरि वीरेंद्रनाथ

आप अपनी रचनाओं से पाठकों के हृदय को हिलाने वाले बहुप्रचलित लेखक है। 'घाटी में शिखर तक पहुँचने के लिए कई अड़चनें, प्रश्न एवं विफलताओं का सामना करना पड़ता है। सवालों को अवसर के रूप में बदलना पड़ता है। विफलताओं को निसैनी बनाकर चढ़ना सीखना चाहिए। लेखक ने इस प्रकार के विजय के सूत्र बताकर निराशा में डूबे हुए व्यक्तियों को स्फूर्ति प्रदान की है। जीने और मरने में अंतर, जानवर और मानव के बीच का अंतर, जल्दबाजी एवं समयस्फूर्ति का अंतर आदि विषयों को स्पष्ट कर सीधे हृदय को छूने का प्रयास किया।

'शंकरंबाडि सुंदराचारि रजतजयंति संचिका' - संपादक मुन्नवा गंगाधर

'*माँ तेलुगु तल्लिका मल्लेपूदंड*' तेलुगु माँ को चमेली माला पहनाए हुए, भाषा प्रेमी '*माँ कन्ना तल्लि की मंगलारतुलु*' हमें जन्म देने वाली हमारी तेलुगु माँ की कर्पूर आरति से आराधना करती उदारमना '*गलगला गोदारि कदलि पोतुंटोनु*' कल-कल करती हुई '*गोदावरी*' बहते हुए देखकर पुलकित एवं अत्यंत भावुक कवि शंकरंबाडि सुंदराचार्य का रजतजयंती वर्ष है। इस संदर्भ में किसी भी तेलुगु विश्वविद्यालय या तेलुगु संस्था ने उनका स्मरण करने का प्रयास नहीं किया। ऐसा महान कार्य करने का श्रेय चन्नपट्टणम् के '*जननि प्रचुरणलु*' (जननि प्रकाशन) ने संपन्न किया। शंकरंबाडि जी के जीवन चरित को समग्र एवं संक्षिप्त रूप से पाठकों को देने का स्तुत्य प्रयास संपादक मुन्नवा गंगाधर ने किया। उनके जीवन की अनेक उत्कंठापूरित घटनाओं को प्रस्तुत ग्रंथ में संकलित किया गया है। उदाः एक बार काशीनाथ नागेश्वरराव द्वारा 'तुम तेलुगु जानते हो ? ऐसा प्रश्न करने पर उल्टे उन्होंने प्रश्न किया कि 'क्या आप नहीं जानते?' शंकरांबाडि ऐसे निर्भीक व्यक्तित्व के हैं। वैसे ही और एक संदर्भ में एक पदाधिकारी ने उस से फलों का बंडल पकड़ा दिया तो उस प्रकार की गुलामीगीरी का तिरस्कार कर उन्होंने नौकरी से इस्तीफा

दे दिया। आत्माभिमान उनमें कूट–कूट कर भरा हुआ है। रामायण एवं महाभारत को आम जनता तक पहुँचाने के लिए उन्होने सरल भाषा एवं प्रसादशैली में उन्हें रचा। वैसे ही उनकी '*गीतांजलि*, '*ठाकुर*' की गीतांजलि से टक्कर लेनेवाली रचना है। इतिहासप्रसिद्ध 'माँ तेलुगुतल्लि' कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को आज की पीढ़ी को देने का प्रयास अत्यंत हर्षनीय है।

'*श्रीकांत शर्मा साहित्यम*' (श्रीकांत शर्मा का साहित्य) – लेखक ने 'सृजन–समालोचना' शीर्ष के अंतर्गत दो खंडों में समग्र साहित्य को साहित्य जगत के सामने रखने का भगीरथ प्रयास किया। तेलुगु साहित्य को प्रकाश-पथ पर चलाने वाले विशिष्ट व्यक्तियों में उनका प्रथम स्थान है। उन्होंने निरंतर साहित्य क्षेत्र को सुसंपन्न किया। वे बहुमुखी प्रज्ञा के धनी थे। वे कथाकार, नाटककार, पत्रकार, आलोचक, गीतकार एवं कवि हैं। एक ही समय में भिन्न–भिन्न साहित्यिक प्रक्रियाओं पर उन्होंने लेखनी चलाकर अपने विश्वरूप का दर्शन कराया। समग्र साहित्य को समालोचन के साथ साहित्य जगत को उपलब्ध कराया। निश्चित रूप से साहित्य जगत इस से लाभान्वित होगा।

'तेलंगाना प्रजला पोराटम् (तेलंगाना जनता का आंदोलन) - देवुलपल्लि वेंकटेश्वर राव

तेलंगाना सायुध - आंदोलन में वेंकटेश्वर राव की भूमिका चिरस्मणीय है। उन्होंने आंदोलन के समय करपत्र निकाले। वैसे ही तेलंगाना आंदोलन के बारे में कई ग्रंथ लिखे। उनमें पाँच ग्रंथ प्रकाशित हुए। निजाम के शासन में पुलिसकर्मियों की जो दुश्चेष्टाएँ एवं विश्रृंखल व्यवहार हैं उन पर लिखी गई पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इस आंदोलन में दोड्डि कोमरय्या की भूमिका का स्मरण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया गया। उक्त आंदोलन के समग्र इतिहास को प्रकाशित कर लेखक ने ओझल हुए इतिहास को आज की पीढ़ी को उपलब्ध कराया। यह एक प्रशंसनीय कार्य है।

'मना कबुलु - महाकबुलु' (हमारे कवि - महानकवि): दोरवेटि

'तेलंगाना' कलाओं का गढ़ है। उस प्रांत की हवा 'सरगम' सुनाती है। वहाँ की पहाड़ी के पत्थर सहज सुंदर मूर्तियाँ है। रमणीय प्राकृतिक सौंदर्य सृष्टिकर्ता के द्‌वारा खींचा गया पंचरंगा चित्र है। साहिती क्षेत्र है। नन्नेचोड़ु, पालकुरिकि सोमनाथुड़ु, जायपसेनानि, बम्मेरपोतना, पोन्निकंटि आदि साहित्यकारों का क्षेत्र है तेलंगाना। अक्षर, अक्षर कीर्ति का गढ है। प्रस्तुत ग्रंथ में उन कवियों के योगदान को प्रस्तावित करना माने उस समय के शासक राजाओं का स्मरण करना ही है। उन्हें स्मरण कर तत्युगीन सामाजिक, राजनयिक परिस्थितियों का विश्लेषण कर, साहित्यिक दृष्टि से उन्हें परखकर '*तेलंगाना साहित्य का इतिहास*' साहित्य संसार के सामने रखा गया है। निश्चित रूप से लेखक का यह प्रयास महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार वर्ष दो हजार चौदह में मात्रा और महत्ता की दृष्टि से भी तेलुगु साहित्य की सभी विधाओं में अनेक मूल्यवान ग्रंथ प्रकाशित हुए। इनमें कुछ ग्रंथों की विवेचना ही मैं प्रस्तुत कर पाई। '*वार्षिकी* पत्रिका की सीमा को दृष्टि में रखकर अनेक रचनाकारों की रचनाओं का नामोल्लेख तक नहीं हो पाया है। इन में कई मौलिक, आलोचनात्मक, आत्मकथात्मक, धार्मिक एवं अनुवाद ग्रंथ भी हैं जिनका जिक्र नहीं हो सका। मात्रा की दृष्टि से प्रस्तुत वर्ष में कहानी संग्रह अधिक प्रकाशित हुए। इनमें कई स्तरीय रचनाएँ है फिर भी उनकी विवेचना यहाँ संभव नहीं है। आशा है कि सुधी पाठक गण मेरी विवशता को समझ पाएँगे।



9

पंजाबी साहित्य

प्रो. फूलचंद मानव

पंजाबी साहित्य की अपनी एक संपन्न समृद्ध परंपरा रही है। इसके साहित्य को गुरुमुखी में लिखा गया हो या शाहमुखी (पाकिस्तानी पंजाबी) में, देवनागरी में लिपिबद्ध किया हो अथवा किसी भी अन्य लिपि में, साहित्य की सार्थकता, गुणवत्ता, संवेदना और मनोभूति सदैव लोकहित में दिखाई पड़ती है। दसों गुरु साहिबान, बाबा नानक से गुरु गोविंद सिंह तक, शेख फरीद, बुल्लेशाह, गुरु अर्जुन देव, धनीराम यात्रिक, अमृता प्रीतम, शिव बटालवी पाश या फिर आज के सुरजीत पा`तर, इनके अवदान और विभिन्न रुझानों से पंजाबी पाठक निहाल हुआ, संतुष्ट कहलाया है।

आदिकाल, मध्य काल, आधुनिक काल जैसा कुछ पंजाबी साहित्य परंपरा में भले न हो, पर अपनी ठाठ–बाठ में यहाँ संतवाणी, सूफी साहित्य, गीत, गज़ल, महाकाव्य, गीतिकाव्य या मुक्त छंद जैसा तो विपुल संग्रह दिखाई देता ही है। गद्य में भी यहाँ उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, निबंध, नाटक, डायरी, सफ़रनामा जैसा इतना कुछ भरा पड़ा है कि आज आधुनिक भारतीय साहित्य की तुलना में इसे कहीं किसी अन्य भाषा के मुकाबले हम इक्कीस ही पाते हैं। पंजाबी साहित्य में दिनों–दिन नई विधाएँ जुड़ रही हैं, युवा पीढ़ी इसे विकसित कर रही है।

पत्रिकाओं की भरमार है। साहित्य से अलग विज्ञान, समाज शास्त्र पत्रकारिता के क्षेत्र में पंजाबी भाषा ने नए क्षितिज देखे हैं। समाचार पत्र

मीडिया भे पंजाबी, सबकुछ यहाँ आज इसके भरपूर लोक साहित्य की तरह बढ़ रहा, लोकप्रिय हो रहा है। तीन चार दशक पहले कहाँ सोचा था कि इतने सारे अखबार दैनिक, साप्ताहिक, नानाविध पत्रिकाएँ, मासिक, त्रैमासिक या अनियतकालीन ऐसा कुछ दे पाएँगी, प्रशासनिक सेवा तक के लिए युवा वर्ग इससे तैयारी कर पाएगा। पंजाब, पंजाबी और पंज़ाबियों का माथा गौरव से इसलिए भी ऊँचा हो रहा है कि नई यूनिवर्सिटियों तक में पंजाबी का विशेष अध्ययन करवाया जा रहा है। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, गुरुनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर की तरह ही अन्य विश्वविद्यालयों में आज पंजाबी भाषा, साहित्य आदि से संबंधित एकाधिक कितने ही विभाग पंजाबी को विकसित कर रहे हैं। युवावर्ग को प्रेरित करते हुए उनके लिए नौकरी व्यवसाय के नवीन रास्ते सुझा रहे हैं। मीडिया, पत्रकारिता, संपादन, प्रूफ रीडिंग से लेकर वाचक मुद्रा के नए वातायन आज खुले दरवाज़े बनने--बनाने लगे हैं।

हमारा पंजाबी साहित्य साल 2014 में भी पिछले या उससे भी ण्हले के वर्षों की तरह लहलहाता, गुनगुनाता सरसब्ज़ जान पड़ता है। हम भले भारत की स्वतंत्रता की तारीख 15 अगस्त 1947 मान रहे हों, इसकी तैयारी तो बहुत पहले शुरू हो चुकी थी। ठीक यों ही 2014 प्रकाशन वर्ष जिन किताबों पर छपा है, हो सकता है वे जून--जुलाई 2013 से प्रकाशन प्रक्रिया में हो या 2014 में, तैयारशुदा कृतियाँ तीनेक माह पार कर 2015 में आ रही हैं। इसको कठोरता के साथ सीमित करना शायद ज्यादती हो, लेकिन दिसंबर या नवंबर 2013 में छप रही कृति, जिसपर 2013 प्रकाशनवर्ष अंकित है, कैसे न्याय पाएँगी? खैर, हमारी कोशिश है कि विचाराधीन साहित्य की प्रमुख, प्रखर, उपयोगी व संग्रहणीय किताबों का विवरण दूँ या उल्लेख कर पाऊँ, जो चर्चा की हकदार हैं। पक्रियाओं में छपा 2014 का ताज़ा साहित्य और उनकी प्रासंगिकता इससे भी अद्यतन साहित्य के झुकाव, इसके मोड़ स्पष्ट करने वाली मुझे लगी है।

साहित्य विचारधारा, वैचारिकता अथवा लेखकीय मनोभूमि पर भी आधारित रहा है। पत्रिका विशेष के संपादक, उसकी प्रतिबद्धता पर भी निर्भर है कि वह क्यों और क्या छाप रहा है। यहाँ लेखक गौण और लेखन प्रमुख होना चाहिए, लेकिन हमारे यहाँ संतुलित हर बार, सब कुछ रह पाए, यह जरूरी नहीं। लेखकों के गढ़, बाड़े, टोले, गिरोह या ऐसा ही बहुत कुछ सामना करने को मिलता है। किसी को सहन करने, सुनने या झेलने के लिए सब कहाँ तैयार होते हैं। तब भी संवाद, संपर्क या मेलजोल के आधार पर ही साहित्य का आदान–प्रदान हो पाता है। पंजाबी में भी कहकर कुछ लिखवाने की तमीज़ कुछ कम है, चूंकि संपादक खुद को सर्वोच्च मानकर दूसरों से '*सबमिट*' करने की अपेक्षा रखता है। उसे अपनी ज़रूरतों का ख्याल हो तो ज़रूर वह समान स्तर पर व्यवहार करे। शायद इसीलिए पंजाबी अखबारों में जो जैसा छप रहा है, पाठक व लेखक इसी में संतुष्ट हैं। संपादक चार पैसे भी दे सकता है इसी के आधार पर लेखक संपादक के सामने मुँह न खोल कर मौन बने रहते हैं। शायद दीगर भाषाओं मे भी कमोबेश ऐसा ही हो। हाँ, सरकारी पत्रिकाएँ, विभाग इस दृष्टि से अपवाद है।

पत्र साहित्य जितना महत्वपूर्ण है इससे हम सभी परिचित हैं। हिंदी मे भी इस विधा में कम पुस्तकें आईं या आ रही हैं। पंजाबी में तो बहुत कम। एक आई.एफ.एस अधिकारी एंबेरूडर बाल आनंद की किताब '*सुख–सुनेहें*' देखने में आई, बल्कि श्री बाल आनंद ने शिलालेख प्रकाशन में खुद ही भिजवाई। साल 1971 से लेकर ईरान, मालदीव, रूमानिया, स्पेन और सउदी अरब में डिप्टी हाई कमिश्नर, राजदूत, हाई कमिश्नर तथा न्यूजीलैंड रहने के बाद दिल्ली आ टिके हैं। अंग्रेजी, हिंदी में भी दोस्तों के साथ उनका पत्राचार रहा होगा लेकिन 'सुख–सुनेहें' में पंजाबी का पत्राचार संकलित है।

प्रो. प्रीतमसिंह, सत्यप्रकाश, करण अशांत, तेरासिंह चन्न, एस. तरसेम, दुग्गल, गुरवचन भुल्लर, गार्गी, भगत सिंह, बी. एस. रतन, एस. जोहल व अन्य लेखकों, पत्रकारों को पत्र या उनके खत यहाँ दर्ज हैं। इनमें समय, संस्कृति, शिक्षा और सांत्वना के अनेक दृष्टांत मनुष्य को एक दूसरे से जोड़ते हैं। ऐसी

उपयोगी कृति पत्र साहित्य में पंजाबी को देकर एंबैसेडर बाल आनंद ने अच्छी पहल की है।

अकादमिक किताबों से अलग डॉ. मनु शर्मा सोहल के संपादन में 'शिव कुमार बटालवी: इक हसीन दास्तान' कृति रोचक भी है, आकर्षक भी। शिव बटावली पंजाबी कविता के अद्‌वितीय हस्ताक्षर हुए हैं जिन्हें बतौर कवि अमृता प्रीतम भी चाहती थीं। 'नागमणि' पंजाबी मासिक के मुख्य पृष्ठ पर शिव की रचना देकर अमृता संतुष्ट महसूस करती थी जिसे पाठक भी सराहते थे। शेख कादियानी, वर्षा शर्मा, सरोज मेहता, राकेश बटालवी, प्रेम कुमार, हरचरण सिंह वारु से लेकर प्रस्तुत पुस्तक में कमला देवी, फकीर चंद शुक्ला, सुखद प्रेमी, मनजीत धीमान आदि ने शिव के साथ निकटता दिखाते अपने संस्मरण लिखे हैं। कनाडा, अमरीका, यू. के., आस्ट्रेलिया सरीखे देशों से शिव पर संदर्भ–सामग्री जुटाकर अपनी भूमिका में विस्तार से लिखा है। मनु शर्मा सोहल का यह प्रयास अलग से सराहनीय है जिन्होंने अछूते पहलुओं को पाठकों तक पहुँचाया है।

'नवीं पंजाबी शाइरी : समकाली संदर्भ' पुस्तक डॉ. लोकराज की आलोचनात्मक पुस्तक है जिसमें मानवीय आत्मदर्शन के संदर्भ में आज की पंजाबी कविता पर विवेचन दिया गया है। कतिपय पंजाबी कवि जगतार, नवतेज भारती, पातर, परमिंदरजीत, जसंवत दीद, शशि समुंदरा, जसविंदर, जफ़र, मनमोहन और सुखपाल जैसे उल्लेखनीय पंजाबी शायरों की रचनात्मक भूमिका दर्शाते हुए उनकी कवित। के तुलनात्मक पहलुओं को उजागर किया गया है। 256 पृष्ठों की इस संदर्भ पुस्तक में पंजाबी कविता का वर्तमान ध्वनित हो रहा है।

सी. मारकंडा पंजाबी कवि, पत्रकार ने यात्रा संस्मरण की कुछ प्रतियोगी पुस्तकें पंजाबी में भेंट की हैं। *'परिक्रमा वृंदावन'* नेपाल कुंभ चाँदनी चौक, अमरनाथ यात्रा संबंधी उनके पूर्व प्रकाशित यात्रावृत्तांतों से आगे और ऊपर है। इसमें वृंदावन के बहाने एक संस्कृति, एक वातावरण और जन सामान्य की आस्था भी फूट पड़ती है। पंजाबी में हिंदू पर्वों, दर्शनीय स्थलों, मंदिरों

से जुड़ी कलाकृतियाँ आई है, इस कृति ने एक कमी की पूर्ति की है।

'*चीन दी कविता दे पंज पुराने पन्ने* कवि अनुवादक और संपादक 'इन्दे' की सराहनीय कोशिश इसलिए भी है कि प्रायः पंजाबी पत्रिकाओं में विदेशी कविता आमतौर पर हिंदी से अनूदित छपती रहती है। वैग वी, ली पो, तू फू, हैन शैन, ली शैन–यिन जैसे चीनी कवियों की कविताएँ अनुवाद की गई हैं। आठवीं व नौवीं सदी के इन कवियों ने गहराई और विविधता के साथ मानव मन, प्रकृति और आस्था–विश्वास का वर्णन किया है।

आत्मकथात्मक उपन्यास हर भाषा में लिखे जाते हैं। वरिष्ठ पंजाबी कवि–कथाकार संतोष सिंह धीर के छोटे भाई कथाकार जगरूप सिंह रूप का पहला उपन्यास '*भुक्खड़ा विच फुल्लदा रुक्ख*' रोचक पाठ प्रस्तुत करता है। सेल्फमेड आदमी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए संघर्ष करता, अपने लक्ष्य तक आकर संतुष्ट हो जाता है। सत्य घटनाएँ 'फिक्शन' होकर सामने आती हैं तो भावुक भी कर जाती हैं। कुल 408 पृष्ठों वाले उपन्यास '*चक्रवात में झूलता पेड़*' को लेखक दो–तीन सौ पन्नों में भी कह सकते थे, लेकिन भावुकता का इलाज किसके पास है?

'कुत्ता राज बहालीए' अर्थात कुत्ते को राज्य सौंप दें तो कैसे लूट मचाए गए, इसका प्रमाण गुरबख्श सिंह सैनी का यह कहानी संग्रह है। कवि, कहानीकार गुरबख्श सिंह सैनी ने यहाँ 30–31 कथाएँ व्यंग्यात्मक अंदाज में प्रस्तुत की हैं जहाँ यथार्थ है, हकीकत की पीड़ा है, और सामान्यजन की विवशता भी। '*अहाता* से '*आटा दाल वाला* तक आत्मघात, मुबारका, कड़ड़ा चोर, कथावाचक, महँगाई, प्रोफेसर जैसी कहानियाँ हमारे आसपास के चरित्रों को ही तो पेश करती है।

'*मनमोहन* आई पी. एस. अधिकारी सजग पाठक और सूक्ष्म कवि है। '*नीलकंठ* कवि के गहन चिंतन, अनुभव और उसके मंथन का प्रतिफल है। दूसरे संस्करण में भी पाठक नीलकंठ से जुड़े हैं और इसे पढ़ना चाहते हैं। पाश्चात्य काव्य के अध्ययन और काव्य के सतत् अभ्यास ने मनमोहन के काव्य सर्जक को पुख्ता किया है। मन महीयल, अगले चौराहे तक, सुर संकेत,

नमित और अथ जैसे काव्य का रचयिता चिंतन के स्तर पर पंजाबी काव्य में मेरु की तरह दिखाई देता है। वापसी, टेक, चिड़ियाघर जैसी कविताएँ मनमोहन के रचनाकार की गवाही देती हैं। अभी गत वर्ष ही मनमोहन के काव्य को पुरस्कृत करके केंद्रीय साहित्य अकादमी ने इन पर अपनी मोहर लगाई है।

ओम प्रकाश गासो हमारे बरनाला क्षेत्र (मालवा) के सिद्धहस्त उपन्यासकार, कवि चिंतक माने जाते हैं। इनकी दर्जनों पुस्तकें स्वयं लेखक ने प्रकाशित कराके घर–घर पहुँचाई, पाठकों को सौंपी हैं। पंजाब सरकार ने लेखक के रूप में इन्हें सम्मानित किया है। गासो का प्रेरणादायक निबंध संग्रह 'धरत भली सुहावणी' नवंबर में मुझे डाक से प्राप्त हुआ, जिसमें प्रेरणा–प्रोत्साहन दे रहे निबंध शामिल हैं। संस्कृति, सभ्याचार, आत्मकथन, आलोचना, कविता, बालसाहित्य और बीसेक पंजाबी अपन्यास सहित गासो ने सामान्य पाठक को अपने साथ जोड़ा है। एक दर्ज़न से ऊपर ईनाम सम्मान पाने वाले ओम प्रकाश गासो ने इस पुस्तक में जिंदगी, धर्म, धरा, बाजारवाद, तर्क, पाखंड, रिश्ते, किताब जैसे विषयों के साथ जोड़कर पाठक को सुशिक्षित किया है। स्त्री जीवन, शब्द संचार, भविष्य, ज़माना जैसे विषयों वाले निबंध हर आयु वर्ग के पाठक को अनुकूल लगते हैं।

संयोग ही है कि अन्य कुछ भाषाओं की तरह पंजाबी में भी सर्वाधिक पुस्तक कविता की छपती है। गीत, गज़ल, दोहे, हाइकु की कृतियाँ जो मिलती हैं उनमें *'सृजन'* कम निर्माण अधिक पाया जाता है। इस निर्माण, उत्पादन को भी रचनात्मक कार्य मान भोले कलमकार मुगालते का शिकार रहे हैं। पेपर बैक हो या हार्डबाउंड संस्करण, प्रवासी कवि पौंड–डॉलर की उपार्जित अपनी राशि को रुपयों में परिवर्तित करके प्रकाशकों को पांडुलिपि के साथ सौंप रहे हैं। जितनी बार विदेश से पंजाबी कवि देश पंजाब आता है, एकाध कच्ची पक्की पुस्तक छपा ही लेता है। खैर, *'सूरजा दी भाल विच* (गज़लें–भूपिंदर संधू), *'नीला लिफाफा* । (काव्य–गुरमान सैनी), दर्द दिलां दें (काव्य संग्रह– जगजीत नूर) संग्रहों का पाठ बता रहा है कि इन काव्य–प्रेमियों

में '*संभावना*' है, यही भविष्य में उपलब्धि हो सकती है। इनके शब्द संयोजन भाषा सजगता, बिंब विधान में सकारात्मक परिवेश है। गज़ल के शेरों में कहीं-कहीं परिपक्वता, ताज़गी कायम है। "*होणीआं अणहो गोआं विच तू अजे फसिआ पिसिआं*" पर असीं हुण तुर पाए हाँ सूरजां दी भाल विच"।

पंजाबी कवियों में आज धर्म कम्मेआणा, गुरदयाल पल्लाह, मलविंदर आदि का नाम गर्व के साथ रचनाकारों में शुमार हैं। '*उम्मीद*', '*सुपनिया दा जजीरा*' और '*सवाल न कर*' क्रमशः इनके विचाराधीन वर्ष 2014 के काव्य संकलन है। साल 1978 से 2011 तक कम्मेआणा के ग्यारह-बारह काव्य संग्रह छपे हैं तो अनेक आलोचकों की सम्मति-सहमति भी इन्हें हासिल है। दो भागों में '*उम्मीद*' की ये गीतात्मक, वैचारिकता वाली रचनाएँ धर्म के कवि को आगे लाकर रेखांकित कर रही हैं। गुरदयाल पल्ला की छठी काव्य किताब 'सुपनियां दा जज़ीरा' सहज भावनात्मक कविताओं का संगम है। इंसान के अंदर-बाहर की '*कसक*' इनमें दर्ज़ है।

मलविंदर की कविताएँ हिंदी पाठकों तक भी पहुँची हैं। '*सवाल न कर*' प्रश्नाकुलता में डूबने से ऊपर सहयोग के आग्रह में विश्वास की कृति है। "*मेरी उम्र नूं सवाल न कर/पहाड़ी नदी दा शोर है। तेरी देह, ठर गई मेरी देह दा झोरा न कर/सीने विचली/तपश दा सेक क़र!*" (सवाल न कर, पृष्ठ 40) छोटी-छोटी गहरी प्रेम छिपाती इन कविताओं में रूह और देह का द्वंद्व है।

बलवीर साइनेवाल ने दोहे रच कर संग्रह 'छल्ला' प्रकाशित करवाया है। दोहों को छंद से बाहर आकर भी 'विचार' में सराहने का दौर है।

आपे जानैं उलझदा आपे बूणदैं जाल
दुख सुखां दे काफ़ले, रहण हमेशा नाल।

गज़ल या उसके शेरों की तरह दोहे प्रभाव भी छोड़ते हैं, प्रेरणा भी देते हैं।

इधर नए कवियों बल्कि उम्र बड़ी होने पर भी प्रथम काव्य संग्रह देने वालों की एक कतार है। परमिंदर (कुछ पल तेरे नाल), भूपिंदर उपराम-

(दुनिया दा दुख देख देख), सुखविंदर छीना (शीशे दी सलेट) , चरण कौशल (शबद मरदे नहीं) संग्रहों के साथ 2014 में हमारे सामने हैं। मूलतः यहाँ परमिंदर के पास जीवन शैली की अभिव्यक्ति है तो आठ–दस पंक्तियों में कुछ कह देने की कला भी। कुछ पल साथ चलकर ही खुद को, किसी अपने के साथ, समझा विकसित किया जा सकता है। दुनिया के दुख देखते हुए भूपिंदर उपराम घर बाजार प्यार, दीवार, सरोकार, दुकानदार की बात कहते हैं। पटियाला वैसे भी चंडीगढ़ की तरह कविता का केंद्र हो गया है।

'शीशे की सलेट' को मुखातिब युवा कवयित्री के पास सवाल हैं, इन्हें सुलझाने की कला भी। शीशा और सलेट भला कहाँ–कहाँ लिख पाएँगे? और लिखेंगे भी तो क्या? लघु काव्य की बानगी –

'हासे भी जलील लगदे, वगैर कपड़िया दे
अक्खा दे सुच्चे रंगा नाल, खिलखिलाहट हुंदी
सुंदर.....सदीवी' (चक्कर पृ. 63)
'अभी तो बोल थे मिसरी से/अभी कीड़े चलने लगे हैं'

बदरंगी बिंदी उतार कर चंदन का टीका लगा लियान (पृ. 43) अपने चौथे संग्रह में चरन कौशल मान रहे हैं कि शब्द कभी नहीं मरते। देश, प्यार, नैतिकता, सामाजिक सरोकार व व्यंग्य पात्रों के माध्यम से कविता कहते चरन कौशल शब्द को शाश्वत जानकर आईना दीवार पर टिका कर यों दिखाते हैं कि पात्र खुद को पहचान पाए।

'*सरवर*' उजागर सिंह कंवल, दीवे दी लौ– गुरमेल सिंह '*घुमाण*, और पहकां दे पाछावे' जगवीर सिंह घुलाल के काव्य संग्रह इस वर्ष की कविता में इज़ाफा करते हैं। गंधाती ऋतु, गदधम रोशनी और तालाब आज प्रतीक भी है, व्यवहार भी, वाणी भी हैं, बोल तकरार भी। मुद्रा बदलते ही अर्थ सरक जाते हैं। हमारे अंदर जो है उसे बाहर ला पाने में 2014 की कविता एक राह खोज रही है। कवि के वास्ते रास्ते खोजना, खोलना दोनों जरूरी हैं। पंजाबी के ये तीनों रचनाकार अपनी सीमा में समर्थ दिख रहे हैं और काव्य धर्म निभाते हुए इस काम को कामयाबी के साथ पूरा भी कर रहे हैं। जहाँ रचनात्मकता

की समझ और अनुभव को अभिव्यक्ति में ढालने की क्षमता हो, कृति पाठक को ही नहीं, संपादक आलोचक को भी स्पष्ट कर रहे होते हैं।

राजनीति, आतंक, समाज धर्म, संप्रदाय प्रेम, ईर्ष्या आदि विषयों पर सदियों से लिखा जा रहा है लेकिन आज पंजाबी लेखक के पास ताजगी है, नयापन है, भाषा की नोक और संवेदना है, इन्हीं के आधार पर पंजाबी रचनाकार पत्रिकाओं में स्थान पा रहे हैं और सफल भी कहला रहे हैं। सम्मान, अभिनंदन पुरस्कार, अलंकरण कवि को लुभाते–सुहाते हैं तो उसके दायित्व को भी बढ़ावा देते हैं। नई और स्तरीय पत्रिका लेखक को बेहतर लिखने की प्रेरणा देती है तो सम्मानित, वरिष्ठ रचनाकार भी सहयोग देकर पत्रों–पत्रिकाओं के स्तर को उठाते, गौरवान्वित करते हैं।

आज बीसियों पत्रिकाएँ मार्केट में पंजाबी साहित्य के साथ घर कर रही हैं तो इतनी ही दूसरी पत्रिकाएँ हैं जो छोटे शहरों–देहातों के बाज़ार में तो नहीं आ रही पर पाठकों की सदस्यता के सहारे सीधे उनके घर, दफ़्तर, संस्था में, डाक से पहुँच कर उन्हें तृप्त करती, अपनी–अपनी जगह बना चुकी हैं। यहाँ पत्रिकाओं की भीड़ तो नहीं, उनके चेहरे और चरित्र हैं। साल में तीन अंक दे पाएँ या चार, ऐसी पत्रिकाओं में ठोस सार्थक उपयोगी सामग्री रहती है। अंकों में या विशेषांकों की योजना बनाकर, तरतीब से उन्हें तैयार किया जाता है। आमुख कथाएँ, लंबे सचित्र साक्षात्कार, कवि, कथाकार विशेष पर फोकस सामग्री, लेखक और पाठक को एक साथ उल्लेखनीय बना देती है। पंजाबी पत्रिकाओं के ऐसे सराहनीय अंक आज भी धरोहर हैं।

पत्रिका का शीर्षक नाम '*हुण* हो या '*फिलहाल*, '*ककाबारा* हो अथवा '*प्रवचन छिण*, मिन्नि नज़रिया, कहाणी पंजाब, सिरजणा कहाणी धारा, शब्द, शंख, अंगसंग पंजाब जो भी हो, होड़ लेती जान पड़ती हैं। अंग्रेजी हिंदी पत्रिकाओं के अनुकरण में भी ये सब पीछे नहीं। यों ही त्रिशंकु, मीरजादा, प्रीत–लड़ी, पंखड़ियाँ, महिरम, अक्स, सुआणी, घर–शिंगार, पंजाब एलटीएस 'साडे पिंड' अपनी–अपनी दिशा में विकसित हैं, चल रही हैं। पत्रिका बंद न हो तो उसके पाठक निश्चित हैं, यही सिद्ध होता है। शौकिया घर फूँक

तमाशा देखने वाले दम चुक जाने पर मैदान ही छोड़ बैठते हैं।

अकादमियों, राजकीय विभागों, पंथों संप्रदायों की पत्रिकाएँ एकरसता लिए होती हैं, जहाँ संपादक को गले पड़ा ढोल बजाना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि पंजाब का भाषा विभाग, लोक संपर्क विभाग, पंजाबी अकादमी दिल्ली, पंजाबी अकादमी, लुधियाना, जम्मू कश्मीर की साहित्य अकादमी, पंजाबी साहित्य सभा दिल्ली, पंजाबी भवन आदि से पत्रिकाएँ निकलती हैं, यहाँ इनका अपना-अपना स्तर माने रखता है। जन साहित, पंजाबी दुनिया, विकास जागृति, शब्द बूँद, समदरशी, आलोचना, शीराजा पंजाबी, समकाली साहित पत्रिकाएँ स्तरीय और मद्धम दर्जे वाली भी आ रही हैं। कहीं-कहीं तो 2014 में इनके अंक विलंब से भी छपते आते रहे हैं। जहाँ संपादकीय विभाग का रूझान साहित्यिक नहीं, वहाँ से प्रचार सामग्री या सामान्य स्तर के अंक भी मात्र खानापूर्ति करते रहे हैं।

जब मैं साल 2014 के बेहतर साहित्य की बात कर रहा हूँ तो अच्छी स्तरीय पत्रिकाएँ ही उन्हें प्रस्तुत कर पाई हैं। ऐसे तिमाही या अनियतकालीन रिसाले हैं, जिनमें 'शंख' (ग्रीष्मांक) अंगसंग पंजाब (शृंखला), मीरजादा (अक्तू. दिसं 14), त्रिशंकू – 68 प्रीत लड़ी, पंखड़ीआ इसी स्तर, झुकाव की कुछ और पत्रिकाएँ हैं। शिवदीप के संपादन में 'कूकाबारा' पत्रिका का दूसरा, तीसरा अंक आस्ट्रेलिया से प्रकाशित है, जिनका शानदार मुद्रण चंडीगढ़ में हुआ है। देवेंद्र सत्यार्थी, जसपाल दिओल, कुलवंत ग्रेवाल, पाल कौर, डॉ. योगराज, स्वदेश दीपक (स्व.), जतिंदर ओलख, जफर और तस्कीन आदि की रचनाएँ मुखरित हो रही हैं। आर्ट पेपर पर रंगीन छपाई ने इसे संग्रहणीय बनाया है। यों ही 76 पृष्ठों वाला कूकाबारा-3, मोहन त्यागी, अजमेर सिद्धू, सुखजीत, सुखपाल, अंशु मालवीय (अनु.), अरुंधती राय, हरपाल पन्नु आदि की रचनाओं में विविधता और एकाग्रता है। पुस्तकों से बेहतर सामग्री पत्रिका दे जाए तो उसे सहेजकर रखना पड़ता है।

पत्रिका पठनीय हो तो चल निकलती है, उस पर विवाद शुरू होते हैं, चर्चा में रहने पर पृष्ठों में बढ़ोतरी करनी पड़ती है तो प्रायः मूल्य में वृद्धि भी

हो जाती है। 'फिलहाल' इसकी मिसाल है। संयुक्तांक 20–21, अंक 22 संयुक्तांक 23–25 संपादकीय विवशता उसके देश से बाहर रहने अथवा किन्हीं निजी कारणों से ही यह हो रहा है। पाठक पत्रिका की प्रतीक्षा में रहें, स्टालों–दुकानों पर खोज–माँग कर पढ़ें, यह फिलहाल के संपादक गुरबचन की भी सफलता है। विदेशी सहयोग, आर्थिक और रचनात्मक, पत्रिका को अमीर करता है। मैटर की समझ, पहचान, प्रस्तुति भी अच्छी बल्कि कहें, श्रेष्ठ पत्रिका को आगे ले जाती है। सनसनी के मुहावरे में भी पाठक यहाँ लपकते हैं।

भ्रष्ट अदबी तंत्र पर परमिंदर जीत से केवल धालीवाल, मन–मोहन, शिवकुमार शर्मा से भी मुलाकातें समय के सत्य सामने लाती हैं। संपादक द्वारा लेखकों का चुनाव, फिर उनकी तेज तर्रार रचना का चयन फिलहाल को गति देने वाला है। दो–अढ़ाई सौ पन्नों की पत्रिका 100–150 रु. में खरीदते हैं पाठक, चूंकि फिलहाल में जान है। तबसरा, विचार चर्चा 'हवा' च हन सुर वसे होए' 'कलम बलैत डायरी, जिंदगी–मौत, दोस्ती सचित्र, अलादीन उर्फ, उन दिनों जैसे पठनीय स्तंभों के साथ परखकर ली गई खरी रचनाएँ फिलहाल का ही हासिल है। जावेद्र अख्तर, मिलखा सिंह, चैखव, दीद, जसिंदर हांस, गुलजार, अंबरीश, राहुल सिंह दस्तावेज़ी हस्ताक्षर यहाँ रेखांकित हैं। लोर्का की कविताएँ, काव्य भाषा की तलाश, पप्पू माटिए दा अमरीका जैसी सामग्री पंजाबी पाठक भी पढ़ना चाहता है।

'हुण' पत्रिका पंजाबी पत्रकारिता में एक डिपार्चर है। साहित्य परोसने की कला यहाँ संस्थापक अवतार जंडियालनी सिखा गए हैं। सुशील दुसांझ, वर्तमान संपादक इसे वैसा ही बनाए रखने के यत्न में हैं। रविंदर सहराअ, किरणमीत, मोहनजीत के साथ संवाद, साहिर पर, फैज, फरीद, भूपिंदर कौर प्रीत, चिंता चिंतन, दिल्ली में पंजाबी साहित्य, झरोखा, मूरतां सच्ची दास्तान, प्रकाशक दी डायरी, अपने सामने, उदास डायरी, रिश्तों का बीजगणित, विश्व सिनेमा पर बात अंक–27 को मूर्तिमान करते हैं। सितंबर–दिसंबर 2014 के हुण–28 माया एंजलो, जसवीर भुल्लर, शिवनाथ, जैपाल, राणा जसवीर,

जगजोत गिल, हरपाल पन्नू, गुरचरन भुल्लर – अमृता का तिलिस्म, तारन गुजराल, लाली बाबा, संपादकीय सहित 'हुण' का यह शुमारा भी चर्चित साल का ट्रेलर दिखा रहा है। एक साल की हर विधा का बकायदा विवरण भले पूरी पुस्तक की मांग करता हो, हमारी चेष्टा है कि प्रमुख उपयोगी, पठनीय व चर्चित झुकाव तो पाठक के सामने आने ही चाहिए।

पाठ योग्य काव्य में इस साल वरिंदर परिहार के काव्य संग्रह 'कण कायनात' की चर्चा रही है तो सरिंदर नीर के उपन्यास 'माया' पर नीतू अरोड़ा ने भी लिखा है। जगजीत सिद्धू गज़लकार के रूप में जाने पहचाने हैं लेकिन इनका कविता संग्रह '*जाण दे मैनूं* (मुझे जाने दो) जसंवत ज़फर की कलम से समीक्षा पर प्रस्तुत हुआ है। इसी तरह 'कैनेडा के गद्री योधे' सोहन सिंह पूनी की कृति पर सुरजीत भट्टी आदि ने चर्चा की है तो 'हेठली बोरी (उपन्यास हरमेश पालड़ी) पर कथाकार अतरजीत खुलकर बात कर पाए हैं। '*यात्री हाले परते नही* जैपाल का काव्य संग्रह है जिस पर हरबंस धीमान ने रीव्यू दिया है। "*धुप्प या ते रुक्ख*" जैसी कहानियों पर जसविंदर कौर बिन्दरा ने कलम चलाई तो गगनदीप शर्मा की कृति 'इकल्ला नहीं हुंदा बंदा', के लिए अमृतबीर कौर ने पैरवी की है। मै वी आद जुगाद' पर ज़फर की कलम पाठकों तक इसका परिचय दे पाई है।

चयन भर प्रस्तुत करूँ तो सावधानी के साथ कुछ कृतियाँ मेरे पास हैं – 'हरफ चदाआ – कमलप्रीत कौर सिद्धू की कविताएँ, अपनी छांवें – आत्मकथा – दलीप कौर टिवाणा, तलखियाँ – काव्य – सुशील शैली, बच्चियाँ लई किताबां – डॉ. बी. एस. रत्न, अजैव सिंह हुंदल – गज़लें – '*अजे ना गिण* मनमोहन दाऊं – उदाखीआं दा नूहा – कविताएँ और पंजाब दा सुपनसाज़ – एम. एस रंधावा (लेख–स्मरण) और ऐसी बहुत अन्य पुस्तकें भी लेकिन रोशनी, उजाला फेंकते आवरण छूने के लिए ही नहीं, पढ़कर कुछ कहने को भी विवश करते हैं। तां सुपणे की सोचणगे', मिट्टी बोलदी है, ऐली मेरी बात, क्रमशः रमन संधु, बलबीर माधोपुरी, तलविंदर सिंह की पुस्तकें हैं तो ठंडी धरती तपदे लोक – निंद धुतिआणवी का सफ़रनामा सूरज दा

41 HRD/16—11A

हलकीआ बिआन-- नवतेज गढ़दी वाला की कविता से रूबरू करवाती कृति है। मलाहां तों बिना – गज़लें – दीपक धनोवा, नाल तुरन दरिया-- निबंध – भूपिंदर सिंह सिदधू, पैंडा – उपन्यास – गुरदयाल दलाल, पंजाबी छंदबिधान -- जसविन्दर सग्गू, कुल कहानियाँ-- गुलजार सिंह संधु, विद्रोही कवि – परमजीत सिंह कद्दू, दारो धतिती, संकल्प वसीयत, अंगूठा, खुरदे रंगां दी गाथा, वर्जित सुर दामूक, संवाद – सुखदेव नडाला को मुंह बोलते रचणाओं में शीर्षक ही बहुत कुछ स्पष्ट कर रहे हैं। शिल्पी प्रकाशन की प्रस्तुति यहाँ दमदार है।

परमिंदर जीत, पंजाबी के वरिष्ठ कवि अमृतसर से 'अक्खर' नाम की मासिक पत्रिका निकालते हैं। 'सुपनींद' इनकी काव्य यात्रा का चरमबिंदु जान पड़ता है। '*मैं रेशम बुणदा हाँ* भूपिंदरप्रीत का कविता संग्रह नए मुहावरे को उभारता है। देविंदर कौर भारत में रहे, या बाहर कहीं भी, इनका रचनाकर्म चर्चा में रहा है। 'बही खाता' वाली देविंदर कौर को पाठक वर्ग स्मरण करता है। '*टप्पियाँ दे टापू* (लखविंदर सिंह वाजना), परदे सी ढोलणां (सुदेश मोदगिल तूर), शीशे दी सलेट (मीरा), सच दे आरपार (सिमरजीत गिल), खुदा खैर करे (राजिंदर आतिश) की रचनाएँ प्रतिवाद और प्रौढ़ कलम की गवाही देती हैं तो भविष्य के प्रति पाठक को आश्वस्त भी करती हैं, बेहतर लेखन के लिए। दर्शन आशट के संपादन में '*कलम काफ़िला* संकलन ध्यान खींचता है तो लोकप्रिय पंजाबी कवि सुरजीत पातर की लिप्यांतरित कृति 'खामोशीआं गौंदी शायरा' भी एक रसमय कविता लगती है।

'*छल्लां ते समंदर 'नज़रिया* संपादक एस. तरसेम द्वारा लिखे रेखाचित्र हैं। 'चंडीगढ़ वाया नंगशहर' कथाकार की जिंदगी के प्रसंग हैं, आत्मकथा के रूप में, जिन्हें जिंदर ने लिखा है। मंटो तां अजे जीऊंदे' मोहन भंडारी द्वारा अनूदित संपादित किताब है। लघु कथा, मिनि कहानी के रचनाकारों '*भरिंडा दा छत्ता* बलबिंदर दुकमावाली का संग्रह है।

साल 2014 के साहित्य में कविता सर्वाधिक सामने आ रही है। कहानी और उपन्यास का प्रकाशन भी बढ़चढ़ कर हो रहा है। राजनीति, सामयिक

संदर्भ, आर्थिक प्रसंग, प्रेम, संप्रदाय, नारीचिंतन, दलित विमर्श पर भी कृतियाँ आती रही हैं। सामाजिक विज्ञान, प्रतियोगी परीक्षार्थ, सिनेमा, सेक्स, मनोरंजन, टी.वी., मीडिया, तकनीक जैसे असंख्य विषयों पर विचारार्थ वर्ष में आई पुस्तकों से भले दुकानें भरी पड़ी हैं, इनके पाठक जब पाठ्य–पुस्तकों की तरह खरीद कर पढ़ेंगे, तभी छपे शब्द की आबरू सलामत रह पाएगी।

'*इच्छाधारी*, *चन्न सूरज दी वहिंगी* पुस्तकें भी सुरजीत पातर की बिक्री में रही हैं। 'कैक्टस दी खुशबू' 'हनेरां वाली बीबी' नरिंदरपाल और रणजीत राणा की कलम से आई किताबों के साथ' '*रुत्त–रंग*' सुखवत कौर मान का कहानी संग्रह है जिसने पाठक अर्जित किए हैं। 'कलम दा नेतर, वर्नदीप, नीले तारियां दी मौत – जोगिंदर कैरों का उपन्यास, साहिबां दी दुचित्ती – सिद्धू दमदमी, घुंघरू कथा – संपादित संकलन, आ बेटा क्रांतिपाल (रायस्वर्ण लक्खोवाली) जैसी रचनाएँ आती रहीं तो हास्य व्यंग्य की चार पुस्तकें – 'हऊ परे' – (हरि), रह के चुप नजारे लुट्ट – (प्रदीप सिंह मौजी), रम्मी रन्नी के कारनामें – मंगत कुलजिंद, काठ दी हांडी – संपादक के. एल. गर्ग, अपनी विधा में इज़ाफा करती हैं। मीरजादा – (संपादक कुलदीप सिंह बेदी), व्यंग्य को समर्पित एक तिमाही पत्रिका इस साल भी निकलती रही है। एम. के. राही 'की बणुं इंडिया दा' में कटाक्ष के छक्के लगाते रहे हैं। हास्य रस में प्रीतवाल सिंह की चार किताबें लोट–पोट करने पर उतारू हैं – दब्ब के हंसो, हंसना ते हंसाउणा, और हंसो ते हंसाओ। अमृत से प्रकाशित इन किताबों को हर आयु वर्ग का पाठक पढ़ता, सराहता रहा है।

हरमीत विद्यार्थी ने काव्यक्षणों को विकसित किया है। '*उधड़ी होई पैं*' संग्रह में एक त्रास, खलिश और त्रासदी के आयाम हैं जहाँ हरमीत विद्यार्थी का सजग कवि पिघलती मोमबत्ती, या गलती हुई बर्फ की तरह अपने अस्तित्व को बिखेरती कीमतों की बात करते हैं। लघु की विराटता और सुमेरु का वामन रूप यहाँ एकाएक पिरोया जा रहा है, हार की तरह।

'तुम्हारे पास आने को
बस, यों ही मन नहीं करता,

हे फरीद! गली में कीचड़ भी नहीं
और घर से फासला भी ज़्यादा नहीं
बरसात तो देर हुई
कभी आई ही नहीं,
बस, यों ही मन नहीं करता
फरीद! तुम्हारे पास आने को।'

यों ही अनिल आदम की पुस्तक 'कविता बाहर उदास खड़ी है' एक दूसरे स्तर पर पहचान बना पाई है। उसकी सोच है–

"हे शब्दों! कविता बनो
मुक्त कर दो मुझे मेरे भ्रम से कविता बनो"

अंधेरे में रोशनी की तलाश अनिल आदम का संकल्प है। एक कवि राजविंदर मीर हैं– युवा और प्रतिबद्ध। इन्हें विश्वास है शब्दों का, संकल्प है इनके पास अर्थों का। 'लाल परिंदे' के रचनाकार का कथन है–

"प्रेम का अर्थ, कम्युनिस्ट होना भी तो है!
और कम्युनिस्ट का अर्थ है
संपूर्ण मानव के कहीं आस पास रहना।"

संग्रह *'लाल परिंदे'* भीड़ से बाहर खड़ा प्रभावोत्पादक है, कविता की पहचान की तरह।

कविता की कलात्मकता इसके 'कविता' बने रहने में ही है। इसे जब पहेली या गद्य अथवा कुछ और रूप दे दिया जाता है तो हैरत भी होती है। इधर पंजाबी कवियों ने गीत, गज़ल या कविता के साथ खिलवाड़ भी बहुत किया है। पर, उनकी बात यहाँ नहीं। मजाक में काव्य कर्म करने या फैशन के तौर पर कवि–शायर कहलाने वालों की लंबी सूची है। शायद इसलिए भी कि गंभीर आलोचना का भी तो पंजाबी साहित्य में अभाव है। आलोचक ढेरों हैं लेकिन शुद्ध आलोचना के दर्शन दुर्लभ हैं। कहानी और पंजाबी कविता के मूल्यांकनार्थ अकादमिक स्तर पर तो पारंपरिक रूप में किताबें छप रही हैं लेकिन व्यावहारिक आलोचना संतुलित–तटस्थ नहीं आ रही। प्राध्यापक,

प्रोफेसर, जो–जैसा समझते है स्नातकोत्तर कक्षा में पढ़ा रहे हैं, लकीर के फकीर होकर समसामयिक ताजा विश्व पर भारतीय काव्य को परखने के उनके औजार ही शायद कुंद हो चुके हैं।

कथा संग्रहों में '*ढाल*–गुरमीत कड़ियालवी '*आवाजां–जिंदर*' जिल्हण – गुरदयाल दलाल', '*बेहड़े दी मिट्टी* – रत्न सिंह कवल, तेरा वादा, अशोक वशिष्ट, दार छतिति – प्रीतनीरपुर', मैं क्यों जी रहा – करमजीत सिंह नडाला, साडे धीआं पुत्तर – अवतार रोडे, कुझ तेरीआं कुझ मेरीआं – दीप्ति बरूआ, गलत सलत जिंदगी – परगट सिंह सर्तोज, अभिमन्यु – कुलविंदर कौशल, गरोसरी – साथी लुध्यानवी, आपणी जूइ–मुखतार गिल, '*नंगे पैर – जावेद बाबर दार, अमृत लिबास – रिफअत* से लेकर कहानी में '*निक्कीआं बडीआं धरतीआं* – इकबाल रामूवालीआ, '*गुलानारी रंग*– बी. एस. वीर, 'जिज्विआं दी सरगम' – महिंदर रिश्म, '*सुपने सच होणंगे*' – जोराबर सिंह कंसल, *किते सुपणे टुट्टन जाण* – हरजीत कौर, *अधूरा दान*– गुरमेल सिंह घुमाण, *खोज* – हरमिंदर चहल, *कुर्सिया ते आम आदमी* – सुखमिंदर सेखो, मेरा ट्रक–बरजिंदर ढिल्लो, शोपीस – सुरिंदर सिंह राय, दो छुट्टा सीर – रणजीत राही तक, इन तीन पीढ़ियों के कथाकारों के चालीस पचास कहानी संग्रह पंजाबी में आए हैं। चार सौ कहानियों में से 2014 में लिखी छपी कथा रचनाओं की पहचान – परख चुनौती तो है लेकिन इसे स्वीकार भी करना चाहिए। प्रथम श्रेणी के अथवा सर्वोत्तम पंजाबी कथाकारों की कृतियों के नए संस्करण तो आए, पर नए ताज़ा संग्रह संकलन कुछ ही देखने में आए हैं।

हाँ, इस दौरान जगजीत बराह, गुरपाल सिंह लिट्ट, अमरजीत सिंह अक्स जैसे कथाकारों की कुछ रचनाएँ साहित्य अमृत, समकालीन भारतीय साहित्य, नया ज्ञानोदय, किस्सा जनपथ जैसी पत्रिकाओं में हिंदी अनुवाद रूप मे प्रो. योगेश्वर कौर द्वारा प्रकाशित करवाई, सराही भी गई हैं। उपन्यास '*अन्नदाता*' (बलदेव सिंह) के पंजाबी अनुवाद पर 2014 का साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार देने की घोषणा हुई है। बीसवी सदी का पंजाबी काव्य 750 पृष्ठों का वृहत् ग्रंथ साहित्य अकादमी से छपा है जिसका पंजाबी से अनुवाद योगेश्वर कौर और फूलचंद मानव ने किया है। यों ही एन. बी. सी. से संतोष

सिंह धीर के चुनींदा कहानी संकलन के हमारे अनुवाद विचारधीन वर्ष 2014 में ही प्रकाशित हुए है। नेशनल बुक ट्रस्ट से इसी तरह महिंदर सिंह सरना और नवतेज सिंह के कथा संकलन भी हिंदी में यों ही, इस वर्ष प्रकाशित हुए हैं।

पत्रिकाओं में 2014 की बेहतर कहानियाँ पढ़ने को मिली हैं। 'खत लई शुक्रिया'– जसवीर राणा (हुंण, सितं–दिसंबर), भले दिन– गुरदयाल दलाल– (समंदरशी – मई जून), दुल्ला भाऊ–जगजीत गिल, (हुंण, सितं–दिसं), कूरे–जतिंदर हांस (फिल–हाल–22, जुलाई), जरनैल सिंह (कैनेडा) की कथा–हढ़ (बाढ़) सिरजणा में, सिमरन धालीवाल स्टारटिंग प्वांइट, शब्द–अक्तू. दिसं. के साथ ही पाकिस्तानी पंजाबी कथा शिल्पी खालिद फरहाद– मैमोरियल ट्रस्ट– 'शक'– (अप्रैल–जूनांक) में स्मरणीय रचना है। प्रथम कोटि की इन रचनाओं के साथ कुछ अपेक्षाकृत नए कथाकारों– बलदेव दींदसा–नीच; कुलदीप मान – मिल गया नेकलैस, मेजर मांगर हड्डा रोढी, एक लावारिस घिसघिस– बलवीर परवानी, नाड़ाविच ज़मिआखन– जसपाल पानखेड़ा, एह मैत्थों नी हुंदा–जिंदर, विदिशा दी बावा वसंती– मनमोहन, रंग दी बाजी– अजमेर सिद्धू, 'मुहबतां'– हरप्रीत सखा, जैवड्ढी– तृप्ता के. सिंह, सारा दिन कुत्ते भकाई– देशराज काली, जंवाल–बलविंदर ग्रेवाल, शाकाहरी–केसरा राम आदि उभरे हैं। प्रवचन के कथा अंक में ही अनेक बेहतर कहानियाँ संकलित हैं।

कैनेडा के एक परिवार ने पंजाबी में इसी साल एक महत्वपूर्ण पुरस्कार की घोषणा की है। सर्वाधिक राशि वाले इस 'ढाहां' पुरस्कार में पंजाबी कथाकार जसवीर भुल्लर– *'इक रात दा समुंदर* और *'कबूतर मुंडेर और तालियां*– जुबैर अहमद शामिल हैं। राष्ट्रीय, प्रांतीय पंजाबी साहित्य पुरस्कार अब तक एक, दो या पाँच लाख तक ही दिए जाते थे। कनाडा के ढ़ाहां पुरस्कार ने कद्दावर लेखन के लिए यहाँ एक ऊँची जमीन तैयार की है। यहाँ गुलजार संधु, मोहन भंडारी प्रेमप्रकाश जैसे वरिष्ठ लेखक भी नए कथा संग्रह नहीं दे पाए। हाँ सोचने वाली बात– रत्न सिंह, पैंशन–गुलजार संधु, नींद–महीप

सिंह, सराय– सुरिंदर रामपुरी, कब्रस्तान चुप्प है– लाल सिंह, धरत दा रुदन– मुख्तार गिल, इक शबद– जोरा सिंह संधु जैसे कुछ प्रभावोत्पादक काम पंजाबी कहानी में आश्वस्त करते हैं कि आशा गुम नहीं हो रही, कायम है।

पंजाबी उपन्यास बराबर प्रगति पथ पर अग्रसर हैं। हर साल सैंकड़ों उपन्यास छपते, पढ़े जाते, जमा होते रहते हैं। हर आयुवर्ग के पाठक के वास्ते पंजाबी में उपन्यास उपलब्ध हैं। *'धूप दरिया की दोस्ती', 'कौरव सभा', 'अन्नदाता'* जैसे नहीं तो आसपास की उन्नीस इक्कीस उपन्यास पंजाबी में आ ही रहा है। एह जनम तुम्हारे लेखे, अफलातू, बहुत सारे चुरस्ते, मोर उडारी, खाली खूहा दी कथा', लोटा जैसे श्रेष्ठ उपन्यास क्रमशः गुरबचन सिंह भुल्लर, बलदेव सिंह, बलबीर परवाना, हरजीत अटवाल, अवतार सिंह बिलिंग और दर्शन सिंह की कृतियाँ हैं। इनमें सामाजिक सरोकार, राजनैतिक उठापटक, प्रेम, विरोध, मैत्री, कामुकता, बहुत कुछ भरा रहता है। श्रेष्ठ कृति हर पाठक को संतुष्ट कर पाए, यह जरूरी नहीं। लेकिन पंजाबी के ऐसे समर्थ सक्रिय लेखकों की कलम ने 2014 में कुछ बेहतर कृतियाँ देकर हमें संपन्न किया है। पाठक, संपादक, आलोचक का सही सुख कृति–पाठ के आनंद में है। आप आनंद न ले पाएँ तो वह पाठ ही क्या? उपन्यास 'हिलते दाँत, उखड़े लोक', पक्कीआं वोटां' क्रमशः के. एल. गर्ग, संतवीर, उजागर सिंह ललतों के हाल ही में चर्चा में आए कुछ उपन्यास हैं। यहाँ विभाजन, प्रवास विस्थापन के साथ पेट और परंपरा के कई संबंध हैं जो इन उपन्यासों में उभरते हैं। के. एल. गर्ग कथाकार व्यंगकार हैं, इन्हें चुटकी लेने, व्यंग्य करने में मजा आता है। सफल रचनाकार के उपन्यास, कहानियाँ ओर व्यंग्य भी चर्च के केंद्र में रहे हैं। थके हारे लोगों के साथ दमनकारी प्रवृत्तियाँ भी समाज के सामने आती हैं। इनके मुख्य पात्र गौण कथानक में रसरंग भर कर उन्हें एक बार पठनीय बना जाते हैं।

पंजाबी औपन्यासिकता के शिखर को स्पर्श करने वाली कृति को आज मैं भी खोज रहा हूँ। भरती के माल को सामने लाकर कोई एक बार खुद को उपन्यासकार तो भले कहलवा ले, इतिहास या अकादमिक स्तर पर ये लोग चर्चा से वंचित रह जाते हैं।

अमृता प्रीतम, दलीप कौर टिवाणा, जसवंत सिंह कंवल, सुरिंदर सिंह नरूला या फिर एक ही सार्थक सफल उपन्यास देने वाले जगजीत बराड़ की तरह, आज का लेखन उस तरह उल्लेखनीय नहीं आ रहा। फिर भी आंचलिकता, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, अनैतिकता, वैज्ञानिक सोच, नई टैक्नोलॉजी, शिक्षा के बदलते बिगड़ते अनुपात इधर पढ़ने में आए उपन्यासों में देखने योग्य हैं। पंजाबी उपन्यास हिंदी अथवा अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से दूसरी भाषाओं में भी जा रहा है, इसे एक सुखद संयोग ही कहा जाएगा। साहिब सिंह गिल इसका उदाहरण हैं।

आलोचना के क्षेत्र में सैद्धांतिक, व्यावहारिक और अकादमिक काम सामने आ रहा है। तुलनात्मक अध्ययन, शैक्षणिक–अकादमीय समीक्षा, पाठगत अध्ययन जैसे विषयों में आज आलोचना उर्वर है। *पंजाबी नावल सिद्धांत ते समीखिआ, पंजाबी दलित कहानी, साहित अधिऐन विधियाँ अते पंजाबी कविता 'इक्कीवीं सदी दी पंजाबी कहानी', 'पंजाबी कविता' प्रसंग ते प्रवचन',* पंजाब दे कबीले, मित्तर सैन मीतः सवाली दे रूबरू' अथवा ऐसी ही कोई एक दर्जन अन्य कृतियाँ यहाँ गिनाई जा सकती हैं, जिन्होंने आलोचना, समीक्षा, खोज–शोध या गहन अध्ययन की दिशा में कपाट खोले हैं। यहाँ से ठंडी हवा आ रही है। पद या डिग्री पाने के लिए हुए प्रयत्न इनसे अलग हैं। आलोचना की बात करें तो गुरु नानक देव यूनि. के प्रो. हरिभजन सिंह भाटिया का गंभीर कार्य सामने आया है। डॉ. सर्वजीत सिंह का काव्यालोचन और डॉ. सतीश कुमार वर्मा, पंजाबी यूनि. पटियाला का काव्यालोचन उल्लेखनीय है। *'पंजाबी नाटकः बीज तो बिरख तक'* सतीश वर्मा की रचनात्मक आलोचना की बानगी है। डॉ. दूरिया ने पंजाब के कबीले पर पुस्तक देकर एक बार फिर सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। पंजाबी लोकधारा के संग्रहः संपादन ते मुलांकण दवारा इसमें अंग्रेजी विद्वानों के योगदान को दिखा कर डॉ. सैमुअल गिल ने खुद को मुख्य धारा के सम्मुख प्रस्तुत किया है। डॉ. आतम रंधावा कृत 'साहित अधिऐन विधियाँ समकाली पंजाबी कविता' एक नोटिस लेने के योग्य कृति सामने आई है। पंजाबी आलोचना, मूल्यांकन, समीक्षा,

शोध, खोज, संपादन, अनुवाद के क्षेत्र में शब्द के अनेक उल्लेखनीय कार्य संपन्न हुए हैं। पाश्चात्य मूल्यों– मानकों के आधार पर भी पंजाबी विद्वानों ने सार्थक, उपयोगी काम करके दिखाया है। इधर पत्रिकाओं में लेख, निबंध, सर्वेक्षण और शोधांश समय–समय पर सामने आए हैं। विश्वविद्यालयों से भी पंजाबी या अन्य विभागों से पत्रिकाएँ निकली हैं जिसे आज का आईना मान कर हम कल की संभावनाओं पर विचार कर सकते हैं।

'आलोचना' पत्रिका पंजाबी में लुधियाना से पंजाबी साहित्य अकादमी प्रकाशित करती है जिसमें विद्वान लेखकों, शोधार्थियों के आलेख आते हैं। अन्यान्य पत्रिकाओं में भी सामयिक निबंध, आलोचनात्मक टिप्पणियाँ छपती रहती हैं। यों पंजाबी की गंभीर खास पत्रिका 2014 में शुरू नहीं हुई। '*परख* पंजाबी यूनि. की शोध पत्रिका है। गुरु नानक देव यूनि. भी इसी तरह अनुसंधान, शोध, खोजकार्य को प्राथमिकता देकर पंजाबी में बहुत कुछ प्रकाशित कर रही है। इन और ऐसी यूनिवर्सिटियों के भी कुछ अपने पब्लिकेशन ब्यूरो हैं, जहाँ से अंग्रेजी हिंदी के साथ पंजाबी में भी पुस्तकें, पत्रिकाएँ, आलोचना ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं। सरकार की ओर से छपने वाले इस कार्य का स्तर क्या होता है, इस विषय पर चर्चा करना मुनासिब नहीं है। '*कुंभ* अनियमित पत्रिका ज़ीरकपुर (मेरे शहर) से प्रेम गोरखी, इंद्रजीत पुरेवाल के संपादन में निकल रही नई पत्रिका 2014 में ही शुरू हुई है। इसका दूसरा, तीसरा अंक पत्रिका की स्वस्थ सोच, संतुलित संपादन का प्रतीक है। विदेशी–प्रवासी साहित्यानुरागी और लेखक ऐसी पत्रिकाओं को बखूबी स्पांसर करते हैं। बलदेव सिंह, नछत्तर, सुरजीत लैंस, बलवंत चौहान के साथ तीसरे अंक में हरभजन खेमकरजी, तारन गुजराल, जतिंदर हांस आदि की पठनीय, रोचक कहानियाँ इसमें छपी हैं। गजलां, कवितावां सत्थ, दसवां दरवाजा, लेख, यात्रावृत्त, पुस्तक समीक्षा इन अंकों में नियमित स्तंभ की तरह शामिल हैं। दिन परत आणगे– कविता– कमल देव पाल, कविता दी लाट– काव्य– ओंकारप्रीत, 'शब्दां दी संसद' कविता– लखविंदर जौहल, पा–ए दिल्ली–कथा– महिंदर सिंह ततला, गलत मलत जिंदगी– परगट सतोज

(कहानी), खाली थावां, काव्य– अंजायन हुंदल और 'अजे न गिण' काव्य इसी कवि की नई छपी पुस्तकें हैं। धरती छौं गई–लेख– गोपाल सिंह सखीरा, अणदेखी अग्ग– कथाएँ–तेलूराम कुहाड़ा, नवें अरथांदी तलाश–काव्य–दलजीत गिल, बारां बुहे– हरजीत सेखा, अमरीका दी चोगनी पंजाबी गज़ल'– सं– सुरिंदर सोहल, इन्द्रजीत पुरेवाल, गुन्ही मिट्टी–सर्वजीत कौर सोहल, हवन– सुरिंदर सिहरा, जापानवाद–केवल कलोटी, पोरस–सुरिंदर नेकी, रोशनी दी पुस्तक– बलदेव ग्रेवाल, लसरांवाला परदा– तरसपाल कौर, रंग मंडल सुरजीत कलसी, पंजाबी पिंगल– जसवंत नेगोवाल, दिल दा दीवा वालिआ– मलकीत मीत, जैसी ताजा कृतियों ने भाषागत ताज़गी, शिल्प और शैली में नवीनता का रूख इस तरह दिखाया है कि पाठक बंधा–सा रहता है। साहित्यिक दृष्टि से कवि परमिंदरजीत के संपादन में 'अक्सर' मासिक सर्जन और संज्ञान की जरूरी पत्रिका है। अब इसमें भी प्रवासी काव्य, विदेशों में रचित पंजाबी साहित्य पर चर्चा रहती है। कविता की संपूर्ण पत्रिका के रूप में इसे हम आँकते हैं। दिल्ली से प्रकाशित '*अक्स*' और '*सुआणी*' मालिक कथाकार अमरजीत सिंह संपादित करके लंबे अर्से से पारिवारिक पत्रिकाओं का दायित्व निभा रहे हैं। कभी धर्मयुग या अंग्रेजी में इलस्ट्रेटिड वीकली आया करती थी, उसी सूझ संमझ के साथ पंजाबी की प्रथम पारिवारिक पत्रिका '*अक्स*' प्रकाशित हो रही है। '*सुआणी* (औरत) महिलाओं की पहली पंजाबी की श्रेष्ठ सचित्र पत्रिका रही है।

'*अक्स*' जैसी समर्थ–संपन्न और स्तरीय पत्रिका ने ही 'मरजाणी'– कविता कुलवीर कौर विर्क, गुंझला– राम सिंह सोहल, मैं क्यों जी रिहां– कहानी – कर्मजीत नडाला, आईना– नरिंदर कौर छाबड़ा, कोमल तारे– बाल काव्य–कमल, बांके दरिया–हाईकु–कश्मीरी लाल चावला, भापा प्रीतम सिंह जीवन यात्रा– भगवान जोश, हाईकु बोलता है– नितनेम सिंह, जिंदगी दा दरिया– जोगिंदर निराला, धोखेबाज शेर– मास्टर सुखराम (बाल कहानियाँ आदि पुस्तकों का नोटिस लेकर इन की समीक्षा प्रकाशित की है। नाट्य कृतियों, बाल साहित्य, व्यंग्य लेखन पर सलक्ष्य बात करना–लिखवाना,

संपादकीय सूझबूझ से ही 2014 में संभव हो पाया है। नवनिदरा घुम्मण के नाटक "*साडा जगों सीर मुकिआ*" तारिका–प्रोफेसर नवबिंदरा का उल्लेखनीय नाटक है तो 'कथा ते पटकथा' फिल्म और टीवी लेखन में पंजाबी–हिंदी कहानियों के नाट्य–रूपांतर, स्क्रिप्ट प्रस्तुत करती डॉ. लक्खा लहरी की एक पहलकदमी है। इसमें छात्रों, नाट्यकर्मियों, टीवी, फिल्मी कलाकारों और शिक्षण–प्रशिक्षण से जुड़े लोगों के लिए मनोहर शुक्ला, राम सरूप अणरखी, बलदेव सिंह धालीबाल की कहानियों– साजिश, कब्जा मेरा की कसूर, खारा दुद्ध, और '*कारगिल*' पर आधारित नाट्य रूपांतरित–स्क्रिप्ट, शैली और भाषा का दर्शन समझाया बताया गया है। इसमें पूर्व पंजाबी में ऐसी कृति देखने पढ़ने को नहीं मिली। विचाराधीन साल के साहित्य में यह भी एक उपलब्धि है।

'*मेरी कैनेडा यात्रा*'– हरजिंदर वालिया, 'अणलिखे वरके'– लखविंदर जौहर, 'आखरी मुकाम'– उपन्यास–ओम प्रकाश गासो, 'मकान'–ओ. पी. शर्मा, डोगरी से अनुवाद-इच्छुपाल, 'ओहला'– लंबी कविता-इच्छुपाल और चितकबरी शाम– काव्य – सुवेग सद्धर वर्तमान प्रकाशन नई दिल्ली की प्रकाशित पुस्तक सहित पंजाबी प्रकाशन विविधता लेकर पाठक वर्ग को तृप्त कर पाए हैं। काव्य संग्रह 'बिन दस्तक'– परमजीत परम 'कलम काफलां'– सं. दर्शन आशट, 'प्यास'– अमरजीत कौंके, 'कदबोलांगे'–कर्म सिंह ज़ख्मी, 'शीशे दा शहर', 'बुक्कल' दोनों चरन सिंह की काव्य रचनाएँ पुस्तकाकार पाठकीय संतोष में वृद्धि करती हैं।

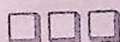
पंजाबी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार गुरदयाल सिंह ज्ञानपीठ मार्ग, जैतों का पंजाबी यूनिवर्सिटी द्वारा मानद डी. लिट. प्रदान की घोषणा सुखद एहसास देने वाली लगी। मढ़ी दा दीवा, परसा जैसी चर्चित लोकप्रिय कृतियों के लेखक गुरदयाल सिंह अलग पहचान के मालिक हैं। बलदेव सिंह एक लंबे समय तक नेशनल बुक ट्रस्ट के साथ–कार्य करके निवृत्ति के बाद पंजाबी साहित सभा, दिल्ली के पंजाबी भवन में डायरेक्टर नियुक्त हुए हैं तो रवैल सिंह दिल्ली यूनि. में प्रोफेसर पद पाने में सफल हुए हैं।

'*जो किछु कहिणा* – हरकंवलजीत साहिल, मेरी पहिली कमाई– नृपेंद्र रत्न, यादां दे कारवां– सुदर्शन सिंह मिनहास, केवल छांलीकाल दीआं नाट जुगतां– गुरमीत हुंदल, समकाली पंजाबी कविता– नारी परिपेख– सुनीता शर्मा, अजायब सिंह हुंदल– थीमक अध्ययन– डॉ सुनीता, लाल सिंह दिल्ल दीआं गज़ला– (सं.) परमिंदर बेनीवाल, झक्खड़ा च वलदी मशाल – सुखदेव प्रेमी, पंजाबी कविता ते उत्तर नारीवाद– प्रवीण कुमार, कवि कथाकार नृपेंद्र रत्न दी वारतक रचना– कतरना कविता दी आबशार– चरन सिंह, अलबेला सिंह– बलविंदर फतेहपुरी, जीवन दा अंतिम पड़ाव'– सं. इकबाल कौर सौंद, सक्खणे धड़ – जसवंत कड़ियाल जैसी कृतियाँ, विधा विविधा में साल 2014 के पंजाबी साहित्य में श्री वृद्धि करती हैं तो हरमेश कौर योद्धे कृत '*साडा किस्सा साडे गीत*', बोली में पावां, फुलकारी, '*रब्बा कदे मिलिए*' लोक जीवन को प्रकाशित करती चारों पुस्तकें भी ध्यान मांगती हैं। समे दा दरिया– गुरमीत, तां सुपने की सोचणग'– रमन संधु, ते मैं आया बस–स्वर्णजीत सवि, चितवणी– रविंदर भट्‌ठ, साऊथाल दा सूरज– रणजीत धीर, बुल्ला नच्चे तार दवल्ले– जोध सिंह, मैं सच कित्थे बोलां (नाटक)– गुरमीत कौर संधावा सिसकीआं– रामिंदर जिंह, मारूथल दी झील–जिंद मांधी दा संवाद– बख्श आपणी होंदलई जूझदी' नसीबो– हरप्रीत कौर, दिल दा दीवा बालिआ– मलकीत, देहां दे उपनाम– परमिंदर जीत, घर–घर अरतिंदर संधु, हौजखास दा बूहा–जसबीर भुल्लर, त्रासदी माईफुट (अनुवाद)– रमेश उपाध्यास, रूहराग– प्रभजोत सोही, खरा सौदा– डॉ. सुखदेव सखों जंगल दी अग्ग– हांकम सिंह गालिब, झुमके– कुलजीत मान जैसी किताबों ने साल चौदह के साहित्य में इजाफा ही नहीं किया, नई लहर, नए भाव, नवीन प्रस्तुति भी शामिल की है।

पत्रिकाएँ साहित्य एकम, त्रिशंकू, प्रतिक्रय, प्रतिमान, समकाली साहित, मिन्ती आदि का योगदान इस साल के साहित्य को यों रेखांकित करता है कि नवीन विधाएँ भी यहाँ अब जुड़ने लगी हैं। '*कहानी पंजाब* त्रैमासिक भारतीय साहित्य पर भी सामग्री देता रहा है। '*कहाणी धारा* के मराठी दलिक कहानी अंक' और 'यादें' अपनी तरह से बात कर रहे हैं। '*जमीन* 17–18 में कई

विधाओं पर रोचक तफसील पेश हुई है। '*समकाली साहित*' के अंक करनजीत सिंह, दर्शन सिंह के संपादन में आ रहे हैं। इमरोज, रविंदर रवि, सैलाबी, इंदे, वचित कौर, नौशहरवी, सुरजीत पातर, परमिंदरजीत, गुरबचन भुल्लर, प्यारा सिंह भोगल, प्रेम प्रकाश आदि का योगदान पत्रिका को पठनीय बनाकर नए कीर्ति सदन स्थापित कर सका है। खुशवंत सिंह, अमरजीत चंदन, मनमोहन, प्रीतम सिंह, गुरचरण रामपुरी, दूंदे जैसे रचनाकार यहाँ खुलकर लिख पाए हैं। उन झुकावों का त्रैमासिक सिरजणो के अंक 172–175 तक उल्लेख हैं जो नए मूल्य, पाठगत अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं।

उपन्यास गोदी हिरणी– गुलजार संधु, बुल बुलियां दी काश्त–केसरा राम, जलालत– सरूप सिआलवी, 'बदले दी पतझड़– परमजीत जज़्ब, अस्सी कोह दी दौड़– गुलजार सिंह संधु, कल्लीआं कारीआ– लक्की शर्मा, बर्फ बणिआ हां– बलदेव सीहरा, आवाज दी वित्थ तों– रमेश कुमार, मेरे चोणते गीत– शमशेर संधू, पटियाला विरासत दे रंग– उजागर सिंह, पंजाब दी तस्वीर– वुध सिंह नीलो जैसी तीन सौ से अधिक पुस्तकें इसी विचाराधीन साल में देखने को मिली हैं।



10

मणिपुरी साहित्य

डॉ० ह० सुवदनी देवी,
चांदम इङो सिंह

साहित्य और समाज में अटूट संबंध है। समाज की परिस्थिति एवं वातावरण से ही साहित्य उपजता, पनपता, फूलता-फलता है। जैसा समाज होगा वैसा साहित्य का रूप बनेगा। साहित्य अमुक समाज के लोगों के सुख-दुख, हर्ष-शोक, प्रेम-पीड़ा आदि संवेदनाओं एवं मनोभावों की अभिव्यक्ति है। मणिपुरी साहित्य की धारा भी समय की गति के साथ-साथ बहती रही है, समयानुकुल अपना रूप, रंग बदलती रही है। आज का मणिपुरी साहित्य तत्कालीन मणिपुरी समाज के रंगों से रंगा हुआ साहित्य है। वर्तमानकालीन मणिपुरी समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों, खान-पान, रहन-सहन तथा घटित सभी छोटी-मोटी घटनाओं एवं समस्याओं और इनसे प्रभावित मणिपुरियों की मनोदशाओं का दर्पण एवं विवरण है आज का मणिपुरी साहित्य। आलोच्य वर्ष यानि 2014 में प्रकाशित मणिपुरी साहित्य का संक्षिप्त परिचय निम्नवत् दिया जा रहा है-

कविता :

मणिपुरी भाषा में कविता सबसे ज्यादा प्रकाशित और सबसे ज्यादा पढ़ी जाने वाली साहित्यिक विधा है। इस वर्ष भी कविता की पुस्तकें बड़ी संख्या में प्रकाशित हुई हैं। इस वर्ष प्रकाशित मणिपुरी साहित्य की करीब 200 किताबों में करीब 100 यानि आधी संख्या तो कविता की पुस्तकें हैं। बाकि आधी अन्य साहित्यिक विधाओं की किताबें हैं। आजकल मणिपुरी में

छोटी–छोटी कविताएँ लिखने का प्रचलन है। इस प्रकार की कविताओं में कवि की क्षणिक अनुभूतियों तथा मन के आवेगों को बहुत ही कम चुनिंदे शब्दों के साथ उतारा जाता है। इस प्रकार की कविताओं में ज्यादातर वर्तमानकालिन, समकालीन मणिपुर की सामाजिक समस्याओं जैसे – भ्रष्टाचार, बेरोजगार संबंधी शिक्षित युवकों की समस्याएँ, पुरुषों के द्वारा महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार, उग्रवाद की समस्या आदि समस्याओं का भरपूर चित्रण पाया गया है। प्रेम–प्रणय हर युग में प्रासंगिक रहता है, मनुष्य के हृदय में सदाबहार कायम है, मणिपुरी कवियों ने प्रेमाधारित कविताएँ भी बड़ी तादाद में लिखी हैं। आज का मणिपुरी समाज अलगाववादी एवं उग्रवादियों की समस्याओं से घिरा एक संवेदनशील समाज है। वर्तमानकालीन मणिपुरी समाज में इन समस्याओं का शिकार गरीब, बेसहाय, बेगुनाह रोजी–रोटी कमाकर जीनेवाले लोग ही होते हैं।

वांलेनथोइबी मणिपुरी साहित्य में प्रखर युवा कवियों में एक है। '*तिङ्खंगी लुहुप* (काँटे का ताज) इस वर्ष प्रकाशित वांलेथोइबी का कविता संग्रह है। उनकी सभी कविताओं में वर्तमानकालीन मणिपुरी समाज का साक्षात् प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। वास्तव में उनकी कविताएँ वर्तमानकालीन मणिपुरी समाज में प्राप्त सभी समस्याओं को शब्दबद्ध करने की उनकी एक सफल कोशिश मानी जा सकती है। आज के इस भौतिक युग में अपने स्वार्थ में पड़कर एक मानव दूसरे मानव पर अत्याचार करता है, शोषण करता है, सताता है। मानव का मूल्य भौतिक वस्तुओं से कम समझने लगता है, अपनी जरूरत की वस्तुओं को पाने के लिए मनुष्य, मनुष्य का इस्तेमाल करता है उनकी जान से खेलने लगता है। इसका वर्णन उनके शब्दों में देखिए–

मणिपुरी मूल –

मीहिं पक्लब उक्तब खुत्शासिंगी इरैदा
अवाबगी ताबुनुङ्
सनागी नाचोम मोमोन्नरि
नुंहिकनरि थवाय वाखल नुंपाकथक्त – मैतैचनु

हिंदी अनुवाद –

आदमी के खून से सने उँगलियों के भँवर में
दुख के अथाह में
चमक रहा सोने का कर्णफूल
तड़प रहे हैं प्राण, विचार पत्थर सिल पर। – मेतै कन्या

वैश्वीकरण के नाम पर मणिपुरी समाज में अपनी भूमि एवं वातावरण के प्रतिकूल अंधानुकरण करके मणिपुरी युवा अपने आपको सभ्य मानकर परिवर्तन के नाम पर समाज द्वारा अनचाही क्रियाएँ एवं चाल–चलन करने लगते हैं। इससे कई समस्याएँ जैसे बलात्कार, नशे का सेवन आदि बढ़ने लगी हैं, साथ ही साथ दिन–ब–दिन अपराध की गतिविधियाँ भी बढ़ने लगीं हैं। कवयित्री युवाओं की इन बदलती प्रवृत्तियों से मणिपुर के इतिहास पर एक काला धब्बा जैसा बन जाने की आशंका इन शब्दों में व्यक्त करती है–

मणिपुरी मूल –

मीगी यानसिल्लब मनम इतिनन
मथुम मरां हौरब अयुक्तै
ईथक ईपोम भारब नुमिदांवाइरमफाओ
लाइफदबीसिंगी ङइङमदब मङम!
अओनब मैखुगी लैचिल मपैतन
नींसा होल्लिबसिंगी मूत्‌नाइररोइदब वांहनि
लैसेमालोनगी अनौब अओनब पूवारीगी लामाइनि। – तिङ्‌खंगी लुहुप

हिंदी अनुवाद –

दूसरों की मिश्रित प्रदूषित गंध से
सुबह से आंदोलित
लहरें शाम तक
गुड़ियों की बेसब्र चाल
परिवर्तित धुएँ के गहरे कुहरे बीच

प्रश्वास लोगों का अमिट सवाल

सभ्यता के परिवर्तित इतिहास का नया पन्ना है। – काँटे का ताज

वर्तमानकालीन मानव समाज एक रणभूमि जैसा बन गया है। लोग अपने देश, मजहब, जाति, धर्म, संप्रदाय आदि को लेकर अपने अस्तित्व की लड़ाई के नाम लड़ रहे हैं। हर रोज मार–काट, खून–खराबा की घटनाएँ घट रही हैं। ऐसे में भोरोत सनसम ने अपनी कविता 'लानन्फमदा' (रणभूमि में) में लोग एक दूसरे को बिना जुल्म के एक दूसरे को दुश्मन मानकर मार रहे हैं, एक दूसरे से लड़ रहे हैं, इस सामाजिक विडंबना को कवि ने इस प्रकार शब्दबद्ध किया है–

मणिपुरी मूल –

उनाखिद्री मखोय अमुक्ता
शक्खंनदे मखोय अमगा–अमगा
अदुबु खंनै उबामक्तदा अमगा–अमगा
मखोय येक्नबनी
मखोय खंनदे मखोयगी मराल करिनो
थेंनबदा हात्तोक्नै मखोय मशेल अमगा–अमगा –लान्फमदा

हिंदी अनुवाद –

न मिले वे कभी एक दूसरे को
न पहचानते वे एक दूसरे को
पर देखते ही, पहचानते हैं एक दूसरे को
वे दुश्मन हैं।
कभी नहीं सोचा उन्होंने
उनका जुर्म क्या है
पर देखते ही मार डालते हैं एक दूसरे को। –रणभूमि में

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कविता संग्रह की किताबों में 'इशै बिनोदिनीगी' (बिनोदिनी के गीत) अरिबम श्याम शर्मा द्वारा संपादित, लुचिङ् लुवाङ् की '*कयादा नींथिरिबा* (कितना सुहावना) प्रकाशक लाइश्रम अबे लुवांलैमा,

अहैबम रनजित की '*कायथरबा युम्फम* (टूटती हुई नींव) अहैबम दिलिप द्वारा प्रकाशित, एन रोमिना की '*मंगी मचुशिं* (सपनों के रंग), अङम जांतु चिरू की '*ईचेलना कंखबदि कोंगोलसु ताक्‌खिनि* (धारा सूख जाएगी तो बुलबुला भी लुप्त हो जाएगा), मैं भगत की '*वाथोक* (घटना), जातिश्वर तोंब्रम की '*इमै नते तौरानी* (पूँछ नहीं), खाङम्बम इबेतोन देवी की '*खल्लरोइ नङगी वाखल* (न सोचूँ तुम्हारी बात), डॉ. खंङेम्बम शामुङौ की '*महोशागी लाइरेंबीगी मशाइकोंदा थिरूसि लाउ येंलुसि लाउ* (आओ प्रकृति के गोद में ढूँढें देखें – बाल कविता संग्रह), लौरेंबम निरमला देवी की '*तोर्बान वांमा* (नदी तट के उस पार), शैरेंबशिंगी अपुनबा लुप द्वारा संपादित 'शैथारोल मङाशुबा' (पाँचवाँ वर्णन), कैशाम प्रियोकुमार सिंह की '*तप्न–तप्न असुम नुंशिनसि* (हौले–हौले प्यार कर ले), उलेल मैतै की 'ऐगी थम्मोयादा' (मेरे दिल में) सुलोचना और वांनींबी द्वारा प्रकाशित, डांबम इबेतोंबी देवी की 'थम्मोयनुंगी ईथक मचा–मचा'(दिल की छोटे – छोटे तरंगें), डॉ. इबुंङोचौबा सिंह की '*चरै फिमल शेत्‌लिबी इमा गुंबी* (फटे पुराने वस्त्र धारण करने वाली माँ जैसी), रामेश्वर शबरूंम की '*इरैबाक–इरैबाक* (मातृभूमि–मातृभूमि) सगोलशेम लुखोइ मीतै द्वारा प्रकाशित, सरत सलाम की '*ईशै अमा पुन्सि अमा* (एक गीत एक जीवन), ङारांबम मुनिंद्रो सिंह की '*थम्मोयगी ईथक इपामे* (दिल की लहरें) नलिनी देवी द्वारा प्रकाशित, दोनेश्वर की '*इरम लमलेन लमनुंशी* (प्यारी मातृभूमि) देबीना द्वारा प्रकाशित, केशो सिंह इरेंबा की '*मैचाक असिगी मैशादि* (इस ज्वाले का ताप) खोमै देवी द्वारा प्रकाशित, तोलचौ शमजेतशाबम की 'खाङबदा वारे ऐदि' (मुझसे सहा नहीं जाता) इखल वाबगाई द्वारा प्रकाशित, चींशुबम खमनलैमा की 'फिदम खुल' (आदर्श गाँव), सगोलशेम इनाओचा मङा की '*मीतै पोकपी लमदम* (मैतै जननी जन्मभूमि), बि सुरचंद्र शर्मा की '*हनुमानगी मचाशि* (हनुमान की संतानें), युम्नाम गंगारानी की '*लमहेनबा खोइनु* (शरारत भरे भ्रमर) लोइतोंबम ओपेन द्वारा प्रकाशित, प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन द्वारा संपादित '*कुमदम इशै* (ऋतु गीत), इहिलेन खाङानबा की '*मालंदा ताउरि मङलान ओइना* (सपने में खोया हूँ

सपने जैसा), पि. के. लाइतोंजम द्वारा प्रकाशित, बास्कर देव येंखोम की *'अशिबै वाकत्'* (मुर्दों की शिकायत) और *'नुमिदांवाइगी कांशि खोंजेल'* (संध्या की घंटी की ध्वनि), लोक्ताक नींशिं नुमित कमिटि द्वारा संपादित *'लोक्ताक्की मिशेल'* (लोक्ताक दर्पण), चुंखाम यशवंत की 'ऐगी लैकंला (मेरे मरुस्थल) एन अरुना द्वारा प्रकाशित, पुंसिबा सोइबम की 'कन्या' सनसम द्वारा प्रकाशित, पुखंबम कृपामनि की *'ईचेलीसगी गैतनफग'* (इस प्रवाहिनी का मिलन स्थल), विरमंगल पुखंनम की *'लैचल 23'* (23 गुलदस्ते), क्षेत्रिमयुम मनोजकुमार की *'कलंबा पामेल'* (सूखा वृक्ष), केनबो राजकुमार की *'खांपोक नत्ते इयुमनि'* (झोंपड़ी नहीं, अपना घर है) पब्लिकेशन डिवीजन द्वारा प्रकाशित आदि प्रमुख हैं।

कहानी :

कविता के बाद कहानी मणिपुरी साहित्य के क्षेत्र में सबसे ज्यादा प्रकाशित और प्रभावशाली साहित्यिक विधा है। यह साहित्य का सबसे सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है। यह विधा लोगों का मनोरंजन करती है साथ ही साथ सामाजिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों से भी अवगत कराती है। मणिपुरी साहित्य में हर वर्ष कहानी की किताबें प्रचुर मात्रा में प्रकाशित होती रही हैं साथ ही साथ पत्र–पत्रिकाओं, अखबार आदि में भी समय–समय पर बहुत सारी कहानियाँ प्रकाशित होती रही हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कहानियाँ मूल रूप से तत्कालीन मणिपुरी समाज में जी रहे लोगों के जीवन की कहानियों को बयान करती हैं। मणिपुरी कहानीकारों ने तत्कालीन मणिपुरी समाज की सभी समस्याओं को अपनी कहानियों में उकेरा है। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कहानियों में भ्रष्टाचार की समस्या, बेरोजगार की समस्या, गरीबों की दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही जीवन की कठिनाइयाँ एवं उग्रवादियों और सुरक्षा बलों के बीच की होड़ में पिस रही साधारण गरीब जनता की दयनीय दशा आदि मूल स्वर के रूप में उभरा है। आलोच्य वर्ष में मणिपुरी में 50 से ज्यादा कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनके अलावा पत्र–पत्रिकाओं में भी काफी मात्रा में कहानियाँ छापी गई हैं। इस वर्ष प्रकाशित कुछ प्रमुख कहानी संग्रह– शगोलशेम हेमंत की 'तुरेलगी वारी' (नदी

की कहानी) राशमि रेखा बोड़ा द्वारा प्रकाशित, भोरोत सनसम की '*लै अमसु नोंमै* (फूल और बंदूक), घनश्याम वाहेंबा की '*पुन्सि अमगी वारी* (एक जीवन की कहानी) वाहेंबम मिलन द्वारा प्रकाशित, शादोकपम बिरजित सिंह की '*मखोयसु थवाय पानबनि* (वे भी प्राणधारी हैं) राजकुमारी धनिसना द्वारा प्रकाशित, हिजम गुण की '*पोक्तबी लैमा* (सौतेली माँ), नोंथोंबम विश्वजित सिंह द्वारा संपादित '*नाचोम* (गुलदस्ता), लमाबम बीरमणि की क्वाक्की मचा क्वाक उरोक्की मचा उरोक (कौवे का बच्चा कौवा, बगुले का बच्चा बगुला), रघुमनि लोंजम की 'अखाक अराओ मरक्ता नोंमै शींजङ् (गर्जनों में वज्र) लोंजम इमोचा द्वारा प्रकाशित, चुंखाम रनबिर की 'नोंसिबु कैदौङै ङाल्लक्कनि' (कब सुबह होगी), डॉ. सरोजिनी की '*नाकेन्थादा बसंत* (शीत ऋतु में बसंत) लिंथोइ पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित, डॉ. एम. मंगि सिंह की 'अरंबा थवान्मीचाक' (चमकीला तारा), इबुंङोमचा निंङोंबा की '*लैहेद्रबा लमदाम्नि* (न रहने लायक स्थान) श्रीमा पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित, मयेंबम प्रेमचंद्र की 'मै चाक्लि जे. सि. बी. (जल रहा है जे. सि. बी.), आर. के. मोबि की '*नहाक याओदा* (तुम बिन) मणिपुरी लिटरेरी सोसाइटी द्वारा प्रकाशित, राजमनि अयेपकम की 'नुंशितोंबी' ए. सी. नेत्रजित द्वारा प्रकाशित, नीलमनि खुराइजम की 'शकलोत्पी ममा' (चेहरा छिपाए माँ), डॉ. के लेनिन की '*ऐदि ङाओसु ङादना* (मैं पागल तो नहीं हूँ) डॉ. पि. बिनाता देवी द्वारा प्रकाशित आदि।

कैसाम प्रियोकुमार मणिपुरी साहित्य में मूर्धन्य कथाकार हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित का 'नोंखोङ तंना' (गरजते बादल की ओर) उनका पाँचवाँ कहानी संग्रह है। इस किताब में कुल पंद्रह कहानियाँ हैं। उन्होंने तत्कालीन मणिपुरी समाज की अलग–अलग समस्याओं जैसे–शोषण, दमन, उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, उग्रवाद की समस्या आदि को अपनी कहानियों का विषय बनाया है साथ ही साथ इन समस्याओं से लोगों में उत्पन्न मानसिक तनाव, कुंठा, बेचैनी, एक दूसरे के बीच अविश्वास, दूरियाँ, अजनबीपन आदि मनोवृत्तियों को लेखक ने अपनी कहानियों में मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। कथाकार ने अपनी कहानियों में वर्तमानकालीन सामाजिक समस्याओं से

प्रभावित लोगों की मनस्थितियों का मनोवैज्ञानिक धरातल पर सजीव चित्रण किया है। उनकी संग्रहित सभी कहानियाँ मनोविज्ञान पर आधारित हैं। अपनी कहानियों में वे समाज में शोषित, दमित वर्गों का हक दिलाने का न्याय करते नजर आते हैं तो अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए उत्साहित भी करते हैं। दूसरी तरफ उन्होंने उग्रवादियों की समस्या से प्रभावित राज्य में लोगों के असुरक्षित जीवन का भी साक्षात् चित्रण किया है।

इस किताब में संग्रहित सभी कहानियाँ ढलती उम्र में लिखित होने के नाते इन कहानियों में उनकी कमजोर मनोस्थिति का लक्षण भी देखने को मिलता है। उन्होंने '*मिंशेलदा तादबा ममि*' (आईने में न पड़ी छाया), '*एकाशिया मखोङगी वारी*' (एकाशिया तले की कहानी), '*ओजा तोंबा*' (अध्यापक तोंबा) ओर '*नोंखोङ तंना*' (गरजते बादल की ओर) इन चारों कहानियों में ढलती उम्र के साथ कमजोर, लोगों की द्वारा अवांछित एवं अवहेलित, शोषित आदमियों का सजीव एवं साकार चित्रण किया है। 'एकाशिया मखोङगी वारी' में एक सेवानिवृत्त व्यक्ति को पेंशन मिलने के लिए कितनी तकलोफ उठानी पड़ती है, उसकी दशा का मार्मिक चित्रण है। इस प्रकार कहानीकार ने असहाय, लाचार, सेवानिवृत्त आदमियों की दशाओं को प्रदर्शित करते हुए भ्रष्ट सरकारी दफ्तरों का साक्षात् चित्रण किया है। '*मिंशेलदा तादबा ममि*' कहानी में लेखक ने उम्र के साथ परिवर्तनशील मानसिक स्थितियों का वर्णन किया है। उम्र के साथ आदमी की इच्छा, लालच, अहंकार आदि मानव मन के मनोविकार भी धीरे–धीरे अपने–आप चले जाते हैं, इसको भी बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

'*एकाशिया मखोङगी वारी*' (एकाशिया एक पेड़ का नाम है) नामक कहानी में कहानीकार ने याइमा नामक एक सेवानिवृत्त व्यक्ति की लाचारगी को दिखाया है। ऊपर से नीचे तक पूरी तरह भ्रष्ट हो चुके मणिपुर की सरकारी शासन व्यवस्था में अध्यापक की नौकरी से सेवानिवृत्त गाँव के सीधे–सादे शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर हो चुके एक व्यक्ति को पेंशन के लिए कितनी यातनाएँ उठानी पड़ीं इसका मार्मिक चित्रण इस

कहानी में किया गया है। उसे रोज सरकारी दफ्तर का चक्कर लगाना पड़ता है। सरकारी कर्मचारी घूस के चक्कर में याइमा की फाइल इधर से उधर घुमाते रहते हैं। वह दूर गाँव से आकर हर बार एकाशिया पेड़ के नीचे आराम करता है। उसकी ठेस कोई नहीं जानता, उसकी मदद करने वाला कोई नहीं है, बस एकाशिया पेड़ ही अपनी छाया से उसको थोड़ी देर के लिए आराम दिलाता है। उसका मन एकाशिया पेड़ से बात करने लगता है। इस प्रकार इस कहानी में लेखक ने तत्कालीन दफ्तरों की कार्य प्रणाली एवं कार्य शैली का परदाफाश करते हुए सरकारी दफ्तरों में चल रही घूस नीति का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही साथ भ्रष्ट सरकारी प्रशासन का परदाफाश भी करने का प्रयास किया है।

मणिपुर भारत का छोटा–सा सीमावर्ती एवं पिछड़ा हुआ राज्य है। फिर भी इस राज्य के लोग वैश्वीकरण और भौतिकवादी दुनिया से अछूते नहीं हैं। 'ओजा तोंबा' कहानी वैश्वीकरण और भौतिकवाद के इस युग में मानवीय मूल्यों का घट जाने और टूटते एवं दूर होते जा रहे रिश्तों की कहानी है। आजकल के युवक भौतिकवाद के इस युग में अपना भविष्य सँवारने एवं पैसे कमाने के लिए अपनी सुविधानुसार अपने घर–बार छोड़कर देश–विदेश चले जाते हैं और वे वहीं प्रवासी बनकर बस जाते हैं। घर में अपने बूढ़े माँ–बाप हैं इसका बिल्कुल लिहाज नहीं करते। जिन माँ–बाप ने अपना सब कुछ त्यागकर अपने बच्चों को पाला–पोसा, पढ़ाया–लिखाया, बड़ा किया उनको बुढ़ापे में अपने बच्चे अकेला बेसहारा बनाकर छोड़ देते हैं। इस प्रकार यह कहानी अपनों से पिछड़ने के गम एवं अकेलापन के साथ जी रहे असहाय, लाचार, कमजोर बूढ़े दंपति की दुख भरी बहुत ही संवेदनशील कहानी है। कहानीकार ने इस कहानी में अपनी संतानों दवारा छोड़े गए शारीरिक रूप से कमजोर बूढ़े माँ–बाप की मनोस्थिति का मार्मिक चित्रण किया है।

'खोङुप बूट (बूट), मङ अमगी खोङचत् (एक सपने की यात्रा) और *'लाइ मचा–मचा* (छोटे–छोटे भगवान) में लेखक ने उग्रवाद की समस्याओं का साधारण लोगों पर कितना कठोर असर पड़ता है इसका मार्मिक चित्रण

किया है। 'मङ अमगी खोङचत' (एक सपने की यात्रा) अमु नामक एक बेरोजगार युवक के मन में घटित आंतरिक द्वंद्व की कहानी है। अमु अपनी रोजी–रोटी के लिए जो भी काम मिलता है उसे कर लेता है। सपनों की दुनिया सबसे खूबसूरत है, इस दुनिया में कोई बंधन नहीं है, इस दुनिया में छोटे–बड़े, गरीब–अमीर सभी समान हैं। उसे एक दिन आर्मी कैंप में एक गड्ढा खोदने का काम मिलता है। उसे गड्ढा रात को ही खोदने के लिए कहा गया। वह गड्ढा खोदते–खोदते सपने की असीम दुनिया की यात्रा कर लेता है। बीच–बीच में आर्मी कैंप के अंदर से निकली किसी के चीखने की आवाज से वह हकीकत की दुनिया में बार–बार लौटने पर मजबूर हो जाता है। फिर कुछ क्षण बाद अपने काम में लग जाता है, फिर सपनों की दुनिया में खो जाता है। युवक का सपना ही युवक के बीते दिनों की पूरी कहानी है, जो गरीबी के चलते हताश और निराशा से भरी है। लेकिन चीख की आवाज बार–बार उसके सपनों की यात्रा को भंग करती है। युवक को बाद में पता चलता है जो गड्ढा वह खोद रहा है वह किसी दूसरे काम के लिए नहीं है अपितु कैंप के अंदर जो आदमी चीख रहा है उसकी कब्र है। इस प्रकार कहानीकार ने युवक के सपने और हकीकत दोनों में घटित घटना के मिश्रण द्वारा तत्कालीन मणिपुर की सामाजिक, राजनैतिक एवं कानून और व्यवस्था में जी रहे शिक्षित बेरोजगार युवकों की दयनीय परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है। साथ ही साथ आर्म फोर्स स्पेशल पॉवर एक्ट के पीछे सुरक्षा बलों की करतूतों और लोगों पर किए जा रहे अत्याचार को भी उजागर किया गया है। इस किस्म की ही कहानी है *'खोङप बूट'*। इस कहानी में एक ही रात की घटना को दिखाकर फ्लैश बैक के माध्यम से साधारण जीवन जीने की चाह से उग्रवादी संगठन में रह चुका एक युवक संगठन छोड़कर कैसे जी पाता है, इसका सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया गया है। युवक के लिए एक–एक पल जीना बड़ा महंगा पड़ता है। एक भी क्षण उसको चैन की जिंदगी जीने नहीं देता। एक तरफ अपने उग्रवादी साथियों का डर है तो दूसरी तरफ सिपाहियों का डर उसको हर पल सताता है। वह जब–जब कुत्ते

भौंकने अथवा बूट की आवाज सुनता है तो उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। हर पल मौत की छाया उसकी आँखों में मंडराती नजर आती है। उसकी ऐसी मानसिक परिस्थिति को लेखक ने बड़े ही मार्मिकता के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

'*लंबी अमा* (एक रास्ता) लेनिन खुमनचा द्वारा लिखित इस वर्ष प्रकाशित बहुत ही चर्चित कहानी है। यह कहानी तोंबी नामक एक महिला की दर्दभरी कहानी है। तोंबी एक विधवा औरत है उसका बेटा बारहवीं कक्षा तक पढ़ने के बाद घर छोड़कर उग्रवादी संगठन में शामिल हो जाता है। अपने एकलौते बेटे का इस तरह घर छोड़कर चले जाने से तोंबी के दुख का ठिकाना नहीं रह गया। उसे अपने बेटे की जुदाई का गम पल–पल सताता है। इस तरह उसके अंदर एक असहनीय गम पल रहा है तो दूसरी तरफ सुरक्षा कर्मी दिन–रात देखे–सोचे बिना कभी भी तोंबी के घर आकर तोंबी को खूब सताते रहते हैं, अत्याचार करते रहते हैं। तोंबी से सुरक्षा कर्मी लोग अपने बेटे के बारे में पूछते हुए तोंबी को खूब मारते–पीटते हैं। इस प्रकार एक दिन उसको पुलिस मुठभेड़ में एक उग्रवादी के मारे जाने की खबर मिलती है। वह मार्ग में अपने बेटे की पहचान करने के लिए जाती है, लेकिन उसने देखा कि वह मृत उग्रवादी उसका बेटा नहीं था। पर उसके दिमाग में एक बात सूझी कि भले ही मृत उग्रवादी उसका बेटा न हो फिर भी उसको अपने बेटे के रूप में पहचान करने से उसे कम से कम सिपाहियों के अत्याचारों से तो छुटकारा मिल जाएगा, फिर तो पुलिस और सिपाहियों का उसके घर आ–आकर उसको सताना तो बंद हो जाएगा, इससे तो वह बच जाएगी। यह सोचकर उसने अंत में निर्दय सिपाहियों के अत्याचार से बचने के लिए एक रास्ता निकाला और उसने शव–गृह में रखे उस मृत उग्रवादी के शव को लोगों के सामने अपना बेटा बताकर घर लाकर उसका संस्कार एवं क्रिया कर्म किया। इस तरह लेखक ने इस कहानी में उग्रवादियों की समस्याओं एवं इन समस्याओं से लड़ने के लिए सरकार के आर्म फोर्स स्पेशल पॉवर एक्ट से पीड़ित साधारण जनताओं की दशाओं का बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रण किया है।

उपन्यास :

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित प्रमुख उपन्यास हैं – मुनिष निंथौजम का –ऐ चत्लुखिगे– (मैं जा रहा हूँ), मनि मैकाम का 'शींनबा–1', *'शींनबा–2'* *'शींनबा–3'* (चुनौती तीन भागों में) मैकाम ओंबी सुबदनी द्वारा प्रकाशित, डॉ. आइ. एस. युंनाम का *'ओलांथागी लैपाकलै'* (ग्रीष्म ऋतु का लैपाकले' – एक पुष्प का नाम') सोलोमोन युंनाम द्वारा प्रकाशित, क्षेत्री ब्रजमनि सिंह का 'मीचै अमदि चैना' (ताना और पीड़ा), मुहेन चोंथाम का 'शक ताकपा' (परिचय) लिकमाबम निङालङंबी द्वारा प्रकाशित, एन मूनिश का *'ऐ वारी लेगी* (मैं कहानी सुनाता हूँ) मणिपुरी साहित्य परिषद शिलोंग द्वारा प्रकाशित, नोंमाइथेम प्रमोदिनी का 'शाफु कल्लबा ईचेल' (प्रबल धारा) आदि।

क्षेत्री ब्रजमनि सिंह का 'मीचै अमदि चैना' (ताना और पीड़ा) आलोच्य वर्ष में प्रकाशित बहुचर्चित और लोकप्रिय उपन्यासों में एक है। इस उपन्यास में गरीब, बेसहाय एक लड़की को केंद्रबिंदु बनाया गया है जो बचपन में उसके पिता से बिछड़ जाती है। वर्षों बाद पिता की एक धनवान और प्रतिष्ठित आदमी बन जाने के बाद अपनी बेटी से मुलाकात होती है। तब तक लड़की बिन पिता के समाज में कई मुसीबतों एवं समाज के तानों के बीच बड़ी हो जाती है। इस उपन्यास में उपन्यासकार ने समाज में स्त्री के प्रति लोगों की हेय दृष्टि को प्रदर्शित किया है साथ ही साथ ऐसे पुरुष प्रधान समाज में बिन बाप की गरीब असहाय एक लाचार लड़की को उसके जीवन में कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। आज नारी सशक्तिकरण के नाम पर लोग कितने नारे लगाते हैं फिर भी आज भी नारी की स्थिति में खास बदलाव नहीं आ पाया है। नारी की स्थिति में बदलाव लाने के लिए नारी के प्रति लोगों के सोच–विचार में बदलाव लाना होगा। समाज के सभी तबके चाहे स्त्री हों पुरुष, दोनों को नारी के प्रति सचेत होकर जो पारंपरिक सामाजिक सोच–विचार है इसको पूर्ण रूप से खत्म करना पड़ेगा। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में मनोरंजन और विचार साथ–साथ चलते दिखाई देते हैं।

नाटक :

मणिपुरी साहित्य में नाटक हर वर्ष बहुत कम संख्या में प्रकाशित होते हैं। मणिपुर के नाटककार नाटक को साहित्य की एक विधा के रूप में पाठकों के लिए कम अपितु मंच में खेलने के अर्थात मंचन के लिए ज्यादा लिखते हैं। हर वर्ष मणिपुरी नाटक के दर्शकों को ढेर सारे नाटक देखने को मिलते हैं लेकिन ये नाटक बहुत कम प्रकाशित होते हैं। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कुछ प्रमुख नाटकों में डॉ. लैशांथेम तोंदोन का *'लाइथुं मखाक लाइमन मचित्'* (अर्ध रोगी किंचित कष्ट), राजेन तोइजांबा द्वारा संपादित 'मणिपुरी शुमाङ् लीला' (मणिपुर में लोकप्रसिद्ध एक प्रकार का नाटक विधा है) यह किताब साहित्य एकाडमी, नई दिल्ली से प्रकाशित है। इस किताब में संग्रहित सभी नाटक मणिपुर के कोने–कोने में सफलतापूर्वक खेले गए हैं। इन नाटकों को मणिपुर के लोगों ने खूब पसंद भी किया है। के. शांतिबाला का *'तल तरेत्'* (सात रोटियाँ) यह खासकर बच्चों के लिए लिखा गया एक बाल नाटक है। पेबम कुमार *'सना पात्'* (स्वर्ण झील), मुतुवा तोंब का *'नुंशिबगीदमक'* (प्यार के खातिर) और *'इचाबु नचाराने'* (अपनी संतान तुम्हारी कैसी) मुतुम ओंबी बीजेंती के द्वारा संपादित आदि हैं।

'नुशिबगीदमक' (प्यार की खातिर) मुतुवा तोम्बा का इस वर्ष प्रकाशित अपुनबा मशक नामक उनकी किताब में संकलित बहुत की चर्चित एक नाटक है। यह प्रेमाधारित बहुत ही भावुक नाटक है, इसमें पारिवारिक वर्ग भेद के कारण परिवार वालों की अनुमति न मिलने से अलग हुए दो दिलों की दास्तां है। यह एक दुखांत नाटक है। इस नाटक का मूल स्वर हैं– अनमेल विवाह, वर्ग–भेद, समाज में स्त्री का दर्जा, शाश्वत प्रेम आदि। इस नाटक में बड़े खानदान वाले डॉ. रोमेश का गाँव की साधारण परिवार वाली युवती गीता से प्रेम हो जाता है। यह प्रेम दोनों के जीवन में गम का जहर बन जाता है। इस नाटक में पुरुष प्रधान समाज में स्त्री जाति की विवशता, लाचारगी आदि हीन भावना का भी चित्रांकन किया गया है। इस नाटक की नायिका गीता को स्त्री जात में जन्म होने के कारण लाचार और विवश जीवन बिताना पड़ता

है। उसे अपनी इच्छाओं का बलिदान देना पड़ता है। इसे ही नहीं, अनचाहे वर से शादी होने के बावजूद बेटी जन्म देने के कारण उसे अपने पति की अवहेलना एवं प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। उसका पति उस पर तरह–तरह के अत्याचार करता है। इस प्रकार उसका जीवन एक प्रकार का नरक–सा बन जाता है। उसे जीवन में दुखों का ही हिस्सा नसीब होता है। पति सौतन के पास चला जाता है, घर वापस नहीं आता। इन कारणों से वह मनोरोग से ग्रस्त हो जाती है। उसकी अंतिम घड़ी में हॉस्पिटल में डॉ. रोमेश से मुलाकात होती है। डॉ. रोमेश गीता को बचाने के लिए जी तोड़ प्रयास करता है फिर भी गीता को बचा नहीं सका। इस तरह डॉ. रोमेश को सारा जीवन गीता की.जुदाई के गम से छुटकारा नहीं मिल पाता।

निबंध :

इस वर्ष भी मणिपुरी साहित्य में प्रकाशित निबंधों की किताबें पिछले वर्षों की तुलना में कम नहीं है। आलोच्य वर्ष में प्रकाशित कुछ प्रमुख निबंध की किताबें हैं– लाइश्रम रामजी सिंह की *'मांलमचत्की पुयागी वारी* (सांस्कृतिक निबंध) मणिपुरी साहित्य परिषद द्वारा प्रकाशित, नोंथोंबम मेरा मङाङ् द्वारा लिखित *'ऐखोयगी थौरम्लोन'* (हमारे संस्कार – सांस्कृतिक निबंध), मयालंबम गौरचंद्र सिंह की *'मैत्राबाक्की पुवारीदा कैरेन'* (मणिपुर के इतिहास में बाघ – सांस्कृतिक निबंध), थोकचोम इबोहल सिंह की *'मतै लोल्लेप चार'* (मैतै भाषा नीति का बीज), थौनाओजम खंबा लुवां की 'सरेंदर लैङाक्की बलिगी प्रजा' (आत्मासमर्पण वाले शासन में प्रजा बलि का बकरा – सामाजिक निबंध), डॉ. एल. तेजबती का 'मैतै अराङफम फंबा– (सांस्कृतिक निबंध) तखेलंबम शांतिकुमार सिंह द्वारा प्रकाशित, अशोक कुमार लाइफ्राकपम और सनाथोइ लोंजम द्वारा संपादित 'चींङु खोइयुम मोंबहनबा लाइफमलेन– (मोंबहनबा देवता का तीर्थस्थल– सांस्कृतिक निबंध), डॉ. युलेंबम गोपी देवी की 'मणिपुरदा जगोइ रास हौरक्खिब' (मणिपुर में रास नृत्य की शुरूआत) कल्चर फोरम मणिपुर द्वारा संपादित साइखोम मेंजोर की किताब *'हिस्ट्री ऑफ लाइरैबाक*, खुंदोंबम गोकुलचंद्र का *'मंलान खरा शक्तम खरा* पीशक देवी द्वारा प्रकाशित आदि।

'मैतै अरांफम फमबा' डॉ. तेजबती द्वारा लिखित आलोच्य वर्ष का बहुचर्चित मणिपुरी संस्कृति पर आधारित एक सांस्कृतिक निबंध है। इस निबंध में तेजबती ने मणिपुरी लोगों के जन्म से लेकर मृत्यु तक के अनेक सांस्कारिक कार्यों में अरांफम फमबा (प्रबंधक) की भूमिका का उल्लेख किया है। साथ ही साथ मनुष्य जीवन के संस्कारों के बारे में तथा मनुष्य जीवन के साथ केले के पौधे का संबंध एवं उसके महत्व के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है। मणिपुर के मैतै समाज में जीवन के सभी सांस्कारिक उत्सव एवं प्रतिष्ठान के लिए एक से लेकर तीन चार कार्य प्रबंधकों (अरांफम) का होना आवश्यक माना जाता हैं। इनके द्वारा सांस्कारिक क्रियाकलाप विधिवत संपन्न किए जाते हैं। लेखक ने केले के पौधे के महत्व के बारे में इस प्रकार वर्णन किया है– "स्मृति काल से ही केले के पौधे को मानव जीवन से अटूट रिश्ता रहा है। केले के पौधे का शुभ माना जाता है। इसके हर अंग उपयोगी हैं। मणिपुर में केले के पौधे को सब्जी के रूप में भी खाया जाता है। केले के पौधे और पत्ते का मानव जीवन के सभी संस्कारों में उपयोग किया जाता है।"

इस निबंध में निबंधकार ने *'केले के पौधौं और उनके पत्तों का उपयोग'* और 'केले के पौधे और मानव का संबंध' इन शीर्षकों से केले के पौधे का मानव जीवन में उपयोगिताओं के बारे में विस्तार से वर्णन किया है। इस निबंध में केले के पौधों के प्रकारों को गिनाते हुए उनके अलग–अलग प्रयोगस्थल के बारे में भी वर्णन किया गया है। रचनाकार ने मणिपुर में प्राप्त कुछ प्रमुख केले के प्रकार इस प्रकार बताए हैं– चंबी, लफु याइ, लफु लामु, लेंबा, लफु थंबाल, है लफु आदि। मणिपुर के लोग धार्मिक पूजा–पाठ आदि क्रिया कर्म में केले, केले के पौधे और केले के पत्तों का अनिवार्य रूप से इस्तेमाल करते हैं। केले के पौधों के महत्व के बारे में बताते हुए प्राचीन काल में नव–निर्माण से पहले मणिपुरी लोगों के द्वारा केले के पौधों को नाव के रूप में इस्तेमाल किए जाने का भी उल्लेख किया गया है।

पत्रिकाएँ :

'साहित्यगी पाओ (साहित्य का संदेश – त्रैमासिक) साहित्य फोरम मणिपुर द्वारा प्रकाशित, *'ऋतु* (अंक : 157–158) द कल्चरल फोरम मणिपुर द्वारा प्रकाशित, *'मपाओ* (संदेशा) लेनिन द्वारा संपादित, *'इचेल* (धारा) नोहाखोल द्वारा प्रकाशित, *'इहौरकपा* (मन की उमंग) इखल, वाबगाई द्वारा प्रकाशित आदि साहित्य से संबंधित कुछ प्रमुख पत्रिकाएँ हैं। इन पत्रिकाओं में समय–समय पर साहित्यिक रचनाएँ, देश–विदेश की शीर्ष साहित्यकारों अथवा देश–विदेशों की साहित्यिक घटनाओं आदि का विवरण छापकर मणिपुरी साहित्यिक प्रेमियों को देश–विदेश के साहित्य से अवगत कराते हुए साहित्यिक तत्वों को प्रेरणा प्रदान करती हैं।

अन्य विधाएँ :

मणिपुरी भाषा में उपर्युक्त साहित्यिक विधा के अलावा अन्य साहित्यिक विधाओं जैसे अनुवाद, जीवनी, यात्रावृत्तांत, आलोचना, संस्मरण आदि में भी मणिपुरी साहित्यकारों ने हाथ लगाया है। इस प्रकार की साहित्यिक विधाओं में लिखी गई प्रमुख किताबों में *'वाइ मैपाक चोथे का 'अहु लुंशुकबुंगी अहानबा खोंचत* (अहु लुंशुकबुंग की प्रथम यात्रा – यात्रावृत्तांत), जुगोल साइ द्वारा मणिपुरी में अनुवादित –चिनादा अङांबा थवानमिचाक' (चीन में लाल तारे, डब्ल्यूएच डी राओज द्वारा लिखित *'हेरोड एंड मेन ऑफ एंसियंट ग्रीक'* से जयकुमार द्वारा अनुवादित 'अरिब लाइशिं; थौना फबा थौना फबिशिं' (प्राचीन देवी–देवताएँ; वीर और वीरांगनाएँ), एच राइदर की –क्लिओपत्र विमेन ऑफ पेशन' से जयंतकुमार द्वारा मणिपुरी में *'अपाम–नुंशी लांथाकमी* (प्रेम मायाजाल फेंकने वाली) नाम से प्रकाशित (अनुवाद), विनोबा द्वारा लिखित गीता प्रवचन से मणिपुरी में 'गीता प्रबचन– नाम से तिकेंद्र द्वारा अनुवादित, चुनिभाइ वैद्यनाथ द्वारा लिखित किताब 'एसासिनेशन ऑफ गाँधी' से टि. डी. ङाङोम्बी द्वारा मणिपुरी में गाँधी हात्या करिनो अचुंबा करिनो अरान्बा' (गाँधीजी की हत्या : क्या सच क्या झूठ) नाम से अनुवादित ग्रंथ, गिरीश चतुर्वेदी के अंग्रेजी उपन्यास *'तानसेन* से इबोतोंबी द्वारा

मणिपुरी में अनुवादित '*तानसेन*, डॉ. देबानंद –लमयानबा साइंटिस्टशिंगी खोंगुल' ('वैज्ञानिकों के पद चिह्न' – जीवनी), पुखंबम बाबु सिंह का संस्मरण '*नींशिलुबदा* (यादों में) श्रीमती विद्यापति द्वारा प्रकाशित, भोरोत सनसम की किताब '*साहित्य नैनरोल* (साहित्य आलोचना), अथोक्पम तोमचौ द्वारा संपादित '*इपोम बाबु आमदि महाक्की थबकशिं* (व्यंग्यकार बाबु और उसके कार्य' – आलोचना), एल अशोककुमार द्वारा रचित '*चीङ् माइचौ सामुरो चींगों* (जीवनी), डॉ. सोरोकखाइबम सरतचंद्र सिंह की '*कवि चाओबा* (आलोचना) रिंदा पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित आदि प्रमुख हैं।

'*मणिपुरी रेडियो ड्रमादा उत्‌लिबा समाजगी समस्या* (मणिपुरी रेडियो नाटक में प्रदर्शित सामाजिक समस्या) शीर्षक आलोचना की किताब आलोच्य वर्ष में प्रकाशित डॉ. गुरुमयुम बिजयकुमार द्वारा रचित बहुत ही महत्वपूर्ण एक किताब है। इस किताब में आलोचक द्वारा रेडियो नाटक का उद्‌भव और विकास, मणिपुरी साहित्य में रेडियो नाटक की धारा, मणिपुरी रेडियो नाटक में प्रदर्शित समाज की समस्या, समाज में मणिपुरी रेडियो नाटक की भूमिका आदि विषयों पर बड़ी सूक्ष्मता से विचार विश्लेषण किया गया है। वाकई एक अच्छे समाज के निर्माण में रेडियो नाटक की बहुत बड़ी भूमिका है। रेडियो जनसाधारण को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाला एक संचार माध्यम है। मणिपुरी समाज में रेडियो नाटक समय–समय पर लोगों के मनोरंजन के साथ–साथ जन अभियान के रूप में भी समाज में आई मुसीबतों, समस्याओं एवं चुनौतियों से जनता को सतर्क कराने अथवा उन समस्याओं से अवगत कराने अथवा जूझने के लिए प्रसारित किए जाते हैं। समाज में प्रचलित सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों आदि की समस्या जैसे लिंग भेदभाव, भ्रष्टाचार, सरकारी अफसरों एवं नेताओं द्वारा जनता का हक छीनना, अनपढ़, अंधविश्वास, एच. आइ. वी. जैसी खतरनाक बीमारियों आदि पर आधारित नाटक जनता को जागरूक बनाने अथवा इन समस्याओं से सतर्क कराने में बहुत ही प्रभावी एवं उपयोगी साबित हुए हैं।

अंततः सर्वांगीन रूप से मणिपुरी साहित्य पर विहंगम दृष्टि डालने के बाद यह कह सकते हैं कि मणिपुरी साहित्य वर्तमानकालिक मणिपुरी समाज के लोगों की मानसिक परिस्थितियों, मनोभावनाओं, कुंठा, पीड़ा, हार–जीत, हर्ष, उल्लास, तड़प, छल, कपट, गंदी राजनीति आदि के इर्दगिर्द बुना है। आज का मणिपुरी साहित्य वर्तमानकालीन मणिपुरियों के हृदय की आवाज हैं। यह मणिपुरी समाज की एक ऐसी आर–पार तस्वीर है जिसे हर दिशा से देखा–परखा जा सकता है। किसी समाज को जानने–समझने के लिए अमुक समाज के साहित्य को जानना बहुत जरूरी है।

मणिपुरी साहित्य भारतीय साहित्य की धारा में अपनी अलग पहचान रखता है। भारत के अन्य राज्यों से मणिपुर का सामाजिक ढांचा अर्थात् संस्कृति, खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, प्राकृतिक वातावरण आदि में अंतर होने के कारण भारत की अन्य भाषाओं में लिखित साहित्यिक रचनाओं में अभिव्यक्त मूल स्वरों से मणिपुरी साहित्य में अभिव्यक्त मूल स्वर या विषय आदि कई स्तरों पर अंतर एवं भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। इन सबके बावजूद भी भारत के अन्य राज्य और मणिपुर एक ही शासन तंत्र अर्थात् भारतीय शासन तंत्र के अंदर होने के कारण भारत के अन्य राज्यों की भाषाओं में लिखित साहित्य में अभिव्यक्त मूल स्वरों एवं विषयों और मणिपुरी साहित्य की साहित्यिक विषयों एवं प्रवृत्तियों में कई स्तरों पर समानताएँ भी देखने को मिलती हैं, जैसे राजनैतिक परिस्थितियाँ, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि की समस्याएँ, सत्ताधारी राजनेता तथा बड़े–बड़े अफसरों द्वारा साधारण जनताओं का शोषण आदि की समस्याओं को भी मणिपुरी साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।



11

मराठी साहित्य

डॉ० दामोदर खड़से

मराठी भाषा और साहित्य के लिए सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं की ओर से निरंतर प्रयास किए जाते रहे हैं। वर्ष 2014 में मराठी को क्लासिक लैंग्वेज का दर्जा दिलाने के लिए विशेषतः प्रयास जारी रखे गए। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित लेखक डॉ. भालचंद्र नेमाड़े और मराठी साहित्य सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. नागनाथ कोतापल्ले ने इस दिशा में विशेष पहल की। साथ ही, 2014 में भी हर वर्ष की तरह मराठी में दीवाली अंकों की भरमार रही। इन विशेषांकों के माध्यम से मराठी साहित्य को विशेष रूप से उजागर किया जाता रहा है। इसमें प्रकाशित कई उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ और विविध सामग्री कालांतर में मराठी साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हो जाती हैं। पुस्तकें भी हर वर्ष प्रचुर मात्रा में प्रकाशित होती रही हैं।

मराठी का ज्ञानपीठ पुरस्कार अब तक चार साहित्यकारों को मिला है। उपन्यासकार वि. स. खांडेकर, कवि, नाटककार, कथाकार विवा शिरवाडकर 'कुसुमाग्रज' और कवि विंदा करंदीकर को पूर्व में यह सम्मान प्राप्त हुआ। ज्ञानपीठ पुरस्कार की स्वर्ण जयंती के अवसर पर चर्चित उपन्यासकार और समीक्षक डॉ. भालचंद्र नेमाड़े को 2014 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार हेतु चुना गया। 87वें अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में कवि फ. मुं. शिंदे का चयन हुआ।

हर वर्ष की तरह वर्ष 2014 में मराठी में बहुत बड़ी मात्रा में पुस्तकें प्रकाशित हुईं। लगभग 400–450 दीवाली अंक प्रकाशित हुए। साहित्य सम्मेलन आयोजित हुए। कुछ पुस्तकों की चर्चा यहाँ होगी।

उपन्यास

आजकल तुलनात्मक रूप में उपन्यास विधा अधिक सक्रिय लगती है। पौराणिक, ऐतिहासिक, आधुनिक क्रम से होते हुए मराठी उपन्यास अब भूमंडलीकरण के दौर को भी अपने में समाहित करते लगते हैं।

रवींद्र शोभणे का उपन्यास हमारे अभी–अभी बीते समय के इतिहास को समेटता लगता है। इंदिरा गाँधी की हत्या और राजीव के भीषण अंत के गवाह समय की स्थिति को इस उपन्यास में रूपायित किया गया है। राजनैतिक उथल–पुथल के बीच समाज समुदाय के बीच के रिश्ते और सत्ता–संघर्ष में मानवीय मूल्यों का ह्रास समाज जीवन में मनुष्य की तटस्थता का चित्रण इस उपन्यास में है। शिक्षा जगत् में बढ़ती व्यावसायिकता, शिक्षा–सम्राटों का उदय, कला के क्षेत्र में भावनाओं का अभाव, तात्कालिक यश की गला–काट स्पर्धा, मनुष्यता का क्षरण, समाज–मूल्यों की तिलांजलि और समूचे आसपास से निराशा का धुंआ रवींद्र शोभणे के नवीनतम उपन्यास '*अश्वमेध*' का केंद्र है। पाठक इसे बहुत तल्लीनता से पढ़ता है और अंतर्मुखी हो जाता है।

बाबाराव मुसले का उपन्यास '*आर्त*' भी बहुत चर्चित और महत्त्वपूर्ण है। गंगासागर मेलों के दौरान 12 से 15 वर्ष के बीच की लड़कियाँ गायब हो जाने का उल्लेख उपन्यास के केंद्र में है। भावुक लोग मेले में ईश्वर पर पैसों का चढ़ावा देते हैं, उन पैसों को इकट्ठा करने वालों की बात भी इसमें है। पश्चिम बंगाल की राजनैतिक स्थिति, राजनैतिक स्पर्धा, हिंसा, आम आदमी के प्रति पुलिस की उदासीनता और जन–सामान्य का संघर्ष 'आर्त' उपन्यास में उभरकर आया है।

मीडियाकर्मी समीरण वालवेकर का उपन्यास '*चैनल–4 लाइव*' चर्चा में है। टी.वी., न्यूज चैनल की तेज गति से दौड़ने वाली दुनिया, मीडिया का

भीतरी परिवेश और वर्तमान जीवन को रेखांकित करते हुए बेचैन कर देने वाला रोचक उपन्यास है – *'चैनल–4 लाइव'*। शिल्पा जितेंद्र खेर का उपन्यास *'सोल्जर इन मी'*, आज की युवा–पीढ़ी में राष्ट्रप्रेम जगाने वाला, जीवन–संघर्ष का संदेश देने वाला है। ल. सि. जाधव का उपन्यास 'पराभूत धर्म' धर्म–निरपेक्ष शिक्षा देने के संकल्प के नायक की कहानी है। नायक सभी धर्मों के लिए समान शिक्षा की सोचता है परंतु उसी के कुछ साथी वहाँ एक मंदिर खड़ा करते हैं और उसके संकल्प टूट जाते हैं। फिर साथी मंदिर के पदाधिकारी बन जाते हैं और कालांतर में महंत बन जाते हैं। राधिका रामपुरे का उपन्यास *'श्वेता'* चर्चित उपन्यास हैं। अपने भाई के ट्रीटमेंट के लिए संघर्ष करती बहन की कथा इसमें गूंथी गई है। मौत की देहरी से भाई को बचाने की जद्दोजहद इसमें है। शिल्पा कांबले की *'नीली आँखों वाली लड़की'*, स्वाति चांदोरकर का उपन्यास *'फॉरवर्ड एंड डिलीट'* भी उल्लेखनीय हैं।

सुहासिनी कीर्तिकर चर्चित उपन्यासकार हैं। उनका नया उपन्यास *'स्थलांतर'* शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। पारिवारिक पृष्ठभूमि पर यह एक सामाजिक उपन्यास है। व्यक्ति की समस्याओं, लेखकीय टिप्पणियों और सामान्य व्यक्तियों की आशा–आकांक्षा और समाधानों के साथ यह उपन्यास पाठकों की रुचियों को संपोषित करता है। अशोक चिरणीस का *'आनंद यात्री'*, प्रतीक पुरी का *'चैलेंज'*, सीमा सोनवणे का *'लव मैरिज'*, ऋषिकेश गुप्ते का *'दैत्यालय'* उपन्यास भी उल्लेखनीय रहे हैं। वासुदेव मुलाटे लिखित उपन्यास *'विषवृक्ष की जड़ें'* भी चर्चित रहा है। रामचंद्र नलावड़े का उपन्यास 'कुरण' चर्चा में है। मराठी शब्द *'कुरण'* का अर्थ है – चरना। समाज में भ्रष्टाचार के माध्यम से कई अधिकारी सार्वजनिक खेत चर जाते है। लेखक ने हमारे समाज के ऐसे भ्रष्ट लोगों की तस्वीर खींची है। यथार्थपरक उपन्यास कई अर्थों में सत्ताधारियों को आगाह भी करता है। महर्षि वाल्मीकि पर सुधार शुक्ल का उपन्यास इसी नाम से अर्थात् *'महर्षि वाल्मीकि'* प्रकाशित हुआ है। *'चिंब'* अर्थात्' तरबतर' उपन्यास क्षितिज कुलकर्णी दवारा लिखा गया है।

41 HRD/16—13B

कविता

मराठी कविता जितनी भीतरी संवेदनाओं की प्रतिध्वनि होती है उतनी ही मात्रा में समाज–तरंगों को भी समेटे होती है। इंदिरा संत ऐसी ही कवयित्री रहीं जिन्होंने मनुष्य के भीतरी संवेगों को वाणी दी। उनकी संपूर्ण कविताएँ एक महाग्रंथ में संकलित हैं – शीर्षक है *'इंदिरा : इंदिरा संत की समग्र कविता*। इस महाकविता ग्रंथ की प्रस्तावना डॉ. अरुणा ढेरे ने लिखी है। इस संग्रह के बारे में माधव आचवल ने लिखा है– 'इंदिराबाई की कविता पढ़ते हुए लगता रहता है कि आकाश इतने करीब कभी नहीं आया था और दो अनादि–अनंत परिमाण की कैंची में पकड़े गए जीव को ऐसा एकाकी पहले कभी नहीं देखा था। वेदना को ऐसी वाणी कभी नहीं मिली थी। केवल अस्तित्व की ही ऐसी भयंकर थकान कभी नहीं मिली थी और इन सभी को पेट में लेकर फैला ऐसा भयंकर अंधेरा पहले कभी नहीं देखा था। इंदिराबाई की कविता ने ये सारा दिया....।'

दासू वैद्य मराठी के लोकप्रिय कवि हैं। उनकी कविताएँ बहुत संवेदनशील होती हैं। उन्होंने मराठी कविता के क्षेत्र में अपना अलग स्थान बना लिया है। उनका नवीनतम कविता संग्रह *'तत्पूर्व* प्रकाशित हुआ है। वैद्य की कविताओं में वर्तमान की प्रतिध्वनियाँ सुनाई देती हैं। इन कविताओं में संवेदनशीलता, चिंतनशीलता, सटीक शब्द योजना और उचित उपमा, वर्तमान का भान और भविष्य का संधात होता है। ताल, छंद और लय से परिपूर्ण ये कविताएँ अपने समय के साथ चलती हैं। वे कहते हैं– 'मानवी पूंछ पर/नए सिरे से अध्ययन करने वालों को अवसर मिले इसलिए मानव को फिर एक बार पूंछ निकल आने के लिए हम ही प्रत्यनशील हैं।'

'जन्मझूला लक्ष्मीकांत तांबोली का नवीनतम कविता संग्रह है। मूल रूप से कथाकार के रूप में लोकप्रिय तांबोली की कविताएँ भी उतनी ही प्रभावी हैं। इन कविताओं में जन्म–मृत्यु का साक्ष्य, ऋतुओं के अनुसार बिंब, जीने की वास्तविक स्थितियाँ, अध्यात्म आदि विषयों को समाविष्ट किया गया है। वर्तमान जीवन का कोलाहल, भीड़, दवंदव, संघर्ष को इनमें शब्दबदध किया

गया है। 'अगली सदी के सामने जाते हुए / मेरी धड़कनें ही मुझसे घबराने लगी हैं।' ऐसी कविता–यात्रा की निरंतरता इस संग्रह में है।

श्रीकांत देशमुख का तीसरा कविता–संग्रह पिछले दिनों प्रकाशित हुआ '*बोलें वे हमही*। श्रीकांत देशमुख ग्रामीण परिवेश को अपनी कविताओं में समेटते हैं। गाँव किस तरह शहरी हो रहे हैं– यह स्वर अधिकांश कविताओं में है। खेत–खलिहान, वृक्ष–वनस्पतियाँ और प्रकृति के सान्निध्य में सक्रिय भावनाओं की अनेकानेक छटाएँ इन कविताओं में हैं। उत्तम कांबले के संपादन में 'सलाखों के पीछे की कविताएँ' कैदियों की आंतरिक भावना और शब्दों के माध्यम से विद्रोह को रूपायित किया गया है। इन कविताओं का साहित्यिक और सामाजिक मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। '*भूख यानी गीत*' प्रसन्न कुमार पाटिल की कविताओं का संकलन है। इन कविताओं को यथार्थ, आदर्श और अध्यात्म के अंतःसूत्र में गूंथा गया है।

कथा संग्रह

कथा के क्षेत्र में मराठी में बहुत प्रयोगशीलता रही है। घर–परिवार से भूमंडलीकरण तक के विषय कथा के क्षेत्र को दस्तक देते रहे हैं। दलित और स्त्री–संवेदना की कहानियाँ मराठी में खूब लिखी जाती रही हैं। मधुवंती सप्रे का कहानी संग्रह '*अन्वर्थ*' शीर्षक से आया है, जिसमें मूलरूप से स्त्री के विविध आयामों को उकेरा गया है। प्रेम, दुख, वात्सल्य, विवशता और संघर्ष का चित्रण इन कहानियों में है। सप्रे के अलावा गणेश मतकरी का '*आधी खुली खिड़कियाँ*', अरुण कोर्डे का '*गुंबद*' कथा संग्रह भी चर्चित रहा है। साथ ही, वसंत नरहर फेणे का '*देशांतर कथा*'; मधुकर क्षीरसागर का '*तितली*' कथा संग्रह महत्वपूर्ण हैं।

अनंत मनोहर का कथा संग्रह '*ज्वार–भाटा की लहरें*' चर्चित रहा है। '*जीने के लिए*' रामनाथ चव्हाण का कथा संग्रह है जिसमें सामाजिक असमानता और संघर्षमय जीवन की दास्तान है। डॉ. चित्रलेखा पुरंदरे का कथासंग्रह '*केवड़े का इत्र*', राजन खान का '*फैल और रात*', डॉ. विजया वाड़ का '*ममता का आंचल*' और '*वेध: अज्ञात सूर्यमाला*' राम जोशी द्वारा लिखित चर्चा में रहा।

रवींद्र शोभणे चर्चित कथाकार हैं। उनके नवीनतम कहानी संग्रह 'ताज़े पाप के फुत्कार' दीर्घ कथाओं से परिपूर्ण है। इन कहानियों में उन्होंने यह बताने की सार्थक कोशिश की है कि मनुष्य भीतर से क्यों खोखला होता जा रहा है। उसकी भावनात्मक दुनिया क्यों उजड़ती जा रही है। उसके जीवन-मूल्यों पर कौन आघात कर रहा है। तमाम प्रश्नों-समस्याओं और उलझनों से ग्रस्त समाज की भीतरी दास्तान समेटे हुए हैं- शोभणे की कहानियाँ। इसके साथ ही, हमो मराठे का कहानी संग्रह 'अण्णा की टोपी', *'मन का खोया पासवर्ड'*- लेखिका वृंदा भार्गव, विभावरी वाकडे का *'बिन रिश्तों का आदमी'*, विनिता ऐनापुरे का *'उसकी कहानियाँ'*, जगदीश भोवड का *'एन्काउंटर'* कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।

आत्मकथा / जीवनी / संस्मरण

आत्मकथा अत्यंत प्रामाणिक और पारदर्शी होने की मांग करती है। मराठी साहित्य आत्मकथाओं से लबालब भरा हुआ है। पुरुषोत्तम बा. काले ने पत्नी को केंद्र में रखकर आत्मकथा का सृजन किया है- *'अनुसूया बाई और मैं'*। बीते जमाने के प्रसिद्ध उद्योगपति काले ने 1916 में प्रेम-विवाह किया और अपने दांपत्य-जीवन के उतार-चढ़ाव के दिन देखे। पति की प्रेरणा से अनुसूया बाई सार्वजीवन में सामने आईं। उनके संघर्षमय जीवन और विश्वास की बुनियाद का लेखा-जोखा है *'अनसूयाबाई और मैं'*।

अरविंदर वामन जोग ने' वॉरन हैस्टिंग्ज' की जीवनी लिखी है, जिसमें उन्हें कुशल प्रशासक और संघर्षशील शासक के रूप में चित्रित किया है। लार्ड मैकाले ने कहा था 'हैस्टिंग्ज से अधिक कुशल शासक शायद भारत को मिले होंगे पर इतना लोकप्रिय गवर्नर जनरल शायद ही दूसरा होगा।' इस बात को रूपायित करने में यह जीवनी सफल रही है। *'पत्रकार दि. वि. गोखले : व्यक्ति और कृतित्व'* पुस्तक का संपादन नीला वसंत उपाध्ये ने किया है। उन्होंने गोखले के जीवन के विविध पहलुओं को रेखांकित किया है। विशेष रूप से इस बात को केंद्र में रखा गया कि ज्येष्ठ पत्रकार गोखले युदधशास्त्र के अध्येता थे और वे क्रीड़ा प्रेमी और प्रखर हिंदूवादी विचारक थे।

संभाजी और शाहू महाराज की जीवनी क्रमशः डॉ. सुधीर निरगुडकर और आसाराम सैंदाणे ने लिखी। हेमा भा. फड़के की आत्मकथा 'यादों की रंगोली' चर्चित रही है। उच्च–वर्ण के घर में हुए अंतरजातीय विवाह के कारण ज़िंदगी–भर जो संघर्ष झेलना पड़ा उसकी करुण कथा इसमें पिरोई गई है।

'वैसा मैं.... ऐसा मैं' बाल खरे की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने उनके हिस्से आया चुनौतीपूर्ण जीवन ज्यों का त्यों रख दिया। यह इतना पारदर्शी बन पड़ा है कि कई बार अविश्वसनीय लगता है। डॉ. नागेश कांबले ने ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित कवि विवा शिरवाडकर कुसुमाग्रज के जीवन और उनके साहित्य पर विशिष्ट सामग्री का संपादन किया है। डॉ. नरेंद्र जाधव ने 'प्रज्ञासूर्य डॉ. अंबेडकर' पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक में उन्होंने अंबेडकर के जीवन को तो प्रस्तुत किया ही है साथ ही, वैचारिक बिंदुओं को भी छुआ है। उनके जीवन के अनुछुए प्रसंग और उनके ऊँचे व्यक्तित्व को उन्होंने रेखांकित किया है। डॉ. अंबेडकर के भाषणों के अध्ययन के आधार पर डॉ. नरेंद्र जाधव ने उनके प्रभावी, वैचारिक व्यक्तित्व का रेखाचित्र खड़ा किया है।

सुरेश भट मराठी ग़ज़लों के शीर्षस्थ रचनाकारों में माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में मनुष्य की भीतरी संवेदनाएँ मुखरित होती हैं। उन पर डॉ. पुरुषोत्तम मालोदे ने *'भटकता सूर्य : सुरेश भट'* शीर्षक से एक पुस्तक संपादित की है। संपादक ने सुरेश भट की ग़ज़लों की लोकप्रियता, ख्याति की चर्चा के साथ उनके चर्चित, कुछ–कुछ विवादास्पद व्यक्तित्व की दंतकथाओं का समावेश इस पुस्तक में किया। 'गुम राहों का यात्री' शांताराम चव्हाण की आत्मकथा है। भारतीय जाति–व्यवस्था, रूढ़ियाँ, हीन–भावना, उपेक्षा और तिरस्कार से घिरे व्यक्ति की यह कथा हमारे समाज की असमानता की गवाही देती है। युवकों में, आदर्श और सपनों को जगाने की राह में जाति–व्यवस्था, वर्ण–वर्ग की स्थिति किस तरह निराशा में बदल देती है; इसका जीवंत ब्यौरा इस पुस्तक में है।

डॉ. विश्वास मेहेंदले ने '*राष्ट्रपति*' पुस्तक लिखी। दादासाहब फालके पर मराठी में कई पुस्तकें प्रकाशित हैं। परंतु सुप्रसिद्ध लेखक और फोटोग्राफर श्री जया दड़कर ने '*दादासाहब फालके : समय और कृतित्व*' पुस्तक विस्तार से लिखी है, जिसे मराठी का केशवराव कोठावले पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुस्तक में सिनेमा को दादासाहब फालके के योगदान को विश्लेषित किया गया है। उनका कार्यकाल उनके सपने, उनका संघर्ष और उनकी उपलब्धियों की चर्चा इस पुस्तक में है।

'*हुनमान*' आत्मकथा के क्रम में अत्यंत चर्चित और ख्यातिप्राप्त आत्मकथा है। सातारा जिले के अकालग्रस्त इलाके की अत्यंत प्रतिकूल स्थिति से जूझते हुए संगीता आज प्रशासन की उच्चाधिकारी है। पढ़ाई संघर्ष करते हुए की। वसई–विरार के महानगर पालिका की मुख्य अधिकारी के रूप में संगीता उत्तम धायगुडे ने अपने कार्यों की छाप छोड़ी है। '*हुनमान*' संगीता की आत्मकथा है। '*हुनमान*' आंचलिक शब्द है जिसका अर्थ है– संगीता के सामने चुनौतियों के 'चक्रव्यूह' आए पर उन्होंने उन पर विजय हासिल की। इस आत्मकथा में बचपन के अभाव, संघर्ष, चुनौतियों और अंततः शिखर हासिल करने की यशोगाथा है।

'*अरविंद केजरीवाल आम और खास, चतुराई, झूठ या राजकीय प्रतिभा*' पुस्तक रमेश दिघे द्वारा लिखी गई है। अरविंद केजरीवाल के उत्कर्ष, विवाद, चर्चा, यश–अपयश को जीते व्यक्तित्व को इस पुस्तक में विश्लेषित किया गया है। प्रा. व. न. इंगले द्वारा लिखित जीवनी '*डॉ. अब्दुल कलाम*' तथा सुनील चिंचोलकर द्वारा लिखित जीवनी 'मानवता का महापुजारी स्वामी विवेकानंद' भी उल्लेखनीय है। प्रतिभा रानडे ने जीवनी लेखन में एक उल्लेखीय पुस्तक जोड़ी है– 'ज्ञानकोशकार गणेश रंगो भिड़े'। कोश का कार्य अत्यंत परिश्रमयुक्त साधना है। समीक्षक भीमराव कुलकर्णी ने श्री भिड़े के बारे में कहा था, ज्ञानकोश का काम श्री भिड़े के लिए मस्ती थी, गति थी और उसी में उनकी मुक्ति है, यही उनका मानना था। इतने समर्पित व्यक्तित्व को अपनी कृति में समेट कर प्रतिभा रानडे ने श्री भिड़े के जीवन और योगदान को पाठकों तक पहुँचाया है।

नरेंद्र चपलगावकर मराठी के चर्चित लेखक हैं। उन्होंने भारत के उन रियासतदारों पर लिखा जो देश के स्वतंत्र होने पर असमंजस की स्थिति में था। लगभग 600 रियासतें थीं, जो अंग्रेजों की कृपा पर सीमित अधिकार पाकर संतुष्ट थे। अधिकांश रियासतें देश स्वतंत्र होने के बाद भारत में विलीन हो गईं। लेकिन चार रियासतें, यथा–कश्मीर, जूनागढ़, त्रावणकोर और हैदराबाद सहजता से विलीन होने को तैयार न थे। अंततः सबको विलीन होना पड़ा। निजाम के व्यक्तित्व पर इस पुस्तक में विशेष प्रकाश डाला गया है।

'*मेरी चित्रकथा* अनिल अवचट की ऐसी कृति है जिसे आत्मकथा कहा जाता है या चित्रों के संबंध में अनेक संस्मरण। इस पुस्तक में अनिल अवचट छपाई, ले आउट, रंग–संगत, प्रस्तुतीकरण जैसी तकनीकी पक्ष पर विस्तार से बयान करते हैं। अनिल अवचट मूलरूप से डॉक्टर हैं और समाजोन्मुख गतिविधियों को समर्पित हैं, साथ ही मराठी के उत्कृष्ट लेखक भी हैं। अनिल अवचट की चित्रकथा पढ़ते हुए, चित्रों को देखते हुए उसकी निर्माण प्रक्रिया में रमते हुए मन झूम उठता है, इतने रोचक ढंग से इसका प्रस्तुतीकरण हुआ है।

भारत के ओलिंपिक वीर खाशाबा जाधव के जीवन के विविध पहलुओं को प्रो. संजय दुघाणे ने संजोया है। हेमचंद्र देशपांडे ने –छत्रपति शिवाजी' पुस्तक में शिवाजी के अनछुए पहलुओं को उजागर किया है। प्रभाकर पुजारी की पुस्तक '*भारतीय संस्कृति योगी–लोकमान्य तिलक*' भी उल्लेखनीय है। मराठ़ी रंगमंच की प्रसिद्ध अभिनेत्री लालन सारंग की आत्मकथा का शीर्षक है 'जैसी जी'। इसमें उन्होंने अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखा है। एक प्रौढ़–दृष्टि से निरपेक्ष होकर, स्थिर रहकर शांति से अपने अतीत को याद करते हुए 'जैसी जी' वैसा लिखा।

साथ ही, '*महानायक नरेंद्र मोदी* का लेखन कुमार पंकज ने किया है। डॉ. अनुराधा औरंगाबादकर ने '*मुझे मिला आदिवासियों का आदित्य* शीर्षक से जीवनी लिखी। '*मै नमक की पुतली* वंदना मिश्र की आत्मकथा है।

श्रीकांत घोंगडे की आत्मकथा' *'यादों का संग्रह'* शीर्षक से आई है।

मराठी के सुपरिचित वैज्ञानिक–लेखक डॉ. जयंत नारलीकर को उनकी आत्मकथा *'चार नगरों का मेरा संसार'* के लिए 2014 का साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. नारलीकर अंतरराष्ट्रीय कीर्ति के वैज्ञानिक, खगोलशास्त्री हैं। परंतु, वे उतनी ही प्रवाहमय गति से मराठी और हिंदी में विज्ञान को अभिव्यक्त करते हैं। उनकी विज्ञान कथाएँ प्रकृति के रहस्यों के परतों को खोलती नज़र आती हैं।

अनुवाद

मराठी साहित्य में अनुवाद का योगदान बहुत बड़ा है। शरतचंद्र, प्रेमचंद, अमृता प्रीतम, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्‌गल जैसे साहित्यकारों की कृतियों का अनुवाद मराठी में बड़ी मात्रा में हुआ। साथ ही, अंग्रेजी और दक्षिण भारत की भाषाओं से भी मराठी में पर्याप्त–अनुवाद होते रहते हैं। एम. जे. अकबर द्‌वारा लिखित 'ब्लड ब्रदर्स' का सार्थक अनुवाद विश्राम ढोले ने किया है। यह आत्मकथात्मक उपन्यास है, क्योंकि एम. जे. अकबर ने अपने ही परिवार की कथा इसमें कही है। *'मैन हंट'* : बिन लादेन के खोज की दिल दहला देने वाली, पीटर बर्गन की सत्यकथा का अनुवाद रवि आमले ने किया है। लादेन से मिलकर उनसे इंटरव्यू करने वाले पत्रकार गिनती के हैं, उनमें से एक हैं– पीटर बर्गन। उन्होंने अमरीका के ट्‌विन टावर पर आतंकवादी हमले से पहले लादेन से मुलाकात की थी। इस पुस्तक की रचना के लिए उन्होंने लादेन से कई बार मुलाकात की, परिश्रमपूर्वक तमाम जानकारियाँ इकट्‌ठी की और एक भयानक सत्यकथा 'मैन हंट' के रूप में सामने आई जिस का अनुवाद अंग्रेजी से मराठी में रवि आमले ने किया।

उर्दू की सुपरिचित कथाकार इस्मत चुगताई की आत्मकथा *'कागज़ी है पैरहन'* का मराठी अनुवाद सुलोचना वाणी ने *'कागदी पेहराव'* शीर्षक से किया है। बिमल डे की *'महातीर्थ का अंतिम यात्री'* का मराठी अनुवाद विजय हरिपंत शिंदे ने किया है। इस पुस्तक में एक भिक्षुक की डायरी अत्यंत गूढ़, अद्‌भूत और रोमांचकारी प्रवास को समेटे हुए है।

'पांडवपुरम सेतु लिखित उपन्यास का मराठी अनुवाद धनश्री हलबे ने किया है। आसावादी काकड़े विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के कविता संग्रह *'फिर भी कुछ बचा रहेगा'* का बहुत सार्थक अनुवाद किया है। *'कीचड़, पसीना और आँसू'* बेअर ग्रील्स की आत्मकथा का अनुवाद अनिल व मीना किणीकर ने किया है। बेअर ग्रील्स साहसी मुहिम करने वाले जिद्दी व्यक्ति की कथा है। यह कथा 'एक्शन पैक्ड' अर्थात् जानलेवा, साहसपूर्ण घटनाओं की लंबी दास्तान है।

पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम और सृजनपाल सिंह की कृति *'लक्ष्य तीन अरब'* (Target three billion) का मराठी अनुवाद शुभदा पटवर्धन ने किया है। इस पुस्तक में डॉ. कलाम दवारा अत्यंत तेजस्विता के साथ तैयार की गई विश्व शाश्वत विकास प्रणाली की कहानी दर्ज़ है। विश्व की कुल जनसंख्या के तीन अरब लोग गरीबी–रेखा के नीचे रह रहे हैं। इन ग़रीबों में से सत्तर प्रतिशत लोग भारत के ग्रामीण इलाकों में रहते है। इस दुनिया से गरीबी हटाने के लिए इस पुस्तक के माध्यम से लेखक आह्वान करते हैं।

जॉन बुकैन के उपन्यास का मराठी अनुवाद रमेश मुधोलकर ने *'दि थर्टी–नाइन स्टेप्स'* शीर्षक से किया है। *'महात्मा गाँधी का असामान्य नेतृत्व'* पास्कल अलेन नाज़रेथ की इस पुस्तक का अनुवाद सुजाता गोड़बोले ने किया है। दीप्ति नवल जैसी समर्थ अभिनेत्री की सार्थक कविताओं का मराठी अनुवाद किया है– आसावरी काकड़े ने – शीर्षक है *'लम्हा–लम्हा'*। आसावरी काकड़े स्वयं हिंदी और मराठी में समर्थ रूप से अभिव्यक्त होती हैं। उन्हें श्रेष्ठ अनुवाद के लिए अकादमी पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। उन्होंने दामोदर खड़से के 'तुम लिखो कविता' का मराठी अनुवाद *'तू लिही कविता'* शीर्षक से किया है। हिंदी–मराठी में समान रूप से लेखन–अनुवाद करने वाले हैं डॉ. गजानन चव्हाण। उन्होंने डॉ. दामोदर खड़से के कविता संग्रह *'सन्नाटे में रोशनी'* का *'प्रकाश पेरताना'* शीर्षक से मराठी में अनुवाद किया है।

'उन दस सालों में गुरुदत्त' सत्या सरन की पुस्तक का अनुवाद मिलिंद चंपानेरकर ने किया है। भारतीय सिनेमा के अत्यंत महत्वपूर्ण अभिनेता के जीवन को शब्दबद्ध किया गया है। गुरुदत्त के मित्र और उनके फिल्मों के लेखक अबरार अल्वी से निरंतर बातचीत के आधार पर वरिष्ठ पत्रकार सत्या सरन ने गुरुदत्त के जीवन को काग़ज़ के कैनवास पर उतारा। इस पुस्तक का धारा–प्रवाह अनुवाद मौलिक–सा आनंद दे जाता है। गुलजार द्वारा लिखित *'मिर्जा ग़ालिब'* का मराठी अनुवाद अंबरीश मिश्र ने किया है। *'लौहपुरुष सरदार पटेल'* बी. कृष्ण द्वारा लिखित जीवनी है, जिसका अनुवाद विलास गीते ने किया है।

इस वर्ष मराठी में अनुवाद के लिए डॉ. एम. एस. पाटिल को साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने गणेश देवी के अंग्रेजी ग्रंथ *'आफ्टर अमनेशिया'* का मराठी अनुवाद *'स्मृतिभ्रंशानंतर'* के रूप में किया है।



12

मैथिली साहित्य

डॉ० संगीता कुमारी

मैथिली नाम उस क्षेत्र के नाम '*मिथिला*' से संबद्ध है। '*मिथिला*' शब्द भारतीय साहित्य में बहुत पहले से है। मैथिली मुख्य रूप से भारत में उत्तरी बिहार और नेपाल के तराई के इलाकों में बोली जाने वाली भाषा है। यह प्राचीन भाषा हिंद आर्य परिवार की सदस्य है और भाषाई तौर पर हिंदी, बंगला, असमिया, ओडिया और नेपाली से इसका काफी निकट का संबंध है।

वस्तुतः मिथिला के इतिहास और सांस्कृतिक परंपरा की पृष्ठभूमि में महान् मैथिली साहित्य के उद्भव और विकास की क्षमता है। इसकी दृढ़ तथा गंभीर आध्यात्मिक भावना, सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन साहित्यिक–सृजन की क्षमता से संपन्न है। मैथिली में भारतीय साहित्य की परंपरागत विधा प्रायः समस्त रूप में उपलब्ध है तथा वर्ष 2014 की साहित्यिक प्रगति भी इसी बात की ओर संकेत करती है।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 2014 में इन 6 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया– 1.उल्लंघन 2.मैथिली निबंध संकलन 3.आदिम बस्ती 4.हाट–बाजार 5.अकाल में सारस 6.राधाकृष्ण चौधरी।

"उल्लंघन" प्रतिभा राय द्वारा लिखित एवं साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत ओडिया कथा–संग्रह है, जिसका मैथिली अनुवाद रमाकांत राय 'रमा' ने किया है। प्रतिभा राय ओडिया की प्रतिष्ठित कथाकार हैं। रमाकांत राय 'रमा' भी मैथिली साहित्य में कथा, कविता, निबंध, अनुवाद सभी विधाओं

के अग्रणी साहित्यकार हैं। यह साहित्य मानवीय करुणा के साथ उसकी असफलता के लिए तथा अपनी विशद वैश्विक दृष्टि हेतु उल्लेखनीय है। मानव–स्वभाव के निरीक्षण, मनुष्य के अधःपतन और नैतिक सीमा के बीच द्वंद्व तथा विलगाव एवं संबद्धता एवं असंबद्धता के बीच प्रभावी सम्मिश्रण इसमें देखा जा सकता है। लेखिका को साहित्यिक एवं लोकपक्ष में उदात्त संतुलन बनाए रखने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। परिवार, समाज की विभिन्न कथा–स्थिति सब को अपनी कथा में अनुगुंफित करते हुए लेखिका ने मानव–मन का सूक्ष्मतम निरीक्षण किया है। नारी चेतना और सामाजिक न्याय को लेकर उनकी दृष्टि पूर्ण सजग है।

"*मैथिली निबंध संकलन*" डॉ. नरेश कुमार विकल की रचना है। विकल जी मैथिली के समालोचक तथा कवि–गीतकार हैं। मैथिली साहित्य में निबंध लेखन की परंपरा 20 वीं शताब्दी में पत्र–पत्रिका के प्रारंभ से मानी जाती है। विद्वत समाज कवीश्वर चंदा झा को मैथिली साहित्य का प्रथम निबंधकार मानते हैं। प्रस्तुत निबंध संकलन में ज्योतिरीश्वर से प्रारंभ कर अद्यतन मैथिली में निबंध–विधा के विकास पर विद्वत्तापूर्ण भूमिका के संग्रह के साथ 72 मुख्य निबंध संग्रहीत हैं। यथा–ज्योतिरीश्वर जी द्वारा लिखित "*ऋतु–वर्णना*", मुरलीधर झा रचित "*मिथिला भाषा*", यदुनाथ झा '*यदुवर*' रचित "*माता ओ मातृभूमि*", पंडित बलदेव मिश्र लिखित "*कवि कालिदास*", कुमार गंगानंद सिंह रचित "*राष्ट्रीय एकताक महत्व*", पंडित त्रिलोचन झा रचित "*आचार ओ विचार*", प्रो. हरिमोहन झा लिखित "*भारतीय दर्शनक महत्व*", डॉ. देवकांत झा रचित "*अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणक समस्या आ समाधान*", डॉ. प्रभावती झा लिखित" "*विभिन्न काल में नारीक स्थिति*", डॉ. धीरेंद्र नाथ मिश्र रचित "भाषा विज्ञानक उपादेयता", जानकी प्रसाद चौधरी लिखित "*मिथिलाक्षरक ऐतिहासिकता*" आदि। इस प्रकार नरेश कुमार विकल जी ने अपने इस निबंध–संकलन में प्राकृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, नैतिक, दार्शनिक, भाषावैज्ञानिक, सामयिक आदि सभी प्रकार के निबंधों का संकलन किया है। कुमार गंगानंद सिंह ने "*राष्ट्रिय एकताक*

महत्वे" में महाभारत के इस श्लोक का उदाहरण अत्यंत ही सुंदर ढंग से दिया है–

"वयं पंच वयं पंच, वयं पंच शतानिते।
अन्यै महा विवादेत्तु वयं पंचाधिकशतम्।।"

मनप्रसाद सुब्बा के पुरस्कृत नेपाली कविता संग्रह 'आदिम बस्ती का मैथिली अनुवाद प्रदीप बिहारी ने किया है जो मैथिली के प्रतिष्ठित कथाकार, रंगकर्मी एवं मैथिली – हिंदी – नेपाली के परस्पर अनुवादक हैं। 9वें एवं 10वें दशक के कालखंड में लिखित यह संग्रह नेपाली कविता में हो रही प्रयोगधर्मिता का साक्षी है।

"*हाट–बाजार*" बंगला उपन्यास "*हाटे बजारे*" का मैथिली अनुवाद है। इसके लेखक बनफूल हैं तथा मैथिली अनुवाद वीणा ठाकुर ने किया है। आत्मकथात्मक शैली में रचित यह बंगला का कालजयी उपन्यास है।

"*अकाल में सारस*" साहित्य अकादमी से पुरस्कृत हिंदी कविता–संग्रह है। इसके लेखक केदारनाथ सिंह हैं, जो हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि हैं। इसका मैथिली अनुवाद केदार कानन ने किया है जो मैथिली भाषा के चर्चित कवि, संपादक एवं अनुवादक हैं। यह संग्रह वर्तमान हिंदी कविता को सर्वथा नवीन मोड़ देने का सार्थक प्रयास है। इसमें अधिकतर सामयिक कविताओं का संग्रह किया गया है, यथा– मातृभाषा, हे हमर उदास पृथ्वी, नदी, उमेद नहि छोडैछ कविता आदि। "*मातृभाषा*" की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"हे हमर भाषा
हम घुरैत छी अहाँ मे
जखन चुप रहैत–रहैत
ऐहि जाइत अछि हमर जीह
दुखाए लगैत अछि
हमर आत्मा"

मैथिली विनिबंध "*राधाकृष्ण चौधरी*" भी 2014 की प्रकाशित पुस्तकों में महत्वपूर्ण है, जिसके लेखक नित्यानंद लाल दास हैं।

मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, साहित्य मंदिर, दरभंगा, शेखर प्रकाशन, श्रुति प्रकाशन, क्रांतिपीठ प्रकाशन, मिनार पब्लिकेशन आदि 2014 में भी मैथिली साहित्य के प्रकाशन में अग्रणी रहीं। यथा– मिथिली रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा द्वारा "*लागि गेल गाछ आकाश*" प्रकाशित किया गया जिसके लेखक डॉ. ललित झा हैं। इसी तरह साहित्य मंदिर, दरभंगा द्वारा राजनाथ मिश्र द्वारा रचित "मोगलानी" को प्रकाशित किया गया। इसमें लेखक ने इतिहास एवं ऐतिहासिकता को एक नई परिभाषा देने की कोशिश की है। इसमें मुगलकालीन इतिहास को कथात्मक शैली में लिखा गया है।

पत्रिकाओं में मैथिली पाक्षिक ई–पत्रिका *विदेह* 2014 में भी प्रगतिशील रही। इसको इंटरनेट पर प्रकाशित करवाने का उद्देश्य एक ऐसे मंच की स्थापना है, जो लेखक तथा पाठक के बीच की दूरी को समाप्त करे और इसमें प्रकाशन की नियमितता हो और वितरण की जटिल समस्या एवं भौगोलिक दूरी का अंत हो जाए। इसमें 2014 में कई महत्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हुई। इसके 145 से 169वें अंक में मैथिली साहित्य की विभिन्न विधाओं को प्रकाशित किया गया।

यथा– 145वें अंक में शिव कुमार झा "*टिल्लू*" रचित "*क्षणप्रभा*" को प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार 146वें अंक में कपिलेश्वर राउत की विहनि कथा संग्रह "*उलहन*" प्रकाशित हुई। इनकी रचनाओं में लेखक का स्वतंत्र विचार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

विदेह के 1 फरवरी, 2014 के 147वें अंक में तुकाराम शेट के कोंकणी उपन्यास "*पाखलो सिंह एक*" को प्रकाशित किया गया, जिसके मैथिली अनुवादक डॉ. शंभु कुमार हैं।

इसी प्रकार 148वें अंक में गजेंद्र ठाकुर रचित नाटक "*मचंड*" प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ की एक झलक निम्नांकित है, जो अनुकरणीय है– "महान नेता अपन जनता के बीच मझधारमे नै छोड़ै छै। डुबैत जहाजक कप्तान जेकाँ ओ अंतिम समए धरि जहाजपर रहैत अछि। जखन जहाजसँ सभ बहरा जाइए तखन ओ जहाजक मस्तूल संगे ससमुद्रमे डुबि जाइए, जहाज छोडि नै भागैए।" 149वें अंक में जगदीश प्रसाद मंडल रचित लघुकथा संग्रह "*पतझाड*"

को प्रकाशित किया गया।

विदेह के 151वें अंक में विंदेश्वर ठाकुर की रचना "नेपालक नोर मरुभूमिमे" प्रकाशित हुई। यह 5 खंडों में विभाजित है– (क) गजल खंड (ख) शेरो–शाइरी खंड (ग) लघुकथा खंड (घ) विहनि कथा खंड (ड़) कविता खंड। भक्ति गज़ल का एक उदाहरण –

"अहीं छी हमर भवानी मैया हम अहाँकें मानै छी

करब सब दिन पूजा पाठ मनसँ हम ई ठानै छी"

इसी प्रकार, 153वें अंक में संदीप कुमार साफी रचित "*बैशाख में दलानपर*", 154वें अंक में "*सूखल मन तरसता आँखि*" नामक काव्य–संग्रह, 155वें अंक में जगदानंद झा 'मनु रचित "*विहनि कथा–संग्रह*" "*तोहर कतेक रंग*", 156वें में मुन्नी कामत की "*वहनि कथा/नाटक एकांकी*" प्रकाशित हुई।

166वें अंक में जगदीश प्रसाद मंडल रचित "*रेहना चाची*", राजदेच मंडल की "*दोख केकर*", दुर्गानंद मंडल रचित "*छुतहरि*" आदि रचनाएँ प्रकाशित हुई। 167वें अंक में डॉ. कीर्ति नाथ झा रचित "*शेफाली, फुरपरासवली*", आशीष अनचिंहार रचित व्यंग्य निबंध "*लास्ट टाइम सजेशन*", वृषेश चंद्र की "*लाल*" आदि रचनाएँ प्रकाशित हुई। 168वें अंक में अन्य रचनाओं के साथ–साथ आशीष अनचिंहार का व्यंग्य निबंध "*निरपेक्ष–गुट–निरपेक्ष*" महत्वपूर्ण है।

समदिया, समय–साल, आँजुर, मिरर आदि पत्रिकाएँ भी 2014 में प्रगतिशील रहीं। समदिया पूनम मंडल एवं प्रियंका झा द्वारा 2004 ई. में आरंभ किया गया प्रथम मैथिली न्यूज पोर्टल है।

"*कविता*" भारतीय भाषाओं के काव्य का सर्वप्रथम और सबसे विशाल ऑनलाइन विश्वकोश है। जुलाई 2006 में प्रारंभ हुई इस ऐतिहासिक परियोजना ने अन्य कई परियोजनाओं के लिए भी प्रेरणा का काम किया है। कविता कोश के बाद साहित्यिक कोश बनाने के कई प्रयास आरंभ हुए हैं। सरकारी व निजी संस्थाओं द्वारा इन नई परियोजनाओं को आर्थिक व अन्य

सभी तरह के संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं। इसमें अन्य भाषाओं के साथ–साथ मैथिली भाषा एवं साहित्य की भी प्रगति हुई है।

मैथिली–भोजपुरी अकादमी, दिल्ली ने वर्ष 2014 में भी अनेक महत्वपूर्ण आयोजन किए हैं और साहित्य व संस्कृति की सर्जनात्मक पक्षधर्मिता के साथ समकालीन साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में उसने नई बहसों को भी प्रारंभ किया है।

साहित्य अकादमी द्वारा संवैधानिक भाषा में उत्कृष्ट लेखन के लिए दिया जाने वाला प्रतिष्ठित सम्मान "*साहित्य अकादमी पुरस्कार–2014*" का घोषणा 19 दिसंबर को किया गया। संवैधानिक 24 भाषाओं में दिया जाने वाला यह पुरस्कार वर्ष 2014 के लिए मैथिली साहित्य में मैथिली भाषा की लेखिका आशा मिश्रा को उनकी चर्चित उपन्यास "*उचाट*" के लिए दिया गया।

साथ ही, इंडियन स्कूल ऑफ माइंस (आई एस एम) धनबाद के रिसर्च फेलो व भगवानपुर कौआहा मधुबनी निवासी युवा साहित्यकार प्रवीण कश्यप को उनकी पहली पुस्तक "*विषदंती वरमाल कालक राति*" (काव्य संग्रह) के लिए देश की प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार देने की घोषणा की गई।

वहीं मैथिली के मूर्धन्य साहित्यकार जीवकांत को मरणोपरांत उनकी पुस्तक "*हमर अठन्नी खसल बौन में*" के लिए अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार देने की घोषणा की गई। वर्ष 2014–2015 का विद्यापति पुरस्कार हिंदी एवं मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार गंगेश गुंजन को देने का निर्णय लिया गया।

"*विद्यापति पुरस्कार कोष*" नेपाल सरकार द्वारा मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति के लिए स्थापित राशि की दृष्टि से नेपाल का सबसे बड़ा पुरस्कार है। 2012 में यह पुरस्कार पहली बार प्रदान किया गया और 1.2 लाख का नेपाल विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजेंद्र विमल को प्रदान किया गया। इस वर्ष के लिए

41 HRD/16—14A

विद्यापति मैथिली साहित्य पुरस्कार जनकपुर के रामानंद युवा क्लब को, विद्यापति मैथिली कला–संस्कृति पुरस्कार श्याम सुंदर यादव को, विद्यापति मैथिली अनुसंधान पुरस्कार डॉ. वासुदेव लाल दास को, विद्यापति मैथिली पांडुलिपि पुरस्कार चंद्रशेखर लाल शेखर को और विद्यापति मैथिली अनुवाद पुरस्कार धीरेंद्र प्रेमर्षि को दिए जाने की घोषणा की गई।

"*अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद*" एवं "*अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद*" 2014 में भी प्रगतिशील रही।

चेतना समिति, पटना प्रत्येक वर्ष मिथिला–मैथिली के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले को पुरस्कृत करती है। इस वर्ष का "*मैथिली भाषा साहित्य सम्मान*" डॉ. विद्यनाथ झा विदित को और "संस्कृत भाषा साहित्य सम्मान" डॉ. कलिका दत्त झा को दिया गया। "*कीर्ति नारायण मिश्र साहित्य सम्मान*" युवा चंदन कुमार झा को दिया गया।

पटना/कोलकाता चेतना समिति, पटना द्वारा दिया जाने वाला "*कीर्ति नारायण मिश्र सम्मान 2014*" इस वर्ष चंदन कुमार झा को प्रदान किया गया। यह पुरस्कार इनकी पुस्तक "धरती से अकास धीर" जो नवारंभ प्रकाशन, पटना से प्रकाशित है, के लिए दिया गया।

मिथिला विकास परिषद कोलकाता के द्वारा 7 दिसंबर, 2014 को 14 दिवसीय मिथिला महोत्सव का उद्घाटन पश्चिम बंगाल के महामहिम राज्यपाल श्रीमान केसरीनाथ त्रिपाठी ने किया।

साहित्य अकादमी द्वारा 27 एवं 28 दिसंबर को दो दिवसीय मैथिली संगोष्ठी का आयोजन 4, डी. एल. खान रोड कोलकाता स्थिज अकादमी सभागार में हुआ। यह संगोष्ठी साहित्यकारत्रय जयनारायण मल्लिक, वैद्यनाथ मल्लिक विधु एवं आनंद झा न्यायाचार्य की जन्मशती पर आयोजित हुआ।

प्रखर मैथिली साहित्यिक संस्था 'साहित्यलोक' की मासिक रचनागोष्ठी 16 नवंबर, 2014 को बोकारो में हिंदी एवं मैथिली भाषा के यशस्वी साहित्यकार कुमार मनीष अरविंद के आवास पर आयोजित हुई। पटना के मैथिली के वरिष्ठ कथाकार अशोक की अध्यक्षता और साहित्यलोक के संस्थापक

41 HRD/16—14B

महासचिव तुलानंद मिश्र के संचालन में आयोजित इस रचनागोष्ठी में साहित्यकारों ने विभिन्न रसों का रचना पाठ कर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई।

"*अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद्*" द्वारा 26वाँ अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन दिसंबर, 2014 में आयोजित हुआ। तेघड़ा में श्रीलक्ष्मी नारायण मंदिर आलापुर के प्रांगण में अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद् के तत्वावधान में आयोजित चार दिवसीय 65वाँ मैथिली कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। इसमें कुल 29 प्रशिक्षणार्थी शामिल हुए।

दिसंबर, 2014 में नेपाल में आयोजित 11वाँ अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति डॉ. रामवरण यादव ने कहा कि बहुभाषा, बहुधार्मिक तथा बहुसांस्कृतिक ही समृद्ध नेपाली संस्कृति की परंपरा है। मैथिली भाषा के विकास के लिए सरकार ने नेपाल विद्यापति पुरस्कार कोष की भी स्थापना की है। राष्ट्रपति डॉ. यादव ने कहा कि नेपाल–भारत में पाँच करोड़ से ज्यादा व्यक्ति मैथिली भाषा बोलते हैं। इसलिए मैथिली भाषा के ऊपर किसी प्रकार का खतरा नहीं है। इसे आधुनिक प्रविधि से जोड़ने की आवश्यकता है। सम्मेलन से भाषा साहित्य के माध्यम द्वारा नेपाल भारत के बीच का संबंध और मज़बूत होगा, ऐसा उन्होंने विश्वास दिलाया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली; वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली; केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर; जे. एन. यू. का विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र; मैथिली अकादमी, पटना आदि संस्थाएँ 2014 में भी मैथिली भाषा एवं साहित्य के उन्नयन में प्रयत्नशील रहीं।

इस प्रकार, 2014 में भी मैथिली भाषा एवं साहित्य प्रगतिशील रही। वस्तुतः मैथिली एक प्राचीन तथा समृद्ध भाषा है और निरंतर इसके विकास का प्रयत्न होना चाहिए। वस्तुतः,

"ऐ धरतीपर पावन नगरी
नाम जकर अछि मिथिलाधाम
सीता संग विवाहित पाहुन

मर्यादा पुरुषोत्तम राम
भक्तिभाव चारू दिस पसरल
अछि प्रसिद्ध ज्ञान–विज्ञान
विद्यापति संग वेद पुराएस
हमर मिथिला बड़ महान।"



13

संस्कृत साहित्य

डॉ० अजय कुमार मिश्र

यह बड़ी चौकाने वाली बात है कि साल 2014 जहाँ संस्कृत बनाम जर्मन के नाम पर भाषिक दृष्टि से साहित्य के बाज़ार में बड़ा चर्चित रहा है वहीं यह तथ्य भी नहीं भूलना चाहिए कि संस्कृत भाषा तथा इसके साहित्य की जीवंतता को लेकर समय–समय पर कई सारे मनगढ़ंत सवाल उठाए जाते रहे हैं और संस्कृत–प्रतिरोधी शक्ति को खुद–ब–खुद जवाब मिलता रहा है। इन सवालों के जवाब को पुख्ता बनाने में संस्कृत के समकालीन कवि/समीक्षक/अनुवादक/अन्वेषक तथा संपादक आदि समय–समय पर अपनी महत्वपूर्ण कृतियों से संस्कृत की उत्तरोत्तर श्रीवृद्धि करते रहे हैं। इस लिहाज से इस साल अनुसंधानकर्ताओं ने जहाँ संस्कृत में सन्निहित ज्ञान–विज्ञान का पुनरावलोकन तथा उनकी समकालीनता को भी आँक कर पाठक तक परोसने का प्रयास किया है, वहीं आजकल के विविध आयामों तथा उनके प्रसंगों को भी नए बिंबों में प्रतिबिंबित करने का बड़ा ही सार्थक प्रयास किया है। गौरतलब है कि इस वर्ष भारतीय भाषाओं की चर्चित कृतियों का भी बड़ा ही मनोरम संस्कृत तर्जुमा प्रकाश में आया है। इससे साफ होता है कि संस्कृत जिसकी पहचान भारतीय भाषाओं के साथ जुड़ी थी, उसकी तलाश फिर से जारी है। साथ ही साथ इससे यह भी तस्दीक होती है कि संस्कृत भाषा अपनी बहुआयामी संप्रेषणीयता की जीवंतता को बनाए रखे हुए है क्योंकि अनुवाद कर्म तो परकाया प्रवेश की रचनाधर्मी योगविद्या है। चरित्र–प्रधान रचनाओं को संस्कृत भाषा में पिरोया जाना भी संस्कृत लेखन की उर्वरता को

पुष्टि करता है। साल 2014 में संपादित किताबों में ऐसी किताबें भी प्रकाश में आई है जिनमें शामिल लेख बतौर शोधपत्र विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा सम्मेलनों में पढ़े गए है। कुछ किताबें पिष्टपेषण के रूप में छपाईखाना का रीप्रोडक्ट है जिसका तात्कालिक सबब अकादमिक दुनिया में तकनीकी लाभ का प्रतिफलन है। इस दृष्टि से संस्कृत व्याकरण के दर्शन से जुड़ी किताबों को भी कोई अधिक सराहनीय नहीं माना जा सकता क्योंकि मूल पाठ को आधी अधूरी भूमिका के साथ छाप देने से उसकी शास्त्रीय अर्थवत्ता को उन्मीलित नहीं किया जा सकता। यदि संस्कृत व्याकरण संगणक से अपना नैकट्य रखता है तो इनके अंतःसंबंधों से जुड़ी ताजी सामग्री साहित्य के बाजार में आनी चाहिए। नासा के संस्कृत के नाम पर हम कब तक चलेंगे। यद्यपि 'आचार्यो नागेश भट्टः[1] पुस्तिका में अमिराज राजेंद्र मिश्र, रामयत्न शुक्ल तथा जयप्रकाश नारायण द्विवेदी सरीखे संस्कृत दिग्गजों के सुभाषित वचनों का लालित्य पढ़ने को मिल जाता है। इसके लेखक तथा युवा विद्वान सुधाकर मिश्र ने भाषा के महान दार्शनिक आचार्य नागेश के फलसफे को सार रूप में संस्कृत भाषा के जरिए लिखने का प्रयास किया है जो अकादमिक दृष्टि से तकनीकी लाभ के लिए जरूर उपयोगी साबित होगी। इनके दर्शन को और लोकजन्य बनाए जाने की जरूरत है। पुस्तिका में आचार्य नंदिकेश्वर लिखित काशिका टीका भी छपी है। प्रवीन कुमारी ने अपनी किताब महाकाव्य के प्रथम दो सर्गों के तिङन्तों का विश्लेषण[2] में महाकवि माघ के काव्य के पहले तथा दूसरे सर्गों का आकलन आकृतिमूलक तथा अर्थमूलक नजरिए से करने का प्रयास किया जो साहित्य तथा व्याकरण की दृष्टि से भाषावैज्ञानिक अध्ययन का रास्ता खोजती नज़र आती है। '*पाणिनीय प्रक्रिया ग्रंथ पंचक– मीमांसा*[3] में अभिमन्यु ने आचार्य पाणिनी के प्रक्रिया ग्रंथ पंचक को आधार बनाकर अपनी सामग्री को कुल पाँच अध्यायों में समेटने का सार्थक प्रयास किया है। इसमें प्रक्रिया के उद्भव एवं विकास, उसकी सरंचना, मूलपाठ, वार्तिक, दर्शन, शैली तथा उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए यह भी प्रयास किया गया है कि इस तथ्य को उजागर

किया जाए कि उसका उत्तरवर्ती रचना पर आखिर क्या प्रभाव पड़ा।

इस साल भारतीय दर्शन से जुड़ी किताबें भी अच्छी मानी जा सकती हैं। सी.डी विजल्वान की किताब "*इंडियन थ्योरी ऑफ नॉलेज (बेस्ड अपॉन जयंत्स न्यायमञ्जरी*"[4] जो चर्चित विद्वान आर. सी पांडेय तथा रसिक विहारी जोशी की अनुशंसा से संबलित है, भी उम्दा शोध माना जा सकता है। इसका कारण यह भी है कि आचार्य जयंत की न्यायमञ्जरी को लेकर स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथ बहुत ही कम प्रकाश में आ सके हैं। ग्रंथकर्ता ने इसके मूलपाठों के अंतः साक्ष्यों के आधार पर सामग्री को समीक्षित करने का बड़ा ही सार्थक प्रयास किया है। इसमें बौद्ध, न्याय तथा चार्वाक के तार को भी खोजने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत उम्दा ग्रंथ की सामग्री अंग्रेजी भाषा में होने के कारण इसका पाठकीय आयाम बड़ा हो सकता है। साहित्य और दर्शन के बीच के रिश्ते को स्वतंत्र रूप से शब्दार्थ तथा संकेतग्रह की दृष्टि से विस्तार से पठन–पाठन के लिए गिरीश चंद्र पंत की किताब "*शब्दार्थबोध तथा संकेतग्रह सिद्धांत*"[5] भी महत्व की लगती है। लेखक ने इसमें शास्त्र के इन दोनों पक्षों को बड़ी बारीकी तथा सावधानी के साथ खोलने का सार्थक प्रयास किया है जो काव्यशास्त्र के छात्रों/अनुसंधानकर्ताओं के लिए निश्चित तौर पर उपयोगी माना जा सकता है। इसके शास्त्र मर्म को आम तौर पर छात्र समझने में चूक करते हैं। ये शास्त्र तत्व मीमांसा तथा बौद्ध दर्शन के साथ–साथ साहित्य शास्त्र से जुड़ते हुए ज्ञान दर्शन के त्रिकोणात्मक आयाम बनाते हैं। असीम कुलश्रेष्ठ ने भी अपनी किताब "*पातंजल योग सूत्र का परिचय और वैज्ञानिक अध्यात्म*"[6] में योग विद्या से जुड़ी खास जानकारी आम पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास किया है। गौरतलब है कि इस साल (2015) से विश्व भर में योग दिवस मनाया जाएगा। पारंपरिक विद्या के युवा विद्वान डॉ. सुधीर कुमार ने अपने महत्वपूर्ण शोधपत्रों का संकलन "ईश्वर मीमांसा"[7] नामक ग्रंथ में समाहित किया है। लेखक ने स्वामी दयानंद के चर्चित ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को अपने फलसफे का मानक मानकर भारतीय दर्शन में ईश्वर के विविध आयामों को उन्मीलित करने का सार्थक प्रयास

किया है। प्रस्तुत किताब की भाषा समग्र रूप से संस्कृत में है। लेकिन भारतीय दर्शन मे ईश्वर की सत्ता को लेकर जो नाना प्रश्न उठते हैं, उनका समाधान बड़ा तार्किक तथा ठोस ढंग से करने का प्रयास किया गया है। अतः इसकी उपादेयता पारंपरिक छात्रों के अलावा अन्य छात्रों के लिए और अधिक तब बढ़ जाएगी, यदि इसका तर्जुमा हिंदी तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी हो जाए। उपनिषद विद्या को भी लेकर मनदेव बंधु ने "वृहदारण्यकोपनिषद् एक दार्शनिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन"[8] लिखी है। इसमें जहाँ इसके समाज दर्शन तथा काव्य–भाषा शैली के साथ–साथ ब्रह्म, आत्मा, माया, जगत, परलोक, मोक्ष, सृष्टि संरचना जैसे गूढ़ तथ्यों को उकेरने का प्रयास किया गया है, वहीं धर्म मीमांसा–समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। याज्ञवल्क्य के फलसफे का आकलन भी समीचीन माना जा सकता है।

भारतीय ज्ञान मीमांसा में प्रतीकार्थ का विमर्श बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है। भारतीय संस्कृति के इस गूढ़ ज्ञान के अभाव में पाश्चात्य विद्वानों से बहुत सारी भूलें हुई हैं। राधा गुप्ता ने "*भागवत, महाभारत और रामायण में छिपे रहस्य*"[9] नामक अपनी किताब में इन तीनों महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के रहस्यों को अपने ढंग से रखने का प्रयास किया है जो वाकई में कम से कम एक नए संवाद का रास्ता जरूर साफ करती मालूम पड़ती है। लेकिन अपने तर्कों को स्थापित करने के लिए इन ग्रंथों के अंतः साक्ष्यों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया गया है। लेखक पुराणों के प्रतीक का हवाला देते हुए लिखता है कि गोकर्ण धुंधुकारी कथा के आलोक में कहा जा सकता है कि बुरी आदतों या वासनाओं की संगति चकलाघर से जुड़ी औरतों का प्रतीक होती हैं। कथानको का रोचक ढंग से प्रस्तुतीकरण भी पाठकों की सामान्य जानकारी के लिए रोचक हो सकता है। संस्कृत भाषा, दर्शन तथा व्याकरण के मूर्धन्य युवा विद्वान धर्मेंद्र कुमार की किताब जो उपनिषद[10] विधा पर आधारित है, को चर्चित संस्कृत प्रेमी आचार्य कुमार ने सरल सहज तथा मनोरम भाषा शैली तथा अपनी महत्वपूर्ण टीका टिप्पणी के साथ दर्शन जैसे गंभीर विषय को आम बनाकर भारतीय दर्शन तथा साहित्य को लोकजन्य बनाने का बड़ा ही सार्थक प्रयास किया है।

इनके मार्गदर्शन में ही दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा संस्कृत भाषा को आम बोलचाल में कैसे प्रयुक्त किया जाए, उसके लिए भी इस साल अच्छी किताब छपी है। शारदा लिपि तथा संस्कृत विद्या के चर्चित विद्वान प्रकाश पांडेय के अपने संपादकत्व (प्रधान) में "*भारतीय दर्शन एवं साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान*"[11] भी हिंदुस्तानी फलसफा तथा साहित्य के साथ प्राकृत भाषा के रिश्तों को खंगालती नज़र आती है। वस्तुतः यह पुस्तक महत्वपूर्ण शोधपत्रों का संचयन है। इसका छप कर प्रकाश में आना इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए कि आम पाठक जहाँ प्राकृत की विरासत को संस्कृत से अलग मानते हैं उनको फिर से एक नई दृष्टि मिलेगी तथा भारतीय भाषाओं के सहकारी संबंधों को फिर से जुड़ने का मौका मिलेगा। आजकल जो ग्लोबलाइजेशन के कारण साहित्य और संस्कृति तथा भाषा पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं, उनका भी थोड़ा समाधान मिलेगा।

ज्ञान प्रकाश शास्त्री तथा विजय कुमार त्यागी के संपादकत्व में "*प्रस्थानत्रयी – पदानुक्रम–कोशः*"[12] का छपना भी इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें प्रमुख उपनिषदों के अलावा प्राप्तसूत्र और श्रीमद्भागवतगीता के पदों और पदार्थों को भी समुपस्थित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ इनके मूल पाठों के कुछ अंशों के कठिन शब्दों के अर्थों को भी खुलासा करने का प्रयास है। संस्कृत भाषा से जुड़े शब्दकोश बड़ी ही कम संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं। अतः इसे श्रमसाध्य कार्य माना जाना चाहिए।

अंजना और नवीन झा ने मिलकर '*श्री विष्णुसहस्रनाम*'[13] का संपादन प्रस्तुत किया है। दक्षिण भारत में काफी लोकप्रिय प्रस्तुत रचना का देश के कई भागों से पेपर बैक रूप में प्रकाशन होता रहा है। लेकिन इस किताब की खासियत है कि इसमें इस विषय से जुड़ी एक पुष्कल भूमिका के साथ इस पर लिखे शंकर भाष्य का अंग्रेजी तर्जुमा भी प्रस्तुत है।

इस साल वैदिक साहित्य से भी जुड़े अनेक स्वतंत्र समीक्षा ग्रंथों के साथ–साथ कुछ उम्दा संपादित ग्रंथ भी प्रकाश में आए हैं। इस लिहाज से भाग्यलता पारसकर की किताब– '*एकाक्षरी बैठपरिभाषा*'[14] भी बड़ा मौलिक

तथा परिश्रमपूर्ण कार्य माना जा सकता है। वस्तुतः यहाँ 'बैठ' शब्द अनुक्रमणी का उपप्रकार होता है जो ऋग्वेद संहिता के पद (शब्द) के कुछ खास अर्थों को इंगित करता है। विदुषी लेखिका ने इसके मूल पाठों की व्याख्या, टिप्पणी तथा अंग्रेजी अनुवाद के साथ संपादित कर वैदिक विद्या के एक अति महत्वपूर्ण आयाम को शोधकर्ताओं तथा सजग पाठकों तक पहुँचाने का बड़ा ही सार्थक कार्य किया। वीना विश्नोई (शर्मा) ने भी नौ अध्यायों के अंतर्गत "*अथर्ववेदीय परिवार का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण*"[15] नामक किताब में मनोविज्ञान की अवधारणा के साथ–साथ पारिवारिक मनोविज्ञान, गृहस्थाश्रम के अलावा अनुष्ठान, गृहस्थ के तत्व तथा इनके विविध संस्कारों का भी आकलन किया है। किताब में पाश्चात्य मनोविज्ञान का भी थोड़ा जिक्र है। "*वेद, यज्ञ और पर्यावरण*"[16] में सूर्य नारायण गौतम ने वैदिक मान्यताओं के साथ समकालीन आयामों को प्रस्तुत कर इसके वैज्ञानिक आधार को भी टटोलने का प्रयास किया है। पाँच अध्यायों के अंतर्गत लिखित प्रस्तुत किताब में वेद के यज्ञीय महत्व के साथ–साथ पर्यावरण से जुड़ी समकालीन समस्याओं का भी निदान खोजने का प्रयास किया गया है जो समय की युगीन माँग है। लेखक लिखता है कि उस वक्त यज्ञ में ऐसी लकड़ियों (समिधा) को अनुष्ठान में प्रयोग किया जाता था जिनमें अपान वायु अर्थात् कार्बन–डाई–ऑक्साइड की मात्रा बहुत ही कम हो, साथ ही साथ ज्वलनशील होने के कारण कोयले के रूप में उनका तब्दील होना आसान होता था। अथर्ववेद के अनुसार सूअर, नेवला, साँप तथा गंधर्व वनज भी जड़ी–बूटियों से अपना इलाज करना जानते थे– "*वराहो वेद वीरुधं*" (8/7/23)। इस साल स्वतंत्रता सेनानी तथा भारतीय मान्यताओं के पुरोधा बाल गंगाधर तिलक की किताब "*ओरियन ऑर एंटीक्यूटी ऑफ द वेदाज़*"[17] भी फिर से प्रकाश में आई है। उपनिषद, वेदांत, भवभूति, बुद्ध, मध्वाचार्य, मनु आदि के उद्धरणों को आधार बनाकर पुस्तक के शीर्षक को चरितार्थ कर एक नए किस्म की सामग्री विश्लेषित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। इस किताब का नाम है– पर्सनेलिटि डेवलपमेंट इन संस्कृत लिटरेचर[18] इसके

संपादक के.वी.अर्चक ने चुनिंदे शोध पत्रों को संग्रहीत कर बड़ा ही अच्छा प्रकाशन प्रस्तुत किया है। उसी प्रकार राजेंद्र नाथ शर्मा की किताब "*स्टड़ीज इन इंडोलॉजिकल विज़डम*"[19] भी समसामयिक तथा ठोस प्राच्य विद्या के अध्ययन की दृष्टि की महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। सुधीर कुमार ने ईशोपनिषद, वेद, योग दर्शन, श्रीमद्भागवतगीता आदि से जुड़े अपने महत्वपूर्ण शोध पत्रों का संकलन "*वैदिक मंजूषा*"[20] नामक ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। इनमें कुछ पत्र हिंदी के अलावा संस्कृत भाषा में भी संग्रहीत हैं। लेखक ने छांदोग्योपनिषद के हवाले से लिखा है कि यज्ञ अध्ययन तथा दान धर्म का प्रथम स्कंध होता है "*त्रयो धर्म स्कंधों*"(2/23/1) पुस्तक में वैदिक–शिक्षा–व्यवस्था बाल शिक्षा–प्रकरण भी बड़े काम का लगता है। आज पूरी मानव सभ्यता पतन के कगार पर खड़ी दिखती है और इसमें कोई शक नहीं कि संस्कृत और इसका मूल्याधृत जीवन दर्शन इसके पतन के इलाज को ईजाद कर सकता है। अतः जरूरी है कि हम संस्कृत साहित्य में निहित इन तत्वों को वैश्विक नजरिए से सामने लाएँ। भारतीय चिंतन तथा अर्थशास्त्र के चर्चित विद्वान वी. पी. पंचमुखी द्वारा "*ह्यूमन साइंस इन इंडियन हेरिटेज*"[21] वाकई में कमाल का ग्रंथ माना जाना चाहिए। ऐसे प्रकाशन से भी संस्कृत साहित्य में सन्निहित अर्थशास्त्र तथा प्रबंधन से जुड़े भारतीय विरासत के फलसफे, गीता के आधार पर सेल्फ प्रबंधन के साथ–साथ कुछ उनके आलेख भी छपे हैं। लेखक ने संपत्ति को दो भागों में विभाजित किया है (i) देवी तथा (ii) आसुरी। इनमें अभय, ज्ञानयोग, दान, स्वाध्याय, आर्जव (Straight forwardness), अपैशुनम (Absence of wickedness) अलोलुत्वम् (Absence of crave) मार्दवं ((Kindness) आदि देवी तथा दंभ, अभिमान, अज्ञान तथा पारुष्य आदि आसुरी संपत्ति की श्रेणी में आते हैं। रंजना मालवीय ने भी अपनी महत्वपूर्ण किताब "*इंडोनेशिया महाभारत विराटपर्व*"[22] जहाँ भारत तथा इंडोनेशिया के बीच डायस्पोरिक स्टडीज़ का मार्ग प्रशस्त करती है, वहीं यह भी साफ़ करती है कि संस्कृत ने अपने साहित्यिक वाहन के जरिए एशियाई तथा अन्य देशों पर कैसे अपना

सांस्कृतिक सिक्का जमाया है। लेखक ने बड़ी ही महत्वपूर्ण सूचना दी है कि इंडोनेशिया में महाभारत के आदि, विराट तथा भीष्म पर्व का जावीकरण तो दसवीं शताब्दी में राजा धर्म्मवंशत्मु: अनंतवर्मन देव के समय ही हो गया था। गौरतलब है कि ये संस्कृत पर्वों के अनुवाद नहीं हैं। इनका विराट पर्व ही एकमात्र ऐसा पर्व है जिसके प्रारंभ में जावी भाषा में व्यासमत अर्थात् महाभारत का अनुवाद किस प्रकार किया जाए, इस पर प्रकाश डाला गया हैं। यद्‌यपि इनके आठों उपलब्ध पर्वों के बीच--बीच में संस्कृत श्लोकों का होना गौरतलब है। लेकिन यहाँ यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इनमें कुछ संस्कृत के ऐसे भी शब्द हैं जो मूल संस्कृत के अनुकूल शब्दार्थ नहीं देता जिसका भाषावैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। नजीर के तौर पर वहाँ पति तथा भुजंग जैसे शब्द प्रढण शब्द के बोधक हैं। गार्गी धुंता ने "*संस्कृत साहित्य में गृहस्थ आश्रम*"[23] पुरुषार्थ चतुष्टय से जुड़े गृहस्थ आश्रम व्यवस्था की रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, कालिदास, अश्वघोष, भारवि तथा बाणभट्‌ट को आधार बना कर वर्णन किया है। धनु विद्‌या के शास्त्रीय पक्ष को लेकर "*वशिष्टाज धनुर्वेद संहिता*"[24] भी बाण बनाने--चलाने, उसके प्रकार तथा रखरखाव की विद्‌या/कला से जुड़ी महत्वपूर्ण किताब इस वर्ष प्रकाश में आई है। इसमें ज्योतिषशास्त्र के आधार पर समर भूमि की रणनीति का भी ज्ञान दिया गया है। ग्रंथ की लेखिका पूर्णिमा रे ने इसके मूलपाठों का आंगल भाषा मे अनुवाद कर इसकी पाठकीयता को व्यापक बनाने का सार्थक प्रयास किया है। मत्स्य पुराण तथा अग्नि पुराण के परिप्रेक्ष्य में गृह, राजगृह तथा देव गृह निर्माण विधाओं को लेकर सुधीर कुमार ने "*गृहवास्तु: एक समीक्षण*"[25] नामक अच्छी किताब लिखी है। वास्तु अध्ययन से पता चलता है कि दुर्ग निर्माण में इसके आचार्य कितने पारखी तथा दूरदर्शी हुआ करते थे। चप्पे--चप्पे में सुरक्षा का बंदोबस्त होता था जहाँ परिंदा भी अपना पर नहीं मार सकता था। युद्‌ध के समय दीर्घकालीन राशन पानी की पर्याप्त व्यवस्था होती थी। उसी प्रकार "*भारतीय ग्रह विज्ञान और आधुनिक समस्याएँ: कारण एवं निवारण*"[26] (जितेंद्र व्यास) भी प्रकाश में आई है। इसमें वृक्ष लगाने के नक्षत्र

एवं विधि, सरोवर के किनारे योग्य वृक्ष लगाने तथा बीज और फ़सल लगाने की मांगलिक वेला आदि का भी शास्त्रीय जिक्र है। साथ ही साथ फ़सल काटने तथा बेचने के हिसाब से मुहूर्त तथा अर्ध मार्तंड के अनुसार तथा संक्रांति के हिसाब से फसलों में तेजी–मंदी का भी अंकन है। इसके अलावा ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या तथा शूद्रा आदि प्रकार की भूमि का भी उनके लक्षण तथा गुणों के हिसाब से वर्णन किया गया है। वाकई में ऐसा लोकजन्य जीवनोपयोगी आकलन संस्कृत भाषा तथा इसके साहित्य के देशज तथा जन, भूमि और संस्कृति के रिश्तों को साफ़ करता है। सुषमा भारद्वाज की किताब "*परमारवंशीय अभिलेखों में धर्म*"[27] भी साहित्य के जरिए इतिहास तथा संस्कृति के बीच नज़दीकी रिश्तों को खोजती नजर आती है। ऐसा माना जाता है कि परमार राजघराने का प्रादुर्भाव आबू पर्वत से हुआ है। लेखक ने इसमें इस राजवंश के पौराणिक महत्व का जिक्र करते हुए इसके समकालीन शैव, वैष्णव, तथा शाक्त के अलावा गौण धर्मों का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ इस राजवंश के मंदिर निर्माण कला तथा प्रतिमा स्थापना ज्ञान का भी जिक्र किया गया है।

जगदीश चंद्र शास्त्री ने "*संस्कृत नाटय कला और भारतेंदु*"[28] नामक किताब में इन दोनों भाषाओं के परस्पर साहित्यिक तथा शास्त्रीय संबंधों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है जिसे युगीन माँग कहा जाना चाहिए क्योंकि भाषा की राजनीति के नाम पर इनके गर्माहट भरे रिश्तों पर बर्फ़ जमाने की हर कोशिश होती रही है जो नाजायज़ ही माना जाएगा। लेखक ने साफ किया है कि भारतेंदु ने भरत के नाट्यशास्त्र को अपनाते हुए इसमें कुछ इनोवेटिव तब्दीली भी की है जो रंगमंच की दृष्टि से समय का तकाजा ही कहा जाना चाहिए। लेकिन इसका नायक संस्कृत के अनुकूल सर्वगुणसंपन्न है और इसमें संस्कृत के सर्वश्राव्य, नियत श्राव्य तथा अश्राव्य तीनों गुणों का पालन किया गया है। संपादक सुधीर कुमार ने वाल्मीकि रामायण के संदर्भ में "*श्रीरामः एक विवेचन*"[29] (मूल लेखिका सुनीता देवी मल्हान) का संपादन किया है जिसमें पुरुषोत्तम राम की विविध मर्यादाओं के साथ–साथ उनके

व्यक्तित्व की युगीनता तथा सार्थकता का भी अंकन प्रस्तुत किया है जिसे एक बड़ा ही महत्वपूर्ण सवाल माना जाना चाहिए। विशाखदत्त रचित नाटक को आधार बना कर वीना विश्नोई (शर्मा) ने "*मुद्राराक्षसे राजनीति सिद्धांत – चिंतनम्*"[30] में राजनीति विज्ञान के नाना पहलुओं को आकलित करने का प्रयास किया गया। उसी प्रकार योगिता चौधरी ने भी काव्यशास्त्रीय दृष्टि से "*संस्कृत नाटकत्रयी में अंगी अंग रस*"[31] में अभिज्ञान शाकुंतल, उत्तर रामचरित तथा वेणीसंहार रूपकों का अच्छा अंकन प्रस्तुत किया है। नारायण कुमार की किताब "*वाल्मीकि रामायण में वर्णित आर्थिक जीवन*"[32] भी आम तौर पर संस्कृत की परिपाटी के लेखन से थोड़ा हट कर मानी जा सकती है। लेकिन इस सामग्री को और तथ्यात्मक तथा व्यापक नजरिए से आँका जाना चाहिए, ताकि विवेचन आधुनिक संदर्भ में और गरिष्ठ तथा ठोस हो सके।

संस्कृत भाषा के बहुचर्चित बहुपठित कवि समीक्षक की किताब "*बहस में स्त्री*"[33] वस्तुतः संस्कृत कवियों/समीक्षकों/समालोचकों के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करती है क्योंकि संस्कृत में पुरुषवादी/मर्दवादी तबसरा का सिलसिला रहा और धीरे–धीरे स्त्री अस्मिता तथा उसके योगदानों को हाशिए पर रख कर उसे सिर्फ श्रृंगारिक कसौटी तथा विलासिता के कैनवास पर परखने की साजिश रही। उसी सत्ता–प्रतिरोधी मानसिकता का नज़ीर है यह महत्वपूर्ण किताब। इसमें विद्वान तथा सधे नक़्क़ाद आचार्य त्रिपाठी ने आश्चर्य जताया है कि पाँच हजार साल या इससे भी बहुत अधिक पहले से लेकर आज तक धर्म, दर्शन, साहित्य तथा कला के नाना विधाओं पर जो चर्चा/बहस हुई, आखिर उसमें स्त्री विमर्श को क्यों अनदेखा किया गया? इतना ही नहीं, बुद्ध, महावीर, वात्स्यायन या धर्मकीर्ति ने गंभीर संवादों/बहसों को जारी रखा, लेकिन उन दिग्गजों से भी काफी चूक हुई है। आचार्य त्रिपाठी सही फरमाते हैं क्योंकि पूर्व वैदिक काल के बाद हम स्त्री की दशा में उत्तरोत्तर गिरावट का सूचकांक देखते हैं। प्रस्तुत किताब के लेखक ने समालोच्य सामग्री के जरिए संस्कृत समीक्षा का सीधा तार पोस्टमॉर्डनिज़्म से

जोड़ कर एक नई बहस का आगाज़ किया। भारतीय इतिहास के पन्नों में याज्ञवल्क्य और गार्गी के बहस को कोई खास तवज्जो नहीं दी गई है। आचार्य त्रिपाठी ने इसके संदर्भ को बड़ी गहराई से खँगालने का सार्थक प्रयास किया है। वस्तुतः यह पुस्तक हीरानंद शास्त्री व्याख्यान माला (वत्सल निधि न्यास, दिल्ली 07 मार्च 2011) का परिमार्जित तथा विस्तारित रूप है जिसमें "*परंपरा और पृष्ठभूमि*", "बहस को लेकर बहस–शास्त्रार्थ की सैद्धांतिकी", "*ब्रह्मज्ञानियों के बीच स्त्री और शास्त्रार्थ में स्त्री का हस्तक्षेप*", "*तिनके की ओट में स्त्री*", "*शात्रार्थ में महाभारत और महाभारत का शास्त्रार्थ*", "पहली सहस्राब्दी में स्त्री–पुरुष वर्चस्व के प्रतिरोध में", "*शास्त्रों के समर में एक स्त्री*', जैसे छोटे–छोटे कुल सात अध्यायों में बड़ी–बड़ी बातें सतर्क तथा सप्रमाण उपदेशित की जाती है। उसी प्रकार शेख़ अब्दुल ग़नी का शोधपरक ग्रंथ "*संस्कृत साहित्य को मुसलमानों का योगदान*"[34] में साहित्य की गंगा–जमुनी सहकारी तहजीब की तहकीकात भी बड़ी गौरतलब है। इससे जहाँ यह साफ़ होता है कि संस्कृत किसी वर्ग/समुदाय की बपौती नहीं है वहीं यह भी पता चलता है कि संस्कृत भाषा तथा साहित्य को सजाने तथा सँवारने मे इस्लाम का कितना बड़ा योगदान रहा है? वाकई में पंचतंत्र यदि अरब के देशों में न गया होता तो इसे बेशुमार वैश्विक लोकप्रियता नहीं मिलती और न ही अरब वाले अपने बाल साहित्य का खाक़ा इतना बेमिसाल और प्राचीन खींच पाते। यह किताब इसलिए भी मानीखेज मानी जा सकती है कि विद्वान लेखक ने प्राचीनतम से आधुनिकतम मुस्लिम संस्कृत विद्वानों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर व्यापक प्रकाश डाला है। उसको पढ़ने से मजहब के नाम पर भाषाई खेल खेलने वालों की भी आँखें खुल सकती हैं।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी के सौप्रस्थानिक अवसर पर उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व को लेकर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (सागर) "*संस्कृत के अभिनव रचनाधर्मीः आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी*"[35] में पढ़े गए चुनिंदे शोधपत्रों का संपादन कुसुम भूरिया दत्ता ने इस साल किया है। इस ग्रंथ को अनूठा इसलिए भी कहा जा सकता है क्योंकि इसे अभिनंदन ग्रंथ के नाम पर

शोधपत्रों रूपी मक्खियों पर मक्खियों को नहीं बैठाया गया है बल्कि' इसमें देश के नामचीन मनीषि – युवा विद्वानों ने आचार्य त्रिपाठी जी की रचनाधर्मिता के मर्म को बड़ी गंभीरता से आँकने की कोशिश की है। इस वजह से जहाँ इनके रचना संसार का बड़ा ही मनभावन इंद्रधनुषी खाका खिंचता नज़र आता है वहीं विद्वानों को भी मुँह तोड़ जवाब मिल सकता है जो आधुनिक संस्कृत की ऊर्जस्विता को बड़े मंद नजरिए से आँकते हैं।

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी संस्कृत हिंदी की सहकारी संस्कृति के नजरिए से महाप्राण निराला, नार्गाजुन (वैद्यनाथ मिश्र) तथा जानकी वल्लभ शास्त्री के आगे की महत्वपूर्ण कड़ी माने जा सकते हैं। यही कारण है कि जहाँ वे पारंपरिक छंदों का निर्वहन अपने सृजन में करते हैं, वहीं उससे चूकने में कोई कोताही भी नहीं करते। साथ ही साथ अपने भाव तथा शैली को अपने समकालीन विविध इंद्रधनुषी रंगों से नक्काशी करने से बाज भी नहीं आते हैं। वैसे तो उनकी सद्यः प्रकाशित कविता संचयन समष्टि,[36] *'आकाशः'*, *'धरित्री, बीजानि'*, शंबूकाः, शनैः शनैः *'वार्धक्यम्'*, *'प्रतीक्षारसः'*, मालवी भवनस्य वाटिका, "*देवदीपावली*", "प्रस्तर स्थले नगरे", "देहल्यां मेट्रोयाने", 'वटतरुः', *'नारिकेलस्'*, *'अधेगमनम्'*, *'अनिद्रा'*, *"संस्कृतस्य अगाधे सरसि"*, 'कोकिलः', *"पंडितस्य आधुनिकस्य च संवादः"*, *'मुस्ताक्षतिः'*, *"न खलु तदवाच्यम्"*, *'वयम् चायपानकाले, 'हेमवर्गे हिमपात' 'आतपस्य कोटयः'* "*नवा नायिका*" जैसे छोटी मझोली तीस संस्कृत कविताओं को प्रकाशित करवाया है जिनके शीर्षकों में भी बिंब की समकालीनता तथा आम लोगों के आस–पास की आम बातें झलकती हैं। इस सबब से भी इन्हें संस्कृत वाङ्मय के लोकजीवन के कवि माना जाता है। इससे संस्कृत की आधुनिक कविता जनमानस के बीच होती हुई, अपने श्रृंगार प्रधान तथा भोगवादी रुझान को भी अपाकृत करती नजर आती है। आचार्य त्रिपाठी जी दवारा इन संस्कृत कविताओं का सरल हिंदी तर्जुमा किया जाना भी बड़ा मायने रखता है। यह अनुवाद अपने आप में मूल हिंदी कविता के रुझान वाला हो गया है। वाकई में ये कविताएँ संस्कृत के साथ–साथ हिंदी कवियों के लिए रोल मॉडल हो सकती हैं। कवि ने प्रतीकों

के माध्यम से, वह भी छोटे–छोटे बिंबों से, बड़ी–बड़ी बातों को रखने का सार्थक प्रयास किया है। '*वार्धक्यम्*' कविता में कवि मृत्यु को माता की तरह मानता है जिसमें भारतीय दर्शन के काल से संबंधित चक्रात्मक (cyclic) अवधारणा का तार सृजनात्मकता से जुड़ता है – "*मृत्युर्मातेव तमेति/तमङ्के धृत्वा जिगमिषति कुत्र नयसि माम?*" यद्यपि कवि ने बुढ़ापे को प्राप्त करना गौरव की बात माना है लेकिन आज महानगरों में सीनियर सिटीज़न की समस्या है। उसे भी नज़रअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। हाँ, यह बात जरूर है कि "प्रस्तरस्थले नगरे" महानगरीय जीवन की भाग दौड़ तथा धन–लोलुपता के कारण रिश्तों पर जमती बर्फ की कहानी बयां करती है। 'वटतरुः' भी नॉस्टेल्जिया का वातावरण बनाती है और "*भवनस्य वाटिका*" भी जहाँ भौतिक विकास के नाम पर जीवन के प्रकृति से दूर होते रिश्तों को साफ करती है वहीं बाग़ में पीपल के वृक्ष से नन्हें–नन्हें फूलों की आपसी बातचीत भी शहरीकरण की हताशा का संकेत देती है। 'चायपानकाले' तो चाय के बगान की प्राकृतिक सुषमा के वर्णन से शुरू होती है। लेकिन उसकी अंतिम परिणति गंभीर स्त्री–विमर्श के रूप में होती है। इस लिहाज से "*नवा नायिका*" भी काफ़ी महत्वपूर्ण कविता लगती है जिसमें दुनिया की आधी आबादी संसार का कमोबेश सारा बोझ अपने कंधों पर ढोने को मज़बूर है, फिर भी उसकी कोई सामाजिक सुरक्षा की गारंटी नहीं है। 'आकाशः' कविता भी जहाँ एक ओर व्यष्टि तथा समष्टि के बीच के दवंदवों को संतुष्ट करती है वहीं दूसरी ओर मौकापरस्ती को भी इंगित करती है। यहाँ '*आकाश* शाश्वतता के रूप में परंपरा का भी प्रतीक है और स्वार्थ तथा भौतिक लोलुपता के कारण परंपरा तथा आधुनिकता में किस तरह टकराव हो रहे हैं, उसकी भी यहाँ ध्वनि सुनी जा सकती है।

संस्कृत विद्या के यशस्वी युवा विद्वान प्रफुल्ल गड़पाल ने भी "*महाबोधिद्रुमविजयम्*"[37] नामक मौलिक खंडकाव्य का सृजन किया जो संस्कृत–पाली के बीच ठंडे होते रिश्तों के बीच गर्माहट पैदा कर सकती है। इस रचना का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि भगवान बुद्ध के फलसफा

तथा जीवन के बारे में वैश्विक चर्चा होती है। लेकिन भगवान बुद्ध को जिस वृक्ष के नीचे महाज्ञान की प्राप्ति हुई उसका इतिहास के पन्नों में नाम मात्र पढ़ने को मिलता है जबकि राजा अशोक महान ने सबसे पहले इसे चिन्हित किया था। युवा तेजस्वी रचनाकार गड़पाल ने इस सामग्री से जुड़ी पुष्कल भूमिका के साथ–साथ अपनी सरल तथा सहज भाषा में इसके मूल की '*संबोधि*' नामक हिंदी व्याख्या भी प्रस्तुत की है। परिशिष्ट के रूप में इनके कठिन शब्दों की पृष्ठगत सूची भी पाठकों को मुहैया कराई गई है। कवि ने इसमें सिर्फ बोधि वृक्ष के इतिहास का ही अंकन नहीं किया है बल्कि उससे जुड़े नाना काल खंडों में हुए राजनैतिक तथा सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से भी आकलन किया है। अतः संस्कृत भाषा के माध्यम से इसे इतिहास और साहित्य के बीच एक महत्वपूर्ण हस्तेक्षप माना जा सकता है। बोधिवृक्ष तथा बोधगया के माहात्म्य को सरल तथा प्रभावी संस्कृत भाषा में पढ़ते ही बनता है "ततो वृक्षस्य सर्वत्र मान्यताऽखिल भूतले/अद्यपि शाश्वती सेषा विद्यते पावनी स्थली।।3।।

साहित्य शास्त्र तथा बौधदर्शन के नदीष्ण विद्वान सी. उपेंद्र राव की रचना '*गुरुपरंपरा*'[38] ने वस्तुतः भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में गुरु महिमा का मनभावन रूप प्रस्तुत कर इसके अतीत माहातम्य को पुनर्स्थापित किया जिसका इसलिए भी आज काफी महत्व है कि व्यावसायिक शिक्षा के बढ़ते दबाव तथा कुछ औपनिवेशिक कुप्रभाव के कारण शिक्षक, जो ईश्वर की तरह अर्चित होता था, के प्रति भक्ति–भावना में काफी कमी आई है। ये भी जरूरी है कि शिक्षकों को भी गुरु की तरह रहना होगा। तभी तो कवि भी मानता है कि "सैकड़ों में एक ज्ञानी होता है विक्रमी हजारों में एक होता है, आज उस भक्ति की भावना में काफी कमी आई है। हाँ, यह भी जरूरी है कि शिक्षकों को भी गुरु की तरह रहना होगा, तभी तो कवि भी मानता है कि– "सैकड़ो में एक ज्ञानी होता है, विक्रमी हजारों में एक होता है किंतु विद्या व विनय से संपन्न गुरु लाखों में एक होता है – "शतएवेको भवेद–ज्ञानी सहस्रेवपि विक्रमी। विद्याविनयसंपन्नों गुरुर्लक्षस जायते।।48।। मूल का

सरल तथा ललित अनुवाद भी श्लाघ्य है। वस्तुतः कुछ श्लोक तो सुभाषित वचनों की दृष्टि से भी बड़े सटीक बैठते हैं। आचार्य नोदनाथ मिश्र ने भी "*शिक्षा सूक्ति मुक्तावली*"[39] नामक अपनी किताब में संस्कृत वाङ्मय के कुछ नए चुनिंदे सुभाषित वचनों को ललित हिंदी–अंग्रेजी तथा इसके मूल संस्कृत श्लोकों के साथ प्रस्तुत किया है। इन सूक्तियों को लेखक ने ज्ञान खंड, आचार्य खंड, शिक्षानीति खंड तथा प्रकीर्ण खंड के रूप में विभाजित कर इनकी अनुक्रमणिका भी दी है। लेखक ने महाभारत की उक्ति को उद्धृत किया है कि जिस प्रकार तपाने, काटने तथा घिसने से खरे सोने की पहचान होती है उसी प्रकार शिष्यों के खानदान तथा गुण आदि की परीक्षा से होती है– "यथा हि कनकं शुद्धिम्, तापच्छेदनिकर्षणै/परीक्षेतं तथा शिष्यानीक्षेत् कुलगुणादिभिः।। (शांतिपर्व)

साहित्य अकादमी से छपा हुआ तथा यहीं से पुरस्कारप्राप्त तेलुगु कविता संचयन '*कालं न निद्रापयाणि*'[40] (मूल रचनाकार एन. गोपी) मूल का जी. एस. आर. कृष्णमूर्ति ने बड़े ही ठोस रूप में संस्कृत अनुवाद किया है। यह तक़रीबन चौवन छोटी–छोटी लेकिन बड़ी प्रभावोत्पादक कविताओं का स्तबक है। इनके पढ़ने से जहाँ तेलुगु संस्कृति तथा इसकी भाषा पर स्थानीय प्रभाव की झलक मिलती हैं वहीं अनुवाद संस्कृत भाषा के काफी समीप भी है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की तरह '*चूल्हा*' नामक संस्कृत कविता में गोपी की तेलुगु कविता 'रोटिका' में कविता तथा उसके बिंब के संप्रेषण का प्रतिबिंब देखा जा सकता है – प्रभातं नाम/नो गृहे रोटिका भानोरूदय एव/पिण्डी अङ्गुली पञ्चकसरणिमलंकुर्वती/हस्तरेखा : सप्रियं स्पृशन्ती चुम्बन्ती/निर्मिता श्रमस्पर्शासिद्धांतिका रोटिका/पेषणे कः तलः किं वा रूपं धरति! इनमें अनेक कविताओं में दार्शनिकता तथा शब्द सौष्ठव का पलड़ा भारी होने के कारण ये अनूदित कविताएँ अपने आप में ऑरिजिनल लगने लगती हैं। इसी लब्धप्रतिष्ठ अकादमी से रवींद्रनाथ टैगोर की बंगला रचनावली '*बलाका*'[41] का नगेंद्रनाथ चक्रवर्ती द्वारा संस्कृत अनुवाद के रूप में छपना भी गौरतलब है। बंगला तथा संस्कृत की कविता की शैली तथा उपमाओं की

जीवंतता की गहराई तथा सामंजस्य सहज ही यहाँ पाए जा सकते हैं- "एकस्मिन् फाल्गुने दिने कुञ्जवीथीषु सैकते/जातानि नवपत्राणि जीवनस्य लतासु मे पत्राणि तानि दृश्यन्ते कम्पमानानि केवलम्/ रक्तवर्ण–व्यथाक्लिष्ट हत्कमल – पलाशवत।। आम तौर पर यह देखा गया है कि विवेकानंद से जुड़ी सामग्री आंग्ल भाषा में ही बहुतायत रूप में मिलती है। हिंदी भाषा में बहुत कम प्रामाणिक तथा सामग्री की दृष्टि से पेपर बैक में किताबें मिलती हैं। हाँ, यह तथ्य अलग है कि रेलवे स्टेशन के बुक स्टॉल पर शीशे के अंदर इनकी तेजस्वी तस्वीर हमें निहारती मौन रूप में दिख जाती है। लेकिन इस साल बंगला के चर्चित लेखक तथा समाज सुधारक निमाई साधन बोस के द्वारा बंगला में लिखे गए स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्र का सरिता कृष्ण शास्त्री ने बड़े ही उम्दा ढंग से संस्कृत अनुवाद प्रस्तुत किया। भाषा में न ही व्याकरण का जाल और न ही साहित्य के भारी भरकम उपमा/रूपक आदि की मार पाठक मन को परेशान करती है। फलतः स्वामी जी के प्रामाणिक जीवन की जानकारी तथा प्रांजल और ललित संस्कृत भाषा सीखने के लिए भी यह किताब अच्छी मानी जा सकती है। नजीर के तौर पर 'वर्तमान भारत' की अनूदित स्वदेश संबंधी अवधारणा भी पढ़ी जा सकती है। "हे भारत! किम् एतेन अन्येषां प्रतिध्वनिना, अन्येषां निकृष्टेन अनुकरणेन, एतेन परावलम्बनेन, एतेन दासतुल्येन दौर्बल्येन, एतेन अधमेन गर्हणीयेन क्रौर्येण च त्वं सभ्यताया : श्रेष्ठताया : शिखरम् आरोढुम इच्छसि?" संस्कृत भाषा तथा बौद्ध अध्ययन में निरंतर शोधरत युवा विद्वान प्रफुल्ल गडपाल ने भी चर्चित इतिहासकार तथा आयरन हिस्ट्री के जनक डी.डी. कौशांबी के पिता आचार्य धम्मानंदकोसम्बि रचित मराठी भाषा की रचना जो त्रिपिटक ग्रंथ के आधार पर बोधिसत्वः[42] का जीवन चरित है, का बड़ा ही अच्छा अनुवाद प्रस्तुत किया है। वस्तुतः मराठी भाषा की इस जीर्ण शीर्ण पांडुलिपि का कायाकल्प करना भी गडपाल के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहा होगा। तभी सं त भाषा में अनेक उत्तम तथा श्रेष्ठ रचनाएँ अनुवाद के जरिए पहुँच कर भारतीय भाषाओं की समग्रता की पहचान–संस्कृत फिर से अपनी सार्वभौमिक पहचान तलाश रही है जिसमें

ऐसे नवोदित विद्वानों का सार्थक प्रयास निश्चित तौर पर श्लाध्य है। प्रस्तुत अनुवाद की नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से समीक्षा भी अपेक्षित है। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं की सहकारी संस्कृति के चर्चित कवि "आचार्य हेमचंद्र"[43] के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जुड़ी पुस्तिका भी साहित्य अकादमी के अच्छे प्रयासों में एक माना जाना चाहिए क्योंकि ऐसा नामचीन कवि आखिर क्यों ओझल रहा?

संदर्भ

1. बनारस मर्केंटाइल कंपनी, कोलकाता।
2. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
3. प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
4. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
5. विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
6. सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
8. आस्था प्रकाशन, दिल्ली।
9. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
10. दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली।
11. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, राजस्थान।
12. परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
13. जे. पी. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
14. एजुकेशन बुक सर्विस, दिल्ली।
15. आस्था प्रकाशन, दिल्ली।
16. एजुकेशनल बुक सर्विस, दिल्ली।
17. शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
18. कावेरी बुक्स, दिल्ली।
19. प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
20. शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
21. अमर ग्रंथ पब्लिकेशंस, दिल्ली।

22. प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
23. श्रीकृष्ण साहित्य सदन, दिल्ली।
24. जे. पी. पब्लिकेशंस, दिल्ली।
25. सत्या प्रकाशन, दिल्ली।
26. प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
27. विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
28. अंकित पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
29. शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली।
30. आस्था प्रकाशन, दिल्ली।
31. विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली।
32. प्रशांत पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
33. सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, दिल्ली।
34. लेखनी, दिल्ली।
35. सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
36. देववाणी परिषद्, दिल्ली।
37. सम्यक् प्रकाशन, दिल्ली।
38. पृथ्वी प्रकाशन, दिल्ली।
39. अमर ग्रंथ पब्लिकेशन्स, दिल्ली।
40. साहित्य अकादमी, दिल्ली।
41. साहित्य अकादमी, दिल्ली।।
42. राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली।
43. साहित्य अकादमी, दिल्ली।



14

हिंदी उपन्यास

प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय

समृद्धि और ऐश्वर्य की सभ्यता महाकाव्य में अभिव्यंजना पाती है, जटिलता, संघर्ष, ऊहापोह, उथल–पुथल उपन्यासों में। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप भारतीय मध्यवर्ग की अवस्थिति में काफी परिवर्तन हुआ है। एक ओर मध्यवर्ग के दायरे में विस्तार तो दूसरी ओर उसकी क्रयशक्ति में अभिवृद्धि स्पष्टतः परिलक्षित है। आर्थिक समृद्धि और तकनीकी विस्फोट ने इस मध्य वर्ग की कुलीनता, तर्कबुद्धि और सौंदर्यात्मकता को उच्चतर बनाया है। उसका एक बड़ा वर्ग मन या बेमन से जिससे भी हो, अपने को वैज्ञानिक समझवाला और सुसंस्कृत दिखाना चाहता है। अब उसका मन–बहलाव पुरानी पद्धति से संभव नहीं लगता। यह पूरी संभावना है कि इस मध्यवर्ग का रुझान साहित्य, कला, सिनेमा के सार्थक तथा बेहतरीन रूपों की ओर जाता है। कला कोई हो, उसकी सार्थक, श्रेष्ठ अभिव्यक्ति अपने रसज्ञ को अंततः बाजार अथवा किसी भी प्रकार की निस्सार, निरर्थक, भौतिक चमक–दमक की असलियत से दूर ले जाती है। इस अवस्था में साहित्य और उसकी गल्पात्मक अभिव्यक्ति उपन्यास से जितना सुकून, रस देती है, उतना अन्य साहित्यिक विधाओं में नहीं। यही कारण है कि उपन्यास का प्रकाशन और उसकी लोकप्रियता निरंतर विकासोन्मुख है।

हार्पर कालिंस पब्लिशर्स की पुरानी पॉकेट बुक की याद दिलाता रवि बुले के उपन्यास *दलाल की बीबी* का शीर्षक ही मानो पर्याप्त न हो, इसलिए

उसमें एक टैगलाइन भी जोड़ दी गई है 'मंदी के दिनों में लव, सेक्स और धोखे की कहानी'। लेकिन इस फटीचर वाक्य से उपन्यास की मंशा को रिड्यूस करना ठीक नहीं होगा। कारण, यह उपन्यास हमारे समय के एक ऐसे सच को संबोधित करता है, जिसपर खुले मन से बात करने के हम अभ्यस्त नहीं रहे हैं। उपन्यास की एक अहम पात्र बिल्ली की चिंताओं में उसकी झलक देखें– 'बिल्ली सिर से पूँछ तक काँप गई! बच्चे के मुँह से यह कहानी सुनकर नींद उड़ गई। उसका मन बेचैन हो गया। वह कल स्कूल जाकर जरूर प्रिंसिपल से मिलेगी और शिकायत करेगी क्लास में कैसी अश्लील और हिंसक बातें सीख रहे हैं बच्चे! फिर कुछ पल बाद वह सोचने लगी कि उसे जिस कहानी का पता था वह सच है या जो बच्चे ने सुनाई वह? क्या योगानंद की कहानी समय के साथ बदल गई या हमारे समय में अश्लीलता और हिंसा इर तत्व में घुस चुकी है? बच्चों की कहानी तक में! वह उलझन में पड़ गई'। उपन्यास का यह आखिरी हिस्सा हमें कई प्रश्नों से घेर देता है। अश्लील और हिंसक व्यवहारों से भरे इस समय में हम अपने भविष्य और अपनी संततियों के लिए कैसी दुनिया सिरज रहे हैं। यह और ऐसे कई और प्रश्न इस उपन्यास की चिंता के केंद्र में है।

उपन्यास का शीर्षक वगैरह भले ही चौंकाऊ हो, लेकिन उसके शिल्प के साथ ऐसा बिल्कुल नहीं है, बावजूद इसके कि उसमें अपने समय का सच अपनी पूरी भयावहता के साथ मौजूद है। बुले के पास एक ऐसा पठनीय रोचक गद्‌य है, जो एक सहज कथानक के जरिए पाठक को अपने समय के एक खतरनाक सच तक पहुँचा देता है। एक ऐसा सच, जहाँ जीवन–व्यापार के लिए देह–व्यापार एक खास तरह की मजबूरी हो गया है। आर्थिक मंदी के बाद का यह एक ऐसा सच है कि देह हर व्यवसाय की सफलता का प्रस्थान हो गई है।

रवि की भाषा में एक खास तरह की मौलिकता है। वे अवांतर प्रसंगों में नहीं बहकते और कथानक की गंभीरता को आद्‌योपांत बनाए रखते हैं। प्रॉपर्टी की दलाली देह की दलाली में बदल जाने की त्रासदी का वर्णन करती

यह कथाकृति समय–सत्य की कई परतों को उघाड़कर देखती–दिखाती है। यहाँ कुंडली पढ़ने वाले सुग्गा–पोषकों से लेकर अकूत ऐश्वर्य के संधान में साधनारत बाबाओं तक की कहानियाँ मौजूद हैं। जब देश और दुनिया के सारे रोजगार मंडी में बिकने वाले माल की नियति को प्राप्त होने को मजबूर हो चुके हों, वैसे में दलाली का एक सर्वव्यापी पेशे के रूप में नजर आना कितना सहज हो गया है। इसे इस उपन्यास में आसानी से समझा जा सकता है। पेशे से फिल्म पत्रकार रवि बुले मुंबई के फिल्म जगत और मीडिया आदि की अंदरूनी दुनिया को ज्यादा अच्छे से व्यक्त कर पाए हैं। हाँ, कुछेक जगहों पर दृश्यों का अखबारी ब्यौरों में बदल जाना जरूर खलता है। पर यह भी सच है कि ऐसे ही कुछ अन्य ब्यौरों में उपन्यास मुंबई के कुछ अनछुए हाशियों से भी हमारा परिचय कराता है।

इसी क्रम में शची मिश्र का उपन्यास ***चाय कॉफी उर्फ तीसरी दुनिया*** अपने विषय संदर्भों के कारण अलग से ध्यान खींचता है। एलजीबीटी (लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल और ट्रांस जेंडर) समुदाय के अधिकारों और उनके मनोविज्ञान को केंद्र में रख कर लिखा गया यह उपन्यास इन अर्थों में महत्वपूर्ण है कि यह देश के उन अस्सी लाख लोगों की आवाज का प्रतिनिधित्व करने का प्रयास करता है, जो सामान्य से इतर यौन प्राथमिकताओं के कारण असामाजिक और अपराधी तक मान लिए जाते हैं। इस मुद्दे पर दिल्ली हाई कोर्ट के एक फैसले से जहाँ इन लोगों के भीतर उम्मीद की नई कोंपलें कुनमुनाई थीं वहीं उसके बाद सुप्रीम कोर्ट के प्रतिकूल फैसले ने इन्हें दुख और आक्रोश से भर दिया है।

अपनी पसंद की जिंदगी न जी पाने की व्याकुलता के कारण ही इस उपन्यास का नायक मयंक नौकरी बदल कर अमरीका या फिलीपीन्स जाना चाहता है, क्योंकि फिलीपीन्स समलैंगिकों के लिए स्वर्ग है। वहीं अमरिका ने भी 26 जून 2013 को संविधान संशोधन करके समलैंगिक संबंधों और उनके बीच विवाह को कानूनी मान्यता दे दी है। अपने देश में मिलने वाली उपेक्षा और अवमानना का ही नतीजा है कि प्रवासी हो जाने की बात सोचते हुए

मयंक कहता है– 'मैं कम से कम वहाँ डिग्निटी के साथ तो जी सकूँगा।'

शची मिश्र ने इस उपन्यास की भूमिका में दुनिया के अन्य हिस्सों में हो रहे कानूनी बदलावों का जिक्र करते हुए *'एलजीबीटी* समुदाय के साथ अपनी सहानुभूति दिखाई है, लेकिन दिक्कत यह है कि उनकी लेखकीय पक्षधरता एक प्रभावशाली औपन्यासिक नियति तक पहुँचने में बहुत सफल नहीं हो पाई हैं।

एक उस्ताद उपन्यासकार ने अच्छा उपन्यास लिखने का गुर बताया है कि उपन्यास का प्रत्येक परिच्छेद इस प्रकार लिखा जाना चाहिए जैसे कि वह उपन्यास का अंतिम परिच्छेद हो और उसी परिच्छेद से उपन्यास समाप्त होने वाला हो। हिंदी और राजस्थानी कहानियों में अपनी पहचान स्थापित कर चुके श्याम जांगिड़ ने शायद अपना पहला उपन्यास ***प्रेम गली अति साँकरी*** लिखते समय इस गुर को बराबर ध्यान में रखा है। तभी वह इतना बाँधने वाला पठनीय उपन्यास लिख सके। अगर पेशेवर और निपुण समीक्षकों का मुहावरा न जानने के कारण केवल आस्वाद के आधार पर कहूँ तो अपने कथानक, राजस्थानी भाषा के प्रयोग ने उपन्यास की पठनीयता को कई गुना बढ़ा दिया है।

राजस्थान के छोटे से शहर चूरू में एक दर्जी गुट्टूराम के 'धीर' तखल्लुस रखने वाला कवि हृदय बेटे पंकज और पड़ोस में रहने वाले गणित के ट्यूशनबाज अध्यापक ब्रज किशोर शुक्ल की बेटी नीलम एक ही कॉलेज में पढ़ते हैं और इस वजह से दोनों के बीच काफी घनिष्ठता है। पंकज नीलम को टूट कर प्रेम करता है और उसके लिए किसी से भी भिड़ जाने को तैयार रहता है। *'डेजर्ट फेस्टिवल* घूमने के दौरान नाथजी के मंदिर की गुफा के एकांत में नीलम को चूम लेने के बाद वह विचार में पड़ जाता है कि 'जहाँ शरीर बीच में आ जाता है, प्रेम का रूप बदल जाता है, तब देह का स्वार्थ प्रेम को संचालित करने लगता है और जहाँ स्वार्थ होता है, वहाँ प्रेम पवित्र नहीं होता। प्रेम की पवित्रता तो *'प्लेटोनिक लव' में है*। पंकज धीर और नीलम अपना नया संसार बसाने का सपना लिए घर से भाग जाते हैं जो

सामने गाड़ी मिली, उसी को पकड़ कर भागते हैं और सिहोर में पकड़ लिए जाते हैं। कहानी में मोड़ तब आता है, जब घरवालों के दबाव में नीलम पुलिस को बयान देती है कि 'मुझे फुसलाया गया था'।

नीलम के एक बयान से पंकज के जीवन की दिशा ही बदल जाती है। 'जुस्तजू जिसकी थी, उसको तो न पाया हमने इस बहाने से, मगर देख ली दुनिया हमने' के अंदाज में पंकज का विविध प्रकार के लोगों से साबका पड़ता है। साधु–संतों की दुनिया की अंदरूनी सतहों को जानने का अवसर मिलता है। समाज के लिए स्वयं को उपयोगी कैसे बनाया जा सकता है, इसको करके दिखाने का अवसर मिलता है, बगैर इस बात की परवाह किए कि लेखक बिरादरी उन पर कौन–सा ठप्पा लगा देगी। श्याम जीवन से विदा हो चुके एक ऐसे जीवन मूल्य को सामने लाने का साहस करते हैं, जिसको विस्मृत हुए जमाना गुजर गया। 'चलो आप ईश्वर को छोड़ो, उसे नहीं देना है, पर जो खाना बनकर आपकी थाली में आया है– वह यूँही नहीं आ गया है, उसे बनाने में किसी ने श्रम किया है.... कम से कम उसका तो सम्मान कीजिए.... और जो खाना बनाने वाली गृहिणी का सम्मान नहीं करते, उनके परिवार की हालत निश्चय ही खराब होती है'।

'भाया शहर में बामण सूँ अर गाँव में जाट सूँ रगड़ों कोनी खरावे' और '*देखूँ किसकी माँ ने अजवाण खाई है*' जैसे राजस्थानी भाषा के जुमलों से सजे उपन्यास की पठनीयता इसी से सिद्ध होती है कि इसे एक बार शुरू करके फिर खत्म करना पाठक की विवशता बन जाती है। श्याम जांगिड़ के अगले उपन्यास की हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए। हाँ, शब्दों के प्रयोग से पहले लेखक को उनके सही अर्थ अवश्य जान लेने चाहिए जैसे उर्दू शब्द तोहमत का उसने परेशानी या झंझट के अर्थों में प्रयोग किया है तब कि तोहमत का अर्थ होता है– लांछन, इसी तरह लगभग शब्द में लग और भग के बीच में हर जगह हाइफन लगा कर अलग–अलग कर दिया है, यह भी खटकता है, लेकिन इन कमियों को सुंदर उपन्यास के चेहरे पर डिठौने की तरह मान लिया जाना चाहिए।

एक और पांचाली : अमरीक सिंह दीप पढ़कर ऐसा लगता है कि उनकी कहानियों और उपन्यासों में जमीन से जुड़े व्यक्तियों का दर्द व्यक्त हुआ है। यह उपन्यास आज की स्त्री की दशा, दिशा और दुर्दशा का बखान करता है। इसकी नारी में उस गुप्त गृह में उतरने का कौशल है, जहाँ जाने की इजाजत नारी स्वयं के सिवा किसी को नहीं देती। दीप वहाँ रखी दुःखों की गठरियों को खोलने का बीज मंत्र भी जानते हैं। यहाँ बताया गया कि स्त्री केवल माँ ही नहीं होती, एक मनुष्य भी होती है। दीप में चरित्र चयन तथा उनकी मनोदशा दर्शाने की अद्भुत कला है।

नदी : उषा प्रियंवदा 'मैं रह रही थी पाश्चात्य देश में, उसके विचारों के बीच, पर मै हूँ तो भारतीय ही'। इस पंक्ति में ध्वनित द्वंद्व उपन्यास *नदी* की नायिका आकाशगंगा का भी है और उसकी लेखिका उषा प्रियंवदा का भी। *वापसी, जिंदगी और गुलाब के फूल* जैसी चर्चित कहानियों और *पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका* और *शेषयात्रा* जैसे उपन्यासों की लेखिका उषा प्रियंवदा के नए लेखन का इंतजार हमेशा लोगों को रहता है। वे भारत में नहीं रहतीं। सुदूर देश अमरीका में पिछले छह दशकों से रह रही हैं। *नदी* उनका नया उपन्यास है, जो पठनीयता की दृष्टि से पिछले उपन्यासों से कहीं कम नहीं है। बकौल निर्मला जैन उनके पहले उपन्यास का ड्राफ्ट शायद उन्होंने मन–ही–मन दिल्ली में रहते हुए ही बना लिया हो, लेकिन *पचपन खंभे लाल दीवारें* से लेकर *नदी* तक छहों उपन्यास अमरीकी प्रवास ही में लिखे गए हैं। लेकिन उनके सबसे चर्चित उपन्यास *रुकोगी नही राधिका* में स्त्रीमन की जो बेचैनी, संशय और ऊहापोह थे, वे '*नदी* तक आते–आते अपनी धारा बदल चुके हैं। '*रुकोगी नही राधिका* की नायिका जहाँ आधुनिकता स्वीकारने में हिचकती है वहीं नदी की नायिका आकाशगंगा आधुनिकता को बरजती नहीं, स्वीकार करती है.... कभी परिस्थितिवश, कहीं मन से, तो कहीं शुद्ध सुविधा का खयाल रखते हुए। यही कारण है कि गंगा अपने को बहुत क्रांतिकारी या विद्रोही नहीं मानती और खुद को समझाते हुए कहती है कि 'समय, परिस्थिति और अपनी संतुष्टि के लिए मैंने कुछ गलत नहीं किया, न

अपने स्त्री होने का फायदा उठाया।' पति डॉ. सिन्हा से अलग होने के बाद क्रमशः अर्जुन सिंह, एरिक एरिकसन और प्रवीणजी के साथ उसके संबंध बनते हैं। उसे गिला किसी से नहीं है। एरिक के साथ थोड़े समय के संबंध में वह प्रेम की उदात्ता महसूस करती है और तमाम कठिनाइयों को झेलते हुए एक बेटे को जन्म देती है। परिस्थितियों की प्रतिकूलता का ख्याल रखते हुए वह बेटे को बसवी दंपत्ति को सौंप देती है। हर जगह परिस्थितियों की शिकार वह ही होती है। अंततः जीवन के ढलते वर्षों में उसका बेटा स्टीवेन अकस्मात् उसके पास आता है। एक दिन के लिए ही सही, लेकिन वह जीवन की सार्थकता पा लेती है मानो वह तो इस ताक्य में विश्वास करती है 'नदी अपना सुंदरवन खोज ही लेगी अपना लक्ष्य अपना सागर'। तभी वह अपने बेटे को अपने पास पाकर उसे कह पाती है 'जब हम एक परिस्थिति से गुजर रहे जाते हैं, तब हमें उसी समय को सच दिखाई पड़ता है। आगे–पीछे का तो बाद में समझ में आता है। उस समय जो मुझे उचित लगा वही किया, उसकी पीड़ा तो बाद में भोगी– अभी भी भोग रही हूँ।' यह कथन आकाशगंगा के सच को ही नहीं बल्कि आधुनिक स्त्री के सच को उपन्यास में रखता है और शायद इसी स्वीकार से स्त्रियाँ अपनी मुक्ति के सही रास्ते ढूँढने में सफल होंगी।

पचपन खंभे लाल दीवारें से लेकर 'नदी' तक के स्त्री–पात्रों की मानसिकता क्रमशः बदलती गई है। *रुकोगी नहीं राधिका*– और *शेष यात्रा* के स्त्री पात्रों में प्रवासी जीवन में अपने को न ढाल पाने की पीड़ा भी है क्योंकि उनका मनोगत संस्कार भारतीय है; जबकि आकाशगंगा का मनोगत संस्कार अमरीकी जीवन के भाव–संसार से ही बना है। वह चार पुरुषों के संपर्क में आती है, ये पुरुष परिस्थितिवश उसके साथ होते हैं, न कि इसलिए कि उसके भीतर कहीं एक विद्रोही स्त्री का मन है। वह पूरे मन से एरिक एरिकसन के साथ होती है और उपन्यास में दोनों ही अपने संबंधों की संक्षिप्त अवधि के बावजूद जीवन भर उससे उबर नहीं पाते। एरिक एरिकसन में मृदुला गर्ग के उपन्यास *चितकोबरा* के रिचर्ड की झलक मिलती है।

अल्पना मिश्र का उपन्यास *अन्हियारे तलछट में चमका* दिल के भीतर कहीं बहुत गहरे डूबकर लिखा गया है। यह एक ऐसी लड़की की कहानी है, जो लड़ रही है अपने आप से, अपने परिवेश से, माहौल से कल्पना से और हाँ, अपने वजूद से भी। बनारस इधर के दिनों में खूब चर्चा में रहा है। बनारस की वही खासियत यहाँ की मिट्टी बाँधती है और एक सोंधापन इससे कभी अलग नहीं होने देता। बिट्टो इस सोंधेपन से धीरे–धीरे पग रही हैं। यहाँ आँच इतनी धीमी है कि कभी भी उसकी जलन महसूस नहीं होती। बस, उसके संघर्ष की ऊष्मा का अहसास होता है।

अल्पना मिश्र के उपन्यास की खासियत उसका वर्णन है। इस वर्णन को पढ़ते हुए लगता है जैसे कोई फिल्म आँखों के सामने से गुजर रही हो। इन वर्णनों के शब्दचित्र घटना के पढ़ने को देखने में बदल देते हैं। उनका यह सामर्थ्य इस उपन्यास की विशिष्टता है। एक बानगी देखिए: 'इसी की अगली सुबह वह सुबह थी, जब मनोहर मुन्ना जी और कान्हा के साथ दलबल साजे स्कूल के मैदान में उतरे। मैदान बड़ा था। चारों तरफ झाड़–झंखाड़ उगा था। माली नामक जीव कभी इधर से गुजरा होगा, इसकी दूर–दूर तक संभावना नहीं दिखाई देती थी। उस पर कुछ भी होने की संभावना थी। आवाजाही लगातार मची हुई थी। गपर–सपर की इतनी ध्वनियाँ मिली हुई थीं कि तुमुल कोलाहल का दृश्य बन गया था। कान्हा किताब थामे थे। पन्ना पलट–पलट कर बोलते जा रहे थे। बीच–बीच में उनके हाथ से किताब झटककर मुन्ना जी बोलने लगते थे। जब कान्हा बोल रहे होते तब मुन्ना जी इधर–उधर इम्तिहान की कॉपी पर झुकी लड़कियों को निहार लेते थे'। यह ऐसा दृश्य है जिसे कस्बे के शायद हर व्यक्ति ने देखा या कम से कम सुना होगा। परीक्षा के लिए नकल के कई किस्से मशहूर हैं। लेकिन अल्पना जी अपने उपन्यास में उसे ऐसे जीवंत करती हैं कि लगता है कान्हा और मुन्ना हमारे सामने बैठ कर नकल कर रहे है। परीक्षा में पास होने के लिए चाहे कुछ आए या न आए, बस कुंजी निकालो और छाप मारो। भाषा का यह जादू कुछ ऐसा है कि अल्पना मिश्र जब मुन्ना की बात करती हैं, तो भाषा शरारत पर उतर आती

है। जब वह दामोदर भैया की बात करती हैं, तो भाषा दार्शनिक हो जाती है। जब वह मौसी की बात करती हैं, तो भाषा कब खाँटी यथार्थवादी हो जाती है, पता ही नहीं चलता। एक साथ इतने भाषा–स्तरों की ये रंगतें उपन्यास को खास बनाती हैं। यह एक चटक भाषा हैं, जो हिंदी में अब कम दिखाई देती है। यह सही है कि साहित्यिक भाषा इन दिनों ज्यादा प्रयोगशील हुई है, पर उसके भीतर का रस धीरे–धीरे छीजता गया है। वह रस, जो स्थानीयता के देशज रंगों और पारंपरिक जिंदगी के भदेस से बनता है और जो हिंदी की निहायत अपनी चीज है; अल्पना मिश्र ने यह उपन्यास उसी भाषिक संस्कार में लिखा है। इसे पढ़ते हुए पाठक खुद के उपन्यास के परिवेश में शामिल पाता है।

उपन्यासकार ने स्थितियों के मोती एक–एक करके हौले–हौले कथानक के धागे में पिरोए हैं। अलग–अलग भागों में बँटे इस आत्मकथा शैली के उपन्यास का हर खंड अलग है, फिर भी जुड़ा हुआ। कई स्त्रियाँ मिल कर इस उपन्यास को एक मुकाम तक पहुँचाती है। स्त्रियाँ अलग हैं, स्थितियाँ अलग हैं लेकिन सबके दुख–दर्द साझे हैं। मौसी बेटे के नौकरी न करने की कमी को उसके ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाने से ढाँपती हैं। वह इन दिनों के कथा–साहित्य में बहुतायत में दिखाई देती स्त्री की खुदमुख्तार छवि से जुदा एक पात्र है। अपने और अपने परिवार की कमियों को छुपाने वाली ऐसी स्त्री अब मूर्ख कहलाती है। आजकल ऐसी स्त्रियों के बारे में कोई नहीं बात करना चाहता, लेकिन आज भी गाँवों–कस्बों में असंख्य ऐसी स्त्रियाँ मौजूद हैं। दरअसल *'अन्हियारे तलछट में चमका* उसी गँवारु स्त्री की गाथा है। अल्पना मिश्र उसके गँवारपन के भीतर के वास्तविक ठाँव को बूझने की कोशिश करती हैं। इस तरह दरअसल वे एक अप्रासंगिक मान लिए गए वृहत्तर यथार्थ से रूबरू होने का साहित्यिक जोखिम उठाती है।

ये काइरलागैमे हिवनः जाबिर हुसैन (ये शहर लगै मोहे वन) अब तक लिखी गई उनकी डायरियों से भिन्न एक लंबी कथा–डायरी है। दूसरे शब्दों में इसे 160 पृष्ठों में फैला उपन्यास भी कह सकते हैं, जो 22 शीर्षकों या खंडों

में विभक्त है और जिसका शिल्प भी उनकी पिछली तमाम तहरीरों से अलहदा है। अगर ब्लर्ब को उद्धृत करें, तो कह सकते हैं कि 'इस किताब में जाबिर हुसैन ने अपने पात्रों के नाम नहीं लिए। उस बस्ती का नाम लेने से भी परहेज किया, जिसकी बे-चिराग गलियों में इस लंबी कथा-डायरी की बुनियाद पड़ी।' वैसे लखनऊ की मशहूर रक्कासा बेगम गुल-रू और उसकी बेटी माह-रू के नाम पुस्तक में आए हैं, जो नहीं कहा जा सकता कि सच्चे हैं या काल्पनिक।

किसी पुराने महल के खंडहर या किसी उजाड़ हवेली के बीच खड़े होकर जैसी अनुभूति होती है, इस कथा-डायरी के भीतर से गुजरते हुए कुछ-कुछ वैसा ही महसूस होता है। लगता है जैसे चरमराकर सहसा कोई जंग लगा दरवाजा खुल गया हो और नवाबी तहजीब और जिंदगी का जीवित इतिहास उसमें से अदबदाकर झड़ रहा हो। पुराने दिनों की हवेलियाँ और उनमें रहते नवाब पुश्त-दर-पुश्त.... उनकी वह शानो-शौकत, वे रंगरेलियाँ, वे रंगे-महफिलें। साथ ही हवेलियों के दरो-दीवार में पैदा होते व षड्यंत्र, वे साजिशें, वे बेवफाइयाँ, वह खुद्दारी, वह तन्हाई, वे उदासियाँ, गैर इंसानी रूहों की उपस्थिति को भी उपन्यास के पन्ने-दर-पन्ने महसूस किया जा सकता है। पहले ही अध्याय के अंत में शाह साहब के कब्र में डाल दिए जाने के बाद लेखक कहता है, 'बस्ती में, निस्फ शब तक, गैर इंसानी रूहों ने शाह साहब के लिए गिरिया किया और उनकी कब्र पर अकीदत के फूल चढ़ाए।'

कुछ किंवदंतियाँ हैं, सुनी-सुनाई कथाएँ, कुछ बिखरी आधी-अधूरी स्मृतियाँ, कुछ इंप्रेशंस हैं बीते समय के- उन्हें ही जाबिर हुसैन ने 'ये शहर लगै मोहे बन' में समेटा है। एक अजीब-सा नॉस्टैल्जिया है, जो पूरे उपन्यास पर पसरा हुआ-सा है।

अगर इसे उपन्यास कहूँ तो यह थोड़ा विस्तार और कथ्य की कसावट माँगता है या कम-से-कम कुछ खुले छोड़ दिए गए किनारों का खुलासा। यदि इसे लंबी डायरी कहूँ तो ऐसा लगता है कि लेखक कुछ और बेचैन करने वाली सच्चाइयों का प्रकाश में लाने से गुरेज कर रहा है या दूसरे शब्दों में,

वह पूरी तरह खुल नहीं रहा है। बावजूद इसके इस पुस्तक में वही कशिश हैं, जो जाबिर हुसैन की तमाम तहरीरों में होती है।

महानायक बाबा साहेब अंबेडकर मोहनदास नैमिशराय ने अंबेडकर के जीवन, उनके संघर्ष और उस समय की राजनैतिक परिस्थितियों को चित्रित करने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय की राजनीति के कई पहलू थे। उसको समझने के विभिन्न दृष्टिकोण हैं जिन्हें रचनात्मक साहित्य में चित्रित करना मुश्किल हो जाता है। नैमिशराय ने स्पष्टता से इतिहास की इन स्थितियों को विभिन्न इतिहास–दृष्टियों के संदर्भ लेते हुए प्रस्तुत किया है। इस प्रक्रिया में उन्होंने अपने मत को भी निर्भीकता से प्रस्तुत किया है। दलित संबंधी मुद्दों पर गाँधीजी और बाबा साहेब की दृष्टियों और विचारों का फर्क उपन्यास का केंद्रीय पक्ष बनकर उभरता है; यही उपन्यास को निखारता भी है। बड़ी ही स्पष्टता से लेखक ने अंबेडकर और गाँधी के आंदोलनों के संघर्ष की तुलना की है। उदाहरण के लिए महाड़ अधिवेशन और महात्मा के आंदोलनों का पूँजीवादी कनेक्शन। समस्त सीमाओं के बावजूद वे गाँधी को नकारते नहीं, बल्कि उनकी महत्ता को रेखांकित करते हुए लिखते हैं, 'गाँधी की विशिष्टता इसी बात में है कि उन्होंने इस (जातिवाद के) खतरे को भाँप लिया था और अपने कर्मकांड मूलक संस्कारों से मानो मोर्चा लेते हुए उसका समाधान करने का प्रयास किया था। इस दृष्टि से गाँधी विलक्षण हैं, क्योंकि उन्होंने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई; अपने ही वर्ग को आत्मालोचन और नैतिक–बौद्धिक चिंतन के लिए झकझोरा, यों कहें कि अन्यायी मानसिकता को अपना ही एक मनोवैज्ञानिक प्रतिपक्ष रचने के लिए बाध्य किया।' (पृष्ठ 25) इस तरह नैमिशराय को हम एक स्वस्थ वैचारिक के रूप में देखते हैं। आगे दूसरी गोलमेज परिषद् में दलितों के लिए अलग इलेक्टोरेट के मुद्दे पर गाँधी द्वारा विरोध जताने पर उनके और अंबेडकर के वैचारिक द्वंद्व और गाँधीजी की सीमाओं को लेखक ने कई अखबारों और अंग्रेजी लेखकों के हवाले से व्यापकता में प्रस्तुत किया है। इस केंद्रीय पक्ष के अलावा उपन्यास के दो और महत्वपूर्ण पक्ष उभरते हैं। एक, महाड़

अधिवेशन और उस समय के दलित आंदोलनों का चित्रण, जिनकी परिणति अंततः उपन्यास के अंत तक पहुँचते–पहुँचते बौद्ध धर्म के उभार के रूप में होती है, दूसरा राजनीतिज्ञ के रूप में अंबेडकर के महत्त्वपूर्ण कार्यों और विद्वत्ता के कारण उन्हें भारत का पहला कानून मंत्री बनाया जाना। संविधान निर्माता के रूप में अंबेडकर के जीवन को नैमिशराय ने बहुत गहनता से प्रस्तुत किया है; खासकर हिंदू बिल कोड और महिला अधिकारों के संदर्भ में उनका वर्णन काफी अच्छा है– एक ओर हिंदूवादियों का विरोध है पर वहीं अंबेडकर अपनी जगह अडिग हैं। इस सब के अतिरिक्त उनका छात्र जीवन और उच्च शिक्षा के रास्ते की परेशानियाँ, आर्थिक तंगी और उनकी अध्ययनशीलता का वर्णन भी पुस्तक में प्रगाढ़ ढंग से हुआ है। उनकी पत्नी से उनकी चर्चाओं को भी नैमिशराय ने उपन्यास में ठीक से प्रस्तुत किया है। कुल मिलाकर इस किताब द्वारा नैमिशराय अंबेडकर की विद्वत्ता उनके पारिवारिक जीवन, उनके दलित चिंतन, उनके राजनैतिक संघर्ष और इतिहास निर्माता के रूप में उनकी भूमिका को एक रचनात्मक समग्रता में प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं।

दास्तान मुगल महिलाओं की: हेरंब चतुर्वेदी इतिहास को फिर से पढ़ने–समझने और सोचने पर मजबूर करती है। बाबर से प्रारंभ होकर औरंगजेब तक के समय तक के सुदृढ़ मुगल साम्राज्य की कहानियाँ बार–बार कही जाती हैं। लेकिन कम गौर किया जाता है कि मुगल शासन व्यवस्था में प्रारंभ से ही मुगल महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान किया है। सुदृढ़ प्रशासक, योग्य, बुद्धिमान, चतुर, साहसी व मर्यादित महिलाओं को इतिहासकारों ने खारिज–सा करते हुए कुछ पंक्तियों या पृष्ठों में हल्के–फुल्के ढंग से निपटाते हुए पृष्ठभूमि में धकेल दिया। यह पुस्तक इस मिथक को तोड़ती है और विस्तार से शासन व्यवस्था में रही मुगल महिलाओं के प्रत्यक्ष–परोक्ष योगदान पर प्रकाश डालती है। पुस्तक में चंगेज खान की पुत्रवधू ईबुस्कुन से शुरू करके महारानी औगजाह खातून, बाबर की नानी ईसान दौलत खानम, अकबर की माँ हमीदा बानो बेगम और बदरख्शाँ की शासिका हर्रम

बेगम के योगदान के बारे में विस्तार से वर्णन है।पुस्तक में लोकप्रचलित सलीम और अनारकली की प्रेमकहानी और उस संबंध की हकीकत को भी परखने की कोशिश की गई है।

चंगेज खान के दूसरे पुत्र चगताई खान की मृत्यु के उपरांत उसका पौत्र कड़ा हलाकू शासक बना। वह शिशु था, अतः संरक्षिका के रूप में सत्ता संभाली चगताई की विधवा ईबुस्कुन ने और लगभग छह वर्षों तक सफलतापूर्वक इस दायित्व का निर्वाह किया। उसने चगताई खान एवं अपने ससुर चंगेज खान की ही नीतियों का अनुसरण करते हुए शासन किया। धार्मिक भेदभाव से दूर रहते हुए अपनी एक उदार एवं सहिष्णु छवि निर्मित की। रानी ईबुस्कुन की ही तरह उसकी पौत्रवधू औरगजाह खातून भी थी। वह न केवल एक कुशल शासक अपितु दृढ़ इच्छाशक्ति रखने वाली एक महिला के रूप में भी जानी जाती है। मुगल महिलाओं में बाबर की नानी ईसान दौलत खानम का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। वह एक योग्य, सुझबूझ वाली सच्चरित्र महिला थी। साहस और शूरवीरता का परिचय देते हुए वह एक–दो बार नहीं बल्कि चार बार शत्रुओं के हाथों में पड़ी, लेकिन सकुशल निकल गई। इसी वीरता से उसने अपने पति यूनुस खान की जान बचाई। स्वयं बाबर के जीवन पर उसकी नानी का बहुत प्रभाव रहा। इस क्रम में हमीदा बानो बेगम का नाम बहुत इज्जत के साथ लिया जाता है। वह एक योग्य पत्नी ही नहीं, विदुषी माँ भी थी। उन्हीं के प्रभावस्वरूप अकबर ने उस राजपूत नीति का प्रारंभ किया, जिसके कारण मध्यकाल में मुगल साम्राज्य भारत में मजबूत हुआ। इसी क्रम में हरम बेगम का नाम भी सम्मान के साथ लिया जाता है, जिसने हुमायुँ के भारत पुनर्विजय अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

हेरंब चतुर्वेदी की यह पुस्तक न केवल पढ़ने में दिलचस्प है बल्कि यह मुगल इतिहास के बारे में बनी–बनाई छवियों को भी तोड़ती है। इतिहास को नए सिरे से समझने के कुछ सूत्र इससे लिए जा सकते हैं। उन्होंने इसमें लोकप्रसिद्ध अनारकली के चरित्र की सच्चाई को भी सामने लाने की कोशिश की है और तर्कों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि

अनारकली सलीम की प्रेमिका नहीं थी।

निर्वासन : एक बदले हुए समय और समाज संपूर्ण यथार्थ को कथात्मक तौर पर रेखांकित कैसे किया जाए, इन अर्थों में *निर्वासन* एक महत्वाकांक्षी और एक बड़ी छलांग, बड़ी उठान का उपन्यास है। इसमें समूचे भारतीय समाज के सच को पकड़ने की कोशिश है। जाहिर है कि जब आप एक ऐसे समाज के सच को पकड़ना चाहते है जो पारंपरिक हो, जिंस समाज का हजारों वर्षों का इतिहास रहा हो और जो समाज एक साथ 19वीं ओर 21वीं शताब्दी में जी रहा हो, जो वैश्वीकृत भी हो और स्थानीय भी हो; तो एक ऐसे समाज को संपूर्णता में पकड़ना और संपूर्णता में व्याख्यायित करना बड़ी चुनौती है। जिस प्रकार भारतीय समाज टुकड़ों–टुकड़ों में विभाजित है, यह उपन्यास डेढ़ सौ वर्षों का कथा विस्तार लिए हुए भारतीय समाज की सरंचना का अन्वेषण करता, उसे खोलता हुआ और आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती वैश्वीकरण ओर उपभोक्तावाद के साथ निर्वासन की कथा कहता है। *निर्वासन* में कुम्हार एक पात्र भी है और उपन्यास पढ़ते हुए लगता है कि अखिलेश भी अपने उपन्यास के इस पात्र की तरह अपनी लेखन प्रविधि में सारे औजारों को लेकर चलते हैं। उपन्यास में सामंतवाद और नवउदारवाद का भावनात्मक प्रतिशोध है। प्रेमचंद ने 19वीं सदी का सारा यूरोपीय साहित्य पढ़ा था। देखने वाली बात यह है कि इन बाहरी प्रभाव को ग्रहण कैसे करते हैं। क्या इसे पचा पाते हैं! बिना उसके श्रेष्ठ साहित्य संभव नहीं है। क्या खिड़की से आने वाली हवा जरूरी होती है। हाल में दिवंगत मार्केज भी बहुपठित रचनाकार थे। इस उपन्यास में सारी चीजें है, उसमें विदेश की कोई छाया नहीं है या विदेश का कोई प्रभाव शुरू से आखिर तक नजर नहीं आता है। जब हमारी रुचि बिगड़ जाती है तो हमें घर की चीज पराई लगती है। परिवार में शक्ल न मिलने पर पति–पत्नी में झगड़ा हो सकता है कि यह बच्चा किस पर गया है जबकि परिवार में किसी से इसकी शक्ल नहीं मिल रही है– लेकिन साहित्य में उसी को गर्व से अपनाया जा रहा है।

उपन्यासकार शीला रोहेकर का कहना है कि *निर्वासन* हमारे समय का आख्यान है। नवउदारवादी आधुनिक मानसिकता और बाजारवाद किस प्रकार संबंधों, प्रेम, लगाव, संवेदना, भागीदारी को छिन्न–भिन्न करते, उन्हें ओछा, खुदगर्ज और सतही बनाते हैं, यह हमें उपन्यास के विभिन्न पात्रों के माध्यम से पता चलता है। इसमें निर्वासन कई स्तरों पर है– आधुनिकता के बरअक्स परंपरा का, जीवन द्वारा स्वप्नों का, बाजारवाद के द्वारा समाज के किसी पूरे वर्ग का, मनुष्य के जीवन से कला एवं कारीगरी का, गरीब के पेट से भूख का गैरबराबर बँटवारा इसका मूल कारण है। यह समय, समाज और भावनाओं की बेदखली का उपन्यास है। उपन्यास में लेखक ने शिल्प के स्तर पर भी प्रयोग किए हैं। कहीं पात्र लेखक को दुरुस्त करता चलता है तो कहीं लेखक पात्र को। *निर्वासन* नायकत्व की अवधारणा का विखंडन करने वाला उपन्यास है। उपन्यास में नायक समय है। उपन्यास का शिल्प अलग ढंग का है और इसमें पात्र कई बार लेखक से शिकायत भी करते हैं। उपन्यास में डेढ़ सौ वर्षों के कालखंड और उसकी प्रवृत्तियों की पड़ताल तो है ही, भविष्य के संकेत भी मिलते हैं। इसमें अगर विवरण कम होते तो बेहतर होता। *निर्वासन* में विमर्श निश्चित रूप से मौजूद है। विमर्श का शोर नहीं है। उपन्यास के विभिन्न प्रसंगों में कहीं भी स्त्री की गरिमा प्रभावित नहीं हुई है।

डॉ. शशिभूषण सिंहल के तीन उपन्यास इस वर्ष प्रकाशित हुए हैं। *दुनिया न माने* सामाजिक–राजनैतिक उपन्यास है, जिसमें कथा मनस्वी सुनील की है। यह आगे बढ़कर पीरियाडिकल नॉवेल या युगपरक उपन्यास का वृहत् रूप धारण कर लेती है। सुनील सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग लेता है। उसे लंबी सजा होती है। इस बीच उस के पिता संसार से विदा हो गए। अब नहीं लौटेंगे उसे समझाने–बुझाने। आज वह निर्द्वंदव है, चाहे जो करें, क्या सचमुच? लगता है दुनिया को उसकी जरूरत नहीं। आंदोलन बुझ चला है। उसे इस प्रसंग में अपनी सार्थकता खोजनी है। एकांत चाहिए, जहाँ स्थिर होकर मन के भीतर झाँका जा सके। यह सुयोग जेल की कोठरी के एकांत से बढ़कर कहाँ प्राप्त होगा?

भारत स्वतंत्र होने पर सुनील जन–जीवन में आता है। विधायक बनता है और यशस्वी मंत्री भी। व्यक्तिगत लाभ–हानि उसके निकट बहुत अर्थ नहीं रखते। सत्ताप्राप्ति मात्र उसकी मंजिल नहीं। देश को आर्थिक स्वतंत्रता मिलनी बाकी है। हुकूमत करने वाले बदल गए, फिर भी हुकूमत का ढर्रा कहाँ बदला? सामाजिक न्याय कहाँ है? इस जड़ हुकूमत का निरर्थक पुर्जा बनकर वह जी नहीं सकता। सच्ची क्रांति तो आनी है। उसी दिशा में उसे निकलना होगा। सुनील केवल राजनीति भर का नहीं है। उसका भी प्रेम–प्यार का जीवन है, जो उसे अधिक मनुष्य बनाता है। यह मनोविज्ञान और चिंतनप्रधान उपन्यास है। रोचक कथा बहाए चलती है। अमिट प्रभाव छोड़ती है।

दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है *युगद्रष्टा शिवाजी*। शिवाजी पुराने नहीं, आज भी हमारे लिए नितनवीन और प्रेरणास्रोत हैं। हम उनकी राष्ट्रव्यापी अपील से सुपरिचित हैं। यह उपन्यास शिवाजी के प्रेरक व्यक्तित्व और कृतित्व की रम्य गाथा है। कथानक ऐतिहासिक है। इसे बयान करने में उपन्यासकार की कल्पना की उतनी ही भूमिका है, जितनी शुद्ध सोने में लगे टाँके की, जो उसे गहने में ढालती है। कथा रोचक है। बहाए चलती है। अतीत से प्रेरणा ले वर्तमान को सँभालती है।

उनका तीसरा उपन्यास है *चाणक्य और चंद्रगुप्त*। प्राचीन भारत के इतिहास में देश को संगठित कर विदेशी आक्रमण से सुरक्षित रखने वाले यशस्वी सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य का उल्लेख गौरव से होता है। चंद्रगुप्त के प्रेरक और निर्माता आचार्य चाणक्य का महत्व और भी बढ़कर है। इन दोनों महापुरुषों के इतिहास से संबंधित प्रामाणिक तथ्यों की अपेक्षा जनश्रुतियाँ अधिक प्राप्य हैं। उन्हें विधिवत सँजोकर रोचक और प्रेरक रूप में ढाल कर प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में भाषा और विचार को सहज ग्राह्य रूप प्रदान किया गया है और इसे प्रासंगिक बनाने का प्रयास है। हमारी परंपरा में चाणक्य को कूटनीतिज्ञ के रूप में देखा गया है। कूटनीति में कहीं छल और धूर्तता का अंश रहता है। किंतु, इस उपन्यास के चाणक्य का रूप सर्वथा सकारात्मक, अनुकरणीय और आदर्श बन पड़ा है। यह अपवाद ही कहा जाए।

उपन्यास के अंत में चाणक्य का चिंतन उल्लेखनीय है। एक दिन चाणक्य पद्‌यासन लगाए ध्यानमग्न बैठे थे। शांति का अनुभव हो रहा था। जैसे किसी ने कान में फुसफुसाकर कहा 'तू यहाँ बैठा क्या कर रहा है, तेरा काम तो पूरा हो चुका है। तूने जो करना चाहा, कर लिया। देश में शांति और समृद्‌धि है। शासन सुयोग्य हाथों में है। छोड़ सब माया–मोह को।'.... उनका द्‌वंद्‌व उभरता रहा। 'गत जीवन के चित्र मन में आते–जाते रहे। बेसुध बचपन में माँ छोड़ गईं। चित्त पर उनकी धुँधली छाया शेष है। बड़े होने पर पिता गए। कात्यायन और पुंडरीकाक्ष ने सहारा दिया। वे गए। जीवन में मधुर क्षण आए, सुवासिनों के नैकट्‌य के। वे भी स्वप्न बन गए। मैंने विवाह नहीं किया। परिवार नहीं बनाया। सब ईश्वरेच्छा। ठंडी साँस ली। कौन मेरा, मैं किसका। त्याग ही जीवन है।' जयशंकर प्रसाद जिस प्रकार अतीत की प्रत्यंचा वर्तमान में खीचकर भविष्य का लक्ष्य संधान करते थे, वही प्रभाव इन उपन्यासों का है। यह बड़ा दुष्कर कार्य है कि अतीत इतिहास की गलियों में यहाँ–वहाँ भटकते फिरना और सही तथ्य को किंचित प्रेरक और प्राणवान बनाकर वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक और अर्थवान बनाना। डॉ. सिंहल बहुश्रुत हैं और उपन्यास साहित्य के अध्येता और आलोचक दोनों हैं। दोनों में उनकी गहनता, निष्ठा ध्यातव्य है।

शिगाफ और *शालभंजिका* जैसे उपन्यासों के बाद मनीषा ने नए उपन्यास '*पंचकन्या* की भूमिका में पहले ही स्पष्ट कर दिया है कि '*फेमिनिज्म* की बजाए एलिस वाकर द्‌वारा दिए शब्द 'वुमेनिज्म' को कहीं अधिक अपने निकट पाती है। यह एक सकारात्मक सतर्कता से दिया गया वक्तव्य इसलिए है कि आज के समय में हिंदू पुरा साहित्य की पाँच स्त्रियों–अहिल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी– के चरित्र से प्रेरित कुछ भी लिखना ऐसा दुस्साहस होगा जो स्त्री विमर्श के प्रचलित मुहावरे के संदर्भ में कई विवादों को अनायास ही जन्म दे सकता है। परिशिष्ट के रूप में 'पंचकन्याः स्त्री सारगर्भिता' शीर्षक से प्रदीप भट्‌टाचार्य का वह आलेख भी पुस्तक में दिया गया है जिसका अनुवाद मनीषा ने किया था और वैसा करते हुए ही उपन्यास

की भावभूमि उनकी चेतना में विस्तार पाती गई। उक्त पाँच स्त्रियों के मिथक को आधार बनाकर लेखिका ने पाँच आधुनिक स्त्री चरित्र चुने हैं और शारीरिक प्रेम से सने बौद्धिक भ्रमों से कहानी के घटनाक्रम को अंजाम दिया है।

सैद्धांतिक स्पष्टता सिर्फ लेखिका में ही नहीं है, उसके पात्रों में भी उसी तरह है। उपन्यास की एक पात्र एग्नेस के यह पूछने पर कि 'प्रज्ञा क्या तुम फेमिनिस्ट हो?' प्रज्ञा जवाब देती है– 'ऊँह, यह शब्द ही पसंद नहीं मुझे। मेरे हिसाब से हमारे यहाँ फेमिनिज्म भी एक किस्म का मर्दवाद ही है, फीमेल स्किन में। मैं इक्वलिस्ट हूँ, पंचकन्याओं की तरह। अपनी देह में खुश, उत्सवरत। अपने अस्तित्व में आजाद, पुरुष के बराबर।'

अहिल्या को आज की प्रगतिशीलता के तहत पतिता नहीं माना जाता, बल्कि अपनी स्वतंत्र प्रकृति में उसे अपने आप में एक शाश्वत और नैसर्गिक सत्य के रूप में देखा जाता है। अन्य चार स्त्रियाँ भी ऐसे ही चारित्रिक विवाद का शिकार हुई हैं। इस सूत्र को पकड़ कर अगर मनीषा जैसी आधुनिक सोच वाली लेखिका समकालीन दौर के संदर्भ में प्रज्ञा, माया, एग्नेस, मेरे जैसे देशी–विदेशी स्त्री पात्रों के मानसिक आकाश को अपनी स्त्री –प्रधान रचनात्मकता में प्रतिष्ठित करती हैं तो अन्यथा नहीं लगता।

लेखिका की विज्ञानपरक शैक्षणिक पृष्ठभूमि (बीएससी) और कंप्यूटर संबंधी दक्षता का उपन्यास की भाषा पर व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। बिंबों में कंप्यूटर की शब्दावली का प्रयोग सहजता और कलात्मकता से हुआ है। उदाहरणार्थ आत्मा के प्रेम में पड़ा गुलाब काकू माँ से जो कहता है, उसके बाद की मानसिकता का बखान लेखिका ने इस तरह किया है– 'फिर वह उसकी यादों के स्क्रीन सेवर पर माउस हिला देगी तो उसके चेहरे पर से धूप सरक जाती'।

उपसंहारः उत्तर महाभारत की कृष्णकथाः काशीनाथ सिंह ये महाभारत के उपरांत कृष्ण की कथा है। यहाँ रासलीला रचाने वाले योगीराज श्रीकृष्ण ऐसे लाचार द्वारकाधीश के रूप में परिणत हो जाते है, जिनके राज्य में अमन और शांति के बजाए अकाल, भुखमरी, भ्रष्टाचार, बलात्कार, अपराध, शराबखोरी

और वेश्यावृत्ति जन्म ले लेती है। वृद्धावस्था की ओर बढ़ते कृष्ण महाभारत के प्रमुख हेतु होने के कारण आत्मग्लानि में डूबे हुए हैं। युद्ध में उन्होंने जो छल किए थे, उसका परिणाम यह था कि योगीराज की आँखों की नींद गायब हो जाती है। उनके राज्य के लोग ही क्या, उनकी अपनी पत्नियाँ और उनके अस्सी पुत्र उनकी नहीं सुनते। कृष्ण को ताना मारते हैं। पुत्र गलत संगति में पड़ जाते हैं।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी खूबी है कि किसी अन्य युग की कथा के अंदर घूमते हुए महसूस होता है कि हम अपने ही युग में घूम रहे हैं। लगता है समस्याएँ चिरंतन हो गई हैं। छल–कपट और धोखे से ऊँचाई पर पहुँच गए एक शख्स का जीवन उसके लिए कैसा हो जाता है, यह उपन्यास बताता है। उसका अपना पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन, सभी जगह उसे उलाहने और ताने सुनने को मिलते हैं। जो लोग कृष्ण का सम्मान उनके गुणों के लिए करते थे, वे महाभारत के बाद उन्हें अकेला छोड़ देते है। जो समुद्र कृष्ण के चरण पखारता था, वह उन्हें अपनी लहरों से धक्का दे देता है।

'उपसंहार' कहता है कि इंसान अपने गुणों से, अपने बुद्धि–बल से, अपने प्रयासों से ईश्वर कहलाने लगता है, लेकिन जब वह अपने ऐश्वर्य का गलत प्रयोग करता है, तो समय उसे एक निरीह इंसान में तब्दील कर देता है। महाभारत के बाद कृष्ण के साथ भी ऐसा ही होता है। कृष्ण दवारा युद्ध के बने–बनाए नियमों को तोड़ देना भाई बलराम को रास नहीं आता। कृष्ण का यह प्रयोगवाद दोनों भाइयों के बीच मनमुटाव का कारण भी बन जाता है।

इसके साथ नरक का मसीहा (भगवानदास मोरवाल), गायब होता देश (रणेंद्र), फरिश्ते निकले (मैत्रेयी पुष्पा), धरा अँकुराई (असगर वजाहत), बरवेड़ापुर (हरे प्रकाश उपाध्याय), मिठोपाणी खारो पाणी (जया जादवानी), पंचकन्या (मनीषा कुलश्रेष्ठ) की भी आलोचना वांछनीय है। सब मिलाकर उपन्यास की इस वर्ष अच्छी फसल हुई है। देश काल, पात्र, परिस्थिति, शाश्वतता, सांप्रतिकला, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, नारी–विमर्श, भूमंडलीकरण

आदि पर गंभीर चिंतन हुआ है। सर्वेक्षण मूल्यांकन है उपन्यासाधारित पर वाणी को विराम मिलता है राजी सेठ की इन पंक्तियों से : 'अभी भी हर चरण को/किसी एक मुहूर्त की तलाश है। कोई नहीं जानता/किसे सूझ जाएगा अग्निगर्भ शब्द/अनुगूँजोंवाला अर्थ/सदी से कहो अंतिमता मत आँकें'।



15

हिंदी कहानी

प्रो. अवध किशोर प्रसाद

प्रसिद्ध आलोचक बलराम ने लिखा है– "हिंदी कहानी की उम्र का मामला कुछ-कुछ किसी स्त्री की उम्र जानने-पूछने जैसा है, जिस पर नित निरंतर खोज-खाज का सिलसिला भी चलता रहता है, जो इक्कीसवीं सदी में भी जारी है। फिलहाल माधवराव सप्रे की *'एक पथिक का स्वप्न* को हम आधुनिक हिंदी की पहली कहानी मान सकते हैं जो मार्च–अप्रैल 1900 में *'छत्तीसगढ़ मित्र* में छपी थी। इसे मानक मानकर चलें तो हिंदी कहानी की उम्र सवा सौ बरस होने की ओर अग्रसर है।" कहानी लेखन और पठन-पाठन दोनों ही दृष्टियों से हिंदी की सर्वाधिक लोकप्रिय एतदर्थ महत्वपूर्ण विधा है। इस कालखंड में लिखी गई श्रेष्ठ और मानक लोक कहानियों का संचयन के रूप में एकत्रित और प्रकाशित किए जाने का प्रयास किया गया। महेश दर्पण का *'बीसवीं शताब्दी की हिंदी कहानियाँ* 229 कहानियों का संकलन, डॉ. राहुल का 'बीसवी सदीः हिंदी की मानक कहानियाँ' सौ कहानियों का संकलन, कमलेश्वर का *'शताब्दी की कालजयी कहानियाँ* 149 कहानियों का संकलन, डॉ. देवेश ठाकुर का *'कथाक्रम* 150 कहानीकारों की 175 कहानियों का संकलन और वर्ष 2013 में डॉ. पुष्पपाल सिंह के संपादन में *'हिंदी की क्लासिक कहानियाँ* 124 कहानीकारों की कहानियों का संकलन महत्वपूर्ण कार्य हैं, जिनसे अद्यतन प्रकाशित होने वाली कहानियों से पाठकों को न केवल परिचय ही मिलता है, बल्कि इससे यह भी सिद्ध होता है कि कहानी लेखन का क्रम अनवरत और विरल है तथा पाठकों का बहुत बड़ा समूह इसके

रसास्वादन में संलग्न है। यहाँ हमारा उद्देश्य मात्र एक वर्ष 2014 में प्रकाशित कहानियों का अवलोकन और सर्वेक्षण करने का है। वर्ष 2014 में प्रकाशित कहानियों के विश्लेषण-सर्वेक्षण से कहानी विधा की दशा-दिशा का बोध होगा। इससे परंपरा निर्धारण में सहायता मिलेगी तथा कहानी अध्येताओं के लिए नए सोपान निर्मित होंगे, नए गवाक्ष खुलेंगे। इस अध्ययन से वर्ष-भर में प्रकाशित कहानियों की जानकारी मिलेगी, साथ ही यह भी स्पष्ट होगा कि इस कालखंड में किस कोटि की कहानियाँ लिखी गई और उनमें से कौन–सी प्रवृत्ति जन मानस को प्रभावित-लाभान्वित कर सकी। किसी निर्धारित कालखंड के भीतर रचित साहित्य के सर्वेक्षण का यही उद्देश्य होता है। इस अध्ययन में इस तथ्य को दृष्टिपथ में रखा गया है।

वर्ष 2014 में प्रकाशित कहानियों की प्राप्ति के दो मुख्य स्रोत हैं – कहानीकारों के संकलन और पत्र-पत्रिकाएँ, जिनमें कहानियाँ प्रकाशित होती हैं। सर्वप्रथम हम कहानीकारों के प्रकाशित संकलनों की कहानियों का सर्वेक्षण–परीक्षण करेंगे।

हिंदी में वरिष्ठ से लेकर नवागंतुक कहानीकारों के ढेर सारे कहानी संकलन छपे हैं। *'टूटते-जुड़ते रिश्ते* वयोवृद्ध कथाकार गिरिजानंदन *'मणि* का दूसरा कहानी संकलन और चौथी पुस्तक है। इसके पूर्व इनके दो उपन्यास और एक कहानी संग्रह *'वाल्मीकि क्या करें* प्रकाशित हुए हैं। *'मणि* ग्रामीण परिवेश के कुशल चित्रकार हैं। इनकी सभी कहानियों में आस-पास फैले गाँवों के अतीत की घटनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। *'टूटते-जुड़ते रिश्ते'* कहानी संकलन में सात कहानियाँ – सुमनी का सूरज, टूटते-जुड़ते रिश्ते, रामभजू चाचा और मुकुंद मास्टर, पुराने चाचा बनाम नई चाची, जूलू पंडित, उजियारपुर पुराना गाँव नही रहा और सपनों के साक्षात्कार संकलित हैं। इन सभी कहानियों में गाँव के जीवन को ग्रामीण पात्रों, उनकी बोलचाल और उनके रहन-सहन के ढंग के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया हैं। *'मणि* एक सफल किस्सागो हैं। इनकी प्रायः हर कहानी में किस्सागोई की झलक मिलती है। आधुनिक परिवेश में लिखी गई अतीत की घटनाओं पर आधारित

सारी कहानियाँ कथ्य, शैली और उद्देश्य की दृष्टि से सफल और संतुलित हैं। कहानियाँ लंबी हैं, ऊबाऊ नहीं। 'मणि' की कहानियाँ पढ़ते समय 'हेजल ग्लेन' की स्तब्धता का आभास होता है।

वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित सूर्यनाथ सिंह का *'धधक धुआँ–धुआँ'* इनका दूसरा कहानी संग्रह है, जिसमें कुछ कहानियाँ– जो है सो, ट्रिकल टाउन, देवता घर आए, मंडन मिसिर की खुरपी, धधक धुआँ–धुआँ और परवाज–संकलित हैं। संग्रह की पहली कहानी 'जो है सो' ठोस यथार्थ पर आधारित है जिससे पूरा देश जूझ रहा है। गाँवों की जमीन पर एक्सप्रेस वे, बिजली परियोजना और बिजनेस सेंटर खुलने की खबर पर गाँव वालों की क्रिया-प्रतिक्रिया से कहानी की शुरुआत होती है। यह कहानी नौगाँवा नाम से मशहूर साढ़े आठ गाँवों में एक्सप्रेस वे, बिजली परियोजना और बिजनेस सेंटर में प्रवेश का यथार्थ है। इसमें पुरानी और नई पीढ़ी के द्वंद्व को दिखलाया गया है जो पुरातन और अधुनातन मूल्यों का द्वंद्व न होकर मूल्य और मूल्यहीनता के संघर्ष का प्रतिरूप है। ट्रिकल टाउन' क्षेत्रवाद, जातिवाद, राजनैतिक तिकड़म, परियोजनाओं की लूट को समेटकर नवधनाढ्य बनते चतुर और तिकड़मबाजों की कहानी है। कहानी के मुख्य पात्र छोटकन बाबू के माध्यम से इस तिकड़म को दिखलाया गया है। *'देवता आ गए'* में मौंझरपुर या मुसहरपुर के एक मुसहर परिवार के माध्यम से कथाकार ने समाज के अति उपेक्षित वर्ग के जीवन संघर्ष को उजागर किया है। इस कहानी का पात्र बैंगा, ऐंचा, ललमुनिया, बलिया का परिवार सामंतवाद, सियासत और विकासवाद की विचित्र परिभाषा का शिकार होता है। 'मंडन मिसिर की खुरपी' एक समय के समृद्ध और विद्वान मंडन मिसिर की कहानी है, जो बुढ़ापे में बेटे-बेटियों से उत्पीड़ित, शोषित और प्रताड़ित हैं। खुरपी उनके जीवन की बची-खुची धार का प्रतीक बन गई है। मंडन मिसिर आधुनिक नई सामाजिक व्यवस्था में अपमानित, उपेक्षित और अधिकार-वंचित बूढ़े के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। पुस्तकनामा कहानी *'धधक धुआँ-धुआँ'* तीन सहपाठियों – अशरफ, तारानंद और निर्मलेंदु के वर्षों बाद मिलने और उनके बदले हुए

सरोकारों की कहानी है। इसमें आदिवासी जीवन और नक्सली समस्या के संदर्भ में प्रशासन, राजनीति एवं एनजीओ के तिकड़म तथा कश्मीर से लेकर देवरा गाँव तक में धधक रही विद्रोह की आँच को उजागर किया गया है। संग्रह की अंतिम कहानी '*परवाज* गाँव से दिल्ली आए एक ऐसे पढ़े-लिखे बेरोजगार युवक अनिरुद्ध की कहानी है जो रोड पर रेहड़ी लगाने से शुरू होकर प्रॉपर्टी डीलिंग के धंधे में चला जाता है किंतु, शुरुआती सफलता के बाद घोर असफलता प्राप्ति की स्थिति में पुनः लाखों के कर्ज के साथ रोड पर आ जाता है। पलायन उसकी नियति बनती है।

'*वाया पांडेपुर चौराहा* नीरजा माधव का सत्रह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की सभी कहानियाँ मानव मन की कृत्रिमता और विवशता को परत–दर–परत उधेड़ने वाली अलग ढंग की कहानियाँ है जो पाठकों को भीड़ के बीच एक आईने की तरह दृष्टिगोचर होगी। प्रत्येक कहानी संवेदना को जगाने वाली है। '*डमी* कहानी में शो रूम में लगी हुई डमी को सजाने वाले कामगार की मनोदशा के साथ-साथ उसकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अद्‌भुत चित्रण हुआ है। '*खलीफा* कहानी में मुख्य पात्र को जीविकोपार्जन के लिए लावारिस लाशों को ढोते और अंतिम संस्कार के रूप में नदी में प्रवाहित करते दिखलाया गया है। '*बेटन* शिक्षा का अधिकार दिए जाने के बावजूद शिक्षा से वंचित रहने वाले निर्धन और पिछड़े वर्ग के बच्चों की कहानी है। इस कहानी में व्यवस्था के छद्‌म रूप को उजागर किया गया है। संकलन की कुछ कहानियों में समाज में अपनी अस्मिता और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षशील स्त्रियों की मानसिकता को दिखलाया गया है। भंवरी, उट्र-उट्र आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। संकलन की कुछ कहानियों के विषय अछूते किंतु मर्मस्पर्शी हैं।

'*वनपाखी* अमरीक सिंह '*दीप* की पंद्रह कहानियों का संग्रह है। इसका प्रकाशन अमन प्रकाशन, कानपुर से हुआ है। प्रियंका गुप्ता के शब्दों में कहें तो 'हर संग्रह की तरह इस संग्रह में भी कुछ कहानियाँ प्रभाव छोड़ती हैं, कुछ सामान्य-सी हैं, तो कुछ कहीं-कहीं कमजोर पड़ जाती हैं।' संकलन

की ट्विन, बर्फ, देवता, आक्रांत, वनपाखी आदि कहानियाँ अच्छी बन पड़ी हैं। शीर्षकनामा कहानी *'वनपाखी* बाल-प्रेम पर आधारित है, जिसमें बचपन के बिछड़े हुए साथी से 35 वर्षों के बाद अचानक हुई मुलाकात का वर्णन है। *'बर्फ'* एक बाल-प्रेम कहानी है। पूरी कहानी प्रतीकों से भरी है। *'देवता* में नायिका के अंतर्द्वंद्व को बड़ी सफलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। 'आक्रांत' सामान्य कलेवर में लुभावने अंत की कहानी है। 'वनपाखी' एक वैविध्यपूर्ण कहानी संकलन है।

'क्लियोपेट्रा सोनी सिंह की आठ कहानियों का सकंलन है। क्लियोपेट्रा संकलन की पहली और शीर्षकनामा कहानी है। मिस्र की महारानी क्लियोपेट्रा की इतिहास–प्रसिद्ध प्रवृत्तियों के अनुकूल यह कहानी बनी है, बल्कि संकलन की प्रायः सभी कहानियों का थीम उसी के अनुरूप है। नारी मुक्ति, नारी विमर्श, नारी सशक्तीकरण पर लिखते-लिखते नारियाँ यौन विमर्श, देह विमर्श और योनि विमर्श पर लिखने को तत्पर हो गई हैं। संकलन की सभी आठ कहानियाँ – क्लियोपेट्रा, खेल, देह गाथा, चक्रव्यूह आदि इस तथ्य को पुष्ट करती हैं। इस संकलन के लिए अशोक गुप्ता का कथन – 'सोनी सिंह की ये कहानियाँ न सिर्फ अपने वैचारिक धरातल की बानगी हैं, बल्कि वह इस बात की भी पुष्टि करती है कि अपनी भाषा और अभिव्यक्ति के संदर्भ में वह उन आग्रहों से मुक्त हो गई हैं जिन्हें शालीनता और मर्यादा के नाम पर अब तक थोपा जा रहा है।"

'पार उतरना धीरे से विवेक मिश्र का कहानी संग्रह है, जिसमें दोपहर, तन मछरी मन नीर, खंडित प्रतिमाएँ, दीपा, दुर्गा, तितली, थर्टी मिनट्स, पार उतरना, धीरे से आदि प्रमुख कहानियाँ हैं। संग्रह की पहली कहानी उस अतीतजीवी पागल की कहानी है, जो वर्तमान में कुछ खोज रहा हो। *'दोपहर* ननिहाल में बिताई छुट्टियों के क्रम में उस व्यक्ति की मानसिकता का वर्णन है जो प्रत्येक दोपहरी में निश्चित समय पर गली में आकर एक बयान पढ़कर बताता है कि किस प्रकार उसे फांस कर सर्वहारा बनाया गया। *'तन मछरी मन नीर* किसी किस्सागो द्वारा कही गई अतीत की कहानियों की झलक

प्रस्तुत करती है। '*खंडित प्रतिमाएँ*' वीभत्स अपराध और अपहरण की कहानी है। 'दीपा' एक मातृहीन बालिका की कहानी है जो पिता की इच्छा पर ढोंगी बाबा की सेवा के क्रम में उसकी हवस का शिकार होती है। पुस्तकनामा संग्रह की सभी कहानियाँ प्रभावकारी हैं। इस कहानी संकलन के लिए विवेक मिश्र को नई दिल्ली द्वारा '*अंजना साहित्य सम्मान*' से विभूषित किया गया।

वर्ष 2014 में तेजेंद्र शर्मा की दस प्रतिनिधि कहानियों का संकलन प्रकाशित हुआ है। तेजेंद्र शर्मा एक प्रवासी कथा लेखक हैं। इन्होंने हिंदी कहानी की मुख्य धारा में एक विशिष्ट रंग उजागर किया है। संग्रह में शामिल कहानियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कहानी '*कब्र का मुनाफा*' है। यह कहानी मनुष्य की भौतिकवादी मानसिकता पर व्यंग्य है, जहाँ मनुष्य कब्र की खरीद-बिक्री में भी मुनाफा कमाने की बात सोचता है। पंजाब की पृष्ठभूमि पर लिखी गई '*ढिबरी लाइट*' कहानी में प्रवासी जीवन के संघर्षों को मार्मिकता के साथ व्यक्त किया गया है। 'केसर' में पूनम और नरेन दंपत्ति के माध्यम से कैंसर की भयावहता का चित्रण किया गया है। 'एक ही रंग' दो हज्जाम को केंद्र में रखकर सामान्य जीवन की पृष्ठभूमि में लिखी गई कहानी है। '*मुझे मार डालो बेटा*' एक लकवाग्रस्त अवकाशप्राप्त पिता की कहानी है जिसे दुखों से मुक्ति दिलाने उसका ही बेटा प्रार्थना करता है। 'जमीन भुरभुरी क्यों?' एक अर्थपूर्ण कहानी है। इसमें जेल की सजा काटकर लौटा आदमी अनुशासित जीवन जीने के कारण उम्र से पाँच वर्ष कम का दीखता है और जेल से बाहर जीवन यापन करने की जुगाड़ में संघर्षरत पत्नी उम्र से दस वर्ष अधिक की दीखती है।

'*तालाबों ने उन्हें हँसना सिखाया*' वरिष्ठ कहानीकार विनोद साव की प्रेम कहानियों का संग्रह है। संग्रह की पहली कहानी '*तुम उर्मिला के बेटे हो*' भाषा की दृष्टि से सुंदर और सधी हुई कहानी है। '*मैं दूसरी नहीं होना चाहती*' किशोर प्रेम की कहानी है जिसमें किशोर प्रेम की अभिव्यक्ति गीतिमयता के साथ हुई है। '*औरत की जात*' मे स्त्री के मनोभावों के शब्द–चित्र बड़ी ही संजीदगी के साथ उतारे गए हैं। विनोद साव एक प्रयोगधर्मा कथाकार हैं,

जो कहानी के फॉर्मेट को तोड़ने की तत्परता से आकुल दीखते हैं। व्यंग्य से कथा लेखन में आए विनोद साव यहाँ भी अपनी उत्कृष्टता सिद्ध करते हैं।

'मुकुटधारी चूहा राकेश तिवारी की सात कहानियों का संकलन इनका दूसरा कहानी संग्रह है। संग्रह की सातों कहानियाँ *मुकुटधारी चूहा, कठपुतली थक गई, मुर्गीखाने की औरतें, अंधेरे दुनिया के उजाले कमरे में* आदि वर्ण्य, शैली और कहने के ढंग की दृष्टि से अद्भुत है। यद्यपि गुणात्मकता के साथ-साथ परिणाम भी किसी कथाकार की ख्याति का आधार होता है, तथापि थोड़ा लिखकर भी ख्यातिलब्ध हुआ जा सकता है। राकेश तिवारी के साथ यह बात अक्षरशः लागू होती है। संकलन की कहानियाँ मुकुटधारी चूहा, कठपुतली थक गई और मुर्गीखाने की औरतें विशिष्ट कहानियाँ हैं। शेष कहानियाँ भी अच्छी हैं। इनकी कहानियों का पाठ बड़ा विस्तृत है और कहानी कहने का ढंग भी अनोखा है।

योगेंद्र आहूजा का *'पाँच मिनट और अन्य कहानियाँ* इस वर्ष आई हैं। इसमें संकलित एक्यूरेट पैथोलोजी, स्त्री विमर्श, पाँच मिनट आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं। पुस्तकनामा *'पाँच मिनट* कहानी संकलन की सर्वोत्कृष्ट कहानी है। संकलन की स्त्री विमर्श की कहानियाँ प्रभावोत्पादक हैं। ये कहानियाँ पाठकों को आकृष्ट करती हैं। योगेंद्र आहूजा एक श्रेष्ठ और सफल कथाकार हैं। इनकी कहानियों की अपनी अलग विशेषता और अलग पहचान है।

'पानी मनोज कुमार पांडे का कहानी संग्रह है। इसमें *'पानी* के अतिरिक्त पुरोहित जिसने मछलियाँ पालीं, पत्नी, चेहरा, जीन्स, बूढ़ा जो शायद कभी था ही नहीं आदि कहानियाँ संकलित हैं। *'बूढ़ा जो शायद कभी था ही नही* लोककथा का आभास दिलाती है। यह एक प्रतीकात्मक कहानी है। उसी तरह 'पुरोहित जिसने मछलियाँ पाली' लोक जीवन पर आधारित कहानी है। *'पानी* में संकलित कहानियों के संबंध में शशिभूषण द्विवेदी लिखते हैं – 'कल्पना, वैचारिक गहनता और संश्लिष्ट संवेदनात्मकता के साथ रच–बस कर जिस अंतर्दृष्टि की रचना की जाती है वह फैक्ट को फिक्शन और कला को लार्जर दैन लाइफ बनाने में सहायक होती है। 'पानी'

में इसे बखूबी देखा जा सकता है।' वस्तुतः पानी की कहानियाँ समृद्ध कलात्मकता का परिचय देती हैं।

'*जिद्दी रेडियो*' पंकज मिश्र का तीसरा कहानी संग्रह है। संग्रह की कहानियों में भूमंडलीकरण के यथार्थ को अभिव्यक्ति मिली है। आज के भूमंडलीकरण के दौर में साहित्य भी प्रभावित हुआ है। अन्य विधाओं की अपेक्षा कहानी पर भूमंडलीकरण का गहरा और व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। सविता चड्ढा की चौदह कहानियों का संकलन '*खुशनसीब औरतें*' प्रकाशित हुआ है। कहानी लेखिका ने अपने जीवन यात्रा के क्रम में प्राप्त अनुभव और भोगे हुए क्षणों को कहानी की रूपाकृति में प्रस्तुत कर दिया है। इसलिए इन कहानियों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें पुरुष और स्त्री जीवन की सच्चाइयों की भी अभिव्यक्ति हुई है।

किताबघर प्रकाशन से दस प्रतिनिधि कहानियों के प्रकाशन की योजना के तहत वरिष्ठ कथाकारों आलमशाह खान, बल्लभ डोभाल और भगवानदास मोरवाल की कहानियों का संकलन प्रकाशित हुआ है। आलमशाह खान की कहानियों की विशेषता है कि 'इनमें लोक जीवन में बिखरे कथा के तत्वों को अद्भुत कौशल के साथ शब्दों में पिरोया गया है तथा अनदेखे सच को कहानियों में पिरोया गया है। बल्लभ डोभाल की कहानियों का सृजन सामान्य जन-जीवन की गहराइयों में पैठकर किया गया है। ये कहानियाँ कहानीकार डोभाल को अपने समय के महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों का आस्वाद अनूठा और प्रभाव गहरा है। भगवान दास मोरवाल की कहानियाँ उस लोक-धर्मिता' की गवाह हैं जो अहिंसक प्रतिवाद के चलते मनुष्यता के पक्ष में खड़ी रहती हैं। यह प्रतिवाद स्थानीयता के साथ एक व्यापक विमर्श को रेखांकित करती है।' किताबघर प्रकाशन से ही भारती गोरे की ताजा कहानियों का संकलन '*उसकी भी सुनो*' प्रकाशित हुआ है। स्त्री विमर्श पर लिखते हुए कहानीकार आज एक ओर पुरुष–प्रधान समाज में व्याप्त पुरुष वर्चस्व के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं तो दूसरी ओर

41 HRD/16—17B

स्त्रियों को सामाजिक अधिकार दिलाकर उनके सशक्तिकरण के लिए आंदोलन छेड़ रहे हैं। इस संकलन की सारी कहानियाँ इसी आशय को पुष्ट करती हैं। ये कहानियाँ सामाजिक रूढ़ियों और पुरुष–प्रधान व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। इनमें स्त्री के अस्तित्व पर चर्चा करते हुए उसकी जिजीविषा को रेखांकित्त किया गया है। इसी प्रकाशन से शैलेंद्र सागर की कहानियों का संकलन *'ब्रंच तथा अन्य कहानियाँ* प्रकाशित हुई हैं। संकलन की कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की परंपरागत संरचना और उसको चुनौती देते जीवन मूल्यों की मुठभेड़ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसमें व्यक्त नारी जीवन की छवियाँ अद्भुत और अनूठी हैं।

'अंधेरे की कोई शक्ल नहीं होती ज्योति चावला का पहला कहानी संग्रह है। प्रायः प्रत्येक महिला लेखक अपने लेखन के केंद्र में नारियों को उनकी समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में रखकर अपनी बात कहती है। उसकी रचनाओं में नारी अस्मिता का प्रश्न ही मूल रूप में अभिव्यक्ति पाता है। *'अंधेरे की कोई शक्ल नहीं होती* की कहानियों के मूल में नारी का संघर्ष और उसकी अस्मिता का चित्रण ही निहित है। *'ये चार पराठें* अरुणा सब्बरवाल की बारह कहानियों का संग्रह है। चूंकि अरुणा सब्बरवाल एक प्रवासी कथा लेखिका हैं, इसलिए इनकी कहानियों में भिन्न-भिन्न देशों की सामाजिक बुनावटों में मनुष्य की संवेदनाओं की पड़ताल रहती है। देश, काल और परिस्थितियों के परिवर्तन से मानव की अनुभूतियों के रंग परिवर्तित होते हैं। इस परिवर्तन को संग्रह की कहानियों में रेखांकित किया गया है। इस संग्रह की कहानियों का कथानक नूतन तथा भावाभिव्यंजना बिल्कुल सरल है। *'हम जो हैं* शैल केजड़ीवाल की इक्कीस कहानियों का संग्रह है। ये कहानियाँ एक स्त्री रचनाकार की अकृत्रिम संवेदनाओं की उपज हैं। सामाजिक जीवन की रोजमर्रा घटनाओं की पृष्ठभूमि पर लिखी गई इन कहानियों में नारी जीवन ·की दोहरी मानसिकता का चित्र उकेरा गया है। फिर भी, इन कहानियों में आशावादिता है।

इन संकलनों के अतिरिक्त आलोच्य वर्ष में अन्य कई कहानीकारों के महत्त्वपूर्ण संकलन प्रकाशित हुए हैं – चित्रा मुद्गल का '*पेंटिंग अकेली है*', आर एस हरनोट का '*लिटन ब्लॉक गिर रहा है*', राकेश मिश्र का '*लाल बहादुर का इंजन*', सत्यनारायण का '*काफीर बिजूका इकलिस*', 'अब्दुल बिस्मिलाह का '*शादी का जोकर*', भालचंद्र जोशी का '*हत्या की पावन इच्छाएँ*', तब्बसुम निहां का '*नरगिस फिर नहीं आएगी*', आशुतोष का 'मरे तो उम्र भर के लिए' आदि नामोल्लेख किए जा सकते हैं।

कहानियों के प्रकाशन का दूसरा स्रोत पत्र-पत्रिकाएँ हैं। हमारे देश में अनुमानतः दैनिक से लेकर वार्षिक तथा अनियतकालीन सहस्राधिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। इनमें से कुछ पत्रिकाओं में साहित्यिक सामग्रियों के साथ व्यापक रूप से कहानियों का प्रकाशन होता है। थोड़े में हम उनका अध्ययन-अनुशीलन करेंगे।

दैनिक जागरण में सोमवार को साहित्यिक पुनर्नवा अंक में प्रायः कहानियाँ छपती है। वर्ष 2014 के इन अंको में बहुसंख्यक कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें '*एक बेटी का माँ के नाम पत्र* (सुधा गोयल), *ओ री चिरैया* (सुमन श्रीवास्तव), *क्षितिज के उस पार* (कश्मीर सिंह), कर्ज (डॉ. गोपाल शर्मा मृदुल, *आश्रय* (डॉ. शरद सिंह) आदि प्रमुख हैं। सुधा गोयल की '*एक बेटी का माँ के नाम पत्र* एक अनचाही आठवीं बेटी श्वेता की दर्दभरी कहानी है। माँ जन्म के बाद से विवाहोपरांत उस बेटी की उपेक्षा करती रहती है, किंतु उसे ससुराल में उचित सम्मान, स्नेह और संरक्षण मिलता है। यह एक उपेक्षित बेटी की मर्मांतक पीड़ा व्यक्त करने वाली पत्रात्मक कहानी है, जिसे माँ अनागत भविष्य के अंधकारपूर्ण गह्वर में ढकेल कर निश्चिंत हो जाती है। प्रकृति के प्रांगण में नित-निरंतर अद्भुत घटनाएँ घटती रहती हैं जो मानव मन को प्रभावित उद्वेलित करती हैं एवं मनुष्य की सोच को बदल देती हैं। सुमन श्रीवास्तव की '*ओरी! चिरैया* प्रकृति के प्रांगण में घटने वाली घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में बदलती हुई मानसिकता की कहानी है। प्रिया समाज में प्रचलित मान्यता '*बेटा वंश को बढ़ाने वाला और बेटी पराया धन* के आधार

पर बेटा और बेटी में भेद करती है, किंतु अपनी बगिया में कलरव करती चिड़ियों को अपने बच्चों में भेद किए बगैर दाना चुगाते देख अपनी संकीर्णता के भाव को भुलाकर अपनी बहू वंदना की बेटी को अपना प्यार देती है। वरिष्ठ कहानीकार कश्मीर सिंह की '*क्षितिज के इस पार* भारतीय धर्म और संस्कृति में मृत्यु के बाद मृतक के लिए किए जाने वाले कर्मकांड पर आधारित कहानी है, जिसमें मृत्यु के बाद तीसरे दिन होने वाले क्रिया-कलापों का वर्णन किया गया है। यह एक व्यंग्यात्मक कहानी है। निष्काम सेवा चाहे जितनी भी छोटी हो, उसका असर गहरा होता है। डॉ. मृदुल की कहानी '*कर्ज* इस बात का संकेत करती है। बैंक के ऋण अनुभाग में लिपिकीय कार्य करने वाला सतीश अपनी कर्तव्यपरायणता से ग्राहकों के बीच लोकप्रिय हो जाता है। कल्पना कुलश्रेष्ठ का '*भयानक खेल* एक वैज्ञानिक कहानी है जिसमें विज्ञान के विकसित करिश्माई रूप का उल्लेख किया गया है। यंत्र मानव और रोबोट की कल्पना से लेखिका की कल्पना आगे है, जिसमें ऐसे सॉफ्टवेयर को विकिसत करने की कल्पना है जिसके दवारा मनुष्य के मस्तिष्क का डिजिटल स्वरूप बिल्कुल वास्तविक जीवित मस्तिष्क की तरह कार्य कर सकता है।

दैनिक जागरण की साहित्यिक पुनर्नवा की वार्षिकी प्रकाशित होती है। 2014 में भी इसका प्रकाशन हुआ है जिसमें सात वरिष्ठ कथाकारों की सात कहानियाँ – *गुमशुदा* (अल्पना मिश्र), *द्रविण प्राणायाम* (भगवान अटलानी), *शब–ए–माहताब में* (विभारानी), *औरतों की दुनिया* (पंकज सुबीर), *नामवर* (अमरीक सिंह दीप), *ड्रीम्स अनलिमिटेड* (गीता श्री) *और सदानंदजी सठिया गए हैं* (गोविंद उपाध्याय) प्रकाशित हुई हैं। *द्रविण प्राणायाम, औरतों की दुनिया* और *सदानंद जी सठिया गए हैं* अच्छी कहानियाँ हैं। '*द्रविण प्राणायाम* राजनीति में व्याप्त विसंगति तथा पदलोलुपता एवं पद–प्राप्ति के लिए अपनाए गए राजनैतिक हथकंडों को उजागर करती एक व्यंग्य कथा है। 'औरतों की दुनिया' एक पारिवारिक–सामाजिक कहानी है। अमरीक सिंह दीप एक सधे हुए कहानीकार हैं। कहानी कहने का उनका ढंग अनोखा है।

'*नामवर*' ऐसी ही कहानी है जिसमें नाम, यश और सम्मान चाहने वाले एक '*गांधी*' नामक सामान्य व्यक्ति की प्रवृत्तियों का उल्लेख करने के बहाने कहानीकार ने देश में व्याप्त विसंगतियों, विरोधाभासों तथा घोटालों का पर्दाफाश किया है। 'सत्यानंद जी सठिया गए हैं' एक मनोविश्लेषणात्मक कहानी है। सामान्यतः कहानियों में यथार्थ के नाम पर जहाँ बूढ़े को उपेक्षित और प्रताड़ित दिखाया जाता है, गोबिंद उपाध्याय की यह कहानी समाज को सकारात्मक सोच के लिए बाध्य करती है। इस वर्ष की यह उत्कृष्ट कहानी मानी जानी चाहिए। संकलन की अन्य कहानियाँ सामान्य हैं।

प्रेमचंद से विरासत में मिली हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका '*हंस*' के दायित्वों का निर्वहन राजेंद्र यादव ने जिस मुस्तैदी और ईमानदारी के साथ किया उसी खूबी के साथ इसके वर्तमान संपादक संजय सहाय कर रहे हैं। जन चेतना का प्रगतिशील कथा मासिक '*हंस*' में कहानियों की प्रमुखता होती हैं। वर्ष 2014 में इसके नियमित बारह अंक प्रकाशित हुए जिनमें अस्सी से अधिक कहानीकारों की उतनी ही कहानियाँ छपी हैं। हंस की कहानियों की अलग विशेषता और अलग प्रकृति होती है। ये कहानियाँ प्रायः लंबी होती हैं। रुई के फाहे की तरह कहानियों में विचारों की शृंखला बढ़ती जाती हैं। लंबी होने के बावजूद ये कहानियाँ ऊबाऊ और विचार बोझिल नहीं है। देश, काल और समाज की जितनी भी स्थितियाँ, विचारों की जितनी सरणियाँ हो सकती हैं, हंस की कहानियों में उन सबका समावेश हुआ है। विज्ञान की परत खोलने से लेकर मानव मन की गुत्थियाँ सुलझाने तक की जितनी भी बातें हो सकती हैं, विमर्श के जितने भी प्रतिरूप, नारी विमर्श, दलित विमर्श यहाँ तक कि सेक्स विमर्श, हो सकते हैं वर्ष भर की कहानियों में सबका समावेश हुआ है। हंस की कहानियाँ स्वतंत्र रूप से विश्लेषण की अपेक्षा रखती हैं।

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण विभाग की हिंदी मासिकी 'आजकल' में कहानियों का प्रकाशन होता है। वर्ष 2014 में लेखकों पर केंद्रित इसके अनेक विशेषांक आए हैं। स्वतंत्र रूप से प्रकाशित जून 2014 अंक में तीन कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। उर्दू से अनूदित ख्वाजा अहमद

अब्बास की कहानी '*बचपन, जवानी, बुढ़ापा* सामाजिक विषमता और जातिवादी व्यवस्था पर व्यंग्य है। वर्तमान परिवेश में लिखी गई निर्मला सिंह की '*वक्त की धारा* नारी संवेदना, मुख्यतः मातृत्व की भावना को व्यक्त करती दो पीढ़ियों के चिंतन की उत्कृष्ट कहानी है। जगत सिंह की कहानी 'नक्शा' पानी की ज्वलंत समस्या और उस पर दबंगों के अधिकार जमाने की चेष्टाओं को व्यक्त करती है।

लखनऊ से डॉ. एन. वी. अस्थाना के संपादन में प्रकाशित त्रैमासिकी सर्व सृजन, में कहानियों का प्रकाशन होता है। अक्तूबर 2014 अंक में छह कहानियाँ प्रकाशित हुई है। पहली गोपालकृष्ण शर्मा '*मृदुल* की '*फ्रांस* एक सामाजिक कहानी है। माता–पिता अपने बेटे–बेटियों के पारस्परिक प्रेम को रिश्ता प्रदान करते हेतु अपने मन की हुमस को दूर कर देते हैं। '*वंश* डॉ विद्याबिंदु सिंह की नारी त्रासद की कहानी है, जिसमें वंश बढ़ाने के लोभ में माँ नहीं बन सकने की कमजोरी के कारण एक स्त्री अपनी ही सगी बहन से सौतिया दंश झेलने को बाध्य होती है। दुख की पराकाष्ठा पर भले ही पति उसे अपनी जायदाद का आधा हक प्रदान कर देता है, किंतु वह पति का अप्रतिम प्यार और सान्निध्य खो देती है। '*दलदल* अमित दुबे की आतंकवाद की स्थिति को रेखांकित करती उत्कृष्ट कहानी है। किस तरह आतंकवाद फैलता है और किस तरह आतंकवादी मासूम किशारों और युवाओं को फांस कर उनका इस्तेमाल करते हैं, इस सत्य को इस कहानी में रेखांकित किया गया है। 'प्रारब्ध' अर्चना प्रकाश की धर्म–परिवर्तन के औचित्य को रेखांकित करती कहानी है। हिंदू से इसाई धर्म स्वीकार करती मेरी डिसूजा का प्रश्न '*क्या धर्म की खातिर हमारा भिखारी बनना उचित था या फिर धर्म परिवर्तन स्वीकार करके नया जीवन प्रारंभ करना ठीक था* बिल्कुल सही और उचित है। यह प्रश्न सकारात्मकं उत्तर की अपेक्षा रखता है। जाकिर अली रजनीश की '*चश्मेवाली लड़की* एक सामान्य कहानी है। युवक की बदसलूकी पर युवती की शालीनता कहानी को विशिष्ट बना देती है। दलित विमर्श की पृष्ठभूमि पर लिखी गई रश्मिशील की कहानी '*भोर का सूरज* जमींदारी जुल्म

की समाप्ति पर दलितों के उदय को रेखांकित करती है।

शिवकुमार शिव के संपादन में भागलपुर बिहार से कहानियों पर आधारित त्रैमासिकी '*किस्सा*' का प्रकाशन होता है। इसके हर अंक में बीस–पच्चीस कहानियाँ होती हैं। इसके अंक–5 अप्रैल–2014 में इक्कीस कहानियाँ हैं। *बदला* (संजीव), *होड़कथा* (हेमंत), *भंवर के बीच* (शेखर), *अधिकार* (अवध किशोर प्रसाद), *रिक्शावाला* (कीर्ति शर्मा), *कबूतरी* (भावना शेखर), *छुटकारा* (अशोक सक्सेना), *फाँसी* (विवेक द्विवेदी) आदि प्रमुख हैं। इस पत्रिका में सारी कहानियाँ किसी आदर्श और मानवीय मूल्य को उद्घाटित करती हैं। कहानियों में रोचकता होने के कारण पाठक की जिज्ञासा अंत तक बनी रहती है। कहानियाँ न अधिक बड़ी और न अधिक छोटी हैं।

मुजफ्फरपुर बिहार से अंजना वर्मा के संपादन में 'चौराहा' अर्धवार्षिक पत्रिका प्रकाशित होती है। आलोच्य वर्ष में इसके दो अंक–2 और 3 आए हैं। इसके दोनों अंकों में क्रमशः तीन और चार कुल सात कहानियाँ *लुटेरे पत्थर* (महाश्वेता चतुर्वेदी), *आरमीनिया की गुफा* (जया जादवानी), *लौट आई खुशियाँ* (पवन चौहान), *मातम* (सूर्यबाला), *उसका सच* (अरुणा सब्बरवाल), *टर्निंग प्वाइंट* (सविता मिश्र), *अवार्ड* (अशोक सक्सेना) और मतलब तथा कौन तार से बीनी चदरिया (अंजना वर्मा) प्रकाशित हुई है।' ये कहानियाँ मर्मस्पर्शी हैं। इनकी भावाभिव्यक्ति एवं भाषायी कसाव हृदयग्राही है। त्रिवेणी गंज बिहार से 'क्षणदा' त्रैमासिकी निकलती है। इसके 23वें अंक में कृष्ण कुमार यादव की 'आवरण' तथा सीताराम पांडेय की '*विश्वासघात*' प्रकाशित हुई हैं। दोनों दलित विमर्श पर आधारित हैं।

'*मधुमती*' राजस्थान साहित्य अकादमी की मासिकी है। साहित्य की अन्य विधाओं के साथ इसमें बड़ी संख्या में कहानियों का समावेश होता है। आलोच्य वर्ष में इसका प्रकाशन दो महीने के संयुक्तांक रूप में हुआ है। जुलाई 2014 अंक में इसमें नौ कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। हरिप्रकाश राठी की '*दर्द लंगोटिया*' कहानी '*मनुष्य का अतीत*', उसका अवचेतन परछाई की

तरह उसका पीछा करता है'– इस सत्य को दो बाल सखा के माध्यम से उजागर करती है। डॉ. विभा सक्सेना की '*सिल्कन वैली* संयुक्त परिवार के व्यस्त जीवन के बीच पनपी आत्मीयता, अपनापन और निःस्वार्थ प्रेम तथा एकल परिवार की नगरीय व्यस्तताओं की संवेदनविहीन जिंदगी की कहानी है। डॉ. मंगत बादल की '*मजमा* एक व्यंग्य कहानी है। कक्षा में पढ़ाने के लिए प्रस्तुत प्रोफेसर से बातूनी, अशिष्ट और अनुशासनहीन छात्रों की बदसलूकी का चित्रण बड़ी ही सच्चाई के साथ किया गया है। मीना ए शर्मा की '*साथी बिराने का* एक मनोवैज्ञानिक कहानी है, जिसमें लेखिका ने कौसानी के पहाड़ी इलाकों में बर्फ गिरने से उत्पन्न नैसर्गिक दृश्यावलियों के बीच मन की अनुभूतियों का चित्रण दो पात्रों के माध्यम से किया है। प्रो. योगेशचंद्र शर्मा की '*इंसानियत* में लेखक एवं एक गैर हिंदू छात्र की गाय के प्रति श्रद्धा, समर्पण और संवेदनशीलता का वर्णन किया गया है। किरण राजपुरोहित की '*एक छोटी–सी संतुष्टि* पर्यटकों की भीड़ में दस–ग्यारह वर्ष की लड़कियों द्वारा मेंहदी बेचने, ग्राहक को तलाशने, उन्हें पटाने के लिए चिरौरी करने तथा मेहंदी बिक जाने पर अजीब संतुष्टि की प्राप्ति की कहानी है। '*कटिंग* शरद केवलिया की एक महत्वाकांक्षी पिता की दर्दनाक और संघर्षपूर्ण जीवन की दुखांत कहानी है। चंद्रेश छतलानी की '*आत्मा का वस्त्र* एकांगी प्रेम कहानी है तो अनुपम सक्सेना की '*आत्म दृष्टि* अनुपम कहानी है जिसके केंद्र में तो एक निम्नवर्गीय बिजली फिटींग करने वाला मजदूर है किंतु लेखक ने महानगर की व्यस्त जिंदगी की भागदौड़ का वर्णन बड़े ही सजीले ढंग से किया है, जहाँ नौकरी करने वाले दंपत्तियों के बच्चे अक्सर आया के हाथों पलते हैं।

मधुमती के सितंबर अंक में आठ कहानियों का प्रकाशन हुआ है। राज चतुर्वेदी की '*परछाई* नारी सशक्तिकरण की कहानी हैं इसमें नारी उत्पीड़न के साथ नारी जागरण का भी संकेत है। पुरुष के कामकारा की बंदिनी नारी की स्वतंत्रता के लिए छटपटाहट और बंधन मुक्ति की आकांक्षा से लैस क्षमा चतुर्वेदी की 'प्रतिकार' एक अच्छी कहानी है। चेतना उपाध्याय का '*उम्मीद*

के पार एक निर्दोष बालक कपिल की कहानी है, जिसे ड्रग्स की हेराफेरी के झूठे आरोप में कैद कर लिया जाता है। सरिता मैम की नारी–सुलभ ममता उसमें उम्मीद जगा देती है। 'ये पढ़ाई–लिखाई, ये खुला बाजार, ये उपभोक्ता संस्कृति हमारे घरों को बाजार बना रही है। लड़कियाँ नाचने को, थिरकने को, बिकने को तैयार हैं .... और हम खुश है कि विकास कर रहे हैं।' इस सत्य को डॉ. सेराज खान बातिश की कहानी 'बेटियाँ' अभिव्यक्त करती आज के समाज की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करती है। '*मलिन छवि से मुक्ति* अपराधबोध की कहानी है। लेखक हरदान हर्ष ने इसमें एक मरणासन्न स्त्री के द्वारा की गई आत्मशुद्धि का उल्लेख किया है। कृष्णा श्रीवास्तव की '*एक–रात, एक–पल* महिला सशक्तिकरण की कहानी है। नवची बनी नेहा तुषार की भलमनसाहत से प्रेरणा ग्रहणकर जीवन की विषम और विपरीत परिस्थितियों से लोहा लेती है और अपनी रक्षा में सफल होती है। कमलेश माथुर की 'मातृदेवो भवः' समाज में बड़े--बूढ़ियों के साथ आए दिन होने वाले अत्याचार पर आधारित यथार्थपरक कहानी है।

इन कहानियों के अतिरिक्त मधुमती के अन्य अंकों में बहुसंख्यक कहानियाँ छपी हैं, जिनमें से विश्वास (जेबा रशीद), उड़ान (डॉ. बीना शर्मा), बोझ (हरीश कुमार अमीत), नई–पीढ़ी, पुरानी–पीढ़ी (डॉ. कुंवर प्रेमिल), निर्णय (डॉ. विदया पालीवाल), परछाइयों का शहर (डॉ. अंजु शर्मा) आदि प्रमुख हैं। मधुमती की कहानियाँ कलेवर की छोटी किंतु सारगर्भित और सधी हुई होती हैं। इन कहानियों में प्रकृति चित्रण की छटा इन्हें काव्यमय बना देती है। भिन्न कोटि की कहानियाँ भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

गृहशोभा एक पारिवारिक पाक्षिक पत्रिका है। इसके प्रत्येक अंक में तीन–चार कहानियों का प्रकाशन होता है। जनवरी 2014 द्वितीय अंक में चार कहानियाँ है। पहली, नरेंद्र कुमार टंडन की '*दोराहा* लिव इन रिलेशनशिप की कहानी है। भारतीय समाज में पल रही और विकसित हो रही लिव इन रिलेशनशिप पर यह एक व्यंग्य है। दूसरी, शकुंतला शर्मा की '*परख* एक पारिवारिक कहानी है। इसमें अत्याधुनिक युग की स्वतंत्रताप्रिय, उन्मुक्त

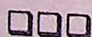
किस्म के लड़की के चारित्रिक अपकर्ष को रेखांकित किया गया है। तीसरी, पूनम अहमद की '*तुम्हें क्या करना है'* सफल, सुखी और संतुष्ट दांपत्य जीवन की कहानी है। इसमें कुछ करने की इच्छा रखने वाली पत्नी, पति के अनजाने, कार चलाना सीखकर बरसाती दिन में पति को स्टेशन छोड़कर सरप्राइज देती है। चौथी, उषा तांबे की '*मुंबई की लड़की* कहानी में दस वर्षों के अंतराल में बॉम्बे से मुंबई बने महानगर के ढेर सारे परिवर्तनों की ओर संकेत किया गया है। गृहशोभा के मार्च दवितीय अंक में भी चार कहानियाँ हैं। पहली, शकुंतला शर्मा की '*शेष भाग फिर* एक व्यंग्य कहानी है। दूसरी, अशोक शर्मा की 'असली हीरा' प्रेम और सेक्स की कहानी है, किंतु कहानी के अंत में प्रेम हावी होता है, सेक्स गौण पड़ जाता है। तीसरी, शिल्पी सतीजा की '*वापसी* पूर्णतः सेक्स की कहानी है। गृह शोभा के जून प्रथम मे तीन कहानियाँ रीता कश्यप की '*मैं चुप रहूँगी*, शांता शास्त्री की '*सहचारिणी* और वैभव जैन की '*नींव* प्रकाशित हुई हैं। इन कहानियों में दांपत्य जीवन के आदर्श और प्रेम का वर्णन है।

इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त अन्य कई पत्रिकाएँ ऐसी हैं। जिनमें कहानियों का प्रकाशन हुआ है। समय विस्तार के साथ कहानी लेखन में भी इजाफा हुआ है। कहानी का हर अगला वर्ष हर पिछले वर्ष को पीछे छोड़ता चलता है। पिछले वर्ष मे जितनी कहानियाँ संकलनों और पत्रिकाओं के माध्यम से रेखांकित की गई थी, इस वर्ष उससे कहीं अधिक कहानियों का लेखन और प्रकाशन हुआ है। कहानी पर बेवजह पाठकीयता के संकट का आरोप लगाने वालों को अपनी सोच बदलनी चाहिए। पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की जितनी भी गतिविधियाँ हो सकती हैं, कहानीकारों ने उन सब पर लेखनी चलाई और महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी है। सबसे बड़े संतोष–सुख की बात तो यह है कि पुरुषों के साथ–साथ आधी आबादी भी क्षेत्र में अपनी पहुँच बना रही हैं। आज इस आबादी के 'आंचल में दूध और आँखों में पानी नहीं, बल्कि उसके हाथों में लेखनी है। वरिष्ठ कथा लेखिका से लेकर नवागंतुक कथा लेखिकाओं ने कहानी लेखन के क्षेत्र में अपनी

उपस्थिति दर्ज की है और पहचान बनाई है।

आलोच्य वर्ष की कहानियों की लंबी शृंखला को देखते हुए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि कहानियों में परिमाणात्मकता के साथ–साथ गुणात्मकता में भी विकास हुआ है। विज्ञान और कंप्यूटर के कमाल को आकांक्षा पारे (शिफ्ट, कंट्रोल आल्ट = डिलिट), (भयानक खेल) कल्पना कुलश्रेष्ठ ने रेखांकित किया, तो जीवन को प्रभावित करने वाले तत्वों का समावेश बहुसंख्यक कहानीकारों ने किया। दलित विमर्श (भोर का सूरजः रश्मिशील) से लेकर नारी विमर्श और नारी सशक्तिरण (एक–रात, एक पलः कृष्णा श्रीवास्तव, प्रतिकारः क्षमा चतुर्वेदी) की कहानियाँ लिखी गई। सेक्स इस वर्ष की नई पहचान बनी। लखनलाल पाल ने (उपसंहार) अगर चाची–भांजे के रिश्ते को दुहराया तो विभा रानी ने (गंगा मैया की निर्मल धार) ससुर पर तीन–तीन बहुओं को न्योछावर कर दिया और सोनी सिंह तो (क्लियोपेट्रा) हद पार पहुँच गई। देश की राजनीति में कुर्सीवाद और घोटाले को वरिष्ठ लेखकों क्रमशः भगवान अटलानी (द्रविण प्राणायाम) और अमरीक सिंह दीप (नामवर) ने उजागर किया, तो समाज के बुजुर्गों की चिंता कर गोविंद उपाध्याय ने (सदानंद जी सठिया गए हैं) नई पीढ़ी को सचेत किया है। भूमंडलीकरण, आतंकवाद और धर्म परिवर्तन देश की मौजूदा ताजा घटनाएँ हैं। इन परिदृश्यों को अपनी कहानियों द्वारा क्रमशः पंकज मित्र (जिद्दी रेडियो), अमित दुबे (दलदल) और अर्चना प्रकाश (प्रारब्ध) ने रेखांकित किया है।

ये कहानियाँ इस वर्ष की उपलब्धियाँ है। इन्हें श्रेष्ठ कहानियों की कोटि में रखा जाना चाहिए। 2014 की कहानियों को देखते हुए मैं अपनी पुरानी बात (हिंदी कहानी साहित्य–2012) दुहराना चाहूँगा – हिंदी कहानी का वर्तमान सफल और सार्थक तो है ही, इसका भविष्य भी उज्ज्वल है।



16

हिंदी गद्य की अन्य विधाएँ

डॉ. कुलभूषण शर्मा

साहित्य समाज का दर्पण है तथा समाज विविधता का पर्याय है। समाज के समान साहित्य में भी विविधता देखी जा सकती है। यह विविधता भाव एवं कला दोनों दृष्टि से है। कला की विविधता के कारण साहित्य के दो रूप मिले–पद्य एवं गद्य। गद्य साहित्य का मूल तत्व माना गया है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल, सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित संप्रेषित करना है। गद्य की भाषा व्यावहारिक है तथा इसका संप्रेषण प्रभावोत्पादक है। गद्य के अंतर्गत अनेक विधाएँ समाहित हैं। एक ओर कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, नाटक तथा एकांकी जैसी मुख्य विधाएँ हैं। तो दूसरी ओर अन्य विधाओं के अंतर्गत आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, यात्रा–वृत्तांत, रेखाचित्र, साक्षात्कार, डायरी, पत्र–साहित्य आदि आते हैं। इस लेख के अंतर्गत वर्ष 2014 में प्रकाशित इन अन्य गद्य विधाओं का विश्लेषण किया गया है। इन विधाओं पर पुस्तकें कम प्रकाशित हुई हैं पर विविध पत्रिकाओं में अधिक प्रकाशन हुआ है। अतः इस लेख का मुख्य स्रोत पत्र–पत्रिकाएँ ही हैं।

आत्मकथा यह एक प्रमुख गद्य विधा है जिसमें स्वयं अपने जीवन की कथा को पाठकों के समक्ष आत्मीयता के साथ रखते हैं। इस विधा में लेखक अपने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा दशाओं में अपने मानसिक तथा भावात्मक विकास की कहानी कहता है। प्रस्तुत वर्ष में आत्मकथा से संबंधित अनेक कृतियाँ प्रकाश में आई। वस्तुतः आत्मकथा का केंद्रीय तत्व स्वयं

लेखक होता है। डॉ. नरेंद्र मोहन का मानना है कि आत्मकथा 'आत्म' की कथा है जिसमें आत्म तो रहेगा लेकिन '*कथा* तत्व जुड़ते ही उसमें समकालीन परिवेश, युग और पूरी दुनिया समा जाती है। यही कारण है कि वे इस वर्ष उनकी प्रकाशित आत्मकथा *कमबख्त निंदर* में वे अपनी कथा के साथ–साथ दो आपातकालों के बीच की पूरी कथा कहते हैं। यह आत्मकथा भारत–विभाजन और इमरजेंसी के बीच खंडित व्यक्तित्व, वेदना, टीस और छटपटाहट की कथा है। वहीं दूसरी ओर खुशवंत सिंह द्वारा रचित *मेरी दुनिया मेरे दोस्त* आत्मकथा में सिंह जी का बहुआयामी व्यक्तित्व अभिव्यक्ति पाता है तथा राजश मोहश्वरी की आत्मकथा *पथ* में लेखक की समाज के प्रति संवेदनशीलता दृष्टिगत होती है। इस वर्ष की एक अन्य आत्मकथा है *मणिकर्णिका*। डॉ. तुलसीराम की इस आत्मकथा को *तदभव* पत्रिका में भी धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया गया है। इस आत्मकथा में तुलसीदास जी ने बनारस से लेकर पश्चिम बंगाल तक की अपनी यात्रा का विश्लेषण किया है। इस आत्मकथा में दलित जीवन के साथ–साथ बनारस का अकादमिक माहौल भी सजीव हो उठा हैं।

इस वर्ष पुस्तकों के साथ–साथ विविध पत्र–पत्रिकाओं में भी कई आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई हैं। तद्‌भव पत्रिका के अलावा संचेतना दूसरी ऐसी पत्रिका है जिसमें आत्मकथाएँ प्रकाशित की गई हैं। इस पत्रिका के मार्च–मई के अंक में डॉ.शैलेश जैदी की आत्मकथा *जो कहा नहीं गया* प्रकाशित की गई है। अकेलेपन को चीरती यह आत्मकथा नारी जीवन के संघर्ष और अस्तित्व पर प्रकाश डालती है। वही दूसरी ओर सुनीता जैन की आत्मकथा *शब्दकाया* एक संवेदनशील आत्मकथा है जो जीवन की बदलती मनोवृत्ति को अभिव्यक्ति देती है। इसके अतिरिक्त इसी अंक में कृष्णा अग्निहोत्री, प्रभा खेतान तथा मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं को भी प्रकाशित किया गया है। कुछ–कुछ अंशों सहित प्रकाशित इन आत्मकथाओं में नारी–अस्तित्व पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। यही नहीं, *आजकल* पत्रिका में कुर्रतुलऐन हैदर की आत्मकथा का 'मैं क्या और कैसे लिखती हूँ' शीर्षक से

अनूदित रूप प्रकाशित हुआ है। इसकी अनुवाद बड़ी सहज–सरल भाषा में सुरजीत ने किया है। यह कृति भी नारी स्वांतत्र्य को अभिव्यक्ति देते हुए नारी अस्मिता के लिए प्रयासरत रूप में देखी जा सकती है। इस प्रकार इन आत्मकथाओं द्वारा लेखक/लेखिका जीवन ही प्रस्तुत नहीं होता वरन् समाज के प्रति चिंता भाव भी अभिव्यक्ति पाता है। आत्मकथा आत्म से समाज की ओर उन्मुख होने वाली एक विशिष्ट विधा है जिसका लेखक मन की भावनाओं को सामाजिकता का चोला ओढ़ाते हुए व्यक्त करता चलता है।

जीवनी साहित्य की महत्त्वपूर्ण गद्य विधा है जिसमें किसी महापुरुष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उसके कार्यकलापों तथा अन्य गुणों का आत्मीयता, औपचारिकता तथा गंभीरता से व्यवस्थित रूप में वर्णन–विश्लेषण किया जाता है। इसमें व्यक्ति–विशेष के जीवन की छोटी–से–छोटी तथा बड़ी–से–बड़ी बात का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक उसके अंतरंग जीवन से परिचित ही नहीं होता वरन् तादात्म्य स्थापित कर लेता है। वर्ष 2014 इस दृष्टि से काफी समृद्ध रहा है। इस वर्ष गोविंद मिश्र के जीवन को प्रस्तुत करती रचना *बयाबां से बहार* प्रकाशित हुई। उर्मिला शिरीष ने बड़े सहज ढंग से गोविंद मित्र के जीवन–संघर्ष को वाणी देते हुए उनके जीवन के कई भावपूर्ण प्रसंगों को अभिव्यक्ति दी है। वहीं दूसरी ओर स्वामी विवेकानंद के आदर्श–जीवन को प्रस्तुत करती विशिष्ट जीवनी है– *संसार कायरों के लिए नहीं*। इसके लेखक रमेश पोखरियाल हैं तथा यह राजकमल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई। यह रचना स्वामी जी के उदात्त जीवन पर तो प्रकाश डालती ही है साथ ही उनके आदर्श विचारों को भी रेखांकित करती है। यह जीवनी स्वामी जी के विचारों को भी रेखांकित करती हैं। यह जीवनी स्वामी जी के विचारों की प्रासंगिकता को भी प्रस्तुत करती है।

समकालीन पत्रिकाओं में जीवनी व्यापक रूप में प्रकाशित हुई है। *आजकल* एक ऐसी विशिष्ट पत्रिका है जो '*श्रद्धांजलि* शीर्षक के अंतर्गत विविध व्यक्तित्वों की जीवनी प्रकाशित करता है। इस पत्रिका के अप्रैल के

अंक में सुप्रसिद्ध साहित्यकार अमरकांत के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती जीवनी प्रकाशित हुईं– महेश दर्पण द्वारा *जीवन को समझने में मददगार: अमरकांत* तथा ममता कालिया द्वारा रचित *कितने अच्छे थे अमरकांत*। इसी पत्रिका के मार्च के अंक में सुप्रसिद्ध साहित्यकार नामदेव ढसाल के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए *नामदेव ढसाल* शीर्षक से तथा विमल थोरात ने *महाविद्रोही पेंथर नामदेव ढसाल* शीर्षक से उन पर जीवनी लिखी। इसी अंक में बहुचर्चित रंगकर्मी, अभिनेत्री पद्मश्री सुचित्रा सेन पर जीवनी *बची रहेगी मोहिनी छवि की मर्मभरी स्मृतियाँ* नाम से प्रयाग शुक्ल ने लिखी। वहीं दूसरी ओर सुरेश सलिल ने *प्रगतिशील आंदोलन की नींव का पत्थर* शीर्षक से रशीद जहाँ को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उनकी जीवनी लिखी। वस्तुतः श्रद्धांजलि शीर्षक द्वारा इस पत्रिका में विशिष्ट व्यक्तित्वों का स्मरण ही नहीं किया जाता बल्कि संक्षिप्त रूप में उनका जीवन वृत्त तथा विचारों को प्रस्तुत कर ज्ञान का संवर्धन भी किया जाता है। इसी श्रृंखला में जुलाई–अगस्त के अंक में स्मृति शेष शीर्षक के अंतर्गत *केरलीय संस्कृति के ध्वजवाहक: विश्वनाथ अय्यर* नाम से जीवनी प्रकाशित की गई। आरसु द्वारा रचित इस जीवनी में अय्यर जी के व्यक्तित्व को उतारने के साथ–साथ उनके विराट व्यक्तित्व को भी देखा जा सकता हैं। वहीं सितंबर के अंक में सुप्रसिद्ध नृत्यांगना, रंगकर्मी तथा फिल्म अभिनेत्री जोहरा सहगल के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए *एक सदी का सुहाना सफर* शीर्षक द्वारा उनके विचारों और जीवन की विविध घटनाओं को प्रदीप सरदाना ने बड़ी सूक्ष्मता से वर्णित किया है। इसी पत्रिका में मिथिला पेंटिग को खूबसूरत स्वरूप प्रदान करने वाली पद्मश्री महासुंदरी देवी के प्रति श्रद्धा सुमन के तौर पर उनके जीवन की विविध झाँकियाँ *मधुबनी चित्रकला की प्रकाश पुंज* शीर्षक द्वारा चंद्र मोहन मित्र ने प्रस्तुत की। *मौलाना आजाद पत्रकार के रूप में* शीर्षक जीवनी द्वारा रहमान मुसव्विर ने उनके सामाजिक योगदान को रेखांकित करती जीवनी लिखी। इसके अतिरिक्त सुप्रसिद्ध कथाकार खुशवंत सिंह पर जीवनीपरक लेख दो लेखकों ने लिखे। अवधेश कुमार सिंह कृत

बंदूक का बेटा: खुशवंत सिंह तथा *कानन झींगा* कृत लेखक, पत्रकार और व्यंग्यकार जवाहरलाल नेहरू पर एक जीवनी गोपाल गुप्ता ने *नेहरू: एक मार्गद्रष्टा* के नाम से प्रकाशित की जबकि दिलकश अदाकारा नंदा पर केंद्रित जीवनी *दिलकश चेहरे के पीछे दर्द का सागर* नाम से प्रकाशित हुई। वहीं दिसंबर के अंक मे महाकवि भारती की जीवनी को प्रस्तुत करती कृति *एकता और सांस्कृतिकता के प्रतिनिधि कवि* सत्येंद्र शरत द्वारा रचित है।

समकालीन भारतीय साहित्य के मई–जून के अंक में अली सरदार जाफरी की जीवनी प्रकाशित की गई। इन पर तीन लेखकों ने जीवनी लिखी। पहली कमर रईस द्वारा *अवध की मिट्टी का बेटा* नाम से प्रकाशित हुई जिसमें उनके संघर्षपूर्ण एवं घटनामय जीवन का बड़ा जीवंत वर्णन किया गया है। दूसरा खुर्शीद आलम ने *बात से बात चले* नामक अंश द्वारा विविधता का दर्शन कराते हुए बातों–बातों द्वारा अली सरदार जाफरी के जीवन की विविध घटनाओं का दर्शन कराया। तीसरे लेखक *सादिक* है जिसने *सरदार कहाँ है महफिल में* जीवनी द्वारा अली सरदार की शायरी की वर्तमान समाज में कमी को वर्णित किया है। इन तीनों जीवनियों द्वारा अली सरदार जाफरी के न केवल जीवन–वृत्त को अभिव्यक्ति दी गई है वरन् उनके आकर्षक व्यक्तित्व पर भी व्यापक चर्चा की गई है।

संस्मरण

संस्मरण जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित एक प्रमुख गद्य विधा है। संस्मरण का अर्थ है *'सम्यक् स्मरण'* अर्थात् संस्मरण में लेखक स्वयं अनुभव की हुई किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना का आत्मीयता और कलात्मकता के साथ विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें लेखक अपनी अपेक्षा उस व्यक्ति को अधिक महत्व देता है जिसका वह संस्मरण लिखता है। इसमें किसी विशिष्ट व्यक्ति का स्वरूप, आकार–प्रकार, रूपरंग, स्वभाव, भाव–भंगिमा, व्यवहार, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध आदि सभी बातों का विश्वसनीय रूप में आत्मीयता के साथ वर्णन होता है। इस वर्ष तीन संस्मरणात्मक पुस्तकें विशेष उल्लेखनीय रही हैं। पहली पुस्तक है राधाकृष्ण

प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित राजेंद्र यादव कृत *औरों के बहानें*। इस पुस्तक में यादव जी ने अपने अनेक परिचितों का स्मरण करते हुए उनके साथ बिताए समय का न केवल विश्लेषण किया है वरन उनके बहाने अपने संघर्ष को भी अभिव्यक्ति दी है। वहीं दूसरी ओर *सुधियाँ कुछ अपनी, कुछ अपनों की* में बड़ी सहजता से नागर जी ने अपने अतीत को जीवंत रूप देते हुए अपने संबंधियों को याद किया है तथा अनेक साहित्यकारों के साथ बिताए समय को मानो पुनः जीया है। यह पुस्तक लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त *मैं पाकिस्तान में भारत का जासूस था* शीर्षक पुस्तक मोहनलाल भास्कर के विचारों के द्वंद्व को वाणी देती है। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक कई राजनैतिक सत्यों का उद्घाटन करती है तो दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को भी व्यक्त करती चलती है।

जहाँ तक पत्रिकाओं का संबंध है, संस्मरण की अधिकता हिंदी पत्रिकाओं को आत्मीय रूप प्रदान करती है। आजकल पत्रिका के जून के अंक में केवल गोस्वामी द्वारा रचित *एक लोक कलाकार* लेखक के बलराज साहनी से संबद्ध अनुभवों को संजोए एक उत्कृष्ट संस्मरण प्रकाशित हुआ है। वहीं फरवरी के अंक मे 1974–75 में राजेंद्र यादव से मुलाकात के दौरान 'आजकल' पत्रिका से जुड़े पंकज बिष्ट का संस्मरण– *राजेंद्र के बहाने आजकल के दिन* शीर्षक से प्रकाशित हुआ। जबकि इसी पत्रिका के अगस्त के अंक में सत्येंद्र शरत द्वारा सचित् *एक स्मरणीय अनुभव* प्रकाशित हुआ जिसमें कहानी शैली में मनमोहक संस्मरण लिखा गया है। इसके अतिरिक्त सितंबर के अंक में बाबा कामिल बुल्के से संबंधित संस्मरण छापा गया तो दिसंबर के अंक में ख्वाजा अहमद अब्बास से संबंधित कृष्ण चंदर का संस्मरण– *जीवन के अंतिम दिन* छपा। इन संस्मरणों में लेखक और विशिष्ट व्यक्तित्वों के आपसी संबंधों और उनके विचारों को बखूबी वाणी दी गई है।

बहुवचन पत्रिका के भी विविध अंकों में संस्मरणों की भरमार देखी जा सकती है। इस पत्रिका के जनवरी के अंक में मीरा कुटीर, शैलेश मटियानी

41 HRD/16—18B

पुस्तकालय तथा रामगढ़ से संबंधित राजेंद्र राजन का संस्मरण प्रकाशित हुआ। तो अप्रैल के अंक में सुधीर विद्यार्थी कृत *रुस्वा की यादों में तवारीख का एक पन्ना* तथा गोपालराम गहमरी का संस्मरण *भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र का भाषण* प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त जुलाई के अंक मे *गरमाहट भरे दोस्ती के हाथ* शीर्षक से महावीर अग्रवाल का संस्मरण प्रकाशित हुआ तथा अक्टूबर के अंक में प्रकाश मनु की सहज शैली में *भाऊ समर्थ: एक जिद्दी चित्रकार* संस्मरण छपे। इन संस्मरणों में विचारों का द्वंद्व विशेष रूप से चित्रित हुआ हैं।

समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका में भी समय–समय पर कई संस्मरण प्रकाशित होते रहे हैं। इस पत्रिका के जनवरी–फरवरी 2014 में अभिमन्यु अनत का संस्मरण दो भागों में प्रकाशित हुआ– *प्रधानमंत्री का वह उत्तर* तथा *अज्ञेय जी का वह प्रश्न*। वही दूसरी ओर मई–जून के अंक में *निर्मला जैन* कृत *तब और अब–देखते ही देखते* जिसमें निर्मला जी बदलते समाज और व्यवस्था पर निशाना साधते हुए समाज का चित्र उतारती हैं। इसके अतिरिक्त हिंदी की उत्कृष्ट पत्रिका तद्भव में भानु भारती और अरुण कमल के संस्मरणों को प्रकाशित किया गया है।

हिंदी साहित्य को जन–जीवन से संबद्ध करती पत्रिका *हंस* में भी कई संस्मरण देखे जा सकते हैं। इस पत्रिका के जुलाई के अंक में मोहम्मद असदुल्ला का संस्मरण *जाफ़रान के खुशबू जैसी जाफ़री* पाठकों में विशिष्ट चर्चा का विषय रहा। वहीं जुलाई से लेकर अक्तूबर तक स्लीमैन के संस्मरणों की एक शृंखला प्रकाशित की गई।

इन अंकों में स्लीमैन के संस्मरणों का हिंदी में अनूदित रूप प्रकाशित हुआ जिसमें विलियम हेनरी स्लीमैन के भारत–दर्शन से संबद्ध संस्मरणों को प्रकाशित किया गया। इन संस्मरणों में कृष्ण–गोपी विलास की भूमि–मथुरा, वृंदावन तथा पुरानी दिल्ली से संबद्ध संस्मरण तथा फादर ग्रेगरी एवं फ्रेजर की हत्या से संबंधित संस्मरण विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। इस प्रकार विविध पत्र–पत्रिकाओं सहित पुस्तक आकार में प्रकाशित संस्मरण साहित्य हिंदी–भाषा एवं संस्कृति के विकास रूप में दृष्टिगत होता है।

यात्रा–वृत्तांतः यात्रा–वृत्तांत एक रोचक तथा मनोरंजन प्रधान विधा है। इस विधा में लेखक किन्हीं विशेष स्थलों की यात्रा का वर्णन सरस तथा आकर्षक शैली में इस प्रकार करता है कि जो पाठक उन स्थलों की यात्रा करने में समर्थ न हों वे उनका मानसिक आनंद उठा सके तथा घर बैठे ही ऐसे स्थलों की प्राकृतिक छटा, वहाँ के आचार–विचार, खान–पान, रहन–सहन आदि से परिचित हो सकें। यह विधा आत्मिक आनंद एवं ज्ञानवर्धन दोनों का ही समन्वित रूप होती है। आलोच्य वर्ष में यात्रा–संस्मरण पर चार पुस्तकें दृष्टिगत होती हैं। पहली पुस्तक किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित मधु कांकरिया की *बादलों में बारूद* है जिसमें प्राकृतिक वर्णन के साथ–साथ मानव–जीवन पर पड़ते प्रकृति के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। वहीं दूसरी ओर अजय सोडानी द्वारा रचित *दर्रा–दर्रा हिमालय* में प्रकृति के साथ–साथ हिमालय तथा आस–पास के व्यक्तियों के रहन–सहन, खान–पान तथा जीवन शैली को बड़ी सुंदरता से चित्रित किया गया है। राकेश तिवारी के यात्रा–वृत्तांत *सफर एक डोंगी में डगमग* में ग्रामीण महक के साथ–साथ आम जीवन की सहजता भी रेखांकित होती है। जबकि इसी वर्ष में रामशंकर द्विवेदी द्वारा अनूदित सुनील गंगोपाध्याय की *चित्रकला कविता के देश* भी प्राप्त होती है। इस अनूदित कृति में दक्षिण–भारत के रहन–सहन तथा सहज जीवन को वर्णित किया गया है।

अन्य विधाओं के समान यात्रा–वृत्तांत अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए है। अनभै सांचा के अंक 34–35 में सरिता खुराना द्वारा रचित *सिक्किम की यात्रा* प्रकाशित हुआ है जिसमें सिक्किम से जुड़े सरिता के संस्मरण बड़ी बेबाक शैली में तथा अपनेपन के साथ वर्णित हुए हैं। वहीं दूसरी ओर आजकल पत्रिका में अगस्त के अंक में दो यात्रा–वृत्तांत प्रकाशित हुए। इनमें से पहला जगदीश सिंह मन्हास का है जो सैल्यूलर जेल से जुड़ी यादों तथा वहाँ की ऐतिहासिक–राजनैतिक पहलुओं पर चर्चा करते हुए स्वतंत्रता सेनानियों के समर्पण को श्रद्धांजलि अपने यात्रा–संस्मरण *स्वाधीनता सेनानियों का तीर्थस्थलः सेल्यूलर जेल* द्वारा अर्पित करते हैं। तो दूसरी ओर श्री नाथ

सहाय कृत *बलिवेदी पर बलिदानी बलिना* द्वारा बिहार के बलिया प्रांत की राजनैतिक–सामाजिक–सांस्कृतिक तस्वीर प्रस्तुत की गई है। ये दोनों कृतियाँ भिन्न होते हुए भी समाज का दर्पण बनती हैं।

बहुवचन पत्रिका के जनवरी–मार्च के अंक में हरिसुमन बिष्ट द्वारा रचित *संस्कृति का जजीरा ताशकंद* प्राप्त होता है जिसमें संस्कृति को विशेष महत्व दिया गया है। वहीं अप्रैल–जून के अंक में तुर्की जीवन–शैली को वर्णित करती कृति दीपक मलिक कृत *तुरूक से तुर्की तक* दृष्टिगत होती हैं। इसी पत्रिका के जुलाई–सितंबर के अंक में अमृतसर से प्रकट बाघा सीमा तक की प्राकृतिक–सामाजिक –राजनैतिक अवस्थाओं को करता यात्रा–वृत्तांत रूप सिंह चंदेल कृत *वाह अंबरसर। वाह–वाह वाघा* देखा जा सकता है। वहीं दूसरी ओर जनचेतना की प्रगतिशील मासिक पत्रिका *हंस* के जुलाई के अंक में नमक बनाने की प्रक्रिया से लेकर समाज को जोड़ने की कृति प्रकाशित हुई–नीलम कुलश्रेष्ठ कृत *नमक के बियाबान में*। इस प्रकार देखा जा सकता है कि इस वर्ष यात्रा–वृत्तांत के माध्यम.से साहित्यकारों ने केवल यात्रा का विश्लेषण भर नहीं किया वरन् सामजिक–सांस्कृतिक–राजनैतिक–भाषिक अन्वेषण कर समाज हित में अपना योगदान किया।

साक्षात्कार/ इंटरव्यू

साक्षात्कार एक विशिष्ट गद्य विधा है जिसमें किसी विशिष्ट व्यक्ति से बातचीत करते हुए उसके अनुभवों एवं ज्ञान का प्रसार किया जाता है। यह विधा किसी विषय–विशेष को केवल प्रस्तुत ही नहीं करती वरन् किसी विषय को वर्णित करने वाले विचारक या चिंतक की मनःस्थिति का विश्लेषण भी करती है। इस विधा का अधिकांशतः पत्रिकाओं में ही प्रकाशन किया गया है लेकिन इस विधा से संबंधित इस वर्ष की एक विशिष्ट कृति है– *गपोड़ी से गपशप*। इस पुस्तक के '*काशीनाथ सिंह से संवाद* अंश के अंतर्गत अलग–अलग लेखकों और पत्रकारों द्वारा लिए गए साक्षात्कारों का संकलन किया गया है। इन साक्षात्कारों में काशीनाथ जी कहीं विचारोत्तेजक मुद्रा

धारण करते हैं तो कहीं बड़ी बेबाकी से सधा हुआ जवाब देते चलते हैं। 1960 के बाद के वातावरण विशेषकर गाँव से शहर में आए साहित्यकारों की वाणी को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। इन साक्षात्कारों द्वारा 1960 से 1980 के मध्य बदलते स्वरों तथा सामाजिक व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही यह भी पता चलता है कि काशीनाथ सिंह संस्मरण, बतकही, उपाख्यान, गपशप, किस्सागोई आदि के तिलिस्म किस प्रकार अपनी विविध कहानियों में गढ़ा करते थे।

साक्षात्कार कई रूपों पत्रिकाओं में ही प्रायः प्रकाशित हुआ है। हिंदी की विविध पत्रिकाओं में कवि, लेखक, कथक सम्राट, नृत्यांगना, इतिहासकार आलोचक, फिल्मी कलाकार आदि से संबंधित अनेक साक्षात्कार देखे जा सकते हैं। पत्रिकाओं में साहित्कारों के साक्षात्कार सबसे अधिक प्रकाशित हुए हैं जिनमें से कुछ कवि हैं, कुछ कथाकार हैं तो कुछ आलोचक हैं। कवियों में ग्रामीण महक को प्रस्तुत करने वाले मोहन राणा से विद्याभूषण की बातचीत आजकल पत्रिका के मई के अंक में प्रकाशित हुई जबकि वरिष्ठ साहित्यकार, कवि एवं चिंतक हरदर्शन सहगल से संगीता सेठी की बातचीत इसी पत्रिका के मई के अंक में प्रकाशित हुई। कथाकारों के साक्षात्कार में समकालीन समाज के प्रति चिंता दृष्टिगत हुई। कहानीकार अमरकांत कुलभूषण मौर्य को साक्षात्कार देते हुए अनभै सांचा पत्रिका के 34–35 अंक में अपनी सृजन–प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हैं तो दूसरी ओर इसी पत्रिका में *कथाकार स्वयं प्रकाश रेखा सिंह* से बात करते हुए साहित्य के सामाजिक सरोकारों पर चर्चा करते हैं। आजकल पत्रिका के जुलाई अंक में काशीनाथ सिंह विजेत्री विक्रमसिंह को बताते हैं कि लेखक को समाजशास्त्री नहीं कहा जा सकता जबकि इसी पत्रिका के मार्च के अंक में चित्रा मुद्‌गल इम्तियाज अहमद आजाद को बताती हैं कि महिलाओं में भी समाज के प्रति एक विशिष्ट दृष्टि है। इसके अतिरिक्त समकालीन भारतीय साहित्य के मई–जून के अंक में राही मासूम रजा सरदार जाफ़री से बातचीत करते हुए कहानी–कला की संवेदनशीलता को रेखांकित करते हैं। इनके साथ–साथ अनेक

आलोचक–चिंतकों के साक्षात्कार भी विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इन साक्षात्कारों के द्वारा बदलती सामाजिक व्यवस्था तथा साहित्यकार का समाज के प्रति दायित्व–बोध का विश्लेषण किया है। इन आलोचकों–चिंतकों में चंद्रबली सिंह, हरदर्शन सहगल, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर , गोविंद मिश्र, मुरली मनोहर प्रसाद, प्रों. तुलसीदास आदि का नाम लिया जा सकता है। कथादेश, आजकल, अनभै सांचा, हंस, संचेतना, समकालीन भारतीय साहित्य आदि विविध पत्रिकाओं के विविध अंकों में इन चिंतकों के विचारों को अभिव्यक्ति दी गई है।

पत्रिकाओं में केवल साहित्यकार के साक्षात्कार ही प्रकाशित नहीं हुए हैं। पत्रकारों, लोक–गायकों, कथक सम्राटों आदि को भी स्थान दिया गया हैं। यथा–वरिष्ठ पत्रकार कैलाश वाजपेयी का साक्षात्कार आजकल पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। लोकगीतों की नृत्यांगना मालिनी अवस्थी के इंटरव्यू को भी आजकल पत्रिका में प्रकाशित किया गया है तथा इसी पत्रिका में फरवरी के अंक में कथक सम्राट पं. रामलाल से चित्रा शर्मा की बातचीत प्रकाशित की गई है। इस प्रकार पत्रिकाओं में साक्षात्कारों की एक बृहद् सूची देखी जा सकती है।

डायरी –लेखन डायरी एक आधुनिक गद्य विधा है। इस विधा द्वारा लेखक नित्य प्रति के अनुभवों को एकत्रित कर समय की माँग के अनुरूप उनका आयोजन–अभिव्यक्ति करता है। यह एक व्यक्तिगत लेखन है लेकिन इसका सामाजिक सरोकार भी समय–समय पर सिद्ध होता हैं। इस वर्ष दो डायरी प्रकाशित हुई हैं। पहली जाबिर हुसैन द्वारा रचित डायरी *ये शहर लगे मोहे वन कथा* है जो राजकमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुई है। वहीं दूसरी ओर किताबघर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित दूसरी डायरी है– रमेश चंद्र शाह द्वारा रचित *जंगल जूही*। एक में शहरी जीवन की व्यवस्तता को तो दूसरे में ग्रामीण सहजता को रेखांकित किया गया है। समय–समय पर पत्रिकाओं में भी डायरी प्रकाशित हुई हैं। हंस पत्रिका के नवंबर अंक में राजेंद्र यादव के अनुभवों को रेखांकित करती डायरी *पहली बार समुंदर*

प्रकाशित हुई। जबकि अनभै सांचा में महावीर अग्रवाल के मानसिक चिंतन को उद्घाटित करती डायरी *चढ़िए हाथी ज्ञान का* को स्थान दिया गया। इसके अतिरिक्त संचेतना पत्रिका में मजीद अहमद की डायरी *बेतरतीब कुछ पंक्तियाँ* प्रकाशित हुई। इन सभी डायरियों में व्यक्तिगत भाव सामाजिकता को लिए हुए हैं तथा वर्तमान समाज के प्रति चिंता भी प्रकट हो रही है।

पत्र–साहित्य_सामान्यतः पत्र एक विचार को दूसरे तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। वैसे तो साहित्यकारों द्वारा लिखे गए पत्र उनकी व्यक्तिगत संपत्ति है किंतु ये भी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इन पत्रों को आधार बनाकर साहित्य का इतिहास भी लिखा जा सकता है। इस संदर्भ में कोई पुस्तक तो प्रकाश में नहीं आई है किंतु *बहुवचन* पत्रिका के विविध अंकों में इस वर्ष कुछ पत्र प्रकाशित हुए हैं। इस पत्रिका के जनवरी–मार्च के अंक मे सदानंद शाही के नाम राजेंद्र यादव के पत्रों का संकलन किया गया है जिसमें यादव जी नए लेखकों से जुड़े विवादों पर चर्चा करते हैं। वहीं दूसरी ओर जुलाई–सितंबर के अंक में शकील सिद्दीकी द्वारा जेल में लिखे फ़ैज के पत्रों का तो दूसरी ओर महेश दर्पण द्वारा प्रेमचंद के पत्रों का संकलन है। इन पत्रों में फ़ैज का समर्पण तो दूसरी ओर प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि अभिव्यक्त हुई है।

अंततः कहा जा सकता है कि यह वर्ष गद्य की अन्य विधाओं की दृष्टि से काफी सृजनात्मक रहा है जिसमें लेखक–साहित्यकार आत्म से सर्वात्म तक तथा जीवन के विविध पहलुओं को छूता हुआ पाठक–जगत का इन तत्वों के साथ तादात्म्य स्थापित करने में अत्यधिक सफल रहा है।



17

हिंदी पत्रकारिता एवं नई प्रौद्योगिकी साहित्य

डॉ० सी. जय शंकर बाबु

हमने परतंत्र भारत में स्वतंत्रता की संकल्पना की थी, परतंत्रता की जंजीरों से राष्ट्र की मुक्ति का रास्ता सुनिश्चित करने के क्रम में पत्रकारिता का उदय हुआ था, एक ऊर्जस्वी चेतना को लेकर--

"खींचो न कमान न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो, अ़खबार निकालो।"

पराधीनता के युग में स्वाधीनता की आकांक्षा जगाकर, उसे पाने के लिए आवश्यक चेतना, ऊर्जा के साथ देश की समूची जनता में एकत्व की भावना फैलाने में पत्रकारिता ने जो भूमिका निभाई थी, वह अविस्मरणीय है। जन सेवा के आदर्श के साथ प्रेस की मिशन भावना, "लोका समस्ता सुखिनो भवंतु" के आदर्श को चरितार्थ कर देनेवाली थी ।

भारत में अंग्रेजों के गुलामी शासन के विरुद्ध शंख--नाद के रूप में ही समाचारपत्रों का उद्भव हुआ था। ईस्ट इंडिया कंपनी की दमननीति के विरुद्ध आवाज बनकर स्वाधीनता की प्रबल उमंग ने पत्रकारिता की नींव डाली थी। जेम्स अगस्टस हिकी के सकारात्मक चिंतन के परिणामस्वरूप लगभग ढाई सदियों पूर्व अंग्रेजी में जिस पत्रकारिता का उद्भव हुआ था और तत्पश्चात् लगभग चार दशकों के भीतर बंगला में 'समाचार दर्पण' एवं हिंदी में 'उदंत मार्तंड' से भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता का उदय का कारक भी बना, वही आज कई रूपों में विकसित होकर '*भारतीय पत्रकारिता* एवं '*भारतीय मीडिया* के नाम से अभिहित है ।

लोकतंत्र के तीन खंभों के रूप में विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका हैं जबकि जन चेतना के अजस्र स्रोत.एवं आधारभूत व्यवस्था के रूप में पत्रकारिता एक शक्तिशाली व्यवस्था है जिसकी कई बुद्धिजीवियों ने लोकतंत्र के "*चौथे स्तंभ*" के रूप में प्रतिष्ठा बढ़ाई है। जनतंत्र में जनता में चेतना तथा जन–प्रतिनिधियों में दायित्वबोध जगाने के माध्यम के रूप में पत्रकारिता की भूमिका निश्चय ही महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता का विकास आज के जमाने में 'मीडिया' के रूप में हो गया है। पत्रकारिता को "*शीघ्रता में लिखा गया साहित्य*" भी कहा जाता है। साहित्य हो या मीडिया – इन दोनों का उद्भव ही मनुष्य के हित में हुआ है। दोनों ही मनुष्य की सर्जनशीलता के सुखद परिणाम हैं और इनका लक्ष्य एवं परम उद्देश्य समाज का हित ही है। साहित्य के अभाव में संस्कृति अधूरी है, संस्कृति के अभाव में साहित्य निर्जीव है। मीडिया भी साहित्य की भाँति मनुष्य के लिए उदात्त व जरूरी कला एवं अनूठी व्यवस्था है जो संस्कृति के संपोषण में तथा आधुनिक समाज में साहित्य के विकास में भी योग देती रही है। आरंभिक पत्रकारिता के मूल उद्देश्यों में ऊँचे आदर्श एवं लोकमंगल की भावनाएँ शामिल थीं। आगे चलकर पत्रकारिता ने एक मिशन का रूप धारण किया था। महात्मा गांधी ने तो पत्रकारिता को सेवा के रूप में माना है ।

आज मीडिया का कई रूपों में विकास हुआ है। तमाम विकसित रूपों के माध्यम से जन सेवा की जिम्मेदारी भी मीडिया के साथ है। मगर मीडिया के बदलते तेवर पर कई आलोचनाएँ सुनाई पड़ती हैं। ऐसे में लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका का हम विस्मरण नहीं कर सकते हैं। मीडिया को सही रूप देने के उद्देश्य से कई चिंतन विकसित हो रहे हैं जो समकालीन मीडिया विमर्श को आगे बढ़ा रहे हैं ।

वर्ष 2014 हिंदी मीडिया संबंधी पुस्तकों की दृष्टि से समृद्ध रहा। इस वर्ष हिंदी में पत्रकारिता, मीडिया, नई प्रौद्योगिकी से संबंधित लगभग एक सौ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इन पुस्तकों में मीडिया चिंतन, इतिहास, सैद्धांतिक और व्यावहारिक विश्लेषण, तकनीकी कुशलताएँ, आलोचना,

शिक्षण–प्रशिक्षण, पत्रकारिता–कोश, निर्देशिकाएँ, शोध, पत्रकारों के व्यक्तित्व–कृतित्व पर केंद्रित कृतियाँ आदि शामिल हैं। इस वर्ष की विशेषता यह भी है कि मीडिया विमर्श संबंधी केवल आलोचनात्मक पुस्तकों तक सीमित न रहकर विभिन्न विधाओं. में सृजनात्मक साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन भी हुआ है। इन सर्जनात्मक रचनाओं की चिंता और वस्तु भी मीडिया की विडंबनात्मक परिस्थितियाँ रही हैं। आकलन वर्ष के दौरान मीडिया संबंधी एक नई पत्रिका भी शुरू हुई है। पहले से प्रकाशरत मीडिया विषयक पत्रिकाओं के कुछ उल्लेखनीय विशेषांक भी प्रकाशित हुए हैं। नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकें हिंदी में इस वर्ष कम संख्या में प्रकाशित हुई हैं। हाँ, यह जरूर है कि मीडिया संबंधी कतिपय कृतियों में प्रौद्योगिकी संबधी चर्चा, मीडिया जगत पर प्रौद्योगिकी एवं उसके प्रभाव से विकसित नए तंत्र तथा नई व्यवस्थाओं की चर्चा भी हम देख सकते हैं ।

नई आर्थिक नीतियों तथा नई प्रौद्योगिकी का असर समूचे समाज पर व्यापक रूप से पड़ा। पत्रकारिता समाज के हितार्थ विकसित तंत्र होने की वजह से इन नीतियों तथा इस प्रौद्योगिकी के प्रभाव की चर्चा मीडिया के माध्यम से होना अपेक्षित है। अख़बार के पन्नों में इन तमाम स्थितियों, घटनाओं, प्रभावों की चर्चा, ख़बरें आदि समय–समय पर प्रकाशित हो रही हैं। मीडिया संबंधी पुस्तकों में भी यही स्थिति है। मगर यह जरूर कहा जा सकता है कि नई प्रौद्योगिकी संबंधी चर्चा विभिन्न वेबसाइटों, ब्लागों में जितनी मात्रा में हो रही है, प्रकाशन (मुद्रित रूप में) ख़ासकर हिंदी में उसके अनुपात में नहीं हो रहा है। तकनीकी विषयों पर हिंदी में शुरुआती लेखन कंप्यूटर की कुशलताएँ सीखने–सिखाने पर केंद्रित रहा। कई पुस्तकें विभिन्न प्रकाशकों द्वारा सामने आई हैं, मगर आगे जाकर जिस उच्च प्रौद्योगिकी की चर्चा तथा उसके प्रभाव जगत की समालोचना सैद्धांतिक–व्यावहारिक दृष्टि से होनी थी, वह बिल्कुल हिंदी में न के बराबर है, या बिल्कुल कम मात्रा में (मुख्यतः प्रकाशित पुस्तकों के संदर्भ में) ही हो पाई है। आशा है, भविष्य में हिंदी प्रकाशकों का ध्यान इस महत्वपूर्ण क्षेत्र की ओर भी जाएगा और इन

विषयों पर भविष्य में हिंदी में बड़ी मात्रा में पुस्तकों की मांग पर आश्वस्त होकर तकनीकी लेखन को प्रोत्साहन दिया जाएगा। आगे के अनुच्छेदों में पत्रकारिता, जनसंचार, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, नई मीडिया, नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकें जो सर्वेक्षण की अवधि में हिंदी प्रकाशित हुई हैं, उनकी विस्तृत चर्चा व समालोचना प्रस्तुत है ।

समकालीन मीडिया विमर्श

भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण आदि की प्रभावग्रस्त दुनिया में पुरानी अवधारणाएँ या तो बदल गई हैं या नई अवधारणाओं के रूप में विकसित व स्थापित हो रही हैं। पत्रकारिता किसी समय सेवा या मिशन की भावना से भरा कार्य हुआ करता था, जिसकी परिभाषा, शब्दावली आज लगभग बदल चुकी है। आज इस क्षेत्र को हम 'मीडिया' शब्द से पहचानते हैं। मीडिया के साथ आज मिशन की भावना लगभग गायब हो रही है। आज वह उपक्रमों, उद्योगों के रूप में विकसित हो रही है। बड़े पूंजीपति ही आज मीडिया के मालिक बन सकते हैं। पत्रकार, संपादक आज अपनी अहमियत खोते जा रहे हैं। उनकी भावनाओं, विचारों को मीडिया के क्षेत्र में आज कोई महत्व नहीं दिया जाता है। अथवा हम यूँ कह सकते हैं कि पत्रकार व संपादक को आज मालिकों (मीडिया में पूंजी लगानेवालों) के व्यापारिक उद्देश्यों, गलत नीतियों व बदतर लक्ष्यों का शिकार होना पड़ रहा है। समाचार लेखन, संपादन आदि पर भी ऐसे बुरे प्रभावों के आलोक में बुद्धिजीवी वर्ग मीडिया के रुख़, दिशा–दशा से क्षुब्ध नजर आता है।

आज मुद्रित माध्यम (प्रिंट मीडिया) का जितना विकास हुआ है, उसके विकास की गति से चौगुनी तेजी से इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का विकास व विस्तार हो रहा है। इंटरनेट मीडिया या नव मीडिया के विस्तार व विकास की तेजी इन सबसे बढ़कर है। संचार–सेल्युलर सेवाओं के विस्तार और स्मॉर्टफोन की नेट कनेक्टिविटी के साथ ही हर मुट्ठी तक नव मीडिया की पहुँच सुनिश्चित हो रही है। स्मार्ट फोन, इंटरनेट सुविधायुक्त मोबाइल फोन–धारकों की संख्या निरंतर बढ़ रही है ।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मीडिया कहीं अब एक बड़ा मायाजाल बनता जा रहा है और पत्रकारों को चाहे, अनचाहे चतुर जादूगर बन जाने की विवशता है। किसी भी झूठ को सच के बराबर परोसना, उसी सच के माध्यम से मीडिया को मुनाफा कमाने की मुहिम रचने में पूंजीपति तथा मीडिया घराने सफलता हासिल कर चुके हैं। पीत पत्रकारिता का आज एक नया रूप भी उभर आया है। कई कार्पोरेट घराने अपने काले धन को सफेद बनाने के सफल माध्यम के रूप में मीडिया पर दख़ल बना रहे हैं। इन्हें पत्रकारिता के मूल्यों से लेना देना नहीं है। समाचारपत्र और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से अधिकारी वर्ग, प्रतियोगी, छोटे–मोटे व्यापारियों पर कब्जा करते हुए बचने के लिए उन पर गलत स्टोरी रचने की नई पीत पत्रकारिता उभर आई है। मीडिया के इन तमाम विडंबनात्मक रूपों की आलोचना करने वाली कई कृतियाँ विगत वर्षों की भाँति आलोच्य अवधि में भी सामने आई हैं ।

सरासर नजर से 'मीडिया हूँ मैं' पुस्तक का शीर्षक आत्मकथात्मक लगता है। इस कृति की वस्तु भी उसी दृष्टि से संयोजित लगती है। आत्मकथात्मक शैली की इस पुस्तक की कुछ पंक्तियाँ यूँ नजर आती हैं– "*चौथा स्तंभ। मीडिया हूँ मैं। सदियों के आर–पार । संजय ने देखी थी महाभारत। सुना था धृतराष्ट्र ने। सुनना होगा उन्हें भी, जो कौरव हैं मेरे समय के। पांडु मेरा पक्ष है। प्रत्यक्षदर्शी हूँ मैं सूचना–समग्र का। जन मीडिया...। चौथा खंभा कहा जाता है मुझे आज। आखेटक हांफ रहे है। हँस रहे हैं मुझ पर। चौथा धंधा हो गया हूँ मैं।*" पत्रकारिता से मीडिया तक की यात्रा मिशन, सेवा आदि उद्देश्यों से भटककर व्यापार व उद्योग के रूप में विकसित होने की तथ्यात्मक कहानी इस कृति में कई शीर्षकों के अंतर्गत विवेचित है। वरिष्ठ पत्रकार जयप्रकाश त्रिपाठी ने पत्रकारिता क्षेत्र में लंबे अनुभव के आलोक में जनित विचारों को इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है। पत्रकारिता का श्वेतपत्र, मीडिया का इतिहास, मीडिया और न्यू मीडिया, मीडिया और अर्थशास्त्र, मीडिया और राज्य, मीडिया और समाज, मीडिया

और कानून, मीडिया और गाँव, मीडिया और स्त्री, मीडिया और साहित्य आदि शीर्षकों वाले अध्यायों में प्रस्तुत विश्लेषण न केवल लेखक जयप्रकाश त्रिपाठी की चिंता को जाहिर करता है, बल्कि मीडिया की वर्तमान स्थिति पर सबके मन में पैदा होनेवाले आंदोलित विचारों का प्रतिनिधित्व भी करता है। त्रिपाठी जी ने अपने इन विश्लेषणों के लिए कई अन्य नामी पत्रकारों की बातों का भी सहारा लिया है। मीडिया की बदलती तस्वीरों को पेश करने में एक सफल प्रयास के रूप में इस पुस्तक की प्रासंगिकता है। अमन प्रकाशन, कानपुर ने इस कृति का प्रकाशन किया है ।

उमेश चतुर्वेदी ने अपनी कृति 'बाजारवाद के दौर में मीडिया' में उदारीकृत आर्थिक नीतियों के तहत उपस्थित बाजारवाद की परिस्थितियों में मीडिया पर प्रभाव के समग्र विश्लेषण का प्रयास किया है। वाग्देवी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस कृति में संकलित लेखों में नई आर्थिकी, कार्पोरेट कल्चर और मीडिया, जरूरत आंतरिक व वैचारिक लोकतंत्र की, उदारीकरण तमाशा, कल्चर और हिंदी के खबरिया चैनल, अन्ना आंदोलन का सरोकारी तमाशा और मायूस मीडिया, हिंदी में खबरों का व्यापार, चुनाव के दौरान मीडिया मैनेजमेंट आदि शीर्षकों के लेखों के माध्यम से मीडिया की विसंगतियों पर प्रहार किया गया है। समकालीन मीडिया विमर्श की दृष्टि से यह कृति एक उल्लेखनीय प्रयास है ।

अशोक मिश्रा के संपादन में शिल्पायन द्वारा प्रकाशित कृति '*मीडिया अंतर्पक्ष*, रिपुमन यादव की पुस्तक '*भारतीय पत्रकारिता के नए क्षितिज*, प्रांजल धर की कृति '*मीडिया और हमारा समय*, केवल तिवारी की पुस्तक '*पत्रकारिता के बदलते प्रतिमान*, जनक आर. पललिया की पुस्तक '*वैश्वीकरण और पत्रकारिता* आदि ऐसी ही चिंताओं के साथ–साथ अन्य मुद्दों पर भी प्रकाश डालती हैं। इनमें अधिकांश पुस्तकें मीडिया विमर्श की श्रेणी में नहीं आती हैं, मगर किसी न किसी रूप में इन चिंताओं से संबंधित मुद्दों की भी बाते हैं इन पुस्तकों में।

कालगति में मीडिया की मति

जिस व्यवस्था (पत्रकारिता) का लोक सेवा ही मिशन था, कालांतर में उसका स्वरूप, प्रबंधन व्यवस्था, तकनीक एवं उससे संबद्ध प्रौद्योगिकी की उन्नति की वजह से '*मीडिया* का विराट रूप सामने आने लगा। '*पत्रकारिता* से 'मीडिया' तक की यात्रा में परंपरागत निष्ठा, सद्भावना, मिशन की भावना, सेवा की दृष्टि को गायब होते देखकर और उसके साथ व्यापारिक दृष्टि जुड़ने की आलोचना मीडिया चिंतकों के स्वर में बराबर सुनाई पड़ रही है। बाजारवादी दृष्टि, स्वार्थपूर्ण ताकतों का प्रभाव, राजनैतिक, कूटनीतिक चालों ने मीडिया को गिरगिट की भांति बदलते रंगों की भ्रष्ट व्यवस्था की संज्ञा तक मिलने की स्थिति भी पैदा की है। इसके अपवाद में कुछ ही मीडिया–घर बच पाए हैं ।

भूमंडलीकरण ने तमाम तंत्रों से संबद्ध सेवक–सेव्य भावनाओं, अवधारणाओं को बदल दिया है। इसका सीधा प्रभाव पत्रकारिता पर भी नजर आने लगा। '*सेवा–संगठन* से '*व्यावसायिक प्रतिष्ठान* का रूप धारण करते दौर में इसके साथ व्यापारिक दृष्टि जुड़ गई है, इसकी मात्रा इतनी बढ़ गई है कि पाठक, श्रोता या दर्शकगण अब 'उपभोक्ता' कहलाने लगे हैं। नई प्रबंधनात्मक नीति उपभोक्ता संतुष्टि का मंत्र जपती है, उसके अनुपालन के क्रम में जो मायाजाल व्याप्त है, मीडिया की इस नई विडबंनात्मक संस्कृति को महज कुछ मीडिया–आलोचकों ने ही चुनौती दी है, और एकाध पत्र–पत्रिकाओं ने ही इन मुददों पर बहस शुरू की है ।

निष्पक्ष समाचार प्रकाशन से जुड़ी पावन धाराएँ समाप्त होने के इस दौर में ईमानदारी एवं वस्तुनिष्ठा की नई अवधारणाएँ विकसित हो गई हैं। समाचार के बदले पैसे लेने की जो नई पत्रकारिता शुरू हो गई है, इसे '*पेड न्यूज संस्कृति* के नाम से कोसा जा रहा है। परंपरागत भ्रष्ट 'पीत पत्रकारिता' की जगह अब पैसे उगाहने की व्यापारिक व्यवस्था के रूप में '*नई पीत पत्रकारिता* ने ली है, उसके लिए पैसे ही परमात्मा है। कहा जाता है कि "*व्यापार एक द्रोह चिंतन है*", अतः जब मीडिया व्यापार की श्रेणी में शामिल होने पर तुली है तो कमाई के मानक तरीके भी विकसित हो गए हैं।

इस वर्ष के आरंभ में आई कृतियों में मीडिया विमर्श की दृष्टि से उक्त चर्चित तमाम चिंताओं पर केंद्रित सामग्री हम देख सकते हैं। ऐसी कृतियों में *'मीडिया प्रबंधन के सांस्कृतिक आयाम'* (डॉ. टी.डी.एस. आलोक), *'टीआरपी टीवी न्यूज और बाजार'* (मुकेश कुमार), *'मीडिया और भ्रष्टाचार'* (गिरीश पंकज) उल्लेखनीय हैं। सामयिक प्रकाशन से सामने आई कृतियाँ *'समय से संवाद'* (योगेश मिश्र), *'मीडिया और मुद्दे'* (नवीन जोशी) भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

मीडिया शिक्षण–प्रशिक्षणपरक कृतियाँ

मीडिया शिक्षण–प्रशिक्षण की दृष्टि से छात्रोपयोगी पुस्तकों के रूप में भी कई कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। अन्य पुस्तकों की तुलना में इस श्रेणी की पुस्तकें अधिक हैं। कुछ पुस्तकें इस उद्देश्य से भले ही न लिखी गई हो, मगर उनकी वस्तु छात्रोपयोगी भी है। ऐसी तमाम पुस्तकें देखने पर उनमें विषय के आधार पर एक सामान्य वर्गीकरण किया जा सकता है। मुख्यतः पत्रकारिता, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, जनसंचार/प्रसारण मीडिया/मास मीडिया, विभिन्न प्रकार के कौशल यथा – ख़बरों का लेखन/रिपोर्टिंग, एंकरिंग, फीचर लेखन, विज्ञापन कौशल, साक्षात्कार कौशल, विशेषीकृत पत्रकारिता आदि विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ।

इलैक्ट्रॉनिक माध्यम के रूप में टेलीविजन ने बड़ी लोकप्रियता हासिल की है। समाचार, मनोरंजन, शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान, यात्रा, अध्यात्म, भक्ति, फैशन आदि कई पर केंद्रित सैकड़ों चैनल कई भाषाओं में 24 घंटे सक्रिय हैं। हिंदी चैनलों का भी बड़ा विस्तार हुआ है। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत दृश्य–श्रव्य माध्यम के रूप में विकसित टेलीविजन लेखन, रिपोर्टिंग पर विगत दशकों में कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ।

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया पर केंद्रित एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के विविध पहलुओं पर केंद्रित इन पुस्तकों में सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण के अलावा तकनीकी कुशलता हासिल करने की दृष्टि से भी उपयोगी पुस्तके हैं। *'टेलीविजन प्रोडक्शन,*

'दूरदर्शन माध्यम और तकनीक' आदि इस श्रेणी की पुस्तकें हैं। *'टेलीविजन प्रोडक्शन'* टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण, उत्पादन पर केंद्रित है। डॉ. देवव्रत सिंह की इस पुस्तक में कुल चौदह अध्याय हैं। अध्यायों के शीर्षक इस प्रकार हैं – कार्यक्रम निर्माण, प्रोडक्शन टीम, फोटोग्राफी, वीडियो कैमरा, वीडियो कैमरा संचालन, आडियो, लाइटिंग, टेलीविजन समाचार लेखन, वृत्तचित्र आलेख लेखन, टेलीविजन समाचार निर्माण, टेलीविजन रिपोर्टिंग, वीडियो संपादन, ग्राफिक्स, मेकअप और सेट डिजाइन, टेलीविजन प्रस्तुतिकरण। स्पष्ट है कि इस पुस्तक की सामग्री टेलीविजन कार्यक्रमों के निर्माण, संयोजन एवं संपादन की व्यवाहारिक एवं तकनीकी कुशलताओं के अलावा और समाचार–लेखन, रिपोर्टिंग, वृत्तचित्र लेखन संबंधी कुशलताओं पर केंद्रित है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा इसका प्रकाशन हुआ है। पाठ्यपुस्तक के रूप में प्रकाशित होने की वजह से छात्रों के उपयोगार्थ प्रत्येक अध्याय के अंत अभ्यासार्थ कार्य और प्रश्न भी दिए गए हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बृजकिशोर कुठियाला ने इस कृति का आमुख लिखा है।

राजकुमारी गड़कर ने *'इलैक्ट्रॉनिक माध्यम बनाम मुद्रित माध्यम'* में दोनों माध्यमों की तकनीकी भिन्नता के कई पहलुओं पर तुलनात्मक दृष्टि से प्रकाश डाला है।

इस वर्ग की अन्य कृतियों में *'इलैक्ट्रॉनिक पत्रकारिता'* (डॉ. अजय कुमार सिंह), *'टेलीविजन लाइव'* (धरवेश कठेरिया, महावीर सिंह), *'टीवी समाचार की दुनिया'* (कुमार कौस्तुब), *'आधुनिक पत्रकारिता एवं इलैक्ट्रॉनिक मीडिया'* (डॉ. जालिंदर इंगले) आदि उल्लेखनीय हैं।

जनसंचार, प्रसारण मीडिया, मास मीडिया विषयक सैद्धांतिक, व्यावहारिक बातों पर केंद्रित चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वाणी द्वारा प्रकाशित मनोहर श्याम जोशी की कृति *'मास मीडिया और समाज'*, *'भारत में जनसंचार और प्रसारण मीडिया'* (मधुकर मुले), 'जनसंचार अवधारणाएँ' (शैवा चावला कोचर), *'जनसंचार की हिंदी का प्रयोजनमूलक स्वरुप'* (कुमार

चंदन) – जनसंचार के विभिन्न आयामों को उजागर करनेवाली कृतियाँ हैं।

शिक्षण–प्रशिक्षणपरक कृतियों की श्रेणी में गण्य पुस्तकों में पत्रकारिता पर केंद्रित पुस्तकों की संख्या आधे–दर्जन से अधिक है। इनमें '*पत्रकारिता के अछूते प्रसंग* (हरिशंकर शर्मा), '*सिर्फ पत्रकारिता* (डॉ. अजय कुमार सिंह), '*सामयिक मीडिया और प्रेस विधि* (पृथ्वीनाथ पांडेय), '*आधुनिक पत्रकारिता के विविध आयाम* (डी.एम. डोमिरिया, बी.आर. बारद), '*मीडिया हिंदी और पत्रकारिता* (आरिफ महत और रशीद तहसीलदार), '*पत्रकारिता के सिद्धांत* (महेंद्र कुमार मिश्र), '*पत्रकारिता के विविध आयाम* (संदीप कुमार श्रीवास्तव) आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी पत्रकारिता पर केंद्रित चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें अनुशब्द की कृति '*हिंदी पत्रकारिता* (रूपक बनाम मिथक)', डॉ. ऋचा शर्मा की कृति '*हिंदी पत्रकारिता कल और आज*, महेंद्र कुमार मिश्र की पुस्तक '*हिंदी पत्रकारिता*, रेखा शर्मा एवं सकोले दत्ता की पुस्तक '*हिंदी पत्रकारिता* शामिल हैं।

खबरों का लेखन, विभिन्न माध्यमों के लिए रिपोर्टिंग और टीवी एंकरिंग के संबंध में चार पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। मीडिया के जितने भी रूप उभर आए हैं, उन सबके माध्यम से समाचारों का प्रकाशन–प्रसारण रिपोर्टिंग के मूलभूत कार्य से ही संभव है। '*क्लास रिपोर्टर* के शीर्षक से जयप्रकाश त्रिपाठी की एक बृहद कृति अमन प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित हुई है। इस कृति में कुल बाईस अध्याय हैं जिनमें रिपोर्टिंग के विविध पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। क्राइम रिपोर्टिंग, स्पेशल एवं इन्वेस्टिगेटिंग रिपोर्टिंग, राजनीति, संसद, विधानसभा, खेल, धर्म, कला एवं संस्कृति, बाजार–व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि की रिपोर्टिंग से संबंधित कुशलताएँ हासिल करने के लिए आवश्यक परामर्श इस कृति की वस्तु है। लेखक जयप्रकाश त्रिपाठी द्वारा पूर्वारंभ (भूमिका) में दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार इस कृति को स्वाध्याय की दृष्टि से उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। '*ख़बर पर नजर* शीर्षक से सामयिक प्रकाशन द्वारा

41 HRD/16—19B

प्रकाशित राघवेंद्र पाठक की कृति में पत्रकारिता के लिए जरूरी 350 चेक पाइंट दिए गए हैं। '*ख़बर यहाँ भी* (वर्तिका नंदा), '*रिपोर्टिंग से एंकरिंग तक*' (कुमार भवेशचंद्र) भी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। भवेशचंद्र की पुस्तक में रिपोर्टिंग के विविध पहलुओं के अलावा एंकरिंग की कुशलताओं पर भी उपयोगी सामग्री है ।

पत्रकारिता के लिए अपेक्षित विभिन्न कौशलों पर केंद्रित पुस्तकें – साक्षात्कार कौशलों पर केंद्रित दो पुस्तकें, फीचर विषयक एक और विज्ञापन विषयक दो पुस्तकें इसके अंतर्गत उल्लेखनीय हैं। अन्य कौशलों पर केंद्रित चंद कृतियाँ भी प्रकाशित हुई हैं। विष्णु पंकज की पुस्तक '*प्रिंट और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में साक्षात्कार*', एस. श्रीकांत की पुस्तक '*साक्षात्कार तकनीक एवं विधियाँ* साक्षात्कार कौशलों के विविध आयामों पर केंद्रित हैं। फीचर अख़बारों के वे विशेष स्तंभ हैं, जो उसके आकर्षण और उपयोगिता को बढ़ाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। फीचर लेखन पर केंद्रित महेंद्र कुमार मिश्र की पुस्तक '*समाचार फीचर लेखन एवं संपादन कला*' स्वागतयोग्य प्रयास है। समाचारपत्रों के लिए आय के महत्वपूर्ण स्रोतों के रूप में विज्ञापनों का बड़ा महत्व है। विज्ञापन लेखन भी एक बड़ी कला है। विज्ञापन कौशलों पर केंद्रित दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। सत्येंद्र कुमार सिंह की पुस्तक '*विज्ञापन कला एवं सिद्धांत*', रघुनाथ देशाय की कृति 'विज्ञापनों का मसौदा लेखन' इस दृष्टि से उल्लेखनीय पुस्तकें हैं। खोजी पत्रकारिता संबंधी कुशलता की दृष्टि से स्टिंग आपरेशन बड़ी सनसनीखेज वाली विधि के रूप में ख्यात हो चुकी है। एस. श्रीकांत की पुस्तक '*स्टिंग आपरेशन सिद्धांत एवं व्यवहार*' स्टिंग विधि के कौशलों से परिचित होने के लिए उपयोगी पुस्तक है। धीरेंद्र पाठक की पुस्तक 'विशेषीकृत पत्रकारिता' पत्रकारिता के विभिन्न रूपों में कुशलता हासिल करने के लिए उपयोगी कृति है।

सुधांशु उपाध्याय की पुस्तक '*आधुनिक पत्रकारिता और ग्रामीण प्रसंग*, डी.वी. निसार्थ की पुस्तक '*कृषि एवं ग्रामीण पत्रकारिता*' – ये दोनों कृतियाँ ग्रामीण पत्रकारिता, कृषि क्षेत्र की पत्रकारिता संबंधी चर्चाओं को हिंदी में

समृद्ध बनाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान हैं। कृषि एवं ग्रामीण पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने के इच्छुक छात्रों के लिए भी ये कृतियाँ उपयोगी हैं।

राहुल कुमार के संपादन में शिल्पायन द्वारा प्रकाशित कृति 'आर्थिक मीडिया बाजार और सरोकार' में हिंदी आर्थिक मीडिया के दो दशकों का आकलन प्रस्तुत है। यह आर्थिक पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने के इच्छुक छात्रों के लिए भी उपयोगी है।

सूचना अधिकार पर केंद्रित पुस्तकें – अरुण सागर आनंदकृत *'सूचना का अधिकार'*, संगीता सिंह का *'सूचना का अधिकार'*, माधवानंद सारस्वत की पुस्तक 'सूचना का अधिकार' सूचना अधिकार अधिनियम संबंधी चेतना जगाने और सूचना प्राप्त करने की व्यावहारिक कुशलताओं और अपेक्षित सामग्री और प्रारूपों पर केंद्रित हैं।

अन्य विषयों की पुस्तकें – महेश चंद्र पुनेठा की कृति ''दीवार पत्रिका और रचनात्मकता' लेखक मंच प्रकाशन, गाजियाबाद द्वारा प्रकाशित हुई है। इस कृति में दीवार पत्रिका के विविध पहलुओं पर उपयोगी सामग्री है। विष्णु पंकज की पुस्तक 'विश्व मीडिया' पर केंद्रित है ।

मीडिया संबधी बहुआयामी शोध–कार्य

मीडिया के विभिन्न पहलुओं से संबंधित बहुआयामी शोध–कार्य भी समय–समय पर संपन्न हो रहे हैं। सर्वेक्षण अवधि के दौरान मीडिया–विषयक उल्लेखनीय शोधात्मक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। दिल्ली स्थित मीडिया स्टडीज ग्रुप (एमएसजी) संप्रेषण एवं संचार से जुड़े विषयों पर कार्यरत समूह है, जिसके साथ कई पत्रकार, शिक्षक व शोधकर्ता जुड़े हुए हैं। एमएसजी द्वारा सर्वेक्षण वर्ष के दौरान पाँच शोधात्मक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं –*'टीआरपी और पेडन्यूज'*, *'मीडिया और मुसलमान'*, *'मीडिया की सांप्रदायिकता'*, *'भाषा का सच'* और *'भारतीय पत्रकारों की स्थिति'*। *'टीआरपी और पेडन्यूज'* के शीर्षक से इन दोनों विषयों पर शोधात्मक सामग्री के साथ वरुण शैलेश एवं संजय कुमार बलौदिया के संपादन में एक कृति प्रकाशित हुई है। मीडिया पर विमर्शपरक कई कृतियों में भी टीआरपी और पेडन्यूज के मुद्दों को

उठाया गया है, मगर इस कृति में शोध–निष्कर्षों का विश्लेषण किया गया है। '*भारतीय पत्रकारों की स्थिति* पर केंद्रित पुस्तक पत्रकारिता क्षेत्र को, पत्रकारिता कला को जिंदा रखनेवाले पत्रकारों की स्थिति के संबंध में शोधपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करती है। मीडिया क्षेत्र के लिए योजनाएँ बनानेवालों, पत्रकारों का कल्याण सोचनेवालों के लिए यह अवश्य ही पठनीय कृति है। इस कृति का संपादन विजय प्रताप और अवनीश ने किया है। एमएसजी दवारा प्रकाशित अन्य तीन शोधपरक कृतियों की चर्चा इसी लेख में अन्यत्र की गई है ।

मीडिया में महिला, दलित, अल्पसंख्यक व सांप्रदायिक विमर्श

मीडिया में महिलाओं, दलितों, अल्पसंख्यकों की भागीदारी, उनकी स्थिति को लेकर पिछले दिनों में काफी चर्चा शुरू हुई थी, जो आज भी गरम है। विगत दो वर्षों के दौरान इन विषयों पर कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ प्रकाशित हुई थीं। सर्वेक्षण वर्ष के दौरान भी इस विषय पर कुछ कृतियों का प्रकाशन हुआ है ।

दलित पत्रकारिता के विभिन्न आयामों पर केंद्रित कृति 'दलित पत्रकारिता उद्भव और विकास' में रूपचंद गौतम ने दलित पत्रकारिता के इतिहास का विवेचन और विकास का अनुशीलन प्रस्तुत किया है। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास के नाम से प्रकाशित कृतियों में उपेक्षित दलित पत्रकारिता पर एक दस्तावेजी कृति का प्रकाशन निश्चय ही एक स्तुत्य प्रयास है। भविष्य के प्रयासों के लिए भी यह कृति प्रेरक की भूमिका निभा सकती है ।

विद्या शिंदे की कृति '*आधुनिक विज्ञापन और नारी* मीडिया में विज्ञापनों के बहाने उनमें चित्रित नारी विषयक तमाम विडंबनात्मक मुद्दों की ओर संकेत करती है ।

'*मीडिया और मुसलमान*, '*मीडिया की सांप्रदायिकता* के शीर्षक से प्रकाशित दो कृतियों का संपादन अनिल चमड़िया ने किया है। मीडिया स्टडीज ग्रुप दवारा प्रकाशित ये कृतियाँ शोधात्मक सामग्री से भरपूर हैं। इनके माध्यम से मीडिया में मुस्लिम अल्पसंख्यक वर्ग की स्थिति, सांप्रदायिकता

से संबंधित कई तथ्य सामने आते हैं ।

मीडिया भाषायी विमर्श

मीडिया के मुद्रित, इलैक्ट्रॉनिक एवं नव मीडिया के भाषायी विमर्श की आज बड़ी प्रासंगिकता है। इन माध्यमों में बिगड़ती हिंदी की स्थिति को लेकर कई चर्चाएँ सुनाई पड़ती हैं। इसी क्रम में मीडिया में भाषा–संबंधी विमर्श की किताबों का सिलसिला जारी है। इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए भाषायी विमर्श की दृष्टि से पर हरीश चंद्र बर्णवाल की पुस्तक स्वागत योग्य प्रयास है, जो राधाकृष्ण प्रकाशन से सामने आई है। टेलीविजन माध्यम की भाषा के विभिन्न पहलुओं पर इस कृति में विस्तार से चर्चा की गई है ।

मीडिया स्टडीज ग्रुप दवारा प्रकाशित 'भाषा का सच' भारतीय समाज और मीडिया में भाषा से संबंधित कई तथ्यों को उजागर करने वाली शोधात्मक कृति है, जिसका संपादन सपना चमड़िया और अवनीश ने किया है ।

शिवम चतुर्वेदी की पुस्तक *'आधुनिक मीडिया और भाषा'* भाषायी विमर्श को आगे बढ़ाने की दृष्टि से उपयोगी कृति है। संचार माध्यमों के विकास के साथ–साथ संचार की भाषा का भी विकास हो रहा है। परंपरागत भाषायी स्वरूप को बदलते हुए हम देख रहे हैं। इन तमाम प्रक्रियाओं से हिंदी संचार की भाषा के रूप में विकसित हुई है। सतीश शर्मा ने तक्षशिला प्रकाशन दवारा प्रकाशित अपनी कृति में *'संचार माध्यम की भाषा और नई हिंदी* में ऐसे तमाम पहलुओं की चर्चा की है जो संचार माध्यमों की भाषा के लिए जरूरी हैं। उसके लिए उपयुक्त भाषा के रूप में विकसित हिंदी का भी उन्होंने अनुशीलन किया है ।

मीडिया समग्र, कोश और निर्देशिकाएँ

हिंदी पत्रकारिता का निरंतर विस्तार एवं विकास हो रहा है। इसका कल तक का इतिहास कई प्रयासों से पुस्तकाकार में आ पाया है। भविष्य में इतिहास–लेखन के लिए पत्रकारिता संबंधी कोशों, निर्देशिकाओं, सर्वेक्षणात्मक आलेखों की बड़ी प्रासंगिकता और उपयोगिता होती है। इस दृष्टि से हिंदी

में मीडिया कोशों, निर्देशिकाओं का भी प्रकाशन विभिन्न स्रोतों से समय-समय पर हो रहा है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से वार्षिकी में सर्वेक्षणात्मक आलेखों को प्रकाशित किया जा रहा है।

रमेश जैन के संपादन में *'मीडिया समग्र* के शीर्षक से दो खंड प्रकाशित हुए हैं। पत्रकारिता के इतिहास पर उपयोगी कृतियों के संपादन के बाद रमेश जी द्वारा इन समग्रों का संकलन निश्चय ही अभिनंदनीय प्रयास है।

सूर्यप्रसाद दीक्षित के संपादन में *'बृहद पत्र-पत्रिका कोश भाग-2* भी सामने आया है। कोश के भाग -1 में भारत के कोने-कोने से प्रकाशित हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रकाशित हुई थी। इसके अद्यतनीकरण के रूप में नए प्रकाशन को, छूटे हुए प्रकाशनों को शामिल करते हुए बृहद्कोश के दूसरे भाग का प्रकाशित होना स्वागत योग्य प्रयास है। मुंबई से आफताब आलम के संपादन में *'पत्रकारिता कोश-2014* प्रकाशित हुई है, जिसमें सहस्राधिक पृष्ठों में राष्ट्रीय स्तर पर कई पत्रकारों के संपर्कसूत्र संकलित हैं। हिंदी मीडिया जगत के लोगों में आपसी संवाद स्थापित करने के लिए ऐसे कोशों के प्रकाशन की भी प्रासंगिकता है।

राजकमल प्रकाशन से आठ खंडों में *'श्रीकांत वर्मा रचनावली* में वर्मा जी के लेखन में पत्रकारिता विषयक चार खंडों को भी शामिल कर दिया गया है। इस समग्र का संकलन एवं संपादन अरविंद त्रिपाठी ने किया है। रमेश जैन के संपादन में *'मीडिया समग्र* के शीर्षक से दो खंड प्रकाशित हुए हैं।

संस्मरण और पत्रकारों पर केंद्रित पुस्तकें

मीडिया विषयक संस्मरणात्मक कृतियों में *'कहने को बहुत कुछ था* शीर्षक से प्रकाशित प्रभाष जोशी की कृति उल्लेखनीय है। पत्रकार और जनसंचार विषयक आचार्य संजय द्विवेदी पर एकाग्र संकलन *'कुछ तो लोग कहेंगे'* शीर्षक से सामने आई है। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर कई पत्रकारों, लेखकों, शिक्षकों के कुल 48 आलेख इसमें प्रस्तुत हैं। इनमें द्विवेदी जी का आत्मकथ्य, साक्षात्कार और मूल्यांकन भी शामिल हैं। यशवंत गोहिल और अंकुर विजयवर्गीय द्वारा संपादित इस

कृति का प्रकाशन रायपुर के मीडिया विमर्श प्रकाशन ने किया है । पत्रकारों पर केंद्रित कुछ और पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं, विषय–वर्गीकरण के अनुसार उनकी चर्चा इसी आलेख में अन्यत्र की गई है।

मीडिया पर केंद्रित सृजनात्मक साहित्य

बाजारवाद ने मीडिया के साथ जिन बुराइयों को जोड़ दिया है, वे सब केवल मीडिया संबंधी चर्चा तक सीमित न होकर साहित्य की भी वस्तु बन गई हैं। गिरीश पंकज ने *'मीडियाय नमः'* के शीर्षक से विगत वर्ष प्रकाशित अपनी व्यंग्यपरक कृति में मीडिया जगत की विडंबनाओं, विद्रूपताओं, दुष्ट–प्रवृत्तियों का पर्दाफाश करने की कोशिश की थी। इस सिलसिले को जारी रखते हुए इस वर्ष भी मीडिया पर केंद्रित साहित्यिक सर्जना हुई है। हिंदी फिल्म 'पीपली लाइव' मीडिया पर केंद्रित थी।

हिंदी में 'विजय चौक लाइव' के शीर्षक से एक उपन्यास सामने आया है। उपन्यासकार है टेलीविजन पत्रकार शिवेंद्र कुमार सिंह। इस उपन्यास का शीर्षक *'पीपली लाइव'* का ही अनुकरण–सा लगता है। सामयिक प्रकाशन दवारा प्रकाशित यह उपन्यास एक नवीन शैली में प्रस्तुत हुआ है। चूँकि इसकी वस्तु समाचार चैनलों से जुड़ी तमाम विसंगतियों पर केंद्रित है, अतः इसकी शैली भी अनोखे ढंग से समाचार बुलेटिननुमा प्रस्तुतियों के रूप में विकसित हुई है। इस उपन्यास की विशिष्ट शैली का आस्वाद करने के लिए नमूनार्थ समाचार बुलेटिननुमा एक अनुच्छेद प्रस्तुत है –"मालिक का नौकर जमकर दे रहा है ज्ञान। संपादकीय टीम को बताता है कि किस स्टोरी के साथ जंचेगी किस गाने की तान। बहार टीवी के एक सीनियर अधिकारी ने ऑफिस की पार्टी में पेग लगाए चार, संपादक को दी गाली साथी रिपोर्टर को थप्पड़ दिया मार। ट्रेनी रिपोर्टर को लिखे प्रेम पत्र की शिकायत को संपादक ने दिया टाल, लेकिन अकेले में चटकारे ले–लेकर किया सवाल और पत्नी से नाराज संपादक ने उतारा इंटर्न पर गुस्सा, 4 दिन बाद ही दोबारा नाइट शिफ्ट में ठूंसा।"

टेलीविजन के समाचार चैनलों के नकारात्मक पक्ष को उजागर करनेवाला यह उपन्यास कई टीवी न्यूज चैनलों में उपन्यासकार शिवेंद्र की आपबीती, परबीती तथा अनुभव का सार है।

शिवेंद्र का उपन्यास इलैक्ट्रॉनिक मीडिया पर केंद्रित है, जबकि विलास गुप्ते का भी एक उपन्यास *'शेष आखिरी पृष्ठ पर* शीर्षक से सामने आया है जो प्रिंट मीडिया पर केंद्रित है। इसमें पत्रकारिता क्षेत्र की कई विडंबनाओं, समस्याओं का चित्रण नजर आता है।

सूर्यकांत नागर की कृति *'टीवी युग की महरी* व्यंग्य संग्रह है । शिल्पायन द्वारा प्रकाशित इस कृति में टेलीविजन युग की विडंबनाओं का पर्दाफाश व्यंग्य–लेखों के माध्यम से किया गया है ।

पत्रकार अनिल चमड़िया के संपादन में *'महान अमीर ने अख़बार निकाला* शीर्षक का कहानी संकलन प्रकाशित हुआ है । इस कृति के संबंध में मुखपृष्ठ पर प्रकाशित ये पंक्तियाँ संक्षेप में ही संकेत देती हैं –"*पत्रकारिता की कहानियाँ (ख़बरों की समझ कहानियों के जरिए)*।"

मीडिया की दिशा और दशा के संबंध में हमारी चिंताओं का प्रतिनिधित्व करने में, अपेक्षित चेतना और संवेदना जगाने में ये साहित्यिक कृतियाँ पूर्णतया सक्षम हैं। विमर्शपरक कृतियों से जो भी चिंताएँ जाहिर की जा रही हैं, उन्हें अधिक सक्षम बनाने की दृष्टि से सर्जनात्मक साहित्यिक विधाओं के माध्यम से मीडिया संबंधी संवेदनात्मक पक्षों का उजागर करना एक स्वागतयोग्य प्रयास है।

मीडिया विषयक पत्रिकाएँ

मध्य प्रदेश के इंदौर शहर से मई, 2014 से **'मीडिया रिलेशन'** के नाम से नई पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ है। मीडिया के विभिन्न पहलुओं पर सामग्री प्रकाशित करनेवाली इस पत्रिका के संपादक संजय रोकड़े हैं ।

भोपाल से प्रकाशित होनेवाली मीडिया और सिनेमा की द्विभाषीय शोध पत्रिका 'समागम' ने अपने प्रकाशन के चौदह वर्ष पूरे किए हैं। पत्रिका के इस वर्ष के दौरान कुछ उल्लेखनीय विशेषांक प्रकाशित हुए हैं। उनमें से

एक अंक मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्व पर केंद्रित है।

जनसंचार के सरोकारों पर केंद्रित त्रैमासिक पत्रिका **'मीडिया विमर्श'** ने कुछ दस्तावेजी विशेषांक प्रकाशित किए हैं, उनमें 'हिंदी पत्रकारिता के हीरो विशेषांक' के शीर्षक से दो विशेषांक और *'गुजराती पत्रकारिता विशेषांक'* इस वर्ष के उल्लेखनीय विशेषांक हैं।

दिल्ली से प्रकाशित होनेवाली मीडिया की शोध पत्रिका **'जन मीडिया'** ने निरंतर शोधपरक सामग्री के प्रकाशन के साथ चौथा वर्ष पूरा किया है। अक्तूबर 2014 का अंक *'अंतरराष्ट्रीय मीडिया अंक'* के रूप में प्रकाशित हुआ है।

इसके अलावा मीडिया पर केंद्रित अन्य पत्रिकाओं की भी आलोचनात्मक सामग्री के साथ निरंतरता बनी रही।

'नव मीडिया' उद्‌भव और विकास का विकट रूप

इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रभावपूर्ण उपस्थिति की लगभग आधी सदी के बाद विकसित इंटरनेट की वजह से उदित 'वेब मीडिया' को भी ध्यान में रखकर ही 'मीडिया' की अवधारणा स्पष्ट होती है। नवागत शब्द के साथ जुड़ी नवीन अवधारणाओं के आलोक में मीडिया का तार्किक एवं तथ्यात्मक विश्लेषण भी मीडिया विचारकों ने शुरू कर दिया है।

सूचना एवं संचार प्रौद्‌योगिकी के संगम से विकसित नए तंत्र के लिए *'न्यू–मीडिया, 'नव मीडिया, 'साइबर मीडिया, 'वेब मीडिया, 'डिजिटल मीडिया* आदि प्रयुक्तियाँ भी शुरू हुई हैं। कंप्यूटर, इंटरनेट, संचार प्रौद्‌योगिकी की वजह से साकार *'इंटरनेट संस्कृति* ही *'वेब–मीडिया* की जननी है।

वेब–मीडिया का स्वरूप काफी व्यापक है। अख़बार, किताब, रेडियो और टीवी को भी अपने में समाहित कर पाने में वेब–मीडिया सक्षम रही है। तीव्र गति से सूचनाओं के प्रसारण की टेलीफोन, टेलेक्स, फैक्स आदि सुविधाओं को मात देते हुए ई–मेल, वेब पोर्टल, ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग आदि सुविधाओं ने विकट रूप धारण किया है। इस मीडिया की संचालन–व्यवस्था भी सस्ती बन गई है। नव मीडिया ने अपनी ओर कई लोगों को आकर्षित

किया है। ऐसी अनियंत्रित बढ़त और वेब मीडिया पर नियंत्रण और पकड़ की कानूनी दुर्बलताओं के सहारे यह मीडिया कभी–कभी इतनी भयानक भी साबित हो जाती है कि इसके माध्यम से साइबर युद्ध की संकल्पना की जा रही है। मोबाइल के साथ इंटरनेट माध्यम के संयोग ने तो दुनिया में मीडिया की ताकत को अभूतपूर्व ढंग से बढ़ा दिया है।

आकलन वर्ष के दौरान प्रकाशित नई प्रौद्योगिकी संबंधी साहित्य की मात्रा कम ही रही है। हाँ, पत्रकारिता, मीडिया संबंधी विभिन्न पुस्तकों में कई संदर्भों में नव मीडिया, इंटरनेट मीडिया, सोशल मीडिया और प्रौद्योगिकी की चर्चा भी नजर आती है। वैसे वेब पर हिंदी की वृद्धि हो रही है। कई वेब पत्रिकाएँ भी विकसित हुई हैं। विकिपीडिया, गूगुल बुक्स आदि ज्ञान विकसित करने की दृष्टि से वेब पर योगदान कर रही हैं। समाचारपत्रों के ई–संस्करण वेब पर, मोबाइल पर उपलब्ध हो पा रहे हैं। हिंदी में वेब पर प्रकाशन का श्रीगणेश करने वाली '*वेब दुनिया* 15 वर्ष पूरे कर चुकी है। इस संबंध में '*वेब दुनिया* के पोर्टल पर विशेष सामग्री भी हम देख सकते हैं। कई ब्लॉग और तकनीकी वेबसाइट्स लगातार प्रौद्योगिकीय विषयों पर सामग्री प्रकाशित कर रहे हैं। ऐसे प्रयासों में शांति निकेतन में सेवारत अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने वेबसाइट पर 'भाषा–प्रौद्योगिकी' के शीर्षक से एक वेब पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया है। वैसे यह पत्रिका ज्यादा सक्रिय नजर नहीं आ रही है। भाषा–प्रौद्योगिकी संबंधी एकाध लेख इसमें प्रकाशित हैं। 'हिंदी शब्द तंत्र की संरचना' शीर्षक का एक लेख, भारतीय प्रौद्योगिकी से संबद्ध प्रभाकर पांडेय, लक्ष्मी कश्यप और पुष्पक भट्टाचार्य द्वारा लिखित लेख और '*मशीनीकरण से कंप्यूटरीकरण* के शीर्षक से कृष्ण कुमार गोस्वामी का लेख इसमें पठनीय हैं। अन्य कई वेबसाइटों में तकनीकी और प्रौद्योगिकीपरक सामग्री उपलब्ध है, मगर इस सर्वेक्षणात्मक आलेख के आकार की सीमा को ध्यान में रखते हुए उन सबकी चर्चा यहाँ नहीं की जा रही है।

'हिंदी वेब साहित्य' के शीर्षक से डॉ. सुनील कुमार लवटे की कृति राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। इस कृति का मुख्य उद्देश्य वेब पर

प्रकाशित हिंदी साहित्य का अनुशीलन करना रहा है। एक शोध–परियोजना के तहत संकलित इस पुस्तक में कुल सात अध्याय हैं। '*संगणकीय प्रणाली : उद्भव और विकास*' के शीर्षक वाले प्रथम अध्याय में कंप्यूटर के उद्भव और विभिन्न पीढ़ियों में विकास, इंटरनेट का उद्भव और विकास आदि विषयों पर सामग्री है। दूसरे अध्याय में हिंदी कंप्यूटिंग संबंधी ऑनलाइन और ऑफलाइन संसाधनों की भी चर्चा की गई है। नई प्रौद्योगिकी संबंधी चर्चा की दृष्टि से इस पुस्तक में विवेचित थोड़ी–सी सामग्री महत्वपूर्ण है। बाकी पुस्तक के उद्देश्य के अनुसार वेबसाइट्स पर प्रकाशित हिंदी भाषा एवं विविधांगी साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत है ।

प्रज्ञा श्रीवास्तव की पुस्तक '*सूचना संचार*' और बसंत कुमार व संतोष कुमार की कृति 'सूचना संचार के विविध आयाम' भी सामने आई हैं। ये दोनों कृतियाँ सूचना संचार के विविध आयामों पर केंद्रित हैं ।

जयसिंह बी झाला की पुस्तक 'सोशल मीडिया एवं समाज' वेब पर विकसित सामाजिक मीडिया यानी सोशल नेटवर्किंग साइट्स की वजह से विकसित नई सामाजिक संस्कृति, समाज पर सोशल मीडिया के प्रभाव के व्यापक विश्लेषण का प्रयास है ।

नीलम राठी की पुस्तक 'इंटरनेट युग में मुद्रित माध्यमों की स्थिति और चुनौतियाँ' के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। नव मीडिया की व्यापकता एवं विराटता के मद्देनजर मुद्रित माध्यमों के भविष्य की चिंताओं का विवेचन इस कृति में नजर आता है। इंटरनेट ने मुद्रित माध्यमों को बड़ी चुनौती दी है, मगर भारत में अभी ऐसी स्थिति नहीं है कि प्रिंट मीडिया एकाएक समाप्त हो जाए। हाँ, तमाम चुनौतियों की उपस्थिति में अपने–आप नेट पर अस्तित्व की स्थापना के लिए बड़े अख़बारों के अलावा लगभग कई छोटे अखबारों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की है। ई–समाचारपत्र, ई–पत्रिका उपलब्ध कराने के अलावा, दैनिक समाचारपत्र के वेब पोर्टल तो हर पल समाचारों का अपडेशन करते रहते हैं। नीलम जी की कृति मुद्रित माध्यमों के अस्तित्व के विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ–साथ नई प्रौद्योगिकी के स्वरूप के परोक्ष विश्लेषण की दृष्टि से भी अवलोकनीय है ।

सामयिक प्रकाशन द्वारा हाल ही *'ऑनलाइन पत्रकारिता'* के शीर्षक से हर्षदेव की एक कृति प्रकाशित हुई है। इंटरनेट के विकास की वजह से विकसित ऑनलाइन पत्रकारिता के विविध पहलुओं का विवेचन इस कृति में हम देख सकते हैं। रत्नेश्वर सिंह ने अपनी पुस्तक 'मीडिया लाइव' में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के इतिहास के साथ–साथ वेबसाइटों के इतिहास पर भी लिखा है।

'तकनीकी सुलझनें : रहस्यावरण से मुक्त, सरल, सार्थक, सुरक्षित और लाभप्रद कंप्यूटिंग' शीर्षक से पत्रकार एवं तकनीकी विशेषज्ञ बालेंदु शर्मा दाधीच की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य हिंदी पाठकों की कंप्यूटर संबंधी चुनिंदा समस्याओं का समाधान करना है। इस कृति में कुल तीस मुद्दों के लिए समाधान प्रस्तुत किया गया है। ये मुद्दे कंप्यूटर प्रयोक्ताओं की जिज्ञासाएँ, उलझनें और समस्याएँ भी हो सकती हैं, उन्हें सरलतम समाधान लेखक ने सुझाए हैं। यही इस पुस्तक की वस्तु है। इस पुस्तक की सामग्री के शीर्षक भी आकर्षक हैं, कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं –'जहाँ आप, वहीं फाइलें,' *पेन ड्राइव अलविदा!', 'कहीं से भी एक्सेस कर सकते हैं अपना कंप्यूटर', 'जेनुइन सॉफ्टवेयर भी मिलते हैं बहुत सस्ते दामों पर', 'किसने भेजा वह बेनामी, आपत्तिजनक ईमेल ?', 'कोई चोरी–छिपे एक्सेस करता है आपका ईमेल अकाउंट ?', 'ऐसे वापस लौटेगा आपका चोरी गया लैपटॉप', 'बचाओ ! बचाओ ! खुफिया एजेंसियों से अपनी प्राइवेसी*, 'संभव है इंटरनेट पर जायज तरीकों से धन कमाना'। कंप्यूटर नेटवर्किंग, सोशल नेटवर्किंग, कंप्यूटर की रक्षा, नेट पर बच्चों की सुरक्षा, साइबर अपराध आदि कई मुद्दों पर सरल समाधान प्रस्तुत करती इस पुस्तक का प्रकाशन ईप्रकाशक.कॉम ने किया है। मुद्रित संस्करण के अलावा इसका ई–बुक संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। प्रभात प्रकाशन से अंकित फादिया की पुस्तक *'मोबाइल एवं कंप्यूटर के 100 स्मार्ट टिप्स'* के शीर्षक से प्रकाशित हुई है। शीर्षक के अनुरूप मोबाइल एवं कंप्यूटर पर कार्य करने के नुस्खे इसमें प्रस्तुत हैं।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि कुल मिलाकर नई प्रौद्योगिकी संबंधी साहित्य का हिंदी में कम मात्रा में ही प्रकाशन हुआ है। नेट पर इन विषयों पर जितनी सामग्री उपलब्ध हो पा रही है, वह हिंदी में मुद्रित रूप में उतनी मात्रा में उपलब्ध नहीं हो रही है। इस विषय पर गंभीर अध्ययनों की बड़ी मांग है। वेब मीडिया के विकास की तीव्र गति के आलोक में आशा है, भविष्य में हिंदी में नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकों के प्रकाशन की स्थिति में सुधार आएगा।

आकलन वर्ष के दौरान प्रकाशित कई कृतियाँ मीडिया की विडंबनाओं को किसी–न–किसी रूप में उजागर कर उसे बचाने, उसकी परंपरागत वृत्तियों, प्रवृत्तियों, उद्देश्यों को पुनः जीवंत बनाने की आशा जताती हैं। संख्यात्मक दृष्टि से इस वर्ष भले ही वृद्धि नजर आ रही है, मगर गुणात्मक दृष्टि से वह वृद्धि नजर नहीं आई है। चंद कृतियाँ गुणवत्ता की दृष्टि से भी उल्लेखनीय बन पड़ी हैं, मगर अन्य कृतियों की गुणवत्ता में भी विकास की अपेक्षा है।

आशा है, भविष्य में मीडिया और नई प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं से संबंधित पुस्तकों की गुणात्मकता की ओर भी अधिक ध्यान दिया जाएगा और मीडिया के उन उपेक्षित पहलुओं पर भी गंभीर चर्चा हो पाएगी। कुल मिलाकर देखा जाए तो वर्ष 2014 में प्रकाशित हिंदी में पत्रकारिता व नई प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकों की स्थिति संतोषजनक रही है, मगर स्थिति ज्यादा उत्साहवर्धक नहीं कही जा सकती है। मीडिया विमर्श, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया एवं नव मीडिया तकनीकी एवं अन्य पहलुओं से संबंधित उच्चस्तरीय पुस्तकों का हिंदी में प्रकाशन के लिए उज्ज्वल भविष्य है।



18

हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ

अशोक मनोरम

हिंदी में जितनी भी पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है, उन सबका मिज़ाज अलग–अलग है, पर खबरों और पुस्तक–समीक्षाओं की नज़र से सारी उपयोगी हैं।

नए वर्ष पर नए संदर्भों को सामने रखकर वर्ष–भर में हुए पारिवारिक–सामाजिक और साहित्यिक संकल्पों को उजागर करती रचनाओं पर दृष्टिपात करने के बाद साहित्य प्रकाशन में वर्ष 2014 को कमतर नहीं आंका जा सकता है। जनवरी अंक में कादंबिनी ने नागार्जुन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, यश मालवीय जैसे सिद्धहस्त कवियों की बानगी रचना को पाठकों के सामने परोसा है, वहीं पर्यावरण की चिंता में अपनी लेखनी के कमाल भी दिखाए हैं।

तस्वीरों के बेहतर उपयोग से कविताएँ वाक्य से वागेश्वरी बनती नज़र आती है। सोशल मीडिया को *'सोशल'* बनाने की कवायद पर एक पठनीय व चिंतनीय आलेख पवन दुग्गल की कलम से निकला है। साहित्येतर रचनाओं में तन–मन को स्वस्थ रखना कितना कारगर है, यह बताने का बखूबी प्रयास किया गया है। आदरणीय गजेंद्र नारायण सिंह संगीत के एक जानकार लेखक हैं। 'संगीत साधक संत कलाकार' जैन चित्रांकन पर एक शोधपूर्ण लेख है – यह शोधार्थियों की उपयोगी सामग्री है। उषा किरण खान की कथा शोधपूर्ण सामग्री से लबरेज है। यह सामग्री साहित्यकारों की पड़ताल गंभीरता से करती दिखती है। शशि प्रभा तिवारी ने अश्विनी भिड़े देशपांडे का साक्षात्कार किया है। शीर्षक है – *नदी की तरह बहते रहना*

चाहती हूँ। 'बाज़ार के बीच बगीचा सतीश जायसवाल की कहानी है। नशे की गिरफ्त में फँसे युवक की व्यथा की कहानी उसकी विधवा माँ की जुबानी हृदय में अंदर तक धंस जाती है। नानक सिंह की पंजाबी कहानी *नव वर्ष का उपहार* है। नानक सिंह पंजाब के प्रेमचंद कहे जाते हैं। उनकी लगभग छह दर्जन पुस्तकें प्रकाशित है। इन्होंने पचास उपन्यास भी लिखे है। नानक सिंह 4 जुलाई 1897 में पैदा हुए और इनका अवसान 28 दिसंबर 1971 में हुआ। उनकी कहानी का अनुवाद सुरजीत ने किया है।

संपूर्ण कहानियाँ लेखक मंजूर एहतेशाम के साथ डनडन लंदन एक रोमांटिक यात्रा वृत्तांत है जिसमे लेखक हैं – ओमकार चौधरी। *विजय चौक लाइव* एक इलैक्ट्रॉनिक मीडिया का उपन्यास है, जो लाइव दर्शन के साथ प्रस्तुत है। लेखक हैं – शिवेंद्र कुमार चोराहा। इस अंक के कवि हैं – 1. '*ज्ञानेंद्रपति*' प्रेमशंकर रघुवंशी, '*रिक्तता*' सुमित वाजपेयी, '*चांद का दर्द*' नूतन श्रीवास्तव, '*चिंता* – विभा जैकब। राजेंद्र सिंह बेदी के अफसानों पर बेबाक आलेख फिक्र तौसवीं का है। अनुवादक है – सुरजीत।

आजकल पत्रिका के वरिष्ठ संपादक – राजेंद्र भट्ट और संपादक फरहत परवीन है। इनके नवंबर 2014 अंक में चार कहानियाँ प्रकाशित की गई हैं। '*आंगन की गौरैया* कामता सिंह की कहानी है। घर के अंदर बड़े–बूढ़ों, बच्चों और किशोरों की बीच की तकरार, मनुहार और बाल मनोविज्ञान की समझ पैदा करती यह कहानी हल्की–फुल्की व संवेदना के मर्म को समझाती है। राजेंद्र मोहन भटनागर की कहानी है *भूत*। भूत कुछ नहीं होता है, मन के अंदर की कमजोरी भय बनकर भूत बन जाता है। जब आदमी / औरत के अंदर की बुद्धि जागती है और सोचने–समझने लगता है तो भय का भूत खुद–ब–खुद भाग जाता है,– "*कपींद्र आश्चर्य से भरा अपने साथियों को देखे जा रहा था। सोहा ने बताया,*" डरपोक सदा कमज़ोर को नुकसान पहुँचाता है। वह शक्तिशाली का सामना नहीं कर सकता। वही उसने किया। मुझसे हाथ छुड़ाकर तब कपींद्र ने उसे पकड़ना चाहा, तब मुँह पर तमाचा मारकर और अंधेरे का लाभ उठाकर भाग निकला।" इस अंक की सभी कहानियाँ व कविताएँ पठनीय–संग्रहण हैं। पुस्तक समीक्षाएँ भी पुस्तकों

के गुणों को साफ–साफ बता रही हैं।

अप्रैल–जून–2014 के इंद्रप्रस्थ भारती के अंक में तेजी से बदल रहे समय में अपने आप को पहचानने के लिए समय को समझने की समझ रखने की नसीहत देता संपादकीय पाठकों के बीच समय की कसौटी पर खरा उतरने की जहनियत से रू–ब–रू कराता है। इस अंक की कहानियों की संख्या 7 है। *असंभव* एक वृद्धा की कहानी है, जो बच्चों से निष्कासित होती है और उसे धोखे से वृंदावन भेज दिया जाता है वृद्धा आश्रम में। नाटकीय मोड़ के साथ पुनः भ्रमण हेतु जब विधवाओं का एक दल बंगाल वहाँ के मुख्यमंत्री के निमंत्रण पर आता है, तो वहाँ अपने बेटे की मनुहार को देख उसके मन में कई तरह के विचार आते हैं, पर वह मीरा की तरह समाज से कट कर नटवर नागर की नगरी में ही बसने में अपनी खुद्दारी देखती है और बेटे को मना कर देती है। डॉ. *शशिभूषण सिंहल की यह कहानी* एक मनोविज्ञान से ओत–प्रोत रचना है।

तरमेस गुजराल की कहानी '*फिर भी आस*' एक मध्यमवर्गीय विधवा रिटायर कर्मी की मानसिक व्यथा का दर्पण है। एक कहानी है *पाँचवाँ मोड़* जिसके लेखक हैं – विपिन जैन। यह कहानी भी सेवानिवृत्ति के बहाने मध्यमवर्गीय जीवन के कटु–मधु अनुभवों को समाज के बीच बाँटने का एक अच्छा उपक्रम है। कहानी की तैयारी और प्रस्तुति के बीच थोड़ी समझदारी के बुलबुले हैं, पर ये उभरने से ज्यादा फूटते नजर आते हैं।

अशोक मिश्र की कहानी *नास्तिक* तथा *अपना–अपना* दर्द–डॉक्टर शुकदेव क्षेत्रिय, *बस.... तलाक नही*– मधु अरोड़ा, रमणीराम गढ़वाली–*सुखू मामा* आदि उल्लेखनीय हैं। मनोविज्ञान की गहरी पड़ताल–दिखती है सुखू मामा में। लेखक ने यह दिखलाने की सफल कोशिश की है कि आदमी के मन में कब करुणा जागती है, कब विद्रोह, कब प्रेम पनपता है, कब ईर्ष्या ऊपजती है। यह सामाजिक दायित्वों, प्रेम के अंकुरण और अपनी इच्छा की पूर्ति के अवरोध पर निर्भर है। कहानी का शिल्प बेहतर है। इस अंक की अंतिम कहानी है – *मई का महीना*। यह कहानी रूसी भाषा की है – लेखक हैं – मिखाईल बुलगाकव। रंगमंच की रौनक और कलाकारों की मस्तानी

अदा के बीच खुशी–अवसाद की पेंग झूलना और फिर मई माह की सोंधी सुगंध को पकड़ने का प्रयास करना कहानी की बुनियादी पड़ताल है। अनुवादक हैं– कल्याणी अग्रवाल।

कविताएँ कई कवियों के जीवन के दर्शन को सामने रखती है – विश्वनाथ सचदेव की *आँखें क्यों झपक जाती हैं, एक सफर पीछे की ओर,* डॉ. हरदयाल की '*आवरण, आज का सहारा, अगति की चिंता करूं क्यों?*

इब्बार रब्बी की '*गर्म लौह शलाका, रुग्ण गरुड़, कीकड़ के पेड़ के तले.* ...,,रमेशचंद्र पंत की '*सृजन का ह्रास, अपने होने की सार्थकता,* हरनेक सिंह गिल की *तुम्हारी कठोरता! तुम्हारी निर्ममता!! मैं झिझकता रहा,* योगेंद्र दत्त शर्मा की कविता – *उतरा है ज्योति पर्व, मन... नदी का...धार का....,* *छाँह वाले दिन,* चंद्रदेव यादव की थकान, *नींद और सपना।* सतारो तानिकावा की '*मृतक आदमी जो छोड़ गया अपने बाद...*। ओगमा हीदयों की '*हमारे रथ का गीत*। काजिमा हाजिए की कविता – घेरे से बाहर। कुल मिलाकर यह एक पठनीय अंक है।

जुलाई–सितंबर 2014 के इंद्रप्रस्थ भारती अंक की विशेषता है – एक लेख – डोगरी साहित्य में सूफ़ी परंपरा .... लेखक हैं – मोहन सिंह। इस लेख की कुछ पंक्तियाँ सामने रखने की चाहत को भुला नहीं पाया– "साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इन दोनों प्रांतों में यानी कश्मीर तथा पंजाब में सूफी–संत कवियों ने अपनी वाणी से भाषाओं के साहित्य को खूब मालामाल किया। ऐसी सूरत में इस विचार का मन में पनपना स्वाभाविक ही जान पड़ता है कि अंततः ऐसे कौन से कारण रहे होंगे कि डुग्गर कहलाने वाले इस क्षेत्र ने तथा डोगरी भाषी कवियों ने अपने आस–पास के वातावरण को जरा–सा भी अंगीकार नहीं किया, जबकि उस समय लगभग सारे भारत में इस आंदोलन ने अपने पैर पसार लिए थे।" डॉ. श्रीराम परिहार की कलम का कमाल है उनका आलेख – "*हिंदी नवजागरण: माधवराव सप्रे और माखनलाल चतुर्वेदी... ।*" कुछ पंक्तियाँ इस लेखक को गज़ब की ऊँचाई देती है।– "प्रत्येक भाषा की अपनी संस्कृति होती है। भाषा के माध्यम से संस्कृति बनती

भी है। परिचालित भी होती है। संवर्धित भी होती है। अतः भाषा संस्कृति की संवाहक होती है।" रोमिका थापा का निबंध – *"लेखन की भगीरथ यात्रा में कवि मनप्रसाद सुब्बा*– कवि मनप्रसाद सुब्बा के विषय में है जो 8 कविता संग्रह, एक उपन्यास, 5 अनुवाद, कई पुरस्कार और सम्मान से नवाजे गए रचनाकार हैं। रवींद्र कात्यायन का आलेख साहित्येतर है – *सिनेमा का सौंदर्यशास्त्र*। भूमिका पढ़ने के बाद ही लेखक का अध्ययन और लेखन की सोच झलकने लगती है।

डॉ. नरेश, ज्ञान प्रकाश विवेक, पंडित सुरेश नीरव की गज़लें मुकेश मानस, सुशांत सुप्रिय, सुनीता केशवा की कविताएँ पत्रिका को एक ऊँचाई देती नज़र आती है। कहानियों में राजकमल का *निर्वासित स्वान*, अशोक गुप्ता की *फरेब*, महाबीर रवांल्टा की कहानी *दो पाटों के बीच में....*, सुशील सिद्धार्थ की *रेखाएँ*, अनंत कुमार सिंह की *'मौसम का असर* आदि एक से बढ़कर एक है।

संस्मरण के अंतर्गत शिवशंकर मिश्र की *हिंदी गज़ल और जानकीवल्लभ शास्त्री* शीर्षक से एक सुंदर पठनीय रचना है। रम्य रचना में चार्ली चैपलिन के व्यक्तित्व कृतित्व पर एक सुंदर रचना पाठकों का ज्ञानवर्धन करती है।

कुछ लघु पत्रिकाएँ

हिंदुओं की हार का कारण खोजती एक पत्रिका है – *दाल रोटी* (जनवरी–मार्च 2014) जिसके संपादक हैं – अक्षय जैन। यह पत्रिका मात्र बत्तीस पृष्ठों की है। पत्रिका के इस अंक में एक विचारोत्तेजक लेख है – शीर्षक हैं – *हिंदू सदियों तक क्यों हारते रहे?* लेखक हैं – सुरेंद्र कुमार शर्मा *अज्ञात*। लेख में हिंदुओं की पराजय के मूल में उनकी घोर अज्ञानता, कर्महीनता, भाग्यवाद में अटूट आस्था, धार्मिक अंधविश्वास आदि को माना गया है।

साम्य (27) पत्रिका के संपादक हैं विजय गुप्त। अनियतकालीन पत्रिका *साम्य* आज की एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति है। इसके इस अंक के कई

गंभीर और स्तरीय लेख हैं। सियाराम शर्मा का लेख, *मैनेजर पांडेय का आलोचना कर्म: विविध दिशाएँ* मैनेजर पांडेय के आलोचना कर्म का समग्रता में मूल्यांकन करता है। नामवर सिंह और मैनेजर पांडेय की आलोचना दृष्टि में फर्क को रेखांकित करते हुए लेख हैं।

लहक (जून–जुलाई 2014– संयुक्तांक), संपादक – निर्भय देवयांश। पत्रिका के नए अंक में *अस्मिता आंबेडकर और रामविलास शर्मा* (जगदीश्वर चतुर्वेदी) और *'मोदी सरकार, आरएसएस, वामपंथ और भारतीय मीडिया'* (अरुण महेश्वरी) शीर्षक लेख महत्वपूर्ण हैं। कुलदीप नैयर से संजीव चंदन का साक्षात्कार भी उल्लेखनीय हैं। इस अंक में गोयनका ने एक बड़ा प्रश्न उठाया है कि अगर गांधी पूंजीपतियों के दामाद थे, तो लगभग–लगभग अनुयायी की तरह उनके कार्यक्रमों को वैचारिक समर्थन देनेवाले प्रेमचंद मार्क्सवादी कैसे हो गए? इस अंक में वेदप्रताप वैदिक व विजय बहादुर सिंह के टिप्पणीनुमा लेख भी ध्यान खींचते हैं।

वागर्थ (जुलाई 2014), संपादक–एकांत श्रीवास्तव / कुसुम खेमानी। एकांत श्रीवास्तव ने विशेषांकों के द्वारा पत्रिका में अधिकाधिक साहित्यकारों की पत्रिका में भागीदारी को सुनिश्चित किया है। पत्रिका का मई अंक 'समकालीन कथा साहित्य और बाजार' पर केंद्रित था। इसमें कई पीढ़ियों के लेखकों–संपादकों को शामिल किया गया था। पत्रिका का जुलाई अंक 'कवियों का कथा–साहित्य और कथाकारों की कविता' विशेषांक के रूप में आया है। इस पत्रिका में एक खंड है – रचना खंड। उसके दूसरे तीसरे खंड में क्रमशः कवियों के कथा–साहित्य और कथाकारों की कविताओं को शामिल किया गया है।

गांधी–मार्ग (जुलाई – अगस्त 2014); संपादकः अनुपम मिश्र। पत्रिका के नए अंक में आजादी के समय दिल्ली से दूर देश के विभिन्न मार्गों में यात्रा करते हुए गांधी क्या कह–सुन रहे थे, इसका विवरण दिया गया है। वीरेंद्र कुमार बरनवाल ने अपने लेख *कहानी सूत की* में चरखा और स्वदेशी की अवधारणा का बारीक विश्लेषण किया है। सुनीता नारायण ने शाही जलस्त्रोतों

के गंदे नाले में तब्दील हो जाने की ओर हमारा ध्यान खींचा है।

परिकथा (मई–जून 2014); संपादकः शंकर। द्वैमासिक पत्रिका परिकथा ने अपने पचासवें अंक तक का सफर पूरा कर लिया है। है तो यह पचासवाँ अंक, पर विशेषांक नहीं है। यह एक सामान्य अंक है। इस पत्रिका का मुख्य योगदान युवा रचनाशीलता को एक प्रभावी मंच उपलब्ध कराने का रहा है। पत्रिका ने अब तक सात नवलेखन अंक और नौ 'युवा यात्रा' अंक यानी कुल सोलह विशेषांक प्रकाशित किए है। संपादक को इस पत्रिका को संजोना चाहिए, गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए।

साहित्य अमृत (जून 2014); संयुक्त संपादकः प्रकाश मनु। पत्रिका के नए अंक में यात्रा–वृत्तांत पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस अंक में विष्णुचंद्र शर्मा, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रताप सहगल, संतोष श्रीवास्तव, सत्यकाम आदि के यात्रा–वृत्तांत है। हाल ही में दिवंगत विश्वविख्यात साहित्यकार मार्केज पर शैलेंद्र चौहान का लेख *मार्केज कोई देवदूत नही थे* उनके व्यक्तित्व और लेखन के विविध पक्षों को समझने में सहायक है। इसी के साथ रामदरश मिश्र के डायरी–अंश और लोकप्रिय कवि व गजलगो बलवीर सिंह 'रंग' पर प्रकाश मनु का विस्तृत आलेख भी पाठक यहाँ पढ़ सकते हैं।

सामयिक वार्ता (मई – 2014); संपादकः सुनील। वार्ता का मई अंक *क्रोमी कैपिटलिज्म* (याराना पूंजीवाद) पर है। यह अंक दिवंगत संपादक सुनीलजी ने ही तैयार कर दिया था। क्रोनी कैपिटलिज्म को लेकर कमलनयन काबरा, जितेंद्र भाटिया और राहुल वर्मन का लेख अत्यंत उल्लेखनीय है। यह अंक इस बात का प्रमाण है कि गंभीर अर्थशास्त्रीय विषयों को भी आम पाठकों के लिए सहज–सरल बनाकर प्रस्तुत किया जा सकता है। इसी पत्रिका का जुलाई 2014 अंक सुनील–स्मृति अंक है। इस अंक में सच्चिदानंद सिन्हा, मेधा पाटकर, योगेंद्र यादव, प्रेम सिंह, अरविंद मोहन, भारत डोगरा, अलका सरावगी, प्रेमपाल शर्मा, प्रियदर्शन आदि समाजवादी लेखकों ने सुनील को याद किया है।

साखी – 24; संपादक – सदानंद शाही; साखी, अक्तूबर 2014 का अंक महादेवी वर्मा विशेषांक है। इसमें विगत मई 2007 में बीएचयू में हुए एक सेमिनार के दौरान पढ़े गए पर्चों और महादेवी वर्मा पर लिखे गए महत्वपूर्ण लेखों को मिलाकर इस अंक को प्रस्तुत किया गया है। यहाँ महादेवी के पुनर्मूल्यांकन की सार्थक कोशिश हुई है।

मंतव्य – 1; संपादक – हरेप्रकाश उपाध्याय;

लखनऊ से हरे प्रकाश उपाध्याय के संपादन में इस नई साहित्यिक पत्रिका की शुरुआत हुई है। संपादक के इरादे नेक हैं, पर दिक्कत यह है कि प्रत्येक संपादक इसी तरह की बात कहता है, पर पत्रिका कुछ और कहने लगती है। इस अंक में तेजिंदर, भगवान दास मोरवाल, भालचंद्र जोशी और केशव के उपन्यासों के अंश दिए गए है। पत्रिका में विविधता तो है, पर गुणवत्ता के लिए संपादक को और मेहनत करनी होगी।

उद्भावना – 112 – 113; संपादक – अजेय कुमार;

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गदर पार्टी (1913–18) के योगदान को भूला नहीं जा सकता। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास लेखन में कांग्रेस के नायकों और अन्य क्रांतिकारियों की तुलना में इन्हें अपेक्षित महत्व नहीं मिला। गदर क्रांतिकारियों को महत्व इतिहास ने नहीं वरन् साहित्य ने दिया है। उन वीरों को सर्वप्रथम ससम्मान याद किया गया *चाँद* के फाँसी अंक में, गदर आंदोलन के शताब्दी वर्ष में प्रदीप सक्सेना दवारा लिखे गए चार लेखों को यहाँ एक साथ प्रस्तुत करने का काम उद्भावना ने बखूबी किया है।

सोच–विचार (जुलाई – 2014); संपादक नरेंद्र नाथ मिश्र; *सोच–विचार* के वर्तमान अंक में बनारस की विशेषता दिखती है, जो काफी वैविध्यपूर्ण है। इसी अंक में प्रेमचंद जी की कहानी संग्रह *सोजे वतन* के जब्त की कहानी भी पाठकों को पुन लेखन के दवारा पढ़ाई गई है।

अभिनव इमरोज (अगस्त 2014); संपादक – देवेंद्र कुमार बहल; पत्रिका का नया अंक *अमृतलाल नागर विशेषांक* है। लेकिन इतने बड़े लेखक पर विशेषांक निकालने के लिए जिस परिश्रम और दृष्टि की जरूरत है, उसका यहाँ अभाव दिखाई देता है। विशेषांक कुल मिलाकर पारिवारिक

आयोजन की तरह हो गया है। नागर जी के पारिवारिक सदस्यों में शरद नागर और अचला नागर द्वारा लिखा गया अंश जरूर साहित्यिक महत्व का है। इसी के साथ अवध नारायण मुद्‌गल और उद्‌भ्रांत के संस्मरण पठनीय हैं।

निकट (जुलाई–दिसंबर 2014); संपादक – कृष्ण बिहारी; दो विशेषांकों के बाद पत्रिका का यह सामान्य अंक है। उन दोनों विशेषांकों में नई और पुरानी पीढ़ी के कुल पचपन कहानीकारों की पहली कहानी को प्रकाशित किया गया था। इस सामान्य अंक में भी दो कहानीकारों – प्रेम भारद्‌वाज और विवेक मिश्र की पहली कहानी को प्रकाशित किया गया है। यह एक पठनीय अंक है।

जलवायु (फरवरी–जुलाई 2014); संपादक – अजय गौतम, लगभग डेढ़ वर्ष के अंतराल के बाद पत्रिका का नया अंक आया है। इस तरह की पत्रिकाओं की हिंदी में बहुत जरूरत है। यह पत्रिका पर्यावरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि संबंधी मुद्दों और समस्याओं को सामने लाने का काम कर रही है। इसके अतिरिक्त पत्रिका भाषा, साहित्य, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर भी अपनी नज़र रखती है। *पर्यावरण, मानव एवं रचनाकार* (प्रगति श्रीवास्तव) लेख महत्वपूर्ण है।

आधारशिला (जून–जुलाई 2014); संपादक – दिवाकर भट्ट, पत्रिका के इस अंक में वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर और फिल्मकार सागर सरहदी के साक्षात्कार हैं। गिरिराज जी से बातचीत उनके उपन्यास *पहला गिरमिटिया* पर केंद्रित है। अंक पठनीय है।

पुष्पगंधा (अगस्त–अक्तूबर 2014); संपादक–विकेश निझावन; पत्रिका का यह अंक रोहतक (हरियाणा) में जन्मे रंगकर्मी मंजुल भारद्‌वाज पर केंद्रित है, जिनके बारे में बताया गया है कि वे पिछले 28 वर्षों से देश भर में थिएटर को जनता के बीच ले जाने का बड़ा काम कर रहे हैं। अपने इस कार्य को उन्होंने *थिएटर ऑफ रेलेवेंस* का नाम दिया है। इस अंक में मंजुल भारद्‌वाज द्‌वारा लिखित और निर्देशित नाटक, उन पर समीक्षात्मक आलेख तथा उनके

नाट्य कर्म और दर्शन से परिचित कराते कुछ लेख दिए गए हैं।

सप्तवर्णी (जुलाई–दिसंबर 2014); संपादक –प्रदीप सिंह; पत्रिका के प्रवेशांक में *'चैनलों द्वारा अपसंस्कृति का आक्रमण और भारतीय नारी का उत्तरदायित्व* (कंचना सक्सेना), *'भोजपुरी लोकगीतों में नारी–जीवन* (परमानंद दूबे) और *'काव्य की रचना प्रक्रिया* (धीरेंद्र कुमार मिश्र) महत्वपूर्ण लेख हैं। ये तीनों लेख अपने–अपने विषय को संपूर्णता में पकड़ते हैं और कुछ नई जानकारियाँ भी देते हैं।

फिलहाल (अगस्त 2014); संपादक – प्रीति सिन्हा; पत्रिका हिंदी में वैचारिक उत्तेजना को बरकरार रखने की दिशा में लगातार प्रयासरत हैं और अपनी गंभीर बौद्धिक विषयवस्तु के लिए जानी जाती हैं। नए अंक में *बसपा का शीराजा क्यों बिखरा* (आनंद तेलतुंबड़े), *पूंजीपतियों के चौकीदारों का चुनाव* (राम प्रकाश अनंत), *क्यों सही थे मार्क्स* (टैटी इगलटन)' *एक दूसरे किस्म का मौसमी बदलाव* (अमित भादुड़ी) अत्यंत उल्लेखनीय लेख है। ये लेख हमें सोचने पर मजबूर करते हैं।

चौराहा (जुलाई–दिसंबर 2014); संपादक–अंजना वर्मा, अंक में मधुर नज्मी का लेख *विराट संवेदनाओं के गीतकार: नीरज* और कथाकार सूर्यबाला से अलका अग्रवाल की बातचीत पठनीय है।

भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश की पत्रिका विपाशा – 167, (संपादक – अरुण कुमार शर्मा) के अंक में यशपाल पर विशेष सामग्री दी गई है। यशपाल की कहानियों पर सुशील कुमार फुल्ल, उनके उपन्यासों पर हेमराज कौशिक और उनके साहित्य–संबंधी विचारों पर ब्रह्मदत्त शर्मा के लेख अपने–अपने विषय को संपूर्णता में समेटते हैं। आस्कर वाइल्ड की रचना *द नाइटिंगल एंड द रोज* का हिंदी अनुवाद भी पाठक यहाँ पढ़ सकते हैं।

अक्षर पर्व (रचना वार्षिकी, जून 2014); संपादक–सर्वमित्रा सुरजन; पत्रिका की रचना वार्षिकी को इस बार शेक्सपियर विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 2014 का वर्ष शेक्सपियर का चार सौ पचासवाँ जयंती वर्ष था। इसी के साथ शेक्सपियर की महानता का अंदाजा इस बात से लगाया

जा सकता है कि आज भी दुनिया भर के अध्येता उनकी रचनाओं की व्याख्या और विश्लेषण में संलग्न है।

उम्मीद (जुलाई–सितंबर 2014); संपादक – जितेंद्र श्रीवास्तव; बहसों और विवादों से बचाते हुए संपादक अपना पूरा ध्यान विषयवस्तु को समृद्ध करने पर लगा रहे हैं। इसी का सुपरिणाम है कि एक साफ–सुथरी साहित्यिक पत्रिका के तौर पर *उम्मीद* ने हिंदी पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। पत्रिका के इस तीसरे अंक में हिंदी के तीन बड़े साहित्यकारों मैनेजर पांडेय, अखिलेश और केदारनाथ सिंह पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मनित कवि केदारनाथ सिंह के रचना कर्म पर अरुण होता और जितेंद्र गुप्ता के विश्लेषणात्मक आलेखों को भी यहाँ पाठक पढ़ सकते हैं। साथ ही साथ कवि उमेश चौहान द्वारा केदारजी का विस्तृत साक्षात्कार भी यहाँ दिया गया है।

वर्तमान साहित्य (अगस्त–सितंबर 2014); संपादक–विभूति नारायण राय, अपने–अपने कार्यों से मुक्त हाने के बाद तीन लोगों ने मिलकर पिछले तीस वर्षों से निकल रही पत्रिका *वर्तमान साहित्य* का कायाकल्प करने की तैयारी कर ली है। संपादक हैं विभूति नारायण राय, भारत भारद्वाज कार्यकारी संपादक और रवींद्र कालिया सलाहकार संपादक। इस टीम को देखकर यह कहा जा सकता है कि पत्रिका न सिर्फ अपने पुराने महत्व को लौटाएगी, बल्कि कई मायनों में उससे भी आगे बढ़ेगी।

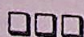
क्रमशः (अगस्त–2014); संपादकः शैलेंद्र चौहान; क्रमशः का यह अंक वरिष्ठ कवि रामकुमार कृषक पर केंद्रित है, अंक में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को संपूर्णता में समेटा गया है। इसी अंक में कृषक जी का *अभिजनवादी हिंदी काव्यालोचना* शीर्षक एक लेख है, जो अक्तूबर 1993 मे *अलाव* के संपादकीय रूप में छपा था। वे लिखते हैं कि – आकस्मिक नहीं कि एक ही केंद्र से उभरे सर्वेश्वर और रघुवीर सहाय में सहाय विशेष उल्लेखनीय हो उठते हैं अथवा कुमारेंद्र पारसनाथ सिंह, शलभ श्रीराम सिंह, कुमार विकल, गोरख पांडेय, आलोक धन्वा और वीरेन डंगवाल सरीखे

कवियों की अपेक्षा अरुण कमल, राजेश जोशी, विनोद कुमार शुक्ल, असद जैदी और देवी प्रसाद मिश्र आदि महत्त्वपूर्ण घोषित कर दिए जाते हैं।" कृषक जनवादी और मार्क्सवादी आलोचना को भी कठघरे में खड़ा करते हैं।

गगनांचलः प्रेमचंद विशेषांक (सितंबर–अक्तूबर, 2014) संपादक अरुण कुमार साहू। प्रेमचंद के व्यक्तित्व–कृतित्व व उनकी कहानियों और आलोचना को लेकर एक उम्दा अंक पाठकों के आगे प्रस्तुत किया गया है। कहानियों में मुंशी प्रेमचंद की *लाग–डांट*, डॉ. प्रीति की *तुम्हीं ने तो कहा था*, डॉ. सुधा शर्मा पुष्प की कहानी *असली दहेज* पठनीय है। कविताएँ कई हैं – पर इंद्रा रानी, ललित शेखर और कविता विकास की कविताएँ मर्म को छूती हैं। संस्मरणात्मक आलेख धरोहर लेखकों के द्वारा धरोहर रचना को धरोहर की तरह सजाने–संवारने की श्रमसाध्य प्रस्तुति है।

इसी पत्रिका के (नवंबर–दिसंबर 2014) अंक की विशेषता है – कथा, दर्शन, पर्यटन, लोक संस्कृति और कला तथा विज्ञान के साथ–साथ आलोचना के उम्दा शीर्षकों को पाठकों तक पहुँचाने की मेहनत का दिखना।

डॉ. मिथिलेश दीक्षित ने अपनी लेखनी से *हाइकु* कविता के विकास पर नज़र डाली है। निर्गुण संतों की वैश्विक कर्मठ संस्कृति एवं प्रेम–भक्ति को उजागर करता आलेख डॉ. शुभंकर बनर्जी के श्रम का मूल्यांकन है। रामवृक्ष बेनीपुरी को याद करता लेख *ग्रामीण कथा साहित्य के सारस्वत प्रतिमान* सीताराम पांडेय की कलमकारी है। भिखारी ठाकुर के अवदान को याद दिलाया है – धनंजय सिंह ने। सुभद्रा कुमारी चौहान की चकाचौंध करने वाली प्रखर तेजस्विता को पाठकों के सामने लाए हैं डॉ. दादूराम शर्मा। भगवती प्रसाद द्विवेदी की कहानी *हरा–भरा रेगिस्तान* पाठकों का सुख और दुख से परिचय करता है। कविताओं में – डॉ. मालिनी गौतम, अशोक आलोक, रजनी मोरवाल, अशोक 'अंजुम', अखिलेश आर्येंदु और डॉ. कैलाश गौतम को पढ़ने के बाद वास्तव में मज़ा आ गया।



19

हिंदी बालसाहित्य

डॉ. शकुंतला कालरा

वर्ष 2014 में हिंदी में लिखे गए प्राप्त बालसाहित्य के आधार पर यह विश्वास से कहा जा सकता है कि बालसाहित्य–सृजन का कार्य विभिन्न स्तरों पर और विशद स्तर पर हुआ है। पत्र–पत्रिकाओं में बालकविताएँ, बालकहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले, जीवनी, यात्रावृत्तांत, संस्मरण एवं ज्ञान–विज्ञान आदि सूचनात्मक साहित्य की हर वर्ष की भांति बच्चों के लिए उपयोगी सामग्री छपती रही है। नंदन, बालभारती, बालवाणी आदि पुरानी प्रतिष्ठित बालपत्रिकाओं के साथ–साथ बालवाटिका, बच्चों का देश, नन्हें सम्राट, समझ झरोखा, देवपुत्र, बालप्रहरी, अभिनव बालमन, बालप्रभा आदि पत्रिकाओं ने भी स्तरीय एवं मनोरंजक सामग्री के कारण बच्चों में लोकप्रियता प्राप्त की। पाठ्यक्रम की पुस्तकों के बोझ से दबे बच्चे इन पत्रिकाओं को बड़े चाव से पढ़ते हैं। बच्चों के लिए इन पत्रिकाओं की मांग निरंतर बढ़ रही है। हिंदी बालसाहित्य आज इन पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से फलीभूत हो रहा है। निश्चय ही बालसाहित्य के कोष की समृद्धि में पत्र–पत्रिकाओं की महती भूमिका है। इनके अतिरिक्त विविध विधाओं की अनेक पुस्तकें वर्ष 2014 में प्रकाशित हुई हैं। बालकविता, बालकहानी, बालनाटक, बालउपन्यास आदि पुरानी विधाओं के साथ–साथ नवीन विधाओं का भी विकास हुआ है। साथ ही नए–नए रचनाकार भी इस क्षेत्र में उतर रहे हैं। नवोदित प्रतिभाएँ भी उभरकर सामने आ रही हैं। कहा जा सकता है कि वर्ष 2014 का बालसाहित्य चकित कर देने वाली उपलब्धियों से भरपूर है। तीन–तीन पीढ़ियाँ एक साथ सक्रिय रही हैं। अनेक विलक्षण नई प्रतिभाओं ने भी अपनी शुभ उपस्थिति

दर्ज कराई है। इस तरह गंभीर प्रयास बालसाहित्य के उज्ज्वल भविष्य की दस्तक देते दिखाई देते हैं। आज बालसाहित्य बोधकथाओं, पौराणिक कथाओं, राजा–रानियों की कथाओं के घेरे को तोड़कर बहुत आगे निकल चुका है जहाँ संभावनाओं के द्वार उसका भव्य स्वागत कर रहे हैं।

वर्ष 2014 में कविता के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति हुई है। मौलिक एवं संपादित दोनों प्रकार के संकलन बाज़ार में आए हैं। कहानी के विषयों में भी विस्तार हुआ है। बालकों की समसामयिक समस्याओं को केंद्र में रखकर अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। हिंदी में बाल साहित्य किस्से–कहानियों, लोककथा, दृष्टांत कथा, बोधकथा के साथ कविता, बालगीत, शिशुगीत, लोरी आदि विविध रूपों में प्रचुर मात्रा में मिलता है। बाल नाटक, बाल उपन्यास का क्षेत्र भी पीछे नहीं रहा है। वैज्ञानिक जानकारी के रूप में भी पर्याप्त बालसाहित्य उपलब्ध है। 21वीं शती के दूसरे दशक में सभी विधाओं में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के माध्यम से मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक साहित्य की रचना हुई।

यहाँ मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि मेरे इस आलेख में केवल उन्हीं पुस्तकों की चर्चा हुई है जो मुझ तक पहुँच पाई हैं। ये पुस्तकें इस प्रकार हैं –

बालसाहित्य शोध एवं संवर्धन समिति द्वाराहाट, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित श्रीमती विमला जोशी का बालकविता संग्रह *मेरा भारत देश महान* उनका पहला संग्रह है। पुरातन विषयों पर आधारित कुछ कविताओं के साथ नए विषय भी समाहित हैं। परंपरा से हटकर बंदर को शाख–शाख पर कूद–कूद कर मेहनत से खाने वाला बताया है – *मैं सबको एक बात सिखाता/बिना काम के कुछ नहीं पाता/काम करो बैठो न खाली/मेहनतकश ही सब कुछ पाता।* इसी तरह 'फूल' में कवयित्री की कल्पना भी हटकर हैं – *जन्म हुआ या हुई विदाई/सबके मस्तक चढ़ते फूल/जग में ये सुगंध फैलाए/अपना दर्द छुपाते फूल।*

प्रतिष्ठित बालसाहित्यकार डॉ. उषा यादव की कहानियों की पुस्तक *दादी अम्मा का खजाना* प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली से आया है। इसमें पर्यावरण और बच्चों की समसामयिक समस्याओं से जुड़ी ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें लेखिका ने समस्याओं को उठाया ही नहीं, उनके समाधान भी दिए हैं। *पूर्णिमा की रात* मॉल संस्कृति के कुप्रभाव की कहानी है। बच्चों को मॉल संस्कृति चमत्कृत कर रही है। उनसे बच्चों को सावधान करती इस कहानी में लेखिका ने बच्चों को अप्रत्यक्ष रूप से यह संदेश दिया है कि बचत कितनी ज़रूरी है। *खूब उड़ाई दावत* में फास्ट फूड के नुकसान और घर के खाने के फायदे बताए गए हैं। *सपना सतरंगी* में बेटों से बढ़कर बेटियों की योग्यता को बताया गया है। वह हर क्षेत्र में बेटों से आगे निकल जाती हैं। इसकी कथानायिका भाई की किताबें पढ़कर आगे बढ़ जाती है और भाई पढ़ने की हर सुविधा प्राप्त करने पर भी असफल ही रहता है।

समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद, दिल्ली क्षेत्र से प्रकाशित प्रतिष्ठित कवि डॉ. मधुसूदन साहा का बालगीत संग्रह हवा के संग बच्चों के लिए वर्ष 2014 का सुंदर तोहफा है। डॉ. मधुसूदन साहा एक सुपरिचित रचनाकार हैं। *हवा के संग* उनकी पाँचवीं कृति है। एक कुशल कवि की भांति इनकी कविताएँ बालकों का मनोरंजन तो करती ही हैं, साथ ही उनके नैतिक विकास, चरित्र–निर्माण में भी सहायक हैं। ये कविताएँ मानवीय संवेदनाएँ जगाती हैं। सामाजिक मूल्यों को खेल–खेल में प्रस्थापित करती हैं। इसके छोटे–छोटे सरस गीत अपनी संप्रेषणीयता में अद्‌वितीय हैं। रुचिकर सामग्री के साथ छांदस रचनाओं के सुपरिचित हस्ताक्षर डॉ. मधुसूदन साहा की लयात्मक अभिव्यक्ति इन गीतों की विशिष्टता है। ये गीत बच्चों की रुचि के गीत हैं, उनके परिचित परिवेश के गीत हैं, इनमें उनके मन की बात है। पर्यावरण स्वच्छता के साथ राष्ट्रीय भावना की आकर्षक प्रस्तुति भी पाठकों को बाँधती है। पशु–पक्षियों के माध्यम से कवि ने भी बालपाठकों को जीवन के बहुमूल्य संदेश दिए हैं। परिवार के रिश्तों की मिठास तो देखते ही बनती है – *टॉफी से भी/ज्यादा मीठा/दादी जी का प्यार अनूठा/दादी जब बाहर*

से आती/गरमजलेबी निश्चय लाती/अपने हाथों तोड़–तोड़ कर/बड़े जतन से मुझे खिलाती। बच्चों के शब्द–भंडार के सरल शब्दों व सहज शैली में गुंथे गेयता से भरपूर प्रस्तुत संग्रह के गीत रहस्य–रोमांच, एक्शन, थ्रिल की ओर आकर्षित होती पीढ़ी के लिए निश्चय ही सार्थक, समीचीन और उपयोगी सिद्ध होंगे।

समन्वय प्रकाशन, गाजियाबाद, दिल्ली से ही प्रकाशित स्वर्णा साहा का बालगीत–संग्रह *सुहाना बचपन* कथ्य एवं शिल्प के स्तर पर पहला संग्रह है। इससे पूर्व कवयित्री की रचनाएँ नंदन, बालवाटिका, प्रगतिवार्ता, मानसमंथन, सत्यचक्र, अंगिकालोक आदि पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती आई हैं। विषय–वैविध्य है। कवयित्री ने बालपरिवेश के विविध क्षेत्रों – घर–परिवार, रिश्ते–नाते के साथ–साथ पशु–पक्षी, नदियाँ, सागर, पर्वत, चांद–सितारे आदि प्राकृतिक आकर्षणों को केंद्र में रखते हुए इन गीतों की रचना की है। कवयित्री अध्यापिका है अतः बालमनोविज्ञान से भली–भांति परिचित है। विविधतापूर्ण कथ्य की खूबसूरती को तुक, लय और छंद–विधान ने और खूबसूरत बना दिया है। मनोरंजन के साथ–साथ जीवन मूल्यों के प्रति आस्था जगाता है। *'आपस में मिलजुलकर जब भी/हम हैं कोई त्योहार मनाते/अंतस की सूखी डाली पर/अपनेपन का फूल उगाते।'*

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये कविताएँ बच्चों के मानसिक धरातल पर उतरकर लिखी गई हैं जिनमें उनकी सोच, उनके परिवेश, उनकी शरारतें, जिज्ञासाएँ और समझ उन्हीं की भाषा में गुंफित है। इसलिए बच्चे इन्हें चाव से पढ़ेंगे, गुनगुनाएंगे और भीतर ही भीतर ये उन्हें संस्कारी और सदाचारी भी बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

संजीव प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित महावीर रवाल्टा का उत्तराखंड की लोककथाओं पर आधारित बालनाटक–संग्रह *पोखू का घमंड* भी वर्ष 2014 में आया है। इसमें कुल चार नाटक हैं – रथ देवता, जीनू बगड़वाल, रेणुका, पोखू का घमंड। ये नाटक पाठनीय होने के साथ–साथ अभिनेयता के गुण से भी संपन्न हैं।

जाह्नवी प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित महावीर रवाल्टा की ही दूसरी पु तक *ढेला और पत्ता* हैं जिसमें रवाई क्षेत्र की कुल 18 लोककथाएँ हैं। इनमें कुछ के विषय पौराणिक हैं। सीधी, सरल भाषा में लिखी ये लोककथाएँ कथा–रस से पूर्ण है। बच्चे इन्हें पसंद करेंगे।

डॉ. परशुराम शुक्ल हिंदी बालसाहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकार हैं, विशेष रूप से सूचनात्मक बालसाहित्य लेखन में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। सूचनात्मक बालसाहित्य के अंतर्गत उनकी अनेक पुस्तकें आई हैं। उसी की अगली कड़ी के रूप में वर्ष 2014 में उनकी दो पुस्तकें मालविका प्रकाशन, इलाहाबाद से आई हैं। पहली पुस्तक *हमारे राजकीय वृक्ष और पुष्प* है जिसके अंतर्गत लेखक ने बच्चों को हर राज्य के वृक्ष और पुष्प की कविता के माध्यम से जानकारी दी है। भारत का राष्ट्रीय वृक्ष बरगद और राष्ट्रीय पुष्प कमल के साथ ही भारत के विभिन्न राज्यों एवं केंद्र–शासित प्रदेशों के वृक्षों के विषय में 20–20 पंक्तियों की लय ताल में निबद्ध कविताएँ लिखी हैं। इन वृक्षों के गुणों और इनकी उपयोगिता को भी स्पष्ट किया है, साथ ही इनके मूल निवास, उसकी उत्पत्ति के स्थान, अनुकूल जलवायु, ऊँचाई के साथ इनके औषधीय उपयोग की जानकारी भी दी है। दूसरी पुस्तक *हमारे राजकीय पशु और पक्षी* में राष्ट्रीय पशु बाघ और राष्ट्रीय पक्षी सहित सभी राज्यों के पशुओं की जानकारी दी गई है। यह पुस्तक बच्चों और किशोरों दोनों के लिए उपयोगी है। वन्य जीवों के क्षेत्र, आवास, संरचना, भोजन और जीवनचक्र आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक कविता के साथ चित्र भी हैं जिससे वन्य जीवों को समझने में सुविधा होगी।

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त दिविक रमेश बड़ों के साहित्य के जाने–माने वरिष्ठ, चर्चित एवं प्रतिष्ठित कवि–लेखक हैं। विशेष रूप से उनकी प्रतिष्ठा कवि के रूप में तो सिद्ध है ही, इसके साथ ही बालसाहित्य–सृजन और समीक्षा दोनों रूपों में उनका स्थान अग्रिम पंक्ति में माना गया है। बच्चों के लिए कविता, कहानी, नाटक आदि विविध विधाओं में उन्होंने लगभग 32 पुस्तकों की रचना की है। *बंदर मामा, समझदार हाथी*

समझदार चींटी वर्ष 2014 में प्रकाशित उनके दो नए काव्य–संकलन आए हैं। पहले संकलन 'बंदर मामा' में कुल 62 कविताएँ हैं और दूसरे संकलन 'समझदार हाथी समझदार चींटी' में 72 कविताएँ हैं। इसमें 3–4 पंक्तियों की नन्हीं–नन्हीं कविताएँ भी हैं तो दो पृष्ठों की लंबी कविताएँ भी। इनके अतिरिक्त कुछ पद्य कथाएँ भी हैं। इन संकलनों में हर आयु वर्ग की बाल कविताएँ हैं। कुछ शिशुओं के लिए और किशोरों के लिए भी कविताएँ हैं। बाल मनोविज्ञान से जुड़ी इन कविताओं में विषय की विविधता है। इसीलिए बच्चे इनका भरपूर आनंद लेंगे।

हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार प्रकाश मनु ने बड़ों के साथ–साथ बच्चों और किशोर पाठकों के लिए विविध विधाओं में विशेष रूप से कविता और कहानी में प्रचुर साहित्य की रचना की है। बच्चों के लिए उन्होंने ऐसी कहानियाँ लिखी हैं जिनके पात्रों से वे तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। इनमें परियाँ, बौने आदि मानवेतर पात्र भी हैं और नदी, सागर, चंदा, सूरज सहित संपूर्ण प्रकृति भी है जो उनकी सहचरी है। इन कहानियों को पढ़ते–पढ़ते वे इनमें लीन हो जाते हैं। ये उन्हें तानवमुक्त करती हैं। प्रकाश मनु के नवीनतम कहानी–संग्रह *गंगा दादी जिंदाबाद* में कुल 20 कहानियाँ हैं। रोचक और सरस कहानियों का यह संकलन अपने नए रूप और नए अंदाज़ के कारण बाल पाठकों को आकृष्ट करेगा। इन कहानियों में बच्चों की दुनिया का हर रंग, हर खुशबू है। उनकी शरारतों और नटखटपन से सजा उनका पूरा मनोजगत् है। इनमें हँसाते–रुलाते उनके सुख–दुख हैं। समाधान मांगती उनकी अनसुलझी समस्याएँ हैं तो कहीं उत्तर तलाशते अनगिनत प्रश्न हैं। यही वजह है कि प्रकाश जी की कहानियों का जादू बाल पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। इनका दूसरा कहानी संकलन *ईसप की कहानियाँ* डायमंड बुक्स से आया है। इसमें ईसप की 101 कहानियाँ हैं। कहानियों में आवश्यक कल्पना का सहारा लेते हुए भी कवि ने इनके मूल रूप को सुरक्षित रखा। ईसप ने पशु–पक्षियों की कहानियों के जरिए बड़ी–बड़ी बातें कहने का जो तरीका ढूँढा वह भारत में पहले से ही कथा–कहानी के रूप में मौजूद

था। शायद भारत की ये कहानियाँ ईसप तक पहुँची और नए रूप में ढल गई। ईसप ने इन कहानियों के जरिए गुलामी की जंजीरों को काटा और सारी दुनिया को आगे बढ़ने की राह दिखाई। मनु जी ने चरित्र–विन्यास, कथा–विन्यास के अनूठे अंदाज से इन्हें नाटकीय बनाने की कोशिश की है, इन्हें पढ़कर बड़े भी रस लेंगे। हिंदी में ईसप की ढेर–सी कहानियों को एक नए खूबसूरत कलेवर में पेश करने की यह पहली कोशिश है।

नेशनल बुक ट्रस्ट से भी प्रकाश मनु का एक कहानी–संकलन – *चुनिंदा बालकहानियाँ* शीर्षक से आया है। दस कहानियों के इस संकलन में कहानीकार की पूरी कथायात्रा का बिंब है। इसकी कहानियाँ हैं – *मास्टरजी, दोस्ती का हाथ, जमना दादी, आहा! रसगुल्ले, खिलौनों का मेला, डाक बाबू का प्यार, मुनमुनलाल ने बनाई घड़ी, झटपट सिंह, मिठाई लाल, हवा दीदी का सरकस आदि*।

कहना गौरतलब होगा कि सच्ची प्रतिभाएँ अपने को किसी एक विधा में आबद्ध कर संतुष्ट नहीं होतीं। प्रकाश मनु का बहुआयामी साहित्यिक कृतित्व इस बात का प्रमाण है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि बालसाहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से बालमनोभावों को अभिव्यक्ति दी है। बच्चों की अभिनय करने की प्रबल भूख को मनु जी के भीतर का बालक जानता है इसलिए उन्होंने बच्चों की रुचि, प्रवृत्ति और सुविधाओं को ध्यान में रखकर सीधी–सरल बालोपयोगी भाषा में बच्चों को भाने वाले, गुदगुदाने वाले, तनाव से मुक्त रखने वाले पाँच दर्जन से भी अधिक नाटक लिखे हैं। इस क्षेत्र की यह उनकी अत्यंत उल्लेखनीय उपलब्धि है। प्रभात प्रकाशन से उनका नवीनतम बाल नाटक–संग्रह आया है। प्रकाश मनु ने बड़ी सरलता, सहजता, सादगी के साथ बालोपयोगी भाषा में अपने कथानकों को गूंथा है। कहीं संदेश तत्व संप्रेषित भी किया है तो पूर्ण सजगता के साथ प्रच्छन्न रूप से। कुशल लेखक की तरह उसे कहीं मुखरित होने नहीं दिया। कथावस्तु अथवा पात्रों का चरित्र–विकास इस ढंग से किया है कि पाठकों को उसमें निहित विचारों को समझने में सहायता मिलती है। संकलन

41 HRD/16—21A

के विशिष्ट नाटक हैं–*पप्पू बन गया दादा जी, नाचो भालू, नाचो, कहानी नानी की, गुलगुलिया के बाबा।* इसी तरह संकलन के अन्य नाटक भी अपनी किसी विशिष्टता के कारण उल्लेखनीय हैं – *भुलक्कड़ राम, यारो मैं करम कल्ला नहीं हूँ, धमाल –पंपाल के जूते, अधकू ने किया कमाल, निट्ठलूपुर का राजा, झटपट सिंह फटफट सिंह* आदि नाटकों में पर्याप्त हास्य तत्व हैं तो *जानकीपुर की रामलीला* राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना से भरपूर है।

वैज्ञानिकों की जीवनियाँ पुस्तक भी डायमंड बुक्स से इसी वर्ष आई है जिसमें विश्वप्रसिद्ध भारत के 51 युगप्रवर्तक वैज्ञानिकों की जीवनियाँ हैं जिनमें मेघा तिथि, पतंजलि, शालीहुत्री, आर्यभट्ट, वराह मिहिर, जीवक, चरक, सुश्रुत , नागार्जुन, भास्कराचार्य, शांति स्वरूप भटनागर, होमी ज़हांगीर भाभा, विक्रम साराभाई आदि प्रमुख हैं।

डॉ. सुनीता मनु सुपरिचित बालकहानीकार हैं। अब तक इनके अनेक संकलन विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित हो चुके हैं। डायमंड बुक्स से प्रकाशित इनका नवीनतम कहानी–संग्रह *बच्चों की भावपूर्ण पारिवारिक कहानियाँ* भी वर्ष 2014 में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 41 कहानियाँ हैं जिनमें स्वयं कथा– लेखिका चुपके–चुपके आती है और फिर धीरे–धीरे बच्चे के मन में उतरने लगती है। इस संग्रह में सरल और सरस भाषा में लिखी अनेक सुंदर और भावपूर्ण कहानियाँ बच्चे पढ़ेंगे, जिनमें पारिवारिक संबंधों की कभी न भूलने वाली महक व्याप्त है। एक बार पढ़ने के बाद बच्चे उन्हें कभी भूल नही पाएँगे। इन कहानियों में कुछ विशिष्ट कहानियाँ हैं – *किसान की दुल्हन, सबसे छोटी बहू, सात गूंगी बेटियाँ, बड़ा सयाना बंदर बेटा, बुढ़िया की पोती, माँ की इच्छा, सोना और केसर, कौवे की बेटी, भूली दादी की बेटियाँ, मैं राजा का बेटा हूँ, तुम कहाँ हो मेरे लाल, तिंल तो पूरे हो गए मेरे बेटा, रानी की हँसी आदि।*

हिंदी साहित्य की विविध विधाओं गीत, गज़ल, दोहा, मुक्तक, कुंडलियाँ, व्यंग्य कहानी, बालसाहित्य में एक साथ लेखन करने वाले सिद्धहस्त साहित्यकार श्री घमंडीलाल अग्रवाल 1971 से निरंतर साहित्य–सृजन में रत

हैं। कहानी, उपन्यास, एकांकी विधा में भी उनके संकलन प्रकाशित हुए हैं। वर्ष 2014 *सीख सिखाते बाल एकांकी* लेखक का नवीनतम बालएकांकी–संग्रह आत्माराम प्रकाशन से आया है जिसमें कुल 14 एकांकी हैं। *दादाजी का सेवाभाव* पठनीय एकांकी हैं जिसमें पेड़–पौधों के पालन पोषण का संदेश निहित है। *मेरी आवाज सुनो* हास्य एकांकी है जिसमें लेखक ने बालकों के लिए संदेश दिया कि शेखी बघारने से जग हँसाई होती हैं। *देश की खातिर* देश प्रेम की एकांकी है तो *पर्यावरण घायल है* एकांकी में पर्यावरण के रख–रखाव को एकांकी का विषय बनाकर पर्यावरण का मानवीयकरण किया गया है जिसकी जल, वायु, भूमि, ध्वनि चारों भुजाएँ हैं और चारों घायल हैं। इसी तरह *शहर का रहस्य* एकांकी में संतुलित भोजन को महत्व दिया गया हैं। इन एकांकियों को स्कूलों में खेला जा सकता है।

आत्माराम प्रकाशक से ही कुछ अन्य पुस्तकें भी आई हैं– लक्ष्मी खन्ना सुमन का बालउपन्यास *सोनमई और सोनू* गंगा प्रसाद शर्मा का कहानी–संकलन, डॉ. पी. के. शर्मा का *देशप्रेम के गीत* भी इसी कड़ी में प्रकाशित पुस्तकें हैं।

बचपन एक समंदर के संपादक के रूप मे चर्चित कृष्ण *शलभ* जी की अपनी बालकविताओं के भी अनेक संकलन आए हैं। उनका नया संकलन *नाच चिरैया ता–ता थैया* भी वर्ष 2014 में आया है। उन्होंने बालकविता को नया रूप और नया रंग दिया है। ये कविताएँ उन्होंने बच्चों को सामने रखकर लिखी हैं जिसमें उनका अनुभव संचित है। वह किताबों में पढ़ी या मस्तिष्क की कोरी कल्पना नहीं हैं। वे अपने ह्रदय की स्निग्ध अनुभूतियाँ हैं। उनकी कविताओं का कथ्य उनका अनुभव–संसार हैं जिसमें बच्चे ही प्रमुख पात्र की भूमिका में हैं । संकलन की सभी कविताओं में बच्चों के आसपास का जीवन ही अंकित हैं। उनके सपने, उनके खिलौने, प्रकृति को देखने–समझने की दृष्टि, उनके विश्वास, उनके खेल ही उनके कथ्य का प्रमुख अंग हैं, जिसके केंद्र में कवि का स्वानुभूत जगत है। बालजीवन का परिचित संसार है।उनकी बाल कविताएँ बालक के ह्रदय का, उनकी भावनाओं का प्रतिबिंब है। वह बच्चों के स्वभाव को अभिव्यक्ति देने में पूर्ण समर्थ है। संकलन की हर रचना

बालकों के हृदय की हर परत को अंदर तक गुदगुदाती है। अर्थवत्ता और भावमयता के साथ–साथ लय और नाद का सौंदर्य उन्हें आकृष्ट करता है। बच्चे इन्हें गाएँगे, गुनगुनाएंगे और आनंद प्राप्त करेंगे।

काव्य को समग्र रूप में जीने वाले तथा नवगीत, गजल, खंडकाव्य जैसी विधाओं में भावाभिव्यक्ति करने वाले अश्वघोष जी ने बाल कविता में भी अपनी विशेष पहचान बनाई। उनकी कविता स्वयं ही एक हँसता–खिलखिलाता बचपन है जिसकी हर मुद्रा बालकों के साथ–साथ हर बालसाहित्य प्रेमी को भी मुग्ध करती हैं। वर्ष 2014 में इनका 51 बालकविताओं का सग्रह – *आगड़ बिल्ला बागड़ बिल्ला* आया है। विविध विषयों पर आधारित यह संकलन आत्माराम प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। इनमें संकलित कविताओं का रंग–रूप, आस्वाद और खुशबू का जादू बरबस ही अपनी ओर खींचता चला जाता है और फिर उनकी संवेदना और भाषा की कमनीयता के ताने–बाने में वह पाठक स्वयं ही बुनता चला जाता है।

श्रीमती किरण खोड़के का प्रथम बालकविता संग्रह *बचपन के रंग* बाल कल्याण एवं बालसाहित्य शोध केंद्र भोपाल से आया है जिसमें 21 बाल परिवेश की रोचक कविताएँ हैं। संग्रह की हर कविता में बच्चों की उपस्थिति है इसीलिए यह बच्चों को पसंद आएगा।

निर्मला सिंह कथासाहित्य की जानी–मानी लेखिका हैं। बड़ों के साथ इन्होंने बच्चों के लिए भी गद्य और पद्य दोनों में रचनाएँ दी हैं। बड़ों के उपन्यासों की चर्चित लेखिका निर्मला सिंह ने बच्चों के लिए तीन उपन्यास लिखे हैं– *रुको नहीं कुसुम*, *मम्मी–पापा प्रोमिस करो* के बाद *चलो चलें गाँव की ओर* लेखिका का वर्ष 2014 में प्रकाशित बालउपन्यास है। इसका कथानक बच्चों के आस–पास का है। उनके अपने माहौल और परिवेश का है। बालकों की सहज भाषा, शैली, प्रतीक और उनके मुहावरों में भी उनकी संवेदनाओं को गुंजाता हुआ यह उपन्यास बालमनोविज्ञान पर आधारित है। बालकों और किशोरों की मानसिकता के परत–दर–परत को खोलता है। इसमें कथानायिका मीता के संघर्ष और उसके पुरुषार्थ की गाथा है जो

किसी भी समाज के लिए आदर्श है। गाँव के स्कूल से पढ़कर आगे डॉक्टरी की परीक्षा में सफल होती है। इसमें लेखिका ने इस बात पर जोर दिया है कि बच्चा चाहे गाँव के स्कूल का हो या शहर का, यदि उसमें कुछ बनने की इच्छा है तो वह अपने मिशन में जरूर सफल होता है। नगर की चकाचौंध भरा वातावरण जहाँ आज सबको आकृष्ट कर रहा है और लोग गाँव छोड़–छोड़कर पैसे के लिए नगरों की ओर दौड़ रहे हैं क्योंकि वहाँ सुख–सुविधा है, ऐशो–आराम है। किंतु मीता गाँव में रहकर ही गाँव के रोगियों की सेवा करना चाहती है। निश्चय ही उसका ये सेवाभाव प्रशंसनीय है।

वर्ष 2014 में विमला भंडारी की *किस हाल में मिलोगे दोस्त* नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित 6 से 8 वर्ष तक के बच्चों के लिए मल्टी कलर की अत्यंत सुंदर और आकर्षक पुस्तक आई है जिसमें रफ और मटमैले कागज़ का मानवीकरण करते हुए उन्हें दो दोस्त के रूप में चित्रित किया है जिन्हें एक व्यापारी खरीदता है और वे दोनों अपनी–अपनी अलग उपयोगिता के कारण बिछुड़ जाते हैं। एक अखबार के रूप में और दूसरा पुस्तक के रूप में प्रयुक्त होने लगता है। दोनों कागज़ों की अपनी–अपनी उपयोगिता को रेखांकित करती यह पुस्तक बच्चों को पसंद आएगी।

बालकहानियों के माध्यम से बच्चों को प्रेरणा एवं संदेश प्रदान करता एक संग्रह पवित्रा अग्रवाल का अयन प्रकाशन, नई दिल्ली *चिड़िया मैं बन जाऊँ* आया है। *फूलों से प्यार* के बाद यह उनका दूसरा संग्रह हैं। बालमनोविज्ञान और बालपरिवेश पर आधारित संग्रह की सभी 25 कहानियाँ अपने विषय वैविध्य के कारण बच्चों को पसंद आएंगी। कहानियाँ रोचक, प्रेरक एवं उद्‌देश्य–प्रधान हैं। संग्रह की कुछ विशिष्ट कहानियाँ हैं – *थोड़ी–सी सूझबूझ, पतंग लूटने का मज़ा, सवाल सुरक्षा का, जी का जंजाल, समाधान, कपड़े की थैली, फौजी का बेटा* आदि।

बच्चों और बड़ों के लिए समान रूप से लिखने वाले संजीव ठाकुर की प्रखर प्रकाशन, दिल्ली से *कबूतरी आंटी* 15 बालकहानियों का संग्रह आया

है। मनोरंजन और संदेश दोनों के मणिकांचनयोग से लिखी इसकी कहानियाँ ग्रामीण और शहरी परिवेश की कहानियाँ हैं। *दो दोस्तों की कहानी, हमें नहीं जाना, मिट्ठू, रूठनदास, घिर गया बंटा, डरपोक रामदेव काका, राखी नहीं बाँधूंगी, जालिम सिंह, चुन्नू–मुन्नू का स्कूल, सुबू भी खेलेगी होली, संगीत की धुन, जादूगर, नेहा को इम्तहान से डर नहीं लगता, कबूतरी आंटी* आदि कहानियाँ अपने जिज्ञासा ओर कुतुहल के गुण से बच्चों को बरबस बांध लेती हैं।

डॉ. देवसरे द्वारा संपादित *प्रतिनिधि हिंदी बालनाट्य* साहित्य अकादमी, दिल्ली का वर्ष 2014 का बच्चों को दिया खूबसूरत तोहफा हैं। डॉ. देवसरे ने हिंदी के लगभग सभी प्रतिष्ठित नाटककारों को इसमें सम्मिलित किया है। इसमें उन्होंने नाटकों के विकास–क्रम को ध्यान में रखते हुए 40 नाटककारों के नाटकों को सम्मिलित किया है। यह संचयन बालनाटकों की कमी को पूरा करेगा। इसमें संकलित कुछ नाटक हैं – *भूख हड़ताल* (आनंद प्रकाश जैन), *क्या समझे* (विनोद रस्तोगी), *रिहर्सल* (विष्णु प्रभाकर), *राखी का मूल्य* (हरिकृष्ण प्रेमी), *अप्सरा का तोता* (रेखा जैन), *झूठ का दान* (देवराज दिनेश), *छींक* (राम कुमार वर्मा), *सिद्धार्थ का गृहत्याग* (नरेश मेहता), *एक दिन का हेडमास्टर* (हसन जमाल), *नाटक से पहले* (मनोहर वर्मा), *नाटक का अंत* (विभा देवसरे), *ताऊ इमरती लाल क्रांतिकारी* (के.पी. सक्सेना), *दोस्ती* (कमलेश्वर), *हिरण्य कश्यप मर्डर केस* (श्री कृष्ण), *कहीं देर न हो जाए* (हरिकृष्ण देवसरे) आदि अभिनेयता के गुण से संपन्न संकलन के सभी नाटक बच्चों की पसंद के हैं।

जनवाणी दिल्ली से डॉ.. रोहिताश्व अस्थाना के संपादन में '100 श्रेष्ठ बालएकांकी नाटक' पाँच खंडों में आया है। इनमें से कुछ प्रमुख नाटककार हैं– श्रीप्रसाद, चक्रधर नलिन, घमंडीलाल अग्रवाल, रोहिताश्व अस्थाना, भगवती प्रसाद द्विवेदी, नीलम राकेश, कल्पनाथ सिंह, आनंद प्रकाश जैन, विनोद रस्तोगी, बानो सरताज आदि। नाटक साहित्य के क्षेत्र में यह एक महत्त्वपूर्ण सराहनीय प्रयास है, जिसका हिंदी बालसाहित्य में स्वागत होगा।

गीत, गजल की दुनिया के चाचत हस्ताक्षर बालस्वरूप राही जी ने काव्य–यात्रा का एक लंबा सफर तय किया है। राही जी बालसाहित्य के भी दिग्गज कवि हैं जिनकी कविताएँ कई पीढ़ियों से बच्चों को रिझाती आई हैं। कथ्य के अनूठेपन और नदी सरीखी लय के साथ बहती उनकी कविताओं में बाल कविता का समूचा परिदृश्य ही बदल गया है। इन कविताओं का जादुई सम्मोहन बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी प्रभावित करता हैं। किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली से उनकी संपूर्ण बालकविताओं का एक संग्रह *'बालस्वरूप राही : संपूर्ण कविताएँ* शीर्षक से आया है। संग्रह की कुछ विशिष्ट कविताएँ हैं– *स्कूल बैग, छक्का, नहीं किसी से डरते हम, कार, मोटूमल की तोंद, लालबहादुर शास्त्री, मिट्ठूराम, बच्चे और बड़े, सूरज का रथ* आदि। ये कविताएँ बच्चों की मानसिक भूमि से गुजरते हुए लिखी गई हैं। जो कवि स्वयं बच्चों की दुनिया में पहुँच जाता है वही इतनी सुंदर बालकविताएँ रच सकता है। छंदोबद्ध गेयता के गुण से भरपूर इन कविताओं को बच्चे गुनगुनाएंगे और आनंदित होंगे।

किताबघर प्रकाशन से ही डॉ. शेरजंग गर्ग का कविता –संग्रह भी आया है– *शेरजंग गर्ग : संपूर्ण बालकविताएँ*। डॉ. शेरजंग गर्ग ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने बदलते समय और बच्चे के मन, सपने और उनकी शरारतों से जुड़े बालगीत लिखे हैं। दर्जन भर से ऊपर उनकी बाल पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। समय–समय पर लिखे उनके संपूर्ण गीतों का एक ऐसा गुलदस्ता तैयार किया गया हैं जिसने हिंदी बालसाहित्य के अध्ययन एवं उसे समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन कविताओं में कवि की पूरी बालकविता–यात्रा समाहित है। कवि की चालीस साल की लंबी यात्रा में लिखी कविताएँ बच्चों की भोली–भाली, लुभावनी और रोमांचकारी दुनिया का अहसास कराती हैं। संकलन में अनेक मानक शिशुगीत और आदर्श कही जाने वाली बालकविताएँ हैं जिन्हें बालपाठकों के साथ–साथ हिंदी बालसाहित्य के आलोचक भी रुचि से पढ़ेंगे और मुग्ध होंगे। संकलन में कुल 160 कविताएँ है जिनमें कुछ विशिष्ट शिशुगीत और आदर्श बालकविताएँ, बालगीत इस प्रकार हैं – *गाय,*

दादी, अम्मा, गुड़िया, चिड़िया, पवनचक्की, चूहा बिल्ली, मुन्ने राजा, राजा रानी, शिकारी राजू, टीचर रोज़ी मेरा घोड़ा। संग्रह में कुछ सरस और लंबी कविताएँ भी हैं जिन्हें बच्चे सस्वर गाकर प्रसन्न होते हैं– *खेल–खेल में आफत आई, खिड़की, नए साल का गीत, शरारत का मौसम, यदि पेड़ों पर उगते पैसे, तीनों बंदर महाधुरंधर* आदि कुछ ऐसी ही अनोखे अंदाज की कविताएँ हैं।

शरारा प्रकाशन, नई दिल्ली से भी कुछ पुस्तकें इस वर्ष आई हैं। रेनू चौहान की *बारहसिंगा की कहानी* कथात्मक गीत–संग्रह हैं जिसमें 14 पद्य कथाएँ हैं जो पंचतंत्र तथा जातक कथाओं पर आधारित हैं- चालाक बगुला, बंदर और मगरमच्छ, बातूनी कछुआ, प्यासा कौआ, लोमड़ी और सारस की दोस्ती आदि। रेनू चौहान की ही दूसरी पुस्तक *चांद और चिंटू* कहानी संग्रह भी वर्ष 2014 में आया है। इसमें 7 कहानियाँ हैं– *नीली पतंग, चांद और चिंटू, ससुराल में शेखू* आदि। छोटी–छोटी कथाओं के माध्यम से बच्चे कल्पनाशीलता का एक नया संसार रचते हैं। ये कहानियाँ मनोरंजन ही मनोरंजन में आसपास के सराकारों को बच्चों से जोड़ती हैं। शालीन तरीके से छोटे–छोटे सद्गुणों को बच्चों में अनायास ही भरती जाती है।

शरारा प्रकाशन, नई दिल्ली से ही प्रकाशित *पंजाब की लोककथाएँ* द्रोणवीर कोहली का कहानी संग्रह आया है जिसमें पंजाब की संस्कृति से जुड़ी 9 लोककथाएँ हैं। *ठूठी का ब्याह* अत्यंत मज़ेदार लोककथा है।

समाज की बौनी मान्यता, ज़हरीले अंधविश्वास और आज की वेदना एवं मुश्किलों के बोझ से पिघलते जीवन के प्रति विद्रोही स्वर लिए रचनाकार आनंद विश्वास के डायमंड बुक्स दिल्ली से दो बाल उपन्यास भी वर्ष 2014 में आए हैं– *पर–कटी पाखी* और *देवम*। *पर–कटी पाखी* में लेखक ने माता–पिता को बालक के दो पंख माना हैं, जिनसे वे बुलंदियों की ऊँची से ऊँची उड़ान भर सकते हैं। वे उन्हें अदम्य शक्ति, आत्मविश्वास से लबालब बुलंद हौसला देते हैं। किंतु दुर्भाग्य से पाखी के पिता की मृत्यु हो जाती हैं। पर–कटी पाखी इस बालउपन्यास की मुख्य पात्र है। उपन्यास की हर घटना पाखी के इर्द–गिर्द ही घूमती हैं। पाखी के पिता सीबीआई अफसर भास्कर

भट्ट जी की भ्रष्टाचारी और असामाजिक तत्वों के द्वारा हत्या करा दी जाती हैं। पाखी किस प्रकार से समाज और कानून की व्यवस्था से लड़कर उन्हें दंडित कराती है। एक दिन पाखी अपने घर की छत पर एक परकटी खून से लथपथ घायल चिड़िया को देखती हैं। उस चिड़िया में पाखी को अपना ही प्रतिबिंब दिखाई देता है। संयोगवश नाम भी दोनों का एक ही था– पाखी।

आनंद विश्वास का दूसरा बालउपन्यास *देवम* भी डायमंड बुक्स से आया है। इस उपन्यास में देवम घटना का मुख्य पात्र है। उसी के इर्द–गिर्द हर घटना घूमती है। समाज में व्याप्त असंतोष के प्रति देवम के मन में आक्रोश है और वह उसे सुधारने का प्रयास करता है। इस कार्य में माँ का सहयोग उसे हर कदम पर प्राप्त होता है। लेखक के अनुसार माँ एक शक्ति है, प्रेरणा है, बालक की हर समस्या का समाधान भी है। वह शुभचिंतक भी है और सही दिशा दिखाने वाली पदप्रदर्शक भी।

सुकीर्ति भटनागर हिंदी बालसाहित्य की जानी–मानी लेखिका हैं जिन्होंने गद्य और पद्य में समान रूप से लिखा है और खूब लिखा है। अब तक उनके कई कहानी–संग्रह, कविता–संग्रह आ चुके हैं। बाल उपन्यास *अमरो* तो उनका अत्यंत चर्चित उपन्यास हैं। इधर वर्ष 2014 में भी उनकी दो पुस्तकें अयन प्रकाशन से आई हैं। 6 कहानियों का एक संग्रह – *बंदर पार्टी* शीर्षक से आया है। ये कहानियाँ हैं– *बंदर, पार्टी, बीज, दादी के दांत, मानसिक संतुलन, पछतावा, सच्ची मित्रता*। ये कहानियाँ चुपके–चुपके, खेल–खेल में बच्चों में संस्कार रोपती हैं। आज बच्चे कंप्यूटर, टी.वी. और विडियो गेम आदि में अपने को इतना व्यस्त कर लेते हैं कि वह न केवल प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं वरन् मित्रों और संबंधियों के बीच कुछ समय बैठकर संवाद भी नहीं कर पा रहे हैं। संवाद का माध्यम मोबाइल रह गया है। बच्चे सरल, सहज और भोले ही नहीं वरन् संवेदनशील भी हैं। अभिभावकों को चाहिए कि वे उन्हें डांट–डपट अथवा कठोर अनुशासन में रखने की अपेक्षा उनके हृदय तक पहुँचें, उन्हें मीडिया पर न छोड़ें, उनके साथ स्वयं

सीधा संवाद स्थापित करें। उनके मनोविज्ञान को समझते हुए उनके स्वाभिमान को बनाए रखें। माता--पिता का कर्तव्य है कि उनका आज के परिवेश के हिसाब से लालन--पालन करें। पहले बच्चे बड़ों द्वारा सीख लेते थे परंतु आज खुद किताबों के माध्यम से वे सीखते हैं इसलिए आवश्यकता है कि आज उन्हें अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए दें।

सुकीर्ति भटनागर का कविता–संग्रह *लोरी मुझे सुना दो माँ* भी अयन प्रकाशन से इसी वर्ष आया है जिसमें बालमनोभावों को अभिव्यक्ति देती कुल पच्चीस कविताएँ हैं। लय, ताल में निबद्ध ये कविताएँ बच्चों के आसपास की कविताएँ हैं जिन्हें बच्चे चाव से पढ़ेंगे।

पंकज चतुर्वेदी हिंदी बालसाहित्य के ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने बच्चों के मानसिक धरातल पर उतर कर लिखा है। अब तक उनकी दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हों चुकी हैं। वह पिछले कई वर्षो से निरंतर लिख रहें हैं और नए और अनूठे अंदाज में लिख रहे हैं। *बेर का पेड़* भारत ज्ञान–विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित उनकी कहानी की पुस्तक हैं। 16 पृष्ठों की यह पुस्तक 8 साल तक के बच्चों के लिए हैं। इस कहानी में लेखक ने पेड़ों के संरक्षण के संदेश को सामने रखते हुए इस बात पर जोर दिया है कि पेड़ पशु–पक्षियों के साथ मनुष्यों के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। बकरी, गिलहरी, चिड़िया और मनुष्य सबके लिए पेड़ की अपनी उपयोगिता है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह पेड़ों का संरक्षण करे और प्रकृति–प्रदत्त उपहारों का स्वागत करे, तभी वह इस पृथ्वी पर अपने अस्तित्व की रक्षा कर पाएगा।

बालशिक्षा पुस्तक संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित राजीव सक्सेना के उपन्यास *रोबोसिटी* और *शालीन की टाइम मशीन* भी वर्ष 2014 में आए हैं जिसमें रोबोट और टाइम मशीन से जुड़ी बच्चों के लिए विज्ञानपरक कहानी है।

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त अनेक बालपत्रिकाएँ भी बालसाहित्य के उन्नयन में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। आज नंदन, बालवाणी, बालभारती, बालवाटिका, बालप्रहरी, देवपुत्र, अभिनव बालमन, बालप्रभा, अपना देश,

अपना बचपन, समझ झरोखा, स्नेह आदि अनेक पत्रिकाओं का बालसाहित्य के समर्थन में महत्वपूर्ण योगदान है। इनके माध्यम से विभिन्न विधाओं में हो रहे रचनात्मक लेखन की बानगी देखने को मिलती है। इनमें से कुछ पत्रिकाएँ– बालप्रहरी, देवपुत्र, अभिनव बालमन बच्चों की लिखी कविताओं को भी प्रकाशित करती हैं। निश्चय ही अपनी रचना को पढ़कर बच्चे प्रोत्साहित होते हैं और उनकी सृजन को बल मिलता है। कुछ पत्रिकाएँ नवंबर का पूरा अंक बालविशेषांक के रूप में प्रकाशित करती हैं और कुछ पत्रिकाओं में आंशिक रूप से अतिरिक्त सामग्री बालसाहित्य से जुड़ी होती है। वर्ष 2014 में *साक्षात्कार* पत्रिका का नवंबर विशेषांक बालविशेषांक था जिसमें कहानी, कविता के साथ बालस्वरूप राही जी का डॉ. शकुंतला कालरा के साथ एक लंबा साक्षात्कार था जिसमें बालकविता और बालगीत के अंतर को स्पष्ट करते हुए उनके स्वरूप को बड़ी बारीकी के साथ स्पष्ट किया गया है। इसी संकलन में राही जी की अनेक कविताएँ हैं जो बालकों के साथ बड़ों को भी आकृष्ट करती हैं। प्रकाशन विभाग से निकलने वाली पत्रिका *आजकल* तथा *नया ज्ञानोदय* में भी बालसाहित्य की विशेष सामग्री प्रकाशित हुई है।

बालसाहित्य सृजन के साथ–साथ आलोचना के क्षेत्र में भी पर्याप्त कार्य हुआ है। सृजन और समीक्षा दोनों क्षेत्रों में बालसाहित्य की प्रगति संतोषजनक है। विभिन्न पत्रिकाओं में बालसाहित्य से जुड़े अनेक आलेख प्रकाशित हुए हैं। इनके अतिरिक्त पुस्तक रूप में भी आलोचनापरक बालसाहित्य उपलब्ध होता हैं। बड़ों और बच्चों के लिए समान रूप से लिखने वाली प्रो. उषा यादव और राजकिशोर सिंह की पुस्तक *हिंदी बालसाहित्य और बालविमर्श* सामयिक प्रकाशक, नई दिल्ली से आई हैं। दो खंडों में विभक्त कुल 32 आलेखों में बालसाहित्य और बाल विमर्श से जुड़े विविध प्रश्नों और जिज्ञासाओं का समाधान है। निश्चय ही इसका साहित्य–जगत् में स्वागत होगा।

डॉ. शकुंतला कालरा की पुस्तक *हिंदी बालसाहित्य विचार और चिंतन* बालसाहित्य विषयक, शोधपरक एवं आलोचनात्मक आलेखों का संकलन है

जो वर्ष 2014 में नमन प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। इसमें 12 मौलिक निबंध हैं। पुस्तक लेखिका के स्वतंत्र और निष्पक्ष चिंतन का परिणाम है। सभी आलेख पठनीय, ज्ञानवर्धक हैं। शकुंतला कालरा के संपादन में बालसाहित्य विषयक आलेखों का एक संकलन *हिंदी बालसाहित्य विधा– विवेचन* के रूप में नमन प्रकाशन से ही प्रकाशित हुआ है जिसमें विविध विधाओं के 36 निबंध हैं। डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, डॉ. राष्ट्रबंधु, डॉ. श्रीप्रसाद, डॉ. प्रकाशमनु, प्रो. उषा यादव, डॉ. राजकिशोर सिंह, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, डॉ. सुरेंद्र विक्रम, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', कृष्ण शलभ, रमेश तैलंग, सूर्यकुमार पांडेय, डॉ. अनिल शर्मा, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. हूंदराज बलवाणी, डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी, डॉ. माया यादव, डॉ. कामना सिंह, भालचंद्र सेठिया आदि के आधिकारिक आलेख संकलित हैं। 667 पृष्ठों का यह संपादित बृहत् ग्रंथ बालसाहित्य के विविध पक्षों को निरूपित करता है।

अंखिलेश श्रीवास्तव चमन बालसाहित्य सृजन और आलोचना दोनों के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनके आलेख समय–समय पर छपते रहते हैं। बालसाहित्य से जुड़े इन्हीं आलेखों का संकलन पुस्तक रूप में वर्ष 2014 में विकल्प प्रकाशन, दिल्ली द्वारा आया हैं। *बच्चे, बचपन और बालसाहित्य* शीर्षक की इस पुस्तक के कुछ लेख हैं– *बच्चे और हम, कैसा हो बच्चों का साहित्य, बालसाहित्य के विकास में अवरोधक तत्व, बालसाहित्य की काव्य–परंपरा, बालसाहित्य सवाल मान्यता का* आदि।

बालकवि, कहानीकार, उपन्यासकार प्रकाश मनु साहित्यकार के साथ–साथ इतिहास लेखक भी हैं। उनके विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में बालसाहित्य के इतिहास से जुड़े अनेक इतिहासपरक आलेख समय–समय पर प्रकाशित हुए हैं जिनका संकलन वर्ष 2014 में कृतिका प्रकाशन (इंद्रप्रस्थ प्रकाशन) से *हिंदी बाल साहित्य चुनौतियाँ और संभावनाएँ* आया है। हर विधा पर और उसके हर पहलू पर विस्तार से चर्चा की हैं। इसमें कुल 11 लंबे आलेख हैं। 11वाँ आलेख श्याम सुशील के साथ साक्षात्कार के रूप में है

जिसमें प्रकाश मनु ने बच्चों की दुनिया को एक तरह की जादुई दुनिया कहा है। इसके कुछ महत्वपूर्ण आलेख हैं– *हिंदी बालसाहित्य मेरे कुछ नोट्स, बालकविता अभिव्यक्ति के नए रंग* और छवियाँ *रंग–बिरंगे खिलौने की तरह हैं, नटखट शिशु गीत, आज की बालकहानी नए प्रयोग और अंदाज, बालउपन्यास: संभावनाएँ अभी हैं, बच्चों के जासूसी उपन्यासों का रहस्य भरा संसार, बालनाटक सौ वर्षों का सफर, बच्चों के लिए विज्ञान–लेखन की शताब्दी यात्रा* आदि।

वर्ष 2014 में हिंदी में लिखे गए अधिकांश बालसाहित्य का सर्वेक्षण करने पर ज्ञात होता है कि विभिन्न वय के बच्चों के लिए साहित्य–सृजन का कार्य विभिन्न स्तरों पर हुआ है। कविता, कहानी के अतिरिक्त हिंदी में बाल नाटक एवं एकांकी विधा को आज मंचन की पर्याप्त सुविधाएँ प्राप्त होने के कारण इसकी प्रगति हुई हैं। वर्ष 2014 में ऐसे अनेक नाटक लिखे गए जिनमें कौतूहल, कल्पनाशीलता, मनोविज्ञान की बारीकियाँ एवं मनोरंजन की भरपूर सामग्री है। कहानी और कविता की तुलना में यद्यपि उपन्यास कम लिखे जाते हैं किंतु फिर भी अनेक उपन्यास इस दशक की उपलब्धि हैं। बच्चे वीरतापूर्ण एवं साहसिक कार्यों से संबद्ध अथवा जासूसी उपन्यासों में अधिक रुचि लेते है। लेखकों द्वारा ऐसे विषयों के अनेक उपन्यास बाजार में आ चुके हैं। जीवनी साहित्य भी पर्याप्त लिखा जा रहा है। बच्चों के चरित्र– निर्माण एवं उनमें सद्गुणों के विकास करने के उद्देश्य से साहित्यकारों ने समय–समय पर ऐतिहासिक पौराणिक चरित्रों एवं महापुरुषों के प्रेरक जीवनी–साहित्य प्रस्तुत किया है।

वर्ष 2014 का समस्त बालसाहित्य विषय और प्रस्तुति की उत्कृष्टता के साथ–साथ सुंदर छपाई और आकर्षक आवरण से सजी अनेक स्तरीय पुस्तकों का भंडार है जो मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक है। गुणवत्ता, सहजता और मौलिकता आदि विशेषताओं से युक्त ये पुस्तकें निश्चय ही बच्चों में लोकप्रिय बनने की सारी खूबियाँ रखती हैं। इन पुस्तकों में बच्चों की पसंद की सामग्री है। यथार्थ और फंतासी है। आधुनिकता और परंपरा है। ज्ञान और मनोरंजन है।

प्रस्तुत सर्वेक्षण को सारांश में यदि समेटा जाए तो कहा जाएगा कि इक्कीसवीं सदी के इस दशक में बालसाहित्य का रूप–रंग क्रमशः निखरा है। परिणाम और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से बालसाहित्य की विपुलता के विषय में दो राय नहीं हो सकतीं। स्थान की सीमा के कारण कुछ पुस्तकों का ही परिचय दिया जा सका है और कुछ पुस्तकों का नाम मात्र दिया गया है। मेरे अध्ययन की सीमा में जो पुस्तकें आई हैं इसमें उन्हीं का ही उल्लेख हुआ हैं। जिनका उल्लेख इस आलेख में नहीं हो पाया हैं वे सहृदय लेखक मुझे इसके लिए क्षमा करेंगे।



20

हिंदी विज्ञान लेखन

डॉ. शिवगोपाल मिश्र,

बलराम यादव

हिंदी मे विज्ञान लेखन की दृष्टि से वर्ष 2013–14 बहुत ही रचनात्मक एवं बहुआयामी रहा। नए एवं पुराने विज्ञान लेखकों, विज्ञान संचारकों एवं वैज्ञानिकों की स्वास्थ्य, अंतरिक्ष, ऊर्जा, पर्यावरण, वैज्ञानिकों के जीवन एवं बाल विज्ञान साहित्य विषयक रचनाएँ प्रकाशित हुईं। कुछ पुरानी विज्ञान पत्रिकाओं के अलावा कुछ नई पत्रिकाएँ भी प्रकाश में आई।

इस अवधि में विज्ञान परिषद्, प्रयाग की शताब्दी धूमधाम से मनाई गई। देश–भर में संगोष्ठियाँ तथा सेमिनार आयोजित हुए, अनेक विज्ञान लेखक सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए। इस अवधि में विज्ञान के कुछ लेखकों के निधन भी हुए।

ज्ञानपिपासु पाठकों की सुविधा की दृष्टि से 2013–14 की समीक्षा को निम्नांकित खंडों में प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. प्रकाशित पुस्तकें
2. बाल साहित्य
3. विज्ञान पत्रिकाएँ
4. वैज्ञानिक संगोष्ठियाँ / सेमिनार / व्याख्यान
5. वैज्ञानिक सम्मान / पुरस्कार
6. निधन

1. प्रकाशित पुस्तकें

वर्ष 2013–14 में ऊर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान, पर्यावरण, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी विषयक पुस्तकों एवं वैज्ञानिकों की जीवनियों पर सर्वाधिक सामग्री प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त विज्ञान के विविध पक्षों पर भी पुस्तकें लिखी गई हैं।

क. ऊर्जा

'ऊर्जा' मानव प्रगति का आधार स्तंभ है। आज के वैज्ञानिक युग में 'ऊर्जा' के बिना सुखद जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है किंतु पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का जिस द्रुतगति से उपयोग हो रहा है उसके फलस्वरूप 'ऊर्जा संकट' गहरा रहा है। इसके पहले कि प्रगति का पहिया रुके, मानव ने प्राकृतिक ऊर्जा के स्रोत तलाशना भी शुरू कर दिया।

(i) ऊर्जाः हरी–भरी, लेखक : डॉ. कुलदीप शर्मा

प्रकाशक मदन लाल एंड संस, दिल्ली। विद्वान लेखक का कहना है कि पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के लगातार दोहन से विश्वस्तर पर ऊर्जासंकट गहरा रहा है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2050 तक विश्व ऊर्जा खपत का एक चौथाई भाग जैव ईंधन यानी हरी ऊर्जा लेकर आएगी। पहली पीढ़ी के हरित ऊर्जा स्रोत 'कार्न इथनाल' (मक्का इथनाल) और 'सुगरकेन' इथनाल (गन्ना इथनाल) जीवाश्म ईंधनों की अपेक्षा अधिक प्रभावी हैं।

हरी ऊर्जा का प्रमुख स्रोत वनस्पति जगत विशेषकर कृषि से जुड़े पादप हैं। हरी–भरी ऊर्जा प्राप्ति के लिए बायोमास को बायो इथेनाल और बायोडीजल में बदलने के लिए कई परीक्षण चल रहे हैं और कई सफलताएँ भी मिली हैं। प्रस्तुत पुस्तक आठ अध्यायों में विभक्त हैं – हरी ऊर्जा के लिए धरती, हरित ऊर्जा से पुष्ट है लोक संस्कृति, हरा डीजल, खरी ऊर्जा, अब पेट्रोल भरी फसलें लहलहाएँगी, हरे वृक्षों से फूटी पेट्रोल की धारा, और भी देते हैं हरित ऊर्जा, तलाश ली गई हरित बिजली, जैवमास में समाया हरी ऊर्जा का खजाना।

(ii) न्यूक्लियर एनर्जी लेखक – अनुज सिन्हा, प्रकाशक आइसेक्ट, भोपाल

मुख्यतः मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद ने विज्ञान एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रचार–प्रसार करने हेतु वैज्ञानिक विषयों पर हिंदी में नवीन सामग्री तैयार करने का मुख्य लक्ष्य रखते हुए हमारे दैनिक जीवन में अंतरिक्ष, वैश्विक तापन, ई–वेस्ट प्रबंधन, न्यूट्रीनों की दुनिया, लेजर लाइट और न्यूक्लियर एनर्जी-विषयों पर पुस्तकें तैयार कराई हैं।

श्री अनुज सिन्हा दवारा लिखित *'न्यूक्लियर एनर्जी* पुस्तक में मार्च 2011 से नवंबर 2011 तक भारत के परमाणु ऊर्जा केंद्रों के दौरों के विवरण के बहाने 'न्यूक्लियर एनर्जी' के उत्पादन में आने वाली समस्याओं के साथ–साथ असावधानी के कारण होने वाली घटनाओं का तिथिवार यात्रा वर्णन किया गया है। भाखड़ा नांगल जल विद्युत संयंत्र से यात्रा प्रारंभ करते हुए, नाभिकीय ऊर्जा पर विस्तृत चर्चा के साथ–साथ 'पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा आदि पर भी प्रकाश डाला है।

परमाणु विखंडन से ऊर्जा प्राप्त करना वास्तव में जीवाश्म ईंधन से ऊर्जा प्राप्त करना कठिन नहीं है किंतु परमाणु ऊर्जा प्राप्त करने के लिए सावधानियाँ आवश्यक हैं। इसमें प्रदूषण भी कम फैलता है। आज पर्यावरण रिएक्टर कम मूल्य वाला एक पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा उत्पादन का विश्वसनीय साधन है। भारत में कुल 4780 मेगावाट क्षमता वाले 20 रिएक्टर हैं। इनमें तारापुर, नरौरा, कैगा और ककरापार की विस्तार से चर्चा की गई है।

ख. पर्यावरण एवं प्रदूषण

पर्यावरण और प्रदूषण दोनों मानव जीवन को ही नहीं प्रभावित करते अपितु जल, जीव, जंगल सभी पर इनका प्रभाव पड़ता है। यदि प्रदूषणरहित पर्यावरण है तो सभी जीवों का पोषण व स्वास्थ्य अच्छा रहता है, किंतु पर्यावरण में जैसे–जैसे मानवीय गतिविधियाँ बढ़ती हैं, औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित होती हैं, विकास व कार्य का रास्ता सुगम होता है वैसे–वैसे पर्यावरण प्रदूषित होता जाता है, जलवायु में परिवर्तन होने लगता है, फलस्वरूप प्राकृतिक आपदाएँ घटित होती हैं, बर्फबारी व नाना प्रकार की बीमारियाँ फैल कर मनुष्य को ग्रसने लगती हैं।

41 HRD/16—22A

इन्हीं सब समस्याओं पर प्रकाश डालती निम्नांकित दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

(i) औद्योगिक प्रदूषण और नियंत्रण

लेखक – डॉ० शिवगोपाल मिश्र, प्रकाशक– उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में औद्योगीकरण की जो लहर उठी, उसके कारण तीव्र गति से उद्योगों की स्थापना हुई और बड़े पैमाने पर उर्वरकों, वस्त्रों, चमड़ा, धातु की वस्तुओं, सीमेंट आदि का उत्पादन शुरू हुआ।

विद्वान लेखक का कहना है कि 'उद्योगों के द्वारा प्रदूषण नियंत्रण के लिए जो सरलतम विधि अपनाई गई, उससे मूल्यवान अपशिष्ट का उपचार तो हुआ, किंतु उससे उत्पादन स्थल से संबद्ध प्रदूषण की समस्या का हल नहीं मिला किंतु अपशिष्ट व कचरा जो उद्योगों से निकले, उसके प्रबंधन की तरफ विशेष ध्यान न देकर खुले में नदियों, नालों, तालाबों में सीधे बहा दिया गया। फलस्वरूप आगे चलकर उनसे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ खड़ी होने लगीं। जलीय जीव मरने लगे, पक्षी व अन्य सूक्ष्मजीवों की प्रजातियों पर संकट के बादल मंडराने लगे। मानव हितैषी कीटों का विनाश होने लगा तो दूसरी ओर हानिकारक कीटों की संख्या में दिन–दूनी बढ़ोतरी होने लगी।

इसीलिए पुस्तक लेखक का कहना है कि पहले तो संसाधन का विकास होता है, फिर उन्हीं संसाधनों से प्रदूषण हटाने से अपशिष्ट उत्पन्न होता है और इन अपशिष्टों को हटाने में अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। ये संसाधन भी प्रदूषणकारी होते हैं। अतः औद्योगिक प्रदूषण को और अधिक दक्षता तथा प्रभावी ढंग से हल करने के लिए नए दृष्टिकोण अपनाने पर बल देने की ओर संकेत करती पुस्तक की रचना की गई हैं।

विश्वभर में औद्योगिक उत्पादन की निरंतर वृद्धि से औद्योगिक प्रदूषण मानव स्वास्थ्य और जीवन शैली को प्रभावित कर रहे हैं। इसी संदर्भ में *औद्योगिक प्रदूषण और नियंत्रक* पुस्तक की विषयवस्तु का विस्तार आठ अध्यायों में किया गया है।

41 HRD/16—22B

(ii) **जलवायु परिवर्तनः** लेखक – डॉ० शिवगोपाल मिश्र, प्रकाशक– नीलाभ प्रकाशन। दिल्ली जलवायु परिवर्तन नितांत मानवजनित है। औद्योगीकरण के विस्तार में जीवाश्मीय ईंधनों की महती भूमिका को नकारा नहीं जा सकता हैं। इन्हीं ईंधनों को जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है जो उद्योगों की रीढ़ है। इनके दहन से जो गैसें निकलती हैं उन्हें हम ग्रीन हाउस गैसों की संज्ञा देते हैं। इन्हीं की असाधारण वृद्धि के फलस्वरूप ही जलवायु में परिवर्तन आया। धरती गरमाने लगी, मौसम में परिवर्तन होने लगा, फसलों, वनस्पतियों, जीव–जंतुओं में कुसमय प्रजनन, वृद्धि विकास सब कुछ इससे प्रभावित होने लगा। वैसे जलवायु परिवर्तन कोई नवीन घटना नहीं है। प्रकृति में ऐसे परिवर्तन लाखों वर्षों से होते रहे हैं जिनकी स्मृति ही शेष है किंतु ये परिवर्तन ये बताते हैं कि प्रकृति के ऊपर किसी का वश नहीं है।

सोलहवीं शती के बाद औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप वायुमंडल की संरचना में तथा CO_2 चक्र में एकाएक परिवर्तन आया है। CO_2 की सांद्रता में वृद्धि के कारण पृथ्वी का औसत ताप बढ़ा है– जिसे वैश्विक तापन की संज्ञा प्रदान की जा चुकी है।

वास्तव में वैश्विक तापन वायुमंडल में हरित गृह गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण उत्पन्न हुआ है, यही जलवायु परिवर्तन का प्रमुख कारण है। जलवायु परिवर्तन से ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्री जल स्तर में वृद्धि हुई है और कृषीय क्षेत्रों में सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई है। कृषि उत्पादन घटा है। इतना ही नहीं, मानव स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ा है। मलेरिया तथा डेंगू जैसे रोगों में वृद्धि हुई है। जलवायु में परिवर्तन होने से चक्रवातों की उग्रता बढ़ी है, नदियों में भीषण बाढ़ आने लगी है। पर्वतीय क्षेत्रों में भू–स्खलन की घटनाएँ बढ़ी हैं। यह जलवायु परिवर्तन नितांत मानवजनित है। इसीलिए लेखक ने पुस्तक का नाम उचित रखा है। इस पुस्तक का विस्तार आठ अध्यायों में है यथा, जलवायुः उसके घटक, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन से बचाव, बर्फ, वर्षा और जलवायु, जलवायु परिवर्तन एवं कृषि, भारत की भावी जलवायु....आदि।

ग. अंतरिक्ष

अंतरिक्ष अन्वेषण आज एक महत्वपूर्ण अनुसंधान क्षेत्र बन गया है। कुछ समय पूर्व वैज्ञानिक अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए पृथ्वी आधारित टेलीस्कोपों और फोटोग्राफिक प्लेटों का इस्तेमाल करते थे, लेकिन आज हम अंतरिक्ष अन्वेषण का कार्य अंतरिक्ष से ही कर रहे हैं। इसके लिए उच्च कोटि के 'अंतरिक्ष मिशन' अंतरिक्ष में प्रमोचित किए गए हैं। आज 200 से भी अधिक उपग्रह 'ब्रह्मांड' में अन्य तारों का चक्कर लगा रहे हैं। 24 सितंबर 2014 को 'भारतीय मंगलयान' को भी सफलतापूर्वक मंगल ग्रह पर उतारा गया।

(i) **रॉकेटों का रोचक संसार**– इसके लेखक कालीशंकर हैं तथा प्रकाशक –ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली।

रॉकेटों के विकास ने अंतरिक्ष अन्वेषण कार्य के लिए महान संभावनाओं का रास्ता खोल दिया है। प्रारंभ में राकेटों का उपयोग युद्धों में अस्त्रों व मिसाइलों के रूप में हुआ। लेकिन बाद में मानव ने अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए इसे अत्यधिक उपयोगी पाया। यदि रॉकेटों का विकास न होता तो यूरी गगारिन की ऐतिहासिक अंतरिक्ष यात्रा संपन्न न होती और नील आर्मस्ट्रांग चाँद पर पदार्पण न कर पाते। रॉकेट कार्यप्रणाली में विज्ञान एवं तकनीकी के विभिन्न पहलुओं और विषयों–भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित तथा यांत्रिकी विषय–कंप्यूटर, इलैक्ट्रॉनिकी, विद्युतीय, मैकेनिकल, इंजीनियरिंग का समावेश होता है।

'रॉकेटों का रोचक संसार' नामक इस पुस्तक में रॉकेट विज्ञान के विभिन्न पक्षों– रॉकेट की संरचना, प्रयुक्त नोदक ईंधन, रॉकेट विज्ञान में न्यूटन की गतिजता नियमों की प्रासंगिकता तथा राकेटों का इतिहास आदि पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

यह पुस्तक विद्यार्थियों, विज्ञान जिज्ञासुओं, सामान्य पाठकों और अंतरिक्ष प्रेमियों के लिए उपयोगी होगी।

(ii) **मंगल पर जल एवं जीवन**– इसके लेखक विजय चितौरी एवं प्रकाशक नवजागरण, इलाहाबाद हैं।

लेखक का विचार है कि अनेक कारणों से पृथ्वी पर मानव जाति का भविष्य खतरों से भरा दिखता हैं। विश्व में परमाणु हथियारों की होड़, बढ़ता प्रदूषण, ग्रीन हाउस गैसों की समस्या और आतंकवाद आज बड़े खतरे तो हैं ही, प्राकृतिक घटनाएँ किसी भी समय भीषण समस्याएँ उत्पन्न कर सकती हैं। जापान में आई सुनामी और कुछ वर्षों पूर्व इसके कारण भारत के समुद्री तटों पर तबाही को लोग अभी भूले नहीं हैं। यही नहीं, अंतरिक्ष के घूमंतू क्षुद्रग्रह और विशाल उल्कापिंड कभी भी पृथ्वी के अस्तित्व के लिए खतरा बन सकते हैं।

इन्हीं सब कारणों से अंतरिक्ष विज्ञानी पृथ्वी के अलावा सौर मंडल में कोई अन्य ठिकाना ढूँढ़ रहे हैं, जहाँ मानव जाति को बसाया जा सके। चंद्रमा वह जगह हो नहीं सकती– क्योंकि वहाँ वायुमंडल नहीं है। हाँ, मंगल अकेला ऐसा ग्रह है, जहाँ वायुमंडल है, पृथ्वी से मिलती जुलती अन्य परिस्थितियाँ भी है। यही नहीं, वहाँ के ध्रुवों पर पर्याप्त मात्रा में जल मौजूद है। सतह पर तो नहीं, लेकिन सतह के नीचे मिट्‌टी में भी बर्फ कण मौजूद हैं। इस तरह की तमाम जानकारियाँ मार्सपाथ फाइंडर, स्पिरिट, अपार्च्युनिटी और फिनिक्स आदि अंतरिक्ष अभियानों ने जुटाई है। इस तरह चंद्रमा के बाद मंगल वह ग्रह होगा जहाँ मानव की बस्तियाँ बसाई जा सकेगी, साथ–साथ यह सपना भी देखा जा रहा है कि धीरे–धीरे वैज्ञानिक साधनों से मंगल का वातावरण भी बदला जा सकता हैं।

इसी क्रम में **'मंगल बुला रहा है'** पुस्तक (लेखक श्री निवास लक्ष्मण, अनुवाद देवेंद्र मेवाड़ी, प्रकाशक–विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली) मूल रूप से आम लोगों को भारतीय मार्स आर्विटर अभियान की जानकारी देने के लिए लिखी गई है। इसमें डॉ. के. कस्तूरीरंगन, डॉ. टी. रामास्वामी के आमुख और लेखक की प्रस्तावना के अतिरिक्त 9 अध्यायों में विस्तार दिया गया है।

(iii) **अंतरिक्ष ज्ञान** (लेखक–राजदेव प्रसाद एवं प्रकाशक–एस. आर. एस. पब्लीकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूशन्स–लखनऊ)।

इस पुस्तक में अंतरिक्ष के लगभग समस्त घटकों जैसे – सौरमंडल के ग्रह, उपग्रह, क्षुद्र ग्रहों की पेटी, क्यूपर बेल्ट, धूमकेतु, मंदाकिनियाँ, तारों की विभिन्न श्रेणियाँ, सुपरनोवा, नीहारिकाएँ, खगोलीय टेलीस्कोप, अंतरिक्ष वेधशालाएँ, रॉकेट प्रक्षेपण यान, अंतरिक्ष यान तथा अंतरिक्ष शटल आदि का विस्तार से सुरुचिपूर्ण वर्णन प्राप्त है। यह सभी आयु के पाठकों के लिए उपयोगी है।

(iv) **उपग्रहों का रोचक संसार**– लेखक –डॉ. डी. डी. ओझा, प्रकाशक– विद्या विहार, नई दिल्ली।

नवीनतम खोजों एवं आविष्कारों ने विगत कुछ दशकों में प्राप्त अंतरिक्ष उपलब्धियों के कारण आज उपग्रहों की सहायता से मौसम विज्ञान, संचार एवं सूदूर संवेदन के क्षेत्रों में तो इस प्रौद्योगिकी ने क्रांति ला दी है। आज व्यापार, सूचना प्रसारण, आपदा राहत, साक्षरता अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, सामान्य ज्ञान आदि पर अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों ने उपग्रह– आधारित दूर संचार एवं देशव्यापी दूरदर्शन प्रसारण माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यकलापों को परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत लाया गया। इसके एक वर्ष बाद ही भारतीय अनुसंधान परिषद् की स्थापना की गई। इसी समय से अद्यतन समय तक की जानकारी उपलब्ध है। प्रस्तुत पुस्तक अंतरिक्ष अन्वेषण, इसमें पशुओं का योगदान, अतीत की अंतरिक्ष विज्ञानी महिलाएँ, उपग्रह एवं प्रमोचन, विभिन्न प्रकार के उपग्रह, भारत में अंतरिक्ष कार्यक्रम, उद्देश्य, प्रमुख संस्थान, इसरो के जनक वैज्ञानिक, प्रथम अंतरिक्ष यात्री, भारतीय उपग्रहों का विहंगावलोकन, चंद्रयान–1 मिशन एवं संक्षिप्त नवीनतम जानकारी के अतिरिक्त आर्यभट्ट, रोहिणी, इनसैट उपग्रह, एजुसैट, कार्टोसेट, भारत का जी पी एस कार्यक्रम, सौर ऊर्जा उपग्रह आदि नवीनतम तकनीकी विषयों पर अतिदुर्लभ जानकारी अत्यंत सरल एवं बोधगम्य भाषा में चित्रों सहित दी गई है।

घ. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

यद्यपि चिकित्सा विज्ञान का उदय 2000 वर्षों से भी अधिक पूर्व हो चुका था, फिर भी मध्ययुग तक रोगों के उपचार की विधियाँ अति विचित्र थीं।

उदाहरणार्थ, रोगी का रक्त निकालने के लिए जोंक का प्रयोग होता था, जितने आसव थे, वे बुरे स्वाद के होते थे।

यूनान के चिकित्सक हिप्पोक्रेटीज (460–377 ई.पू.) को आधुनिक चिकित्सा का जनक कहा गया है। उनका मत था कि प्रत्येक रोग का एक प्राकृतिक कारण होता है। उसने धर्म से चिकित्सा को अलग किया। उसने अपने शिष्यों को आदेश दे रखा था कि रोगी की बात गुप्त रखेंगे। और किसी को बताएंगे नहीं। इसे *'हिप्पोक्रेटीज की शपथ'* कहते हैं और आज भी इसका पालन किया जाता हैं। भारत में चरक और सुश्रुत दो विख्यात चिकित्सक हुए है। चरक कनिष्क के शासन काल में हुए और सुश्रुत गुप्त काल में। सुश्रुत उच्चकोटि के शल्यचिकित्सक थे। हमारे देश का रस– शास्त्र औषधि विज्ञान का ही दूसरा रूप था। वर्ष 2014 में इस विषय पर चार पुस्तकों की रचना हुई। ये हैं–

(i) संक्रामक रोग एवं उनसे बचाव– (लेखिका– शुभा पांडेय एवं प्रकाशक – हंसा साहित्य सदन, नई दिल्ली)। मनुष्य में संपर्क के द्वारा रोगों के वाइरस या जीवाणु आदि प्रविष्ट कर सकते हैं, इसलिए ऐसे रोग संक्रामक कहलाते हैं। ये रोग बच्चों, जवानों, बूढ़ों या स्त्री–पुरूषों में किसी में भी समान रूप से फैलते हैं। संक्रामक रोगों की चपेट में हमारे मवेशी व जीवजंतु भी आते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 5 अध्यायों एवं उप–अध्यायों में विभक्त है। 1. संक्रामक रोग–परिभाषा, संक्रामक रोगों के स्रोत, संचरण के मार्ग, 2. जल द्वारा फैलने वाले रोग–टाइफाइड, हैजा, पेचिश, 3. विषाणुओं से फैलने वाले रोग–पोलियो, यकृत शोथ (पीलिया), 4. परजीवियों से फैलने वाले रोग–अमीबा रुग्णता, प्लेग, कृमि रोग। 5. कीट वाहित रोग–मलेरिया, फाइलेरिया। इस पुस्तक में रोगों के लक्षणों और सावधानियों पर प्रकाश डाला है। पुस्तक सचित्र हैं।

(ii) जल चिकित्सा– (लेखक– डॉ.डी.डी. ओझा तथा प्रकाशक –ज्ञान विज्ञान एजुकेशन, नई दिल्ली।)

प्रस्तुत पुस्तक में जल संबंधी रोगों की चर्चा और चिकित्सा का विस्तार 44 बिंदुओं में किया गया है यथा–शरीर को जल प्राप्ति के स्रोत, विभिन्न खाद्य पदार्थों में जल, जल से स्वास्थ्य रक्षा, जल की कमी के प्रभाव, जल की अधिकता का प्रभाव, शरीर में जल संतुलन, स्वच्छ वातावरण, जल एवं स्वास्थ्य, पेयजल में नाइट्रोजन, फ्लोराइड, आर्सेनिक, जलजन्य रोग, अम्लपित्त, डायरिया, स्वास्थ्य शिक्षा, जल एवं स्वच्छता की शिक्षा।

(iii) **स्वस्थ दाँत–स्वस्थ बच्चे**– यह पुस्तक अंग्रेजी में जी. दंडपाणि द्वारा लिखी पुस्तक का हिंदी अनुवाद मंजुलिका लक्ष्मी द्वारा किया गया है। इस पुस्तक में बच्चों के दाँत रक्षण के संबंध में सभी मुख्य बातों का विवरण देते हुए बताया कि 'बच्चों' का दंत विकास माँ के गर्भ में ही आरंभ होता है। बच्चों के दाँतों की देखरेख के संबंध में अभिभावकों का ध्यान आकर्षित करते हुए आवश्यक बातों का सुंदर वर्णन किया है। दंत चिकित्सा, चिकित्सा विज्ञान की यह शाखा नवजातों, शिशुओं तथा चौदह वर्ष की आयु तक के बच्चों की दाँत संबधी प्रभावी देखरेख से संबंधित है। इस पुस्तक को लेखक ने 15 भागों में बाँट कर विस्तार दिया है।

(iv) **मधुमेह रोधी पेड़–पौधे**–

मनुष्य को स्वस्थ्य बनाए रखने की आधारशिला के रूप में पेड़–पौधों का महत्व सर्वविदित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या दो करोड़ है, जो पूरे विश्व में सर्वाधिक है। मधुमेह के मरीजों को हृदय रोग, गुर्दा खराब होने और दृष्टिविहीन होने जैसे गंभीर और खर्चीली बीमारियाँ भी हो सकती हैं लेकिन पैर से जुड़ी बीमारियाँ सबसे ज्यादा होती हैं। डॉ. चंद्रप्रकाश शुक्ल द्वारा लिखित इस पुस्तक में उन पौधों का वर्णन किया गया है, जो मधुमेह रोग के उपचार में उपयोगी हैं।

च. कृषि/मृदा

'*कृषि* की मूलाधार मृदा के गहन अध्ययन के फलस्वरूप ही मृदा विज्ञान का विकास संभव हो सका।

मृदा का अध्ययन काफी जटिल कार्य है। मृदा से संबद्ध विज्ञान की शाखा '*मृदा विज्ञान*' के नाम से जानी जाती है। अब मृदा विज्ञान की भी कई शाखाएँ बन जाती हैं यथा–मृदा भौतिकी, मृदा रसायन, मृदा जैविकी। मृदा अध्ययन के अंतर्गत मृदा उर्वरता, मृदा वर्गीकरण, मृदा सर्वेक्षण, मृदा प्रौद्योगिकी, मृदा मानचित्रण, उर्वरक तथा खादें, मृत्तिका खनिज जैसे विषयों पर गंभीरता से शोधकार्य किया जाता है।

डॉ. शिवगोपाल मिश्र प्रसिद्ध मृदाविज्ञानी हैं। उनकी कृति '*मृदा परिचय*' मृदा का सांगोपांग परिचय दिलाती है। यह 11 अध्यायों में विस्तृत है। यथा–मृदा : एक प्राकृतिक इकाई, मृदा की उत्पत्ति, मृदा निर्माणकारी पदार्थ, मृदा के भौतिक गुण अर्थात् मृदा भौतिकी, मृदा का रासायनिक संगठन, मृदा जैविकी, मृदा जैव पदार्थ, मृदा कोलाइड, मृदा उर्वरता, मृदा वर्गीकरण, मृदा–प्रदूषण....आदि मुख्य हैं। यह पुस्तक स्कूल कॉलेज के विद्यार्थियों और पाठकों के लिए उपयोगी होगी।

छ.विज्ञान पत्रकारिता

विज्ञान पत्रकारिता का उद्देश्य समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित और पोषित करने में योगदान करना है। आम जन को जन संचार माध्यमों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का ढंग तथा उनसे होने वाले लाभों की जानकारी सहज रूप में ही उपलब्ध होती है। विज्ञान पत्रकारिता विज्ञान पत्र–पत्रिकाओं के संपादन, प्रकाशन, वितरण को अपने में समेट रही है।

1. **वैज्ञानिकों से साक्षात्कार**–(लेखक–धनंजय चोपड़ा, प्रकाशक–संदर्भ प्रकाशन, दिल्ली)।

वैज्ञानिकों की सक्रिय एवं व्यस्त जीवनशैली के चलते उनका साक्षात्कार करना कठिन होता है, किंतु लेखक ने ऐसा कर दिखाया है। प्रस्तुत पुस्तक में 21 वैज्ञानिकों के साक्षात्कार समाहित किए गए हैं। यथा–प्रो. एम. जी. के. मेनन, परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष रहे प्रो. काकोड़कर, देश के बायोटैक्नोलॉजी विभाग की सचिव मंजू शर्मा, अंटार्कटिका अनुसंधान से

वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. पांडेय आदि से मुलाकातें हुई, साथ ही नोबेल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक प्रो. हुफ्ट, प्रो. पर्ल, प्रो. लोगेट से भी मिलकर साक्षात्कार प्राप्त किया है।

उपर्युक्त साक्षात्कारों में – भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की मुहिम –डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, सूचना प्रौद्योगिकी में देशी भाषाओं का प्रयोग हो– प्रो. एम. जी. के. मेनन, हिंग्स' कण बदल देंगे 'एनर्जी सिस्टम'–प्रो. हुफ्ट, हर समय उठती रहती है भूकंपीय तरंगें– जियोलॉजिस्ट प्रो. वनार्ड जान वुड, शिक्षा में तत्परता व गुणवत्ता जरूरी – प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो० यशपाल, हम किसी से कम नहीं–डॉ. आर. चिदंबरम, मेरा जीवन एक परिंदे की तरह–पक्षीविज्ञानी सालिम अली मानव मन की परतें उधेड़ने की तैयारी–प्रख्यात न्यूरो सर्जन वी. एन. टंडन, नई और मौलिक खोज को प्रोत्साहन जरूरी–प्रो. आर. ए. माशेलकर, सबकी नजर अब बायोटेक्नालॉजी पर–वैज्ञानिक डॉ. मंजु शर्मा, ताजे जल की आपूर्ति करेगा अंटार्कटिका–वैज्ञानिक डॉ. पी. सी. पांडेय, मौसम का सच बताएंगे मैथमेटिकल मॉडल–वैज्ञानिक–प्रो. विनोद के. गौड़ . ... आदि मुख्य हैं। **2. डिजिटल माध्यम और हिंदी में विज्ञान संचार** विज्ञान प्रसार आरंभ से विज्ञान लोकप्रियकरण के क्षेत्र में हिंदी के विकास पर बल देता रहा है। 'डिजिटल माध्यम के द्वारा हिंदी में विज्ञान संचार' विषय पर केंद्रित एक राष्ट्रीय कार्यशाला में पठित लेखों का संकलन है। इसमें डिजिटल माध्यम मौजूदा युग का सर्वाधिक उपयुक्त और प्रभावी संचार माध्यम है। इसमें 'डिजिटल माध्यम : *मेरा अनुभव, हिंदी में विज्ञान जागरूकता उत्पन्न करने के उत्कृष्ट साधन, सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान का हिंदी भाषा में आदान–प्रदान : चुनौतियाँ तथा भविष्य, विज्ञान शिक्षा के लिए ई–लर्निंग पोर्टल का विकास, ब्लॉग लेखन द्वारा विज्ञान संचार* आदि कुल 22 लेखों का संकलन है।

यह सामग्री विज्ञान पत्रकारिता के सर्वथा नवीन पक्ष को उजागर करती है।

ज. वैज्ञानिक जीवनियाँ

विद्वानों, वैज्ञानिकों, आविष्कारकों को निरंतर सम्मान व सुरक्षा मिलती रहे, नई पीढ़ी उनके परिश्रम से लाभान्वित होती रहे, देश–दुनिया की उन्नति, विकास के लिए किए गए अनुसंधानों, खोजों, आविष्कारों के पीछें का संघर्ष भी जानें व प्रेरणा लेकर कुछ करते रहें, जिसमें देश–राष्ट्र व दुनिया का विकास होता रहे। इन्हीं सब उद्देश्यों को ध्यान में रखकर वैज्ञानिक जीवनियाँ लिखी जाती हैं और लिखी जाती रहेंगी। साहित्य और समाज भी इन जीवनियों से समृद्ध होता रहे, इसी उद्देश्य से ऐसी महान विभूतियों के जीवन–वृत्तांत लिखने की परंपरा जारी रखना आवश्यक हैं। इसी परंपरा में वर्ष 2013–14 में भी 12 जीवनियाँ प्रकाशित हुई जिनका विवरण इस प्रकार हैं–

1. मैं अल्बर्ट आइंस्टाइन बोल रहा हूँ–

(लेखक–आशुतोष गर्ग, प्रकाशक–प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली)

अल्बर्ट आइंस्टाइन दुनिया के सबसे बुद्धिमान लोगों में से एक थे। विज्ञान के क्षेत्र में उनका योगदान विलक्षण एवं अविस्मरणीय है। आइंस्टाइन की वैज्ञानिक उपलब्धियों के अतिरिक्त उनके शोध पत्रों एवं दस्तावेजों के माध्यम से उनकी मानवीय विशेषताओं की भी काफी जानकारी प्राप्त होती है।

'फोटो इलैक्ट्रिक इफेक्ट' तथा 'सापेक्षता के सिद्धांत' के क्षेत्र में आइंस्टाइन द्वारा दिये गए योगदान के लिए उन्हें विश्व के सर्वोच्च सम्मान नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विद्यार्थियों के लिए ये विचार अत्यंत सूचनावर्धक सिद्ध होंगे।

2. महान मृदा विज्ञानी–डॉ. नीलरत्न धर

डॉ. शिवगोपाल मिश्र को महान मृदा विज्ञानी: प्रो. नीलरत्न धर के सान्निध्य में 26 वर्षों तक कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त रहा है, साथ ही स्वयं भी मृदाविज्ञानी रहे हैं। अतः एक प्रकार से अपने गुरु के विषय में यह पुस्तक लिखकर सच्ची श्रद्धांजलि दी है। लेखक का कथन है कि– *'मैं जिस महान विभूति एवं गुरुवर्य का उल्लेख कर रहा हूँ वे थे प्रोफेसर नीलरत्न धर। वे देश में रसायन विज्ञान के शोधकार्य की नींव डालने वाले थे। उन्हें 'भौतिक रसायन का पिता' कहा गया।*

ऐसे महान विज्ञान के व्यक्तित्त्व व कृतित्व को लेखक ने पुस्तक रूप में प्रकाशित कर पहली बार एक अमूल्य निधि पाठकों को अर्पित की है।

3. विवादों के घेरे में रामन– (लेखक डॉ. शिवगोपाल मिश्र, प्रकाशक विज्ञान परिषद् प्रयाग, इलाहबाद)।

प्रस्तुत पुस्तक जी. वेंकटरामन द्वारा लिखित *'जर्नी इन टू लाइट'* पुस्तक को आधार बनाकर लिखी गई है जिसमें रामन साहब की प्रकाश विषयक खोजों के अलावा उनके जीवन के अनेक उतार–चढ़ावों का विवरण है। विशेषकर रामन–साहा विवाद, रामन–बॉर्न विवाद और बंगलौर में उनको निदेशक पद से हटाए जाने के बारे में पढ़कर लगा कि 'महान पुरुषों को सम्मान शिखर प्राप्त करने के बाद भी किस तरह विवादों का सामना पड़ता है।' हिंदी में रामन के ऊपर लिखी गई पुस्तकों में इस पक्ष का उल्लेख किसी विद्वान लेखक ने नहीं किया।

प्रो. डॉ. शिवगोपाल मिश्र ने प्रस्तुत पुस्तक को 6 अध्यायों और आठ परिशिष्टों में बाँट कर पूर्ण किया है *यथा–एक वैज्ञानिक का अवतरण, कलकत्ता में रामन की उपलब्धियाँ, रामन प्रभाव क्या है? बंगलौर में रामन, रामन द्वारा उपकृत दो विज्ञानी, रामन रिसर्च इंस्टीट्यूट। परिशिष्ट में भारतीय विज्ञान संवर्धन संस्थान, बंगलौर की इंडियन एकेडमी, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर, पुष्प और उनके रंग, नोबेल पुरस्कार प्राप्त करते समय 11 दिसंबर 1930 को स्वीडिश एकेडमी के समक्ष दिया गया भाषण, रामन और गाँधी, विज्ञान परिषद और डॉ. रामन....* आदि मुख्य हैं।

4. भारतरत्न प्रो. चंद्रशेखर वेंकट रामन (लेखकद्वय– डॉ. श्रवण कुमार तिवारी, डॉ. देवेंद्र कुमार राय, प्रकाशक– लोकप्रिय प्रकाशन दिल्ली)।

डॉ. चंद्रशेखर वेंकट रामन न केवल भारत के अपितु समूचे एशिया के प्रथम वैज्ञानिक थे जिन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह पुरस्कार उनकी सुविख्यात खोज 'रामन प्रभाव' पर दिया गया था। वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने यह प्रदर्शित किया था कि फोटोन की ऊर्जा का पदार्थ के भीतर आंशिक रूपांतरण हो सकता है। रामन ने प्रकाश विज्ञान, चुंबकत्व और क्रिस्टल

भौतिकी के अलावा वाद्य यंत्रों पर भी शोधकार्य किया था। आपने इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज, बंगलौर तथा रामन रिसर्च इंस्टीस्ट्यूट की स्थापना की। पुस्तक का विस्तार कुल सात अध्यायों में– उन्नीसवीं सदी में भारत का वैज्ञानिक परिदृश्य, बचपन और शिक्षा, कलकत्ता–प्रवास, रामन– प्रभाव, बंगलौर प्रभाव, अवकाश ग्रहण के बाद, भारतरत्नः भौतिकी–भूषण आदि मुख्य हैं।

5. विश्व हरितक्रांति के जनकः डॉ. बोरलॉग– लेखक– डॉ. दिनेश मणि, प्रकाशक– शांति पुस्तक मंदिर, दिल्ली।

मनुष्य की बुनियादी जरूरत रोटी (भोजन) सभी के लिए उपलब्ध हो, इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले डॉ. नार्मन ई. बोरलॉग एक मानवतावादी कृषि वैज्ञानिक के रूप में याद किए जाते हैं। डॉ. बोरलॉग को कृषि और खाद्य उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान के लिए और भूखी दुनिया को रोटी और शांति के लिए सन् 1970 में नोबेल विश्वशांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने संपूर्ण विश्व की खाद्य समस्या के प्रति लोगों में एक चेतना जाग्रत की। अभी तक उनके जीवन पर हिंदी में कोई पुस्तक उपलब्ध न थी, अतः प्रस्तुत कृति डॉ. बोरलॉग के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लोगों को परिचित करा सकती है।

6. पुरावनस्पति विज्ञानी–बीरबल साहनी

(लेखक– प्रेमचंद श्रीवास्तव, प्रकाशक–हिमाचल बुक सेंटर दिल्ली।) इस पुस्तक में डॉ. बीरबल साहनी के जीवन और कार्यों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया है। वैसे तो डॉ. साहनी पर कई छोटी–छोटी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध हैं किंतु पहली बार एक वनस्पति विज्ञान के अनुभवी अध्यापक द्वारा उन पर प्रामाणिक पुस्तक लिखी गई।

7. हरित क्रांति के अग्रदूतः एम.एस.स्वामीनाथन

(लेखक– एस.के. तिवारी, प्रकाशक–कृत्तिका बुक्स, दिल्ली)

भारत में साठ के दशक में खाद्यान्न की कमी को लेकर 'हरित क्रांति' की संकल्पना सन् 1966 में प्रो. एम.एस. स्वामीनाथन के प्रयासों के फलस्वरूप फलित हुई।

भारत में गेहूँ की अधिक उपज देने वाली किस्मों के सफल परिचायक और बाद में इसके उत्तरोत्तर विकास कार्य के कारण इन्हें 'भारत में हरित क्रांति' के जनक के रूप में जाना जाता है। प्रस्तुत में प्रो. स्वामीनाथन के जीवन, शिक्षा, शोधकार्य, उपलब्धियों, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कृषि में किए गए प्रयोग, प्रकाशित ग्रंथ, लेख, पुरस्कार व सम्मान के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं।

8. आर्कमिडीज: (लेखक–विनोद कुमार मिश्र, प्रकाशक–विद्या विकास एकेडमी, दिल्ली)

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्कमिडीज का जन्म ई. पू. 275 में यूनान के पास सायराक्यूज में हुआ था। पिता एक प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे। अलेक्जेंड्रिया से उच्च शिक्षा प्राप्त कर जब आर्किमिडीज सायराक्यूज लौटे तो आविष्कारों के विषय में चिंतन करने लगे। पानी के टब में नहाते–नहाते ही उन्होंने 'उत्प्लावन वल' की खोज कर डाली। लीवर और घिरनियों का उनका सिद्धांत बड़ा ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। आज से 2200 वर्ष पूर्व ही आर्कमिडीज ने सौर ऊर्जा के महत्व को समझ लिया था। उनकी दो गणितीय रचनाएँ बड़ी प्रसिद्ध हैं– 'स्टीमैकियन' तथा '*द कैटल प्रॉब्लम*।'

इस पुस्तक में अद्भुत वैज्ञानिक आर्कमिडीज के जीवन और आविष्कारों का प्रामाणिक विवरण मिलेगा। लेखक प्रसिद्ध जीवनीकार हैं।

9. नील आर्मस्ट्रांग– चंद्रमा पर पहला मानव– (लेखक– राकेश शर्मा, प्रकाशक– ओशियन बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली)।

नील आर्मस्ट्रांग पहले थे, जिन्होंने सर्वप्रथम चंद्रमा पर अपना कदम रखा। 5 अगस्त 1930 को संयुक्त राज्य अमेरिका के वापाकोनेटा, ओहियो में जन्मे आर्मस्ट्रांग की रुचि प्रारंभ से ही चंद्रमा, तारों और अंतरिक्ष में थी, इसलिए उन्होंने इसी को अपने करियर के रूप में अपनाया। कुछ समय नौसेना में काम करने के बाद सन् 1955 में उन्होंने नेशनल एडवाइजरी कमेटी फॉर एयरोनॉटिक्स (एन.ए.सी.ए.) में कार्यारंभ किया। इसी कमेटी का नाम बाद में '*नासा*' (नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन) पड़ा।

16 मार्च 1966 को जैमिनी 8 अभियान के तहत वे पहले–पहल अंतरिक्ष में गए। इसके बाद अपोलो–2 में बतौर कमांडर वे चंद्रमा की सतह पर उतरे और इतिहास रच दिया। नील आर्मस्ट्रांग को अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए। 82 वर्ष की आयु में 25 अगस्त 2012 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। उनके समग्र जीवन को विस्तार से प्रस्तुत करने का श्रेय श्री राकेश शर्मा को है।

10. परमाणु अनुसंधानविज्ञानी डॉ. होमी जहांगीर भाभा– (लेखक– ललित किशोर पांडेय, प्रकाशक– शांति पुस्तक मंदिर, दिल्ली)।

डॉ. होमी जहांगीर भाभा 'भारतीय नाभिकीय कार्यक्रम' के जनक थे। आपने टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान और परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान ट्राम्बे की स्थापना की थी। बाद में यही परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के नाम से विख्यात हुआ। भाभा जी न केवल उत्कृष्ट वैज्ञानिक थे अपितु एक मेधावी इंजीनियर भी थे। आपके द्वारा इलेक्ट्रॉन द्वारा पाजिट्रान के विकीर्ण तथा अंतरिक्ष से आने वाली ब्रह्मांड किरणों के बारे में महत्वपूर्ण खोजें संपन्न हुईं। इन्हें नृत्य, संगीत के साथ ही साथ पेंटिंग्स का भी शौक था।

11. विश्व के प्राचीन वैज्ञानिक– (लेखक: विनोद कुमार मिश्र, प्रकाशक–चिल्ड्रेन बुक टेम्पल, दिल्ली)

प्राचीन काल में पहिए के आविष्कार और 'आग' की खोज ने सर्वप्रथम विकास के पथ पर अग्रसर किया था। बीसवीं सदी के कंप्यूटर के आविष्कार ने मानव जीवन को आधुनिक भौतिक सुख सुविधाओं से संपन्न कर दिया। अर्थात् जिस एक विधा ने मानव जीवन को एक नई दिशा और एक नया मार्ग दिखाया वह 'विज्ञान' ही था। चिकित्सा, खगोल, अंतरिक्ष, कंप्यूटर एवं भूविज्ञान आदि क्षेत्रों में विज्ञान की नई–नई खोजों, आविष्कारों और नवाचार ने पृथ्वी का स्वरूप ही बदल दिया। इन आविष्कारों एवं खोजों को करने वाले महान वैज्ञानिकों ने अपनी अप्रतिम योग्यता और प्रतिभा का परिचय देकर गहन अध्ययन एवं अनुसंधान और शोध करके नाना प्रकार की वस्तुएँ, तकनीक, सूत्र और प्रमेय का विकास किया, जो कालांतर में मानव सभ्यता के विकास की नींव का पत्थर साबित हुए।

प्रस्तुत पुस्तक को ईसा पूर्व काल एवं प्रथम शताब्दी, दूसरी शताब्दी के प्रमुख वैज्ञानिकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें कुल 129 वैज्ञानिकों का जीवन परिचय दिया गया है।

12. आचार्य रघुवीर– भारतीय धरोहर के मनीषी– (लेखक शशी बाला, प्रकाशक–प्रभात प्रकाशन, दिल्ली)।

राष्ट्रोत्थान हेतु ज्ञानमार्ग के आचार्य रघुवीर जन–जन को आंदोलित कर उसमें अस्मिता, आत्मगौरव और स्वाभिमान का भाव जगाया। प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय धरोहर के आचार्य रघुवीर की अद्भुत मेधा और विचारपूर्ण चिंतन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

यूरोप में विद्यार्थी के रूप में उनका अध्ययन, अनुसंधान एवं लेखन एवं भारत लौटने पर बौद्धिक वाङ्मय पर किया गया अनुसंधान कार्य तथा संस्कृत के उत्कर्ष का स्वप्न आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृति के अग्रदूत के रूप में उनका व्यक्तित्व, सांस्कृतिक धरोहर के रक्षण एवं अनुसंधान हेतु सरस्वती विहार की स्थापना, एशिया के विभिन्न देशों में उनकी यात्राएँ, उनके द्वारा स्थापित सांस्कृतिक संबंध, उन देशों के लिए किया गया कार्य तथा वहाँ से संग्रहीत सांस्कृतिक निधियाँ आदि विषयों पर सचित्र वर्णन प्रस्तुत है।

राष्ट्रभाषा दर्शन पर एक विशेष अध्याय के माध्यम द्वारा निर्मित पारिभाषिक एवं वैज्ञानिक शब्दावली, उनके द्वारा निर्मित संस्कृतनिष्ठ हिंदी, अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश का निर्माण एवं देवनागरी अंक्षरों का मुद्रालिख (टाइपराइटर) बनवाना आदि मुख्य कार्य थे।

13. महान भारतीय वैज्ञानिक– (लेखक– विजय चितौरी, प्रकाशक– आंचल पब्लिकेशंस, दिल्ली)

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत तेजी से उभरा है। ऐसा इसलिए संभव हो सका क्योंकि अंतरिक्ष, आयुर्विज्ञान, परमाणु ऊर्जा, गणित, सूचना, प्रौद्योगिकी, खगोल विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में विश्व स्तरीय वैज्ञानिक आदि पैदा हुए। ढाई हजार साल पहले गणित, ज्योतिष,

आयुर्विज्ञान आदि क्षेत्रों में भारत दुनिया का सिरमौर रहा है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्य चरक, सुश्रुत और आर्यभट्ट की जीवनी देकर नई पीढ़ी में यह आत्मविश्वास भरने का प्रयास किया।

प्रस्तुत पुस्तक में 25 भारतीय वैज्ञानिकों की जीवनियाँ प्रस्तुत की गई है यथा-- प्राचीन भारत के महान चिकित्साशास्त्री आचार्य चरक, आधुनिक भारतीय विज्ञान के अग्रदूतः आचार्य जगदीश चंद्र बसु, आधुनिक भारत के महान इंजीनियरः डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया, नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकविदः चंद्रशेखर वेंकटरमन, महान भू–वैज्ञानिकः दाराशा नौशेरवां वाडिया, विलक्षण गणितज्ञ श्री निवास रामानुज, बीरबल साहनी, मेघनाद साहा, दौलत सिंह कोठारी, हरगोविंद खुराना, श्रीमती मंजु शर्मा आदि मुख्य हैं।

2. बाल विज्ञान साहित्य–

बच्चों को ध्यान में रखकर आज इंटरनेट, ई–मेल, ई–लर्निंग, फेसबुक आदि नवीनतम साधनों का उपयोग कर प्रचुर मात्रा में विज्ञान रचा जा रहा है। वर्ष 2014–15 में भी कुछ न कुछ नवीन विषयों पर बाल विज्ञान लिखा गया।

1. विमानन के सौ वर्ष– (शुकदेव प्रसाद, प्रकाशक–नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली)

वैमानिकी के क्षेत्र में पहला कदम 17 दिसंबर 1903 को राइट बंधुओं ने रखा था, जब दोनों भाइयों ने हवाई जहाज में बैठकर वायु में सफल उड़ान भरी। राइट बंधु (विल्बर और ओरविल) अमरीका के डेंटन, ओहियो प्रांत के निवासी थे और साइकिल की मरम्मत का काम करते थे। ग्लाइडरों में रुचि के कारण 1896 ई. में ग्लाइडर बना कर उड़े। उसके तुरंत बाद 1899 में ग्लाइडर को यांत्रिक विधि से संतुलित करने का तरीका खोज निकाला। निरंतर सात वर्षों की कठिन साधना के बाद आखिर उनकी उड़न मशीन तैयार हो सकी जो एक आदमी का बोझ उठा सकती थी। इस प्रकार राइट बंधुओं ने हवाई जहाज बनाकर उड़ाया। विमानन की ऐतिहासिक यात्रा के बहाने गुब्बारों से सैर, गुब्बारों से जोखिम भरी उड़ानें, हवाई जहाजों के पुरखे,

अटलांटिक के आर–पार, विमानन आज आदि इस पुस्तक के अध्याय हैं। पुस्तक को रंगीन रेखाचित्रों से सजाया गया है जो बच्चों के लिए आकर्षक होगी।

2. तारामंडल की सैर– इरफान ह्यूमन ने गुब्बारे में अजूबा, जब बूढ़ा तारा मरता है, बातों बातों में अंतरिक्ष, तारामंडल की सैर, महाविस्फोट का सच, अजब–गजब अंतरिक्षपिंड–शीर्षक लेखों को पुस्तकाकार करके एक अध्याय को ही पुस्तक का नाम दे दिया है, पुस्तक बालोपयोगी है।

3. आओ जानें विज्ञान के रहस्य: इसमें कुल 10 अध्याय हैं, जिनमें मुख्य– पढ़ें और बताएँ, क्यों बनती है धूमकेतुओं की पूँछ? क्या दूसरे ग्रहों के प्राणियों को संदेश भेजे गए हैं?

4. विचित्र जीव जंतु (लेखक– मुहम्मद खलील)

प्रस्तुत पुस्तक में जीव जंतुओं के रहन सहन, उनके ढंग, आदत और उनके सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। जीव जंतुओं का संसार भी विज्ञान का एक अभिन्न अंग है। पुस्तक में कुल 40 जीव–जंतुओं का रोचक वर्णन किया गया है। उनके आवास, भोजन, पर्यावरण संरक्षण में उनके योगदान व मानव के लिए कितने हितकारी हैं यह भी बताना लेखक नहीं भूला है यथा– प्राचीन काल का सबसे बड़ा जंतु: डायनासोर, विशालकाय जंतु हाथी, एक विचित्र समुद्री स्तनधारी: ह्वेल, समुद्री जंतु– वालरस, खतरनाक जंतु बाघ, तेज धावक चीता, धोखा देने वाला तेंदुआ, एक बुद्धिमान जंतु भेड़िया, डरपोक लकड़बग्घा, एक सुंदर पशु–जेबरा, बदसूरत किंतु भयंकर जंतु दरियाई घोड़ा....कोयल, पपीहा, कछुआ, हाइड्रा.... आक्टोपस, चींटी, झींगुर, खटमल, जुगनू, अमीबा आदि।

5. घर में प्रयोगशाला, घर में विज्ञान– (बलराम यादव, प्रकाशक– कृष्णा– बुक सेंटर, नई दिल्ली।)

आज हम इक्कीसवीं सदी के द्वितीय दशक के मध्य में प्रवेश कर चुके हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी खास कर संचार इलैक्ट्रॉनिक्स प्रौद्योगिकी ने इस दशक में पाँव इस कदर फैलाए हैं कि हमारे बच्चों का बचपन छिन गया

है। विज्ञान के प्रति बढ़ती उनकी अरुचि तथा इलैक्ट्रॉनिक खिलौनों, चलचित्र, मनोरंजन ने उनकी व्यस्तता इतनी बढ़ा दी है कि उनके पास सोचने और कुछ करने को बचा ही नहीं है। यह पुस्तक कुछ ऐसे घरेलू साधनों, उपकरणों तथा आसानी से उपलब्ध हो जाने वाली वस्तुओं को लेकर घर पर ही प्रयोगशाला स्थापित कर, वैज्ञानिक चिंतन, मनन और प्राकृतिक ढंग से वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने के उद्देश्य से लिखी गई है।

पुस्तक में कुल 52 प्रयोगों को चित्रों के माध्यम से प्रयोग करने की विधि सहित लिखा गया है, जैसे काली वस्तु गर्म हो जाती है, अंडे पानी पर तैरावें, वायु गर्म होकर फैलती है, क्या मटमैला पानी साफ हो सकता है?.... नन्हें जादूगर के जादू, नमक का जादू, बोतल के भीतर अंडा, तैरती सुई,.... घरेलू कचरे से जैविक खाद–मुख्य हैं। बच्चे इन प्रयोगों को स्वयं करके वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

6. मोइन और राक्षस

(लेखिका–अनुष्का रविशंकर, प्रकाशक– एकलव्य, भोपाल, चित्रांकन–अनीता बालचंद्रन)।

इसमें अंधविश्वास को वैज्ञानिक तर्कों के माध्यम से मिटाने का प्रयास किया गया है। इसमें भूत और राक्षस के स्वरूप को जीवंत रूप में देख पाना संभव नहीं है, फिर भी इस काल्पनिक प्राणी से बच्चों को रेखाचित्रों व उनके कार्यकलापों के अंतर्गत मोइन को अवगत कराने का प्रयास किया गया है। अंत में बच्चों को बताने का प्रयास किया गया है कि राक्षस भी हमारे ही समाज के प्राणी हैं।

7. वारिस

(लेखिका– सरस्वती नंदिनी मजूमदार, हिंदी अनुवाद–टुलटुल विश्वास, एकलव्य, भोपाल से प्रकाशित)

इस पुस्तक में एक कपड़े पर रंग–बिरंगे धागों से काढ़ी गई चित्रावली है जिसमें गर्मी है–को सूर्य के गोले की प्रखरता से, फिर बादल आने, हवा चलने, बारिश शुरू होने, बारिश जोर से होने, बिजली चमकने और बरसाती

हवा में सोने के भावों को कढ़ाई द्वारा चित्रित किया गया है। कढ़ाई में काले, लाल, हरे रंग प्रयुक्त हुए हैं। इस छोटी सी पुस्तिका द्वारा बारिश के दृश्यों को बहुत ही अच्छे ढंग से दर्शाया गया है। अवश्य ही पुस्तक छोटे बच्चों, विशेषकर कढ़ाई–बुनाई में रुचि रखने वाली लड़कियों के लिए उपयोगी है।

8. विज्ञान कथा

वर्ष 2013–14 में विज्ञान कथा लेखन एक तरह से अछूता रहा। केवल नार्लिकर की कुछ विज्ञान कथाओं का हिंदी रूपांतर प्रकाश में आया।

विज्ञान कथा (साइंस फिक्शन) विज्ञान संचार की एक सशक्त विधा है। विज्ञान की चमत्कारी गतिविधियों ने विज्ञान लेखन की कल्पना को नई–नई संचेतनाएँ दीं, जिससे रोचक व रोमांचक विज्ञान कथाओं का सृजन संभव हो सका है। डॉ. जयंत विष्णु नार्लिकर मराठी के प्रसिद्ध विज्ञान कथाकार हैं। उनकी 14 विज्ञान कथाओं को 'कृष्ण विवर और अन्य विज्ञान कथाएँ' नाम से विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। इसमें कृष्ण विवर, धूमकेतु और नौलखा हार विख्यात विज्ञान कथाएँ हैं जिन्हें इस संकलन में सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त अंतिम विकल्प, दाईं सड़कें, गणेश जी, टाइम मशीन का करिश्मा, पुत्रवती भव, अहंकार, वायरस, ताराश्म, ट्राय का घोड़ा, छिपा हुआ तारा, विस्फोट, यक्षों की देन आदि मुख्य हैं।

हिंदी में मानक विज्ञान कथाओं का अभाव है। डॉ. नार्लिकर की इन विज्ञान कथाओं से हिंदी के पाठकों को परिष्कृत बौद्धिक भोजन प्राप्त हो सकेगा।

9. टिंकु उस्ताद (बाल विज्ञान कथा) (लेखक इंद्रभूषण मित्तल, प्रकाशक–विज्ञान प्रसार, नोयडा, उ. प्र.)।

प्रस्तुत पुस्तक '*टिंकू उस्ताद*' एक उत्कृष्ट बाल विज्ञान कथा है। कथा के पात्र मूल रूप से एक माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी और शिक्षक हैं और पुस्तक का ताना–बाना विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों पर आधारित है जो जागरूक हैं। अतः विद्यालय में '*विज्ञान चेतना क्लब*' बनाया गया है। कथा का मुख्य पात्र '*टिंकू उस्ताद*' के अतिरिक्त नाजिमा, राहुल, मास्टर हनी

आदि समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और पाखंडों को दूर करने का भी प्रयास करते हैं। इसमें कुल 13 शीर्षक वाले लेख सम्मिलित हैं– यथा दिया जले पानी से, ढोंगी बाबा मंदिर से, टिंकू उस्ताद, अग्नि स्नान आदि मुख्य हैं।

विविध

1. सैन्य मनोविज्ञान– (लेखक– निधि माहेश्वरी, प्रकाशक– पोइंटर पब्लिशर्स– जयपुर)।

प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न तत्ववेत्ताओं के सैन्य परिप्रेक्ष्य में अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों को उचित साक्ष्यों के साथ बड़ी ही सरल भाषा में प्रकाशित किया गया है। संपूर्ण पुस्तक को चार भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग– सैन्य संगठन एवं मनोविज्ञान, सैन्य मनोविज्ञान की उपयोगिता आदि को 16 उप–भागों में विस्तार दिया गया है जैसे– सैन्य मनोविज्ञानः एक परिचय, प्रारंभिक सैन्य मनोविज्ञान एवं प्रविधियाँ, मनोवैज्ञानिक युद्ध कला, व्यक्तित्व एवं सैन्य जीवन, सैनिकों में आत्मगत कुशलता, सैनिकों का मानसिक स्वास्थ्य, सैन्य नेतृत्व.... आदि में मुख्य बिंदु की विस्तार से चर्चा की गई है।

2. जीनोम एवं जीनोमिकी– (लेखक– दिनेश मणि, प्रकाशक–सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली)।

आनुवांशिकी की पहेली को सुलझाना जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण सफलता है। विगत दो सौ वर्षों में विज्ञान जगत में हुई असाधारण प्रगति के कारण आनुवांशिकता की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझा जा सका है। जीनोमिकी आनुवांशिकी का वह क्षेत्र है, जिसमें हम जीवों के संपूर्ण जीनोम का अध्ययन करते हैं। इनमें जीवों के संपूर्ण डी एन ए अनुक्रम और आनुवांशिक मानचित्रण का प्रयास किया जाता है।

जीनोमिकी के अंतर्गत् किसी कोशिका या ऊतक के सभी जीन का अध्ययन डी.एन.आर.एन.ए. और प्रोटीन स्तर पर होता है। जीनोमिकी के क्षेत्र में निरंतर हो रही प्रगति को देखते हुए यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि जीनोमिक्स से प्राप्त सूचना नए लक्ष्यों की खोज करने तथा नई औषधि को तैयार करने में काफी उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक में 11 अध्याय हैं– जीनोम एवं जीनोमिकी: परिचय एवं प्रस्तावना, जीनोमिकी के प्रकार, जीनोम अनुक्रमण, जीनोम मानचित्रण, मानव जीनोम परियोजना.... आनुवांशिकी रोग और जीन उपचार आदि। ये अध्याय स्वतः सूचक हैं। इस विषय पर लिखी गई यह प्रथम पुस्तक है। अतः स्वागत योग्य है।

3. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन : एक स्वर्णिम यात्रा

(लेखक– डॉ. विभुवन नाथ उपाध्याय, प्रकाशक– रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, दिल्ली)।

प्रस्तुत पुस्तक विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) की उपलब्धियों को हिंदी भाषा के माध्यम से जनसाधारण को परिचित कराने के उद्देश्य से लिखी गई है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन 1 जनवरी 1958 को अस्तित्व में आया। प्रारंभ में इसमें मात्र 10 प्रयोगशालाएँ ही थी किंतु अब यह संख्या 50 हो गई हैं। यह देश का उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी उत्पादक एवं विभिन्न यंत्रों को विकसित करने वाला वैज्ञानिक संगठन है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास में प्रो. दौलत सिंह कोठारी, प्रो. भगवंतम, राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का विशेष योगदान है। पुस्तक के द्वितीय अध्याय 'प्रेरणा के स्रोत' के अंतर्गत इन सबके योगदान की चर्चा है। अगले अध्याय में प्रक्षेपास्त्रों के विकास का विवरण है। इनमें पृथ्वी, अग्नि, आकाश, शौर्य, प्रहार, सागरिका, ब्रह्मोस, त्रिशूल, नाग का विवरण चित्र सहित दिया गया है। अध्याय पाँच संगठन द्वारा विकसित विभिन्न प्रणालियों के अंतर्गत विभिन्न रडार और युद्ध सामग्री (आर्नोट्स), युद्ध वाहनों विशेषकर टैंक–सोनार प्रणालियाँ चित्र सहित उल्लिखित हैं। संगठन द्वारा विकसित नवीन पदार्थों तथा उपयोगी अस्त्रों का विवरण पृथक अध्याय में दिया गया है।

4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक नई पहल : (संपादक–सुरजीत सिंह, प्रकाशक– सी.एस.आई.आर.–राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर) नई दिल्ली)। वैज्ञानिक दृष्टिकोण यानी साइंटिफिक टेंपर शब्द की व्याख्या के साथ ही भारत सरकार द्वारा इस दिशा में उठाए गए कदमों और

नीतियों का उल्लेख हुआ है। इनमें हिंदी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी : संचार की लकीरें, वैज्ञानिक सोच और हिंदी में विज्ञान लेखन, हिंदी के कुछ ऑनलाइन द्विभाषी शब्दकोश, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं शिक्षण संस्थाएँ, हिंदी में विज्ञान कथाओं का अभाव, वैज्ञानिक चेतना के सामाजिक सरोकार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार द्वारा महिलाओं तक पहुँच, वैज्ञानिक चेतना जगाने में विज्ञान संग्रहालयों एवं विज्ञान केंद्रों की भूमिका, इंटरनेट में हिंदी, हिंदी में विज्ञान पत्रकारिता : समाचार संकलन, संपादन एवं प्रकाशन की चुनौतियाँ मुख्य हैं। उपर्युक्त 14 लेखों में वैज्ञानिक सोच अथवा वैज्ञानिक चिंतन प्रणाली अथवा साइंटिफिक समता, बराबरी पर आधारित एक विश्वदृष्टि है जो मानव जाति के उत्तरोत्तर विकास के लिए प्रतिबद्ध है, विज्ञान तकनीक एक उत्पाद है जबकि साइंटिफिक टेंपर वैज्ञानिक चिंतन पद्धति का विशद वर्णन है।

वैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रसार के लिए सामाजिक न्यास, विस्तृत शिक्षा और अबाधित संचार पूर्वाकांक्षित है। भारत की 70 प्रतिशत जनता आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रही है और जनता के इसी हिस्से के बीच वैज्ञानिक प्रगति का विकास हमारे समय की चुनौती है।

5. विज्ञान की विकलांगता पर विजय– लेखक– विनोद कुमार मिश्र, प्रकाशक– विज्ञान प्रसार, नोयडा।

विकलांगता एक अति प्राचीन, जटिल एवं गतिशील विश्वव्यापी समस्या है जिससे समाज के हर वर्ग के मानव प्राणी– ग्रामीण शहरी, पुरुष–महिला, बच्चे, प्रौढ़ तथा जनजाति, धर्म या संप्रदाय के लोग प्रभावित होते हैं। विषमताओं को सामान्य व्यापारों में बदलने यानी विकलांगताओं पर विजय पाने में विज्ञान की जो भूमिका हो सकती है उसके समाधान के लिए जो साधन आधुनिक विज्ञानियों ने जुटाए हैं उसकी जानकारी के लिए प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है।

लेखक ने स्वयं विकलांगों की समस्याओं का अनुसंधान किया है और विस्तार से उन पर प्रकाश डाला है। इससे संबंधित संभाव्य सामग्री को 32

अध्यायों के अंतर्गत सुनियोजित किया है और अंत में संदर्भ ग्रंथों की सूची भी दे दी है।

6. विज्ञाननामा– (लेखक– देवेंद्र मेवाड़ी, प्रकाशक– आधार प्रकाशन– पंचकुला, हरियाणा)। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने साहित्य की विविध विधाओं जैसे लेख (निबंध), रिपोर्ताज, व्यंग्य, डायरी, भेंटवार्ता, वैज्ञानिक प्रवास, रेडियो नाटक, पटकथा, कविता, बाल विज्ञान, संस्मरण, समीक्षा, पत्र–संवाद आदि में विज्ञान की बातें सामान्य जन की भाषा में लिखने का प्रयास किया है। लेख शीर्षक में कुल 14 निबंध संकलित हैं– यथा मेरी कलम कथा, अथ क्लोन कथा, लीजिए, पेश है डिजाइन बेबी, ब्रह्मांड की रचना एवं हिग्स बोसोन, अनोखी हमारी पृथ्वी, क्या किताबों में ही रह जाएगी जीव जातियाँ.... रिपोर्ताज– चाँद अब दूर नहीं, व्यंग्य–कुत्ते की दुम टेढ़ी क्यों, डायरी–बस्ती निजामुद्दीन से सौर मंडल की सैर, मकर संक्रांति, भेंटवार्ता.... आदि। यह ललित निबंधशैली में लिखित कृति है।

7. मेरी विज्ञान डायरी–दो खंड– (लेखक– देवेंद्र मेवाड़ी, प्रकाशक– आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा)।

हिंदी में विज्ञान डायरी विधा का सूत्रपात करने का श्रेय देवेंद्र मेवाड़ी को है। इसमें धरती से और आकाश, या यूँ कहे पूरी कायनात से जुड़े तमाम विषयों पर बात की गई है जिसके कारण इसमें विविधता मिलेगी। इसमें प्रकृति है, हम हैं, वन हैं। पशु पक्षियों की अंतरंग कहानियाँ हैं। बढ़ते बाघों और चीते की वापसी की बातें की गई हैं। हरियल, गौरेया, कोयल और कौवों के साथ ही प्रवासी पक्षियों के बारे में बताया गया है। साथ ही सुनामी, भूकंप और विकिरण की भी जानकारी है। तपती, गरमाती धरती की बातों के साथ–साथ बेतार, मोबाइल और इंटरनेट क्रांति के बारे में लिखा गया है। सूर्य और घूमती बेधशालाओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

गणित वर्ष के अवसर पर भारत के महान गणितज्ञ रामानुज के साथ प्राचीन गणितज्ञों को भी याद किया गया है। प्रथम अंतरिक्ष यात्री यूरी गगारिन और चाँद पर पहला कदम रखने वाले अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग को भी याद किया गया है।

41 HRD/16—25B

8. विज्ञान कैलेंडर— (लेखक—कृष्ण कुमार मिश्र, प्रकाशक— विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली)।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं चेतना किसी राष्ट्र और समाज की बौद्धिक उन्नति का मापदंड होता है। जनमानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास भारत के संविधान के मूल कर्तव्यों में से एक (अनुच्छेद51ए/एच) है।

विज्ञान के ऐतिहासिक प्रसंग और घटनाक्रम पाठकों में विषय के प्रति रुचि जगाते हैं। इसी के मद्देनजर वैज्ञानिक अभिरुचि तथा विज्ञान साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान के ऐतिहासिक घटनाक्रम पर आधारित ई—कैलेंडर है जो पाठक को उस दिन की कुछ अहम वैज्ञानिक घटनाओं तथा उपलब्धियों की वैज्ञानिक जानकारी देता है।

विज्ञान कैलेंडर में लेखक ने बड़े श्रम से 365 या 366 दिनों में घटित ऐतिहासिक खोजों का विवरण, खोजकर्ताओं के जन्म—मृत्यु का लेखा—जोखा तैयार किया गया है। जैसे 1 जनवरी, सत्येंद्रनाथ बसु जन्म 1 जनवरी 1894—मृत्यु 4 फरवरी 1974)। सत्येंद्रनाथ बासु भारत के प्रमुख गणितज्ञों तथा भौतिकी वैज्ञानिकों में से एक माने जाते हैं। इन्होंने अलबर्ट आइंस्टाइन के साथ प्रसिद्ध 'बसु—आइंस्टाइन सांख्यिकी' का प्रतिपादन किया और क्वांटम सिद्धांत तथा प्लांक के 'कृष्णिका विकिरण' नियम के बारे में भी लिखा। आज ये क्वांटम भौतिकी क्षेत्र में अनुसंधान के बुनियादी साधन हैं। इसी प्रकार वर्ष के 366 दिनों में अलग वैज्ञानिकों के जीवनवृत्त के साथ कार्यों, आविष्कारों एवं खोजों का वर्णन किया गया है।

9. प्राचीन भारत अध्यात्म और विज्ञान— लेखक— (डॉ. ओम प्रभात अग्रवाल, प्रकाशक—सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली) भारत ने अध्यात्म के क्षेत्र में सर्वोच्च स्तर प्राप्त करते हुए भी विज्ञान के महत्व को कभी नकारा नहीं। एक ओर मनुष्य में नैतिक, सांस्कृतिक एवं मानवीय भावनाओं को उभारना आवश्यक समझा तो दूसरी ओर समाज और राष्ट्र की भौतिक उन्नति के लिए विज्ञान का महत्व भी बढ़ाया। ईशोपनिषद् का कथन है कि विश्व के प्रत्येक कण में एक ही ऊर्जा विदयमान है अथवा ऋग्वेद की मान्यता कि ब्रह्मांड की रचना

एक ही ऊर्जा विद्यमान है अथवा ऋग्वेद की मान्यता कि ब्रह्मांड की रचना हिरिण्यगर्भ से हुई, आज के विज्ञान के सिद्धांतों–आइंस्टाइन का ऊर्जाओं के महान एकीकरण का सिद्धांत तथा स्टीफेन हाकिंग द्वारा गणितीय रूप से सिद्ध महाविस्फोट के सिद्धांत से मिलते–जुलते हैं। प्राचीन भारतीयों में विज्ञान बोध कितना प्रबल था– यह इस राष्ट्र की रसायनशास्त्र एवं आयुर्वेद की परंपराओं में स्पष्ट परिलक्षित है।

लेखक ने समय–समय पर विज्ञान का दर्शन, पर्यावरण का दर्शन, पर्यावरण और हिंदू चेतना, भारतीय संस्कृति मूल बिंदु और प्रकावट स्वरूप, शिवतांडव में विज्ञान, हिंदुत्व में विज्ञान, प्राचीन भारत में रसायन की परंपरा. ... आदि के विषय में लिखित निबंधों को पुस्तकबद्ध करके पाठकों को सुलभ करा दिया है।

नवाचार : समृद्धि, शक्ति एवं प्रगति का आधार

(संपादक– विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद एवं देवव्रत द्विवेदी, प्रकाशक– विज्ञान परिषद् प्रयाग)। प्रस्तुत पुस्तक के संपादक विज्ञानरत्न श्री लक्ष्मण प्रसाद जी स्वयं एक लब्धप्रतिष्ठित नवाचारी हैं। उन्होंने अपना सारा जीवन नवाचार को समर्पित कर दिया। इस 'नवाचार' पुस्तक में कुल 22 नवाचारी विज्ञान संचारकों व लब्धप्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के लेख संकलित है जैसे–भारत में नवाचार आंदोलन : दशा और दिशा (विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद), भारतीय नवाचार, डॉ. आर.ए. माशेलकर, सृजनशीलता और नवीनता – डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पाठ्यक्रम में नवाचार विषय का स्थान (वि. लक्ष्मण प्रसाद) नवाचारियों के समक्ष चुनौतियों को हल करने के उपाय (विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद), ग्रामीण जन जीवन में नवाचार की व्यापक संभावनाएँ– विजय चितौरी, एंड्राएड के नूतन एप्प (प्रो.के.के. भूटानी) आदि। प्रस्तुत पुस्तक नवाचारी बालकों को प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

ग. गणित / गणित कोश

गणित अनेकानेक वैज्ञानिक और तार्किक सोच का आधार है। वैश्वीकरण एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ गणित का महत्व बढ़ गया है। व्यापार,

वाणिज्य से लेकर अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी तक में गणित व्याप्त है। वर्ष 2013–14 में गणित विषयक केवल 3 पुस्तकें प्रकाश में आईं।

1. **ज्यामिति ' द्विविमीय एवं त्रिविमीय** लेखक– डॉ. दीपक कुमार श्रीवास्तव, प्रकाशक– डार्लिंग किंडरसले, नोयडा।

ज्यामिति गणित की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। द्वि–विमीय एवं त्रि–वीमीय निर्देशांक ज्यामिति इस विधा की दो अति आवश्यक धाराएँ हैं। प्रस्तुत पुस्तक द्वि–विमीय एवं त्रि–विमीय निर्देशांक ज्यामिति के सभी आवश्यक शीर्षकों को क्रमशः छह व ग्यारह अध्यायों में सुधी पाठकों की समस्याओं को ध्यान रखकर लिखी गई है। पुस्तक को कुल 17 अध्यायों में विस्तार दिया गया है यथा प्रारंभिक विवेचना, शांकव का ध्रुवीय समीकरण, शांकव अनुरेखण, समतल, सरलेखा, गोला, बेलन शंकु आदि मुख्य हैं।

2. **विद्यार्थियों हेतु वैदिक गणित**– (लेखक– राजेश कुमार ठाकुर, प्रकाशक– चिल्ड्रेन बुक टेंपल दिल्ली)।

वैश्वीकरण एवं तकनीक को इस विज्ञान आधारित विकास में गणितीय गणनाओं की ज्यादा जरूरत है। वैदिक गणित युवा मस्तिष्क के विकास में तो सहायक है ही, साथ में अंकगणितीय गणना पलक झपकते हल करने की विधि का भंडार है। वैदिक गणित गणना के समय को पारंपरिक विधि के मुकाबले लगभग 1/10 गुना तक कम कर सकता हैं । इस पुस्तक के माध्यम से जोड़, घटा, गुणा, अबलोकन में गुणा, बीजगणित में गुणा, विभाजन वर्ग, वर्गमूल, धन, धनमूल आदि पर वैदिक रीति से गणना करने की विधि बताई गई है।

लेखक का कहना है कि वैदिक गणित से अंकगणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति इत्यादि की गणनाएँ तेजी से की जा सकती है। साथ ही हम अपने मस्तिष्क से श्रम करवाकर उसे ठीक रख सकते हैं।

3. **आधुनिक गणित कोश** (लेखक – डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, प्रकाशक–मदन लाल एण्ड संस, दिल्ली)।

शब्दों के क्रम के लिए गणित के पठन–पाठन में प्रयुक्त मूल अंग्रेजी शब्दों को आधार रूप में लेते हुए अंग्रेजी वर्णमाला के क्रम में उन्हें व्यवस्थित किया गया है। परिभाषा हिंदी शब्द वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह से लिए गए हैं।

घ. वैज्ञानिक निबंध – (संपादक – सुरेश कुमार जिंदल तथा फूलदीप कुमार)

विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी के क्षेत्र में विश्व की उपलब्धियों से लेकर इस शताब्दी में प्राप्त महान सफलताओं की एक लंबी परंपरा रही है। प्राचीन विश्व में विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र और दर्शन शास्त्र का अद्वितीय विकास हुआ। विश्व कणाद, कपिल, भारद्वाज, नागार्जुन, चरक, सुश्रुत, वराह मिहिर, आर्यभट्ट, गैलीलियों, आर्कमिडीज, अरस्तू और भास्कराचार्य जैसे वैज्ञानिकों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है। इन वैज्ञानिकों ने गणित, ज्योतिष, चिकित्सा शास्त्र, रसायन, दर्शन एवं खगोल इत्यादि क्षेत्रों में अभूतपूर्व योगदान दिया। कालांतर में विश्वभर में विज्ञान तथा प्रौद्यागिकी के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन आए।

आज भी अनेक खोज एवं अन्वेषण कार्य चल रहे हैं जिनसे मानव की प्रकृति को समझने में मदद मिल रही है तथा इस ज्ञान के उपयोग से नित नए संसाधनों की रचना हो रही है। रक्षा वैज्ञानिक सूचना तथा प्रलेखन केंद्र (डेसीडेक), डी. आर. डी. ओ. तथा रक्षा मंत्रालय ने मिलकर चार पुस्तकें वैज्ञानिक निबंध के रूप में प्रकाशित कराई हैं जिसको सुरेश कुमार जिंदल एवं फूलदीप कुमार ने संपादित किया है।

प्रस्तुत पुस्तक वैज्ञानिक अनुसंधान तथा विकास पर आधारित है जिसमें विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे पर्यावरण, चिकित्सा, भौतिकी, रसायनिकी, भू–विज्ञान, कृषि, जीवविज्ञान, इलैक्ट्रॉनिकी तथा रक्षा प्रौद्योगिकी के आलेखों को निबंधात्मक शैली में संकलित किया गया है। इस प्रकार ये चार पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें कुल 290 वैज्ञानिक विषयों पर निबंध लिए गए हैं जिनमें

समसामयिक ज्ञान–विज्ञान से लेकर प्राचीन विषयों को भी विषयवस्तु बनाया गया है। ये चार पुस्तकें निम्न हैं –

1. वैज्ञानिक अनुसंधान तथा विकास
2. वैज्ञानिक अनुसंधान
3. समकालीन वैज्ञानिक अनुसंधान
4. समकालीन विज्ञान

च. ज्ञान–विज्ञान शैक्षिक निबंध (संपादक–कृष्ण कुमार मिश्र, प्रकाशक – होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र–मुंबई)।

वर्तमान युग सूचना एवं संचार का युग है। इक्कीसवीं सदी को ज्ञान की सदी कहा जाता है। विगत वर्षों में देश में सूचना तथा संचार प्रौद्यागिकी के क्षेत्र में क्रांति आई है। संचार माध्यमों में इलैक्ट्रॉनिक सामग्रियों का दायरा तथा प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र (TIFR) ने विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में तृतीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया था। उक्त कार्यशाला में 16 चयनित निबंध इस पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं – ये निबंध भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान, चिकित्सा, पर्यावरण तथा गणित जैसे विषयों पर केंद्रित है। साथ ही इंटरनेट पर भी विज्ञान की पुस्तकें तथा लोकोपयोगी विज्ञान की कई किताबें भी उपलब्ध हैं। यहाँ पर भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, जैव–प्रोद्योगिकी, नैनोसाइंस, मृदा विज्ञान से लेकर कृषि विज्ञान के अनेक विषयों पर रुचिकर तथा सूचनाप्रद निबंध उपलब्ध हैं।

छ. विकिरण हमारे जीवन में – (लेखक – डॉ. दिनेश मणि)।

पर्यावरण, ऊर्जा आदि विषयों पर लोकोपयोगी पुस्तकों के मानव जीवन पर विकिरणों के प्रभाव का रोचक एवं ज्ञानवर्धक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

विकिरण ब्रह्मांड से पृथ्वी पर निरंतर आता रहता है और मानव के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाता चला आ रहा है। प्राकृतिक विकिरण के अलावा कुछ मानव निर्मित विकिरण भी होते हैं जिनका उपयोग चिकित्सा, कृषि, उद्योग, पर्यावरण, ऊर्जा, पुरातत्व इत्यादि में किया जाता है। विकिरणों

के लाभ के साथ–साथ इससे होने वाली हानियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। आम आदमी को इस बात की जानकारी देना बहुत आवश्यक है कि विकिरणों का प्रयोग कर औद्योगिक प्रगति एवं पर्यावरण की सुरक्षा का कार्य साथ–साथ चल सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, तत्पश्चात् विकिरण के विभिन्न स्रोत जैसे यूरेनियम, रेडियम, रेडियोधर्मी, समस्थानिक, परमाणु भट्ठी आदि के विवरण के साथ ही विकिरणों के संभावित खतरों पर विशेष चर्चा है। विकिरण के विविध उपयोगों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है जिसमें चिकित्सा, कृषि, उद्योग, रसायन, ऊर्जा, खाद्य व पुरातात्विक अध्ययन प्रमुख हैं।

3. लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ

किसी भी साहित्य की समृद्धि में पत्र पत्रिकाओं की अहम् भूमिका होती है। विज्ञान साहित्य अछूता नहीं है। हिंदी में विज्ञान पुस्तकों के प्रकाशन के साथ–साथ पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी नियमित होता है, क्योंकि पत्र पत्रिकाएँ पुस्तक लेखन की भूमिका तैयार करती हैं। पत्र पत्रिकाओं में कुछ मासिक, पाक्षिक व कुछ त्रैमासिक प्रकाशित होती हैं।

हिंदी में जो विज्ञान पत्रिकाएँ विगत वर्ष प्रकाशित हो रही थीं, वे वर्ष 2013–14 में भी प्रकशित होती रहीं। इनमें 'विज्ञान' (मासिक), आविष्कार, (मासिक), विज्ञान प्रगति (मासिक), विज्ञान आपके लिए, इलैक्ट्रॉनिकी आपके लिए, आयुर्वेद महासम्मेलन, ग्लोबल ग्रीन, शैक्षिक संदर्भ, चकमक, आंचलिक पत्रकार, पर्यावरण डाइजेस्ट, नेहा ड्रीम 2047, भगीरथ, जलचेतना, विज्ञान परिचर्चा, विज्ञान गंगा मुख्य हैं। विज्ञान समाचार पत्रों में साइंस टाइम्स न्यूज एंड व्यूज एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी पूर्व की भांति निकलता रहा।

'विज्ञान' मासिक अपने प्रकाशन का सौवाँ वर्ष पूरा कर रही है। चूंकि 'विज्ञान' मासिक का प्रकाशन अप्रैल 1915 में प्रारंभ हुआ था, उस समय पूरे देश में यह पत्रिका अकेली हिंदी में प्रकाशित हुई थी। इसलिए उसे हिंदी विज्ञान की प्रथम पत्रिका होने का गौरव प्राप्त है। इसके प्रथम संपादक लाला

सीताराम और श्रीधर पाठक थे, पत्रिका में कुल 48 पृष्ठ थे और इसका मूल्य उस समय 4 आना प्रति मास व 3 रुपया वार्षिक सदस्यता थी। आज भी यह पत्रिका 48 पृष्ठ की प्रकाशित होती है (विशेषांकों को छोड़कर)। विज्ञान परिषद् प्रयाग ने अपनी स्थापना के सौ वर्षों में 'विज्ञान' मासिक के अनेक विशेषांकों को निकाला है जिनमें पृष्ठों की संख्या 100 से अधिक पहुँच गई है। इनमें अनेक वैज्ञानिकों व विज्ञान संचारकों के व्यक्तित्व व कृतित्व को लेकर निकाला गया या फिर 'विज्ञान' के चर्चित क्षेत्र जैसे ऊर्जा विशेषांक, जल विशेषांक, बाल विशेषांक, स्वास्थ्य विशेषांक, कृषि वानिकी विशेषांक.. ....आदि मुख्य है। इनके अतिरिक्त वर्ष 2014 में शताब्दी अंक, महिला वैज्ञानिक विशेषांक, गंगा विशेषांक निकले। साथ ही फरवरी 2015 में हिमालय विशेषांक निकलने की तैयारी पूरी हो चुकी है। ये सारे विशेषांक हिंदी विज्ञान जगत में काफी चर्चा में रहे।

इनके अतिरिक्त बच्चों के लिए कई विज्ञान पत्रिकाएँ पूर्व की भांति निकलती रही हैं जिनमें मुख्य रूप से चकमक, शैक्षिक संदर्भ (भोपाल) मुख्य हैं।

'पूसा सुरभि' भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से निकलती है। 'मंथन' अंक 12, वर्ष 2014 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की से प्रकाशित होती है। इसमें 'बायोप्लास्टिक, जीव एक प्राकृतिक पैकेजिंग–एक आध्यात्मिक चिंतन, पर्यावरण संरक्षण में नारी का योगदान, पेट्रोल डीजल वाहनों से बढ़ता प्रदूषण तथा ऊर्जा की खपतः समस्या एवं समाधान, घटती ओजोन परत एवं बढ़ता भूमंडलीकरण तापमान, खेलजनित पर्यावरण प्रदूषण, हिंग्स वोसान आदि पर मुख्य लेख हैं।

'विज्ञान कथा' त्रैमासिक पत्रिका भी पूर्व की भांति प्रकाशित होती रही।

'जलवायु' वर्ष – 4 अंक 10–15 फरवरी से जुलाई 2015 एक नवीन अंक प्रकाश में आया।

4. सेमिनार / गोष्ठियाँ / व्याख्यान

वर्ष 2014 में विज्ञान लेखन से इतर विज्ञान संबंधी मुख्य गतिविधियाँ निम्नवत् रही।

1. विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान 14 फरवरी 2014 को सुप्रसिद्ध गणितज्ञ डॉ. स्नेहलता निगम स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित की गई। कमला नेहरू मेमोरियल अस्पताल की मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. प्रो. कृष्णा मुखर्जी ने अपने व्याख्यान में 'महिलाओं की चिकित्सा संबंधी समस्याएँ' विषय पर विस्तार से चर्चा की।

विज्ञान परिषद् प्रयाग शताब्दी समारोह संपन्न

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री शेखर दत्त ने विज्ञान परिषद् प्रयाग के शताब्दी समारोह में उपस्थित विज्ञान लेखकों व संचारकों को संबोधित करते हुए अपने व्याख्यान में कहा कि विश्व में सबसे अधिक युवा हमारे देश में है। यही युवा दुनिया भर के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कौशल के अनुरूप नेतृत्व संभालेंगे। इसलिए आवश्यक है कि उन्हें विज्ञान के सरोकारों से जोड़कर इसके लिए तैयार किया जाए और यह जिम्मेदारी पिछले 100 वर्षों से विज्ञान परिषद् प्रयाग बखूबी निभाता आ रहा है। इसी बात को राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस – 2015 के उँद्‌घाटन उद्‌बोधन में हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी दुहराई है।

समारोह में श्री दत्त ने विज्ञान परिषद् की 300 पृष्ठों की स्मारिका 'शतवार्षिकी' एवं 8 विज्ञान पुस्तकों का लोकार्पण किया। उन्होंने परिषद् द्‌वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों को भी वितरित किया। इनमें विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद आविष्कार लेखन पुरस्कार, लखनऊ के चंद्रमणि सिंह को, तुरशन पाल पाठक स्मृति विज्ञान लेखन पुरस्कार, नई दिल्ली के नवनीत कुमार गुप्ता को, श्री ललित किशोर पांडेय स्मृति विज्ञान पुरस्कार श्री मेहरबान राठौर को तथा डॉ. गोरख प्रसाद विज्ञान पुरस्कार बलराम यादव तथा कु. प्रगति दविवेदी को, व्हिटेकर पुरस्कार श्री राकेश दूबे (वाराणसी) को प्रदान किया गया। इस अवसर पर देश भर से आए लगभग 50 विज्ञान संचारकों को भी शताब्दी सम्मान प्रदान किया गया।

शताब्दी समापन समारोह में विज्ञान परिषद् के सभापति डॉ. दीनानाथ तिवारी ने स्वागत भाषण दिया तथा प्रधानमंत्री प्रो. शिवगोपाल मिश्र ने

शताब्दी समारोह की रूपरेखा रखी। समारोह की अध्यक्षता विश्व कृषि वानिकी केंद्र (दक्षिण एशिया) नई दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र पाल सिंह ने की।

'विज्ञान सामाजिक गतिकी को रूपांतरित करता है' उक्त वाक्य भारत के पूर्व राष्ट्रपति और मिसाइलमैन डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम ने 13 मार्च 2012 को विज्ञान परिषद् प्रयाग की स्थापना के सौवें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में शताब्दी समारोह में व्यक्त किए थे। इस शताब्दी समारोह के उद्घाटन उद्बोधन में ही उन्होंने कहा था कि 'मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस केंद्र की स्थापना चार राष्ट्र भक्तों ने 1913 में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को जन सामान्य तक उनकी ही भाषा में पहुँचाने के उद्देश्य से की थी। वे राष्ट्रभक्त कितने दूरदर्शी थे जिनके प्रयास से आज भी विज्ञान परिषद् विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही नवीनतम गतिविधियों से समाज को अवगत करा रही है।

अब 'विज्ञान' मासिक अप्रैल 2015 को अपने प्रकाशन के सौ वर्ष पूरा कर रही है। अर्थात् '*विज्ञान* मासिक का शताब्दी वर्ष चल रहा है।

प्रो. देवेंद्र कुमार राय स्मृति व्याख्यान–

राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक एवं काउंसिल फार साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च के पूर्व महानिदेशक पद्मभूषण प्रो. एस. के. जोशी ने 20 नवंबर 2013 को काशी हिंदू विश्वविद्यालय में भौतिकी विभाग के एस एन बोस सभागार में आयोजित भौतिकविद् प्रो. देवेंद्र कुमार राय स्मृति व्याख्यान श्रृंखला के तहत क्वांटम यांत्रिकी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर उन्होंने प्रो. देवेंद्र कुमार राय की स्मृति में प्रकाशित स्मारिका 'प्रतिभा' का विमोचन किया।

रमेश चंद्र कपूर स्मृति व्याख्यान

21 दिसंबर 2013 को विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में विज्ञान परिषद् के पूर्व प्रधानमंत्री व रसायनविद् डॉ. रमेश कपूर की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला के अंतर्गत लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष और

तीन विश्वविद्यालयों के पूर्व कुलपति प्रो. कृष्ण बिहारी पांडेय ने 'प्राचीन भारत में विज्ञान की गौरवशाली परंपरा' पर अत्यंत विद्वत्तापूर्ण एवं सूचनाप्रद व्याख्यान दिया।

डॉ. रत्नकुमारी स्मृति व्याख्यान

विज्ञान परिषद् प्रयाग के तत्वावधान में मंगलवार 11 मार्च 2014 को डॉ. रत्नकुमारी स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत वरिष्ठ लेखिका श्रीमती मंजुलिका लक्ष्मी ने 'हिंदी साहित्य में महिला कथाकारों का योगदान' विषय पर व्याख्यान दिया।

डॉ. आशुतोष मिश्र का व्याख्यान

2 जुलाई 2014 को विज्ञान परिषद् प्रयाग के सभागार में परिषद् के अप्रवासी सभ्य डॉ. आशुतोष मिश्र ने 'न्यू ट्रेन्डस इन चिप मैन्यूफैक्चरिंग' विषय पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने चिप निर्माण के क्षेत्र में विश्वभर में किए जा रहे नवीनतम शोधों की विस्तृत जानकारी दी।

प्रो. नंदलाल सिंह स्मृति व्याख्यान

1 अगस्त 2014 को विज्ञान परिषद् सभागार में प्रो. नंदलाल सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के प्रो. अवधेश कुमार राय ने 'पर्यावरण प्रदूषण और उसका मानीटरन' विषय पर व्याख्यान दिया।

डॉ. रामकुमारी मिश्र स्मृति व्याख्यान

1 सितंबर 2014 को तृतीय डॉ. रामकुमारी मिश्र स्मृति व्याख्यान माला के अंतर्गत वरिष्ठ पत्रकार श्री के. विक्रम राव ने 'बाजारवाद की गिरफ्त में मीडिया' विषय पर व्याख्यान दिया।

श्रीमती मालती द्विवेदी स्मृति व्याख्यान माला

16 अक्टूबर 2014 को विज्ञान परिषद् में श्रीमती मालती द्विवेदी स्मृति व्याख्यानमाला का प्रथम व्याख्यान बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना की अवकाश प्राप्त उपनिदेशक डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र ने 'लोक साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर दिया।

राष्ट्रीय कार्यशाला

'हिंदी में शैक्षिक–ई सामग्री का विकास' नामक कार्यशाला विज्ञान परिषद् प्रयाग के सभागार में 14 से 16 नवंबर 2014 को संपन्न हुई। इस कार्यशाला का आयोजन होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केंद्र, मुंबई ने किया। इस कार्यशाला में कुल 34 लेखकों के लिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।

5. पुरस्कार

डॉ. गोरख प्रसाद पुरस्कार – वर्ष 2013 में 'विज्ञान' प्रत्रिका में प्रकाशित लेखों पर नवोदित लेखकों को 'डॉ. गोरख प्रसाद विज्ञान पुरस्कार' प्रदान किया गया।

30 दिसंबर 2013 को हजरत निजामुद्दीन की दरगाह के निकट गालिब एकेडमी के सभागार में आयोजित एक समारोह में **डॉ. मुहम्मद खलील विज्ञान पुरस्कार** अलीगढ़ विश्वविद्यालय के जैव रसायन विभाग की अध्यक्ष प्रो. बिलकिस बानो को उर्दू में विज्ञान लेखन के लिए प्रदान किया गया।

उ. प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा डॉ. दिनेश मणि को उनकी कृति 'विश्व क्रांति के जनकः डॉ. बोरलॉग' पुस्तक पर वर्ष 2013 के जगदीश गुप्त सर्जना पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसी क्रम में श्री धनंजय चोपड़ा को भी उ.प्र हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा 'वैज्ञानिकों से साक्षात्कार' पर वर्ष 2013 के लिए श्री बाबू राव विष्णु पराड़कर पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। विगत वर्ष 2012 में डॉ. दिनेश मणि की कृति 'लोकप्रिय विज्ञान पत्रकारिता' पर श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर पुरस्कार प्रदान किया गया था तथा 'सुदूर संवेदन' पर श्री संपूर्णानंद पुरस्कार प्रदान किया गया था।

श्रीमती उमा प्रसाद विज्ञान लेखन सम्मान

वर्ष 2013 के लिए श्रीमती उमा प्रसाद विज्ञान लेखन सम्मान डॉ. सुनंदादास को उनकी पुस्तक – 'ग्रीन हाउस गैसें' के लिए प्रदान किया गया।

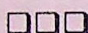
6. निधन/क्षतियाँ

- वरिष्ठ पत्रकार एवं 'नवनीत' डाइजेस्ट के पूर्व संपादक श्री नारायण

दत्त जी का 1 जून 2014 को बंगलोर में निधन हो गया। श्री नारायण दत्त जी के द्वारा भारत में हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में दिए गए महान योगदान को स्मरण करते हुए उनके प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि।

• विज्ञान परिषद् प्रयाग के सभ्य एवं सोसाइटी ऑफ बायोलॉजिकल साइंसेज एंड रुरल डेवलपमेंट (इलाहाबाद) के निदेशक गोपाल पांडेय का हृदयघात के कारण 27 जुलाई 2014 को निधन हो गया।

• बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे का स्वर्गवास 14 नवंबर 2013 को हो गया। जीवन–भर बच्चों के लिए हिंदी साहित्य सृजन–साधना में लगे रहे।



संपर्क–सूत्र

1. डॉ. भूपेंद्र रायचौधरी, 58, गुवाहाटी विश्वविद्यालय परिसर, गुवाहाटी–781014 (असम)

2. डॉ. विजय कुमार महांति, चांदमारि पड़िआ, सहदेव खुंटा, बालेश्वर–756001 (ओड़िशा)

3. डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी', प्रभुप्रिया, 39, III मेन, III ब्लॉक, III स्टेज, बसेश्वर नगर, बंगलुरु – 560079

4. डॉ. महाराजकृष्ण भरत, विद्यानिवास, शारदा कालोनी, पटोली ब्राह्मणा मुट्ठी, जम्मू–181205

5. प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र, अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य संकाय, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा–403206

6. श्री ओम गोस्वामी, 181–पहाड़ियां स्ट्रीट, जम्मू तवी–180001

7. श्री र. शौरिराजन, 24, 41–मार्ग, सेक्टर–8, के. के. नगर, चेन्नई–600078

8. प्रो. एस. शेषारत्नम, हिंदी विभाग, आंध्रविश्वविद्यालय, विशाखापटनम, 530003

9. प्रो. फूलचंद मानव, साहित्य संगम, 239 दशमेश एंक्लेव, ढकौली जीरकपुर–140603

10. डॉ. ह. सुवदनी देवी, श्री चांदम इङो सिंह, वांरवै थांगपात, मपाल, इंफाल–795001

11. डॉ. दामोदर खड़से, बी–503–504, हाईब्लिस, कैलाश जीवन के पास, धायरी, पुणे–411041

12. डॉ. संगीता कुमारी, स्पेशल सेंटर फॉर संस्कृत स्टडीज, जे. एन. यू., नई दिल्ली

13. डॉ. अजय कुमार मिश्र, बी–295 (नया न. 1082), न्यू अशोक नगर, मयूर विहार एक्सटेंशन, दिल्ली–110096

14. प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय, वृंदावन, मनोरम नगर, लूबी सर्कुलर रो धनबाद (झारखंड)–826001

15. प्रो. अवध किशोर प्रसाद, बी–33, कृषि विहार, नई दिल्ली.

16. डॉ. कुल भूषण शर्मा, 373बी, करतार मार्किट, डी. डी. ए. फ्लैट्स के पास, मुनिरका, नई दिल्ली–110067

17. डॉ. सी. जय शंकर बाबु, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी–605014

18. श्री अशोक मनोरम, संपादकीय विभाग, "दैनिक हिंदुस्तान" 18–20, के. जी. मार्ग, नई दिल्ली–110001

19. डॉ. शकुंतला कालरा, एन. डी. 57, पीतमपुरा, दिल्ली–110034.

20. डॉ. शिवगोपाल मिश्र, श्री बलराम यादव, विज्ञान परिषद प्रयाग, महर्षि दयानंद मार्ग, इलाहाबाद–211002 (उ. प्र.)



MGIPRRND—41 HRD/2016—450 Copies

पी. ई. डी. 953.
450 - 2014 (DSK-II)



मूल्य :—

देश में	Inland	₹ 320.00
विदेश में	Foreign	$ 5.16
		£ 3.49

विस्तृत जानकारी निदेशालय की www.hindinideshalaya.nic.in वेबसाइट से ली जा सकती है।

प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली – 110064 द्वारा मुद्रित